डॉ० शशिप्रभा

स्मृति प्रकाशन
61, महाजनीटोला
इलाहाबाद

मीरां कोश

डॉ० शशिप्रभा

ृति प्रकाशन

प्रकाशक | स्मृतिप्रकाशन, ६१महाजनी टोला, इलाहाबाद

संस्करण | प्रथम, १९७४ ई०

मुद्रक | श्री विष्णु आर्ट प्रेस, ऋषि कुटी, जीरो रोड, इलाहाबाद

मूल्य | अट्ठारह रुपये मात्र

दो शब्द

हिंदी भाषा के ऐतिहासिक विकास के लिए विभिन्न कालों में कवियों की भाषा और उनके शब्द-भंडार का अध्ययन कितना आवश्यक है, कहने की आवश्यकता नहीं। इसी दिशा में अपना विनम्र और तुच्छ योगदान देने के लिए मैंने श्रद्धेय पिता जी डा० भोलानाथ तिवारी के परामर्श से मीरां की भाषा पर कार्य किया था, जिसपर मुझे मेरठ विश्वविद्यालय से पी-एच० डी० की उपाधि मिली थी। उक्त पुस्तिका लगभग दो वर्ष पहले प्रकाशित हो चुकी है। उसी अध्ययन की अगली कड़ी के रूप में मैंने मीरां के शब्द-भंडार पर कार्य किया था, जो प्रस्तुत कोश के रूप में हिंदी जगत के सामने है, यद्यपि जिस रूप में मैं इसे चाहती थी, बना नहीं सकी।

कागज की मंहगाई और उसकी प्राप्ति में कठिनाई के इस कठिन समय में आदरणीय श्री बालकृष्ण त्रिपाठी ने अपने प्रकाशन से इसे प्रकाशित करने का जो दुष्कर कार्य किया है उसके लिए मेरा आभार-प्रकाशन औपचारिकता मात्र होगी।

त्रुटियों के लिए क्षमा-याचना तथा दोष-दर्शनों के लिए अग्र आभार।

विवेकानन्द कॉलोनी
दिल्ली
१-९-७४

शशिप्रभा

संकेत-सूची

•

सं०	=	संस्कृत
उदा०	=	उदाहरण
दे०	=	देखिये
प्रा०	=	प्राकृत
अ०	=	अरबी
फा०	=	फारसी

शब्द भेद

अ

अँकोर— (सं० अंकमाल) भेंट। उदा० मीराँ रे प्रभु हरि अविनासी देस्यूँ प्राण अँकोर। ५।

अँख—दे० आँख।

अँखयाँ—आँखें। उदा० अखयाँ तरसा दरसण प्यासी। ४५।

अँखियनतारो—आँखों का तारा। उदा० म्हेमाँ थारो थारो अँखियनतारो, आँगणे मो तन हेरत हँसि कै। ७।

अँखियाँ—आँखें। उदा० आवत जावत पाँव घिस्यारे (बाला) अँखियाँ भई राती। १८५।

अखियाँ—आँखें। उदा० ऊँचा चढ़ चढ़ पंथ निहारयाँ, कलप कलप अखियाँ राती। १०६, १२३।

आँख—आँख। उदा० वृन्दावन की कुंज गलिन में, आँख लगाए गयो मन-मोहना। १७७।

आँखड़ियाँ—(सं० अक्षि+ड़ियाँ) उदा० दरस बिना मोहि कछु ना सुहावै, जक ना पड़त है अँखड़ियाँ। १०८।

अँग—(सं० अंग) शरीर के अंग। उदा० आपहि आप पुजाय कै रे, फूले अँग ना समात। १५८।

अंग—उदा० जल बल भई भस्म की ढेरी, अपणे अंग लगाजा। ३०, ४६, ५८, ८७, ९४, ९८, १५०, १८८।

अंग अंग—प्रत्येक अंग पर। उदा० गिर-धर प्रभु अंग अंग, मीराँ बलि जाई। १२।

अँगण (सं० अंगण) आँगन

अँगणो—उदा० तुम देख्याँ बिण कल न पड़त है, ग्रिह अँगणो ण सुहाय। ९८।

आंगण—उदा० म्हाँरे आँगण स्याम पधारो, मंगल गावाँ नारी। ५१, ११९, १२९, १८१।

आँगणाँ—उदा० होली पिया बिण म्हाणे णा भावाँ घर आँगणाँ न सुहावाँ। ७८।

आगणाँ—उदा० हरि पधाराँ आगणाँ गयाँ मैं अभागण सोय। ४३।

अँगिया—(सं० अंगिका) चोली। उदा० केसरी चीर दरियाई को लेंगो, ऊपर अँगिया भारी। १७१।

अँगीठी—(सं० अग्निष्ठिका) अँगीठी। उदा० मीराँ रो प्रभु गिरधर नागर दुरजन जलो जा अँगीठी। ३३।

अँगुली—(सं० अंगुलि) उँगली। उदा० म्हाँरी अँगुली णा छूवे बाँकी बहियाँ मोरे, हो। १८१।

आँगरियाँ—उँगलियाँ। उदा० गणताँ गणताँ घिस गयाँ रेखा आँगरियाँ री सारी। ७७।

आँगलियाँ—उदा० गिणता गिणता घँस गई रे म्हाँरा आँगलिया री रेख। ११७।

अँच—(सं० आचमन)

अँचाय—आचमन करके। उदा० न्हाय धोय जब पीवण लागी हो अमर अँचाय। ४१।

अँचरा—(सं० अंचल) आँचल। उदा० म्हाँरो अँचरा णा छवे, बाँको घूंघट खोसे हो १८१

अँटक—(सं० आटंकन) बाधा। उदा० मीराँ लागो रंग हरो, औरन अँटक परी। २५।

अँटकी—फँस गई। उदा० थारो रूप देख्या अँटकी। ६।

अँटके—बारिज भवाँ अलक मतवाली, रोग रूप रस अँटके। १०।

अटकाँ—उदा० रोगाँ लोभाँ अटकाँ शक्याँ णा फिर आय। १३।

अटकास्याँ—अटका गया है। उदा० यो संसार बीड़रो काँटो, गेल प्रीतम अटकास्याँ। ३१।

अटक्याँ—अटक गया। उदा० अटक्याँ प्राण साँवरो प्यारो, जीवण मूर जड़ी। १४।

अँधियारी—(सं० अंधकार) अँधेरी। उदा० (इक) कारी अँधियारी बिजली चमके, बिरहिणी अति डरपावे रे। ८१।

अँधियारो—उदा० बिन पिया जोत मन्दिर अँधियारो, दीपक दाय न आवँ। ७४।

अंत—(सं० अंत) समाप्ति। उदा० आदि अंत निज नाव तेरो, हीया में फेरो। ६३।

अंतर—(सं० अंतर) अंदर। उदा० रोगी अंतर बैद बसत है, बैद ही ओखद जाँणै हो। ७३, १०४, १५८, १६८। (२) हृदय। उदा० बिरह व्याकुल अनल अंतर कलणाँ पड़ता दोय। ४३, ८७। (३) भेद। उदा० तुम बिच हम बिच अंतर नाहीं, जैसे सूरज घामा। ११४।

अंतरि—(१) अंदर। उदा० बिरह दरद उरि अंतरि माँही, हरि बिणि सब सुख कौनै हो। ७३, १५५। (२) हृदय। उदा० बिरह बुझावण अन्तरि आगी लागन लागी [illegible] ४४।८८।

अंदर—उदा० रेजा रेजा भयो करेजा अंदर देखो झाँकि के। ७१।

अंतरजामी—(सं० अंतर्यामिन्) अन्तर्यामी उदा० बेगि मिलो प्रभु अन्तरजामी, तुम बिनि रह्यो ही न जाइ। ८८ १०१, १६६।

अंतरि—दे० 'अंतर'।

अंवर—दे० 'अंतर'।

अंब—(सं० अंबु) पानी। उदा० अंग नीरज में अंब नहिं रे [illegible], [illegible] बहि आती। १८५।

अंबर—(सं० अंबर) आसमान। उदा० गाज्याँ बाज्याँ पवन मधुरयाँ, अंबर बदराँ छाज्याँ। १४६।

अकाज—(सं० अकार्य) बाधा। उदा० भौसागर मँझधार अधारा मैं बिगा घणो अकाज। ६२।

अकुल—(सं० आकुल) परेशान।

अकुलाणी—परेशान हुई। उदा० मीराँ व्याकुल अति अकुलाणी स्याम उमंगा लागी। ६१।

अकुलाय—व्याकुल होता है। उदा० रूँम रूँम नखसिख [illegible] [illegible] अकुलाय। १३।

अकुलावाँ—व्याकुल होना। उदा० स्याम मसारी बिथा [illegible], हिवड़ो म्हा अकुलावाँ। ७८।

आकुल-व्याकुल—व्याकुल होकर। उदा० आकुल व्याकुल रैण बिहाणा, बिरह कलेजो खाय। १०१। **व्याकुल**—परेशान। उदा० मीराँ व्याकुल बिरहिणी आली कर ल्यावाँ। २८, ४३, ४४, ७२, ८४, ८७, ८७, ९१, ९६ १०२ ११० ५५

व्यांकुली—व्याकुल हूँ। उदा० मीरां बिरहिणि व्याकुली, दरसण कद होसी हो। ११५।

अकुलाणी— दे० 'अकुल'।

अकुलाय—दे० 'अकुल'।

अकुलायाँ—दे० 'अकुल'।

अकेली –(सं० एकल) बिना किसी साथ के। उदा० किण सँग खेलूं पिया तज गये है अकेली। ८०।

अक्रूर—(सं० अक्रूर) कंस का दूत, जो कृष्ण का चाचा भी था वही कृष्ण को गोकुल से मथुरा ले लिवाने आया था। उदा० कठिन क्रूर अक्रूर आयो, साजि रथ कहँ नई। १८२।

अखयाँ—दे० 'आँख'।

अँखियाँ—दे० 'अख'।

अगण—(सं० अग्नि) अग्नि, आग। उदा० घायल री गति घायल जाण्याँ, हिवड़ो अगण सँजोय। ७०।

अगन—उदा० ले अगन प्रभु डार डार आए, भसम हो जाई। ८९।

अगनी—उदा० लगण लगाई जैसे चकोर चन्दा से, अगनी भखण कीजै। १९१।

अगिन—उदा० जैसे कंचन दहत अगिन में, निकसत बाराबाणी। ३८।

अगम—(सं० अगम्य) (१)। विकट।

अगम तारण तरण—अगम्य संसार को पार कराने वाले बेड़े के समान। उदा० दासि मीरां लाल गिरधर, अगम तारण तरण। १। (२) जहाँ जाया न जा सके। उदा० चालां अगम वा देस, काल देख्याँ डरी। १९३ १९६।

अगिम ➤ अगम

अघ—(सं० अघ) पाप। उदा० अजामेल अघ ऊधरे, जम त्रास नसानी जी। १४०।

अचल—(सं० अचल) जो चलायमान न हो, स्थिर।

अचल सोहाग—कभी न समाप्त होने वाला सुहाग। उदा० सुपणा माँ म्हारे परण गया पायाँ अचल सोहाग। २७।

अचारवती—(सं० आचार+वती) अच्छे विचारों वाली। उदा० ऐसी कहा अचारवती, रूप नहीं एक रती। १८६।

अच्छे –(सं० अच्छ) सुस्वाद। उदा० अच्छे मीठे चाख चाख बेर लाई भीलणी १८६।

अछत –(+सं० अक्षत) अमर, जिसका कभी नाश न हो। उदा० ग्राह गह्याँ गजराज उबार्‌याँ, अछत कर्‌याँ बरदाण। १३६।

अज—(सं० अद्य) आज।

अजहुँ–(अज+हूँ) अब भी। उदा० आवण कह गये अजहुँ न आये जिवड़ो अति उकलावै। ६७, ८०।

अजहूँ—(अज+हूँ) उदा० जोगिया कूँ जोवत बोहो दिन बीता, अजहूँ आयो नाहिं। ४४, ६४, ६५।

अजाँ—अब भी। उदा० आवण कह गयाँ अजाँ णा आया, कर म्हाणे कोल गयाँ। ५२।

अजूँ—अब भी। उदा० सेली नाद बभूत न बटवो, अजूँ मुनी मुख खोल। ५८।

अजहूँ—दे० 'अज'।

अजहूँ— दे० 'अज'।

अजाँ—दे० अज'

अजाँमेल—(सं० अजामिल) एक पापी जिसने अपने पुत्र का नाम नारायण रक्खा था। मरते समय अपने पुत्र को उसने पुकारा था, और वही नाम लेने से उसकी मुक्ति हो गई। उदा० अजाँमेल अध ऊधरे जम त्रास णसानी जी। १४०।

अजामिल—उदा० अजामिल अपराधी तार्‌याँ तार्‌याँ नीच सुदाण। १३४।

अजूँ—दे० 'अज'।

अटक—(सं० आटंकन) रुकावट। उदा० णोणां चंचल अटक णा माण्या परहथ गयाँ बिकाय। १३।

अटकाँ—दे० 'अटक'

अटकास्यां—दे० 'अँटक'।

अटकी—दे० 'अँटक'।

अटके—दे० 'अँटक'।

अटक्य—दे० 'अँटक'।

अटपटी—(प्रा० अट्टपट्ट) बेढंगी। उदा० सदा उदासी रहै मोरी सजनी, निपट अटपटी रीत। ५७।

अटल—(अ + सं० टलन) अचल या स्थिर। उदा० इण चरण ध्रुव अटल कराल्याँ, सरण असरण सरण। १।

अटारी—(सं० अट्टालिका) दोमंजिला मकान। उदा० महल अटारी हम सब त्याग, त्याग्यो थाँरो बसनो सहर। २४, ७७।

अड़सठ—(सं० अष्टषष्टि) अड़सठ। उदा० अडसठ तीरथ संतों ने चरणों, कोटि कासी ने कोटि गंग रे। ३०।

अडिग—(अ० सं० टिक्) अचल,। स्थिर उदा० आसण माड़ अडिग होय बैठा, याही भजन की रीत। ५५।

अणंत—(सं० अनंत) जिस का अंत न हो। उदा० कूदाँ जल अंतर णां डरयाँ थें एक बाहु अणंत। १६८।

अणवट—पैर के अंगूठे का छल्ला। उदा—उदा० बिछियां घूँघरा राम-नारायण ना अणवट अंतरजामी रे। १४१।

अणियाले—(सं० अणि) तीक्ष्ण। उदा० चढ़ती बैस नैण अणियाले, तू घरि घरि मत डोल। ४०।

अण—(सं० अल्)

अणी—फँसी। उदा० चित चढ़ी म्हारे माधुरी मूरत, हिवड़ा अणी गड़ी। १४, ११८।

अणेशा—(फा० अंदेशा) दुःख। उदा० देस बिदेसा णा जावाँ म्हारो अणेशा भारी। ७७।

अति—(सं० अति) बहुत। उदा० आवण कह गये अजहूँ न आये जियड़ो अति उकलावै। ६७, ८१, ८२, ८१, ९१।

अति ही—बहुत ही। उदा० नीके फूल आंछी जाले, अति ही कुलीनणी। १८६।

अतीत—(सं० अतीत) त्यागी। उदा० कोई दिन याद करोगे रमता राम अतीत। ५५।

अदेह—(सं० अदेह) बिना शरीर के। उदा० मीराँ रे प्रभ साँवरे रे, थे बिण देह अदेह १०५।

अध—(सं० अर्द्ध) आधा।

अधबीच—बीच रास्ते में। उदा० मैं तो जाँणू संग चलैगा, छाँड़ि गया अधबीच। ५५।

अरध—आधा। उदा० अरध नाम कुंजर लयाँ, दुख अवध घटाणी जी। १४०।

आधी रात—उदा० आधी रात प्रभु दरसण दीस्यो जमणाजी रे तीरा। १५४।

अधम (सं० अधम पापी उदा०

अधर अधम बहुताँ दें तार्‌याँ, भाख्याँ सगत सुजाण, १३४। १३७, १३७।

अधर—(सं० अधर) नीचे का ओठ। उदा० अधर मधुर धर बंशी बजावाँ, रीझ रिझावाँ, ब्रजनारी जी।। २,३।

अधार—(सं० आधार) सहारा। उदा० हरि म्हारा जीव प्राण अधार। ४।

अधारा—उदा० भोसागर मझधारी थें बिण घणो अकाज। ६२।

अधिक—(सं० अधिक) ज्यादा। उदा० लगी प्रीति जिन तोड़े रे बाला, अधिक कीजे नेह। ५९, ११३।

अधीरा—(अ + सं० धीर + आ) परेशान। उदा०—मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर हिवरो घणो अधीरा। १५०।

अनल—(सं० अनल) अग्नि। उदा० बिरह व्याकुल अनल अंतर कल णां पड़ता दोय। ४३, १५५।

अनारी—(सं० अनार्य ?) अनाड़ी, नासमझ। उदा० आज अनारी ले गयो सारी, बैठी कदम की डारी, हे माय। १६९। १६९, १६९।

अनेक—(सं० अनेक) बहुत से। उदा० सावण आवण कह गया बाला, कर गया कौल अनेक। ११७।

अनेस—(अन + सं० इष्) बेकार, व्यर्थ। उदा० मीरा रे प्रभु स्याम मिलण बिणा जीवनि जनम अनेस। ९८।

अनोखे—(सं० अन + ईक्ष) अद्भुत। उदा० मनमोहन रसिक नागर भये, हो अनोखे खिलारी। १७०।

अन्न—(सं० अन्न) अनाज। उदा० पाना ज्यूं पीली पड़ी रे (बाला), अन्न नहिं खाती। १८५।

अपंग—(अ + सं० पंगु अपाहिज उदा० निन्दा करसे नरक कुंड माँ, जासे थासे आँधला अपंग रे। ३०।

अपणाँ—(सं० आत्मना) अपना। उदा० या जग में कोई नहिं अपणाँ सुणियो श्रवण मुरार। १३३।

अपणी—अपनी। उदा० मीरा को प्रभु राखि लई है, दासि अपणी जाणी। ३८,१४०।

अपणे—अपने। उदा० लूण अलूणो ही भलो है, अपणे पियाजी को साग। २६, २६, ३८, ४६, ४६, ८३, १८३,१८३।

अपणों—अपना। उदा० वर हीणो अपणों भलो है कोढ़ी कुष्टी कोइ। २६।

अपणो—उदा० कालर अपणो ही भलो है, जामे निपजै चीज। २६। ५६।

अपनी—उदा० मीराँ व्याकुल विरहिणी अपनी करल्यावाँ। २८,४४।

अपने—कबेरी ठाड़ी पंथ निहाराँ, अपने भवण खड़ी। १४, १७५।

अपणी—दे० 'अपणाँ'।

अपणे—दे० 'अपणाँ'।

अपणों—दे० 'अपणाँ'।

अपणो—दे० 'अपणाँ'।

अपनी—दे० 'अपणाँ'।

अपने—दे० 'अपणाँ'।

अपराधी—(सं० अपराध + ई) अपराध करने वाला। उदा० अजामील अपराधी तार्‌याँ तार्‌याँ नीच सुदाणा। १३४।

अपार—(अ + सं० पार) जिसका पार न हो अथवा जिसको पार न किया जा सके। उदा० भो समुंद अपार देखाँ अगम ओखी धार। १६६।

अपारा—जिसकी हद न हो। उदा० म्हारे अवगुण पार अपारा थें बिण कूण सह्याँ। १३८।

अपूठी— सं० अपुष्ट उल्टी उदा०

औगुरा—अवगुरा (उदा० मैं तो हूँ बहु औगुराहारी, औगुरा चित्त मत दीजो। १११। १२६।

अवतार—(सं० अवतार) जन्म, योनि। उदा० पूरवला कॉई पुन्न खूँट्याँ माणसा अवतार। १६६।

अवध—(सं० अवधि) अवधि, समय, उदा० अवध बदीती अजहूं न आये। दूतियन सूँ नेह जोरे। ६५। २४०।

अवलोकत—(सं० अवलोकन) देखकर। उदा० अवलोकत वारिज वदन, विवस भई तरा में। १८४।

अविरासी—दे० 'अविरासी'।

अविनासी—दे० 'अविरासी'।

अष्टकरम—(सं० अष्ट+कर्म) सांसारिक व्यवहार। उदा० अष्टकरम की तलब लगी है, दूर करो दुख भार। १३५।

असरण—(सं० अ+शरण) जिनको कहीं शरण न मिले। उदा० छरा नरण ध्रुव अटल करस्या सरण असरण सरण। १। ६२।

असा—(सं० एषः) ऐसा। उदा० असा प्रभु जाण न दीजै हो १६।

अहिल्या—(सं० अहल्या) गौतम की स्त्री का नाम। उदा० पत्थर की तो अहिल्या तारी बरा के बीच पड़ी। ११८।

अहीरणी—(सं० आभीर+णी) अहीर की स्त्री। उदा० पतित-पावन प्रभु गोकुल अहीरणी। १८६।

अहे—(सं० अहो) संबोधन। उदा० बेर बेर मैं टेरहूँ, अहे किपा कीजै, हो। ११५।

आँख—(सं० अक्षि) नेत्र। उदा० दे० 'आँख'।

आ

आखड़िया—दे० 'अँख'।

आँगणा—दे० 'अंगरा'।

आँगणाँ—दे० 'अंगरा'।

आगणाँ—दे० 'अंगरा'।

आँगरिया—दे० 'अँगुली'।

आँगलियाँ—दे० 'अंगुली'।

आँच—(सं० अर्चि) ताप, गर्मी। उदा० नींद न आवे बिरह सतावे, प्रेम की आंच ढुलावे। ७४।

आँटड़ियाँ—(सं० अविष्ट+ड़िया) वैर। उदा० लागी लगनि छूटण की नाही अब क्यूँ कीजै आँटड़ियाँ। १०८।

आँणद—(सं० आनंद) प्रसन्नता। उदा० मीरां रे प्रभु कद रे मिलोगे, मिलियाँ आँणद होइ। ५३। ६७।

आँणँद—उदा० पाँच सख्याँ मिल पिव रिझावां आणँद ठामूँ ठाम १४४।

आणँद—उदा० पिय आया म्हारे सांवरा, अंग आसँद साजां, हो। १५०।

आणद—उदा० णाच्याँ गायाँ ताल बजायाँ पावा आणन्द होसी ६ १४४।

आसँद—दे० आरणद

आएव—दे० 'आंगद' ।
आँधला—(सं० अंध + ला) अंधा, नेत्रहीन उदा० निन्दा करमे नरक कुन्ड माँ, जाते थामे आंधला अपंग रे । ३० ।
आँबाँ—(सं० आम्र) उदा० आँवाँ की डालि कोइल इक बोले, मेरो मरण अरु जग केरी हासी । ६५ ।
आँबो—उदा० एकै थांणे रोपियां रे, इक आँबो इक बूल ५९ ।
आँबो—दे० 'आँबाँ' ।
आ—(सं० आगमन) ।
आ—(आगमन) आना । आइ—आकर उदा० नमर आइ जोगी रम गया रे, मो मन प्रीति न पाइ । ४४ ११६, ११६ ।
आई—(सहायक क्रिया) उदा० घुमंट घटा ऊलर होइ आई, दामिन दमक । डरावै ७४, १८५ ।
आई—उदा० उमगि घटा घन ऊलरि आई बीजू चमक डरावे हो । ६२ ।
आऊँ—आती हूँ । (सहायक क्रिया) । उदा० रैण पड़ै तब ही उठि जाऊँ, भोर गये उठि आऊँ । २० ।
आऊँगी—आ जाऊँगी । उदा० आऊँगी मैं नाह रहूँगी (रे म्हारा) पीव विना पर-देस । ११७ ।
आए—मतवारो बादर आए रे, हरि को सनेसो कबहुँ न लाये रे । ८१ । १६३ ।
आगयो—आगया । उदा० मैं जल जमुना भरन गई थी, आ गयो कृष्न मुरारी, हे माय । १६९ ।
आज्यो—आ जाओ । उदा० भूवरण पति थे घरि आज्यों जी । ६६ ।
आज्या—उदा० वारी-वारी हो राम हूँ वारी तुम आज्या गली हमारी ११२
आज्यो—उदा० पिया अब घर आज्यो मेरे तुम मोरे हूँ तोरे । ६५ । १०६, ११२ ११४, ११६, ११९ १२६, १४६, १५१ ।
आत—आते हुए । उदा० आत न दीसै जात न दीसै, जोगी किसका मीत । ५५, १७६ ।
आय—(१) आ । उदा० म्हा ठाढ़ी घर आपणी, मोहन निकल्यां आय । ३३।१३। (२) आकर । उदा० मीराँ व्याकुल विर-हिणी री प्रभु दरसण दीन्यो आय । ७२, ९०, ९८, १०१, १०१, २०१ ।
आयाँ—(१) आए (आदरार्थ) । उदा० आयाँ णा री मुरारी ७७ । ७७ । (२) आए (बहुवचनार्थ) । उदा० उमड़ घुमड़ चहुँ मेघा आयाँ, दामण घण भर लावण री । १४६ । १४६ । (३)
आए—उदा० थें आयाँ विण सुख णा म्हारो, हियड़ो घणो उचाट ६६ ।
आया—(१) आया । उदा० आया म्हारे आगणाँ फिर गया मैं जाण्या खोय । ४३ ५२, ११६, १३४, १४७, १५०, १५०, १९८ । (२) आए । उदा० तुम आया बिन सुप नहीं मेरे, पीरी परी जैसे पाण । २४, ६५ ।
आये—उदा० सावण कह गये अजहुँ न आये जियड़ो अति उकलावै । ६७, ८० ८६, ९५ ।
आयो—(१) आए । उदा० जोगिया कूँ जोवत बोहो दिन बीता, अजहूँ आयो नाहि ४४ । (२) आया । उदा० आयो साँवन भादवा रे, बोलण लगा मोर । ५९ । ८५, १००, १४७, १८२, १८५ ।
आयो—अड़सठ तीरथ भ्रमि भ्रमि आयो मण नाहीं मानी हार । ३३ ।
आयौ आया उदा० गगन गरजि आयो बदरा बरसि भयो २०

आव—आओ। उदा० म्हारे घर रमतो ही जोगिया तू आव ६८।

आवड़ाँ—अच्छा है। उदा० घड़ी चैण णा आंवड़ाँ, थे दरसण बिन मोय १०२।

आवण—आने को। उदा० आवण कह गया अजाँ ण आया, कर म्हाणे कोल गयाँ। ५२,६६,६६,६७,११७,१२६।

आवत—आते ही। उदा० म्हारे आज्यो जी रामाँ थारे आवत आस्याँ सामाँ। ११४,१७१,१७१,१८४,१८५।

आवन—आने की। उदा० सावन माँ उमग्यो म्हारो मण री, भणक सुण्या हरि आवन री। १४६।

आवाँ—(१) आती हूँ। उदा० म्हारा पियाँ म्हारे हियड़े बसताँ णा आँवाँ ण जाती। २३। (२) आती। उदा० माँ हिरदै बिस्याँ साँवरो म्हारे णींद न आवाँ। २८, ७५,७८,१०२। (२) आओ उदा० आवो मण मोहण जी जोवाँ थारी बाट। ६६। (३) आया। उदा० सोणाँ बराज बसावाँ री, म्हारा साँवरा आवाँ १५। (४) आए–उदा० आजु सुण्या हरि आवाँ री। १२१ (५) आवे–उदा० आवाँ री मण भावाँ री। १२१।

आवाँगा—आएँगे। उदा० सुण्यारी म्हारे हरि आवाँगा आज। १४३।

आवाँरी—आने की। उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, बाट जोहाँ थे आवाँरी। १२१।

आवे—आती। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर अबस न जावे म्हाँरी दाय। ४२। ५५, ७४, १५७।

आवै—(१) आता है उदा० और सिंगार म्हाँरे दाय न आवै यो गुरु ग्यान हमारो २५। ६७। (२) आएँगे। उदा० पिया कब रे घर आवै। ७४। (३) आती। उदा० रमैया बिन नींद न आवै। ७४। ९२,१२२,१५८,१७६,१९२। (४) बनता उदा० बात कहूँ तो कहत न आवै जीव रह्यो डराय। ७६।

आवो—आओ। उदा० आवो सहेल्या रली करां हे, पर घर गवण निवारि। २६। ४८,८८,१००,१२०,१२०।

आवौ–मेरे घर आवौ सुन्दर स्याम। १२८

आस्याँ—(१) आऊँगी। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, थारी सरणाँ आस्याँ री। ३६। (२) आकर। उदा० बिरह पिया ल्याया उर अन्तर, थे आस्याँ णा बुझावाँ १०४। (३) आएगा। उदा० म्हारे आज्यो जी रामाँ, थारे आवत आस्याँ सामाँ। ११४। (४) आएँगी उदा० सामीड़ा गो नाम बणाया आस्याँ म्हारो स्याम। १४४। (५) आएँगे। उदा० सेज सवाँर्‌या पिय घर आस्याँ मंगल गास्याँ। १४६।

आइ—दे० 'आ'।

आई–दे० 'आ'।

आऊँ—दे० 'आ'।

आऊँगी–दे० 'आ'।

आए—दे० 'आ'।

आकुल—दे० 'अकुल'।

आखड़ाँ—(?) उदासीनता। उदा० साँवलिया सूँ प्रीत औरों सूँ आखड़ाँ। १९३।

आ गयो दे० 'आ'।

आगाँ—(सं० अग्र) आगे, सामने। उदा० म्हां गिरधर आगाँ नाच्यारी १७। ५०, ८५०।

आगे उदा० ताल पखावज मिरदंग बाजा साधाँ आगे णाच्याँ। २७

आगे दे० 'आँगा' ।

आज– (सं० अद्य) आज। उदा० आज म्हारो जनमो सँगरे, राणा म्हारा भाग भल्यां । २०,८४,१४२,१४५,१५१,१६६, १६६ ।

आजु– उदा० आजु सुण्यां हरि आवाँ री आवाँ री, आवाँ री मण भावाँ री । १२१ ।

अज्यां– दे० 'आ' ।

अज्या– दे० 'आ' ।

अज्यो– दे० 'आ' ।

अड़ा– (सं० अति) टेढ़ा । उदा० पाँव न चालै पंथ दुहेलो, आड़ा औघट घाट । ४४ ।

अण–(सं० अन्य) दूसरा । उदा० मीरा दासी अरणाँ करता म्हारो सहारो रणा आरण । १३६ ।

अत–दे० 'आ' ।

आदि–(सं० आदि) शुरू । उदा० आदि अंत निज नाँव तेरो, हिया में फेरी । ६३ ।

आदेस–(सं० आदेश) आदेश-निवेदन के लिए प्रयुक्त । उदा० नैणन देखूं नाथ मैं थाई करूं आदेस । ११६ । ११७ ।

अधारो– (सं० आधार) आधार, सहारा । उदा० मीराँ के प्रभु दरसण दीज्यो थे चरणाँ आधारी । ६३ ।

अधी रात–(सं अर्द्ध रात्रि) उदा० दे 'अध' ।

अन– (सं० आलय) आ कर । उदा० साँवरी सूरत आन मिलावो ठाढ़ी रहूँ मैं हँसिके । ७ । ७४ ।

अनंद–(सं० आनंद) प्रसन्नता । उदा० आनंद उछाव करूँ तण मण भेंट धरूँ । १२० । १६२ ।

अप (सं० आत्मन् आपने उदा० भगत कारण रूप नरहरि, धर्यां आपर सरीर । ६१ ।

अपण—अपने । उदा० करि किरपा प्रतिपाल मो परि राखो गा आपण देस । ११७ ।

अपणी—अपने । उदा० म्हाँ ठाढ़ी घर आपणी । १३ ।

अपहि आप—अपने आप । उदा० अपहिं आप पुजाय के रे, फूले अँग गा समात १५८ ।

अपण–दे० 'आप' ।

अपणी—दे० 'आप' ।

अपहिआप—दे० 'आप' ।

अभरण–(सं० आभरण) आभरण, कपड़े । उदा० रतण आभरण भूषण छाड्याँ, मोर किया सिर केस । ६८ ।

अभूषण–(सं आभूषण + आ) गहने । उदा० भूठा सब आभूषणा री, साँची पिया जी री प्रीति । २६ ।

अय—दे० 'आ' ।

अयाँ—दे० 'आ' ।

अयाँ—दे० 'आ' ।

अये—दे० 'आ' ।

अयो– दे० 'आ' ।

अयो–दे० 'आ' ।

अरण–(सं अरण्य) वन में । उदा० दुग धा आरण फिरें दुखारी, सुरत बसी सुत मानै हो । ७३ ।

अरत–(१) (सं० आरात्रिक) आरती । उदा० रतण करां नेवछावरां, ले आरत साजां, हो । १५० ।

अआरति– (सं० आर्त्त) इच्छा । उदा० आरति तेरी अन्तरि मेरे, आवो अपनी जाणि ४४ ६३ ६१ १०८ ।

० आरत

आरी—(सं० आलि) आली, सखी। उदा० वीर न पाजे आरी रे, मूरप न कीजै मित। ५६।

आली—उदा० कौन जतन करों मोरी आली, चन्दन लाऊँ घँसिके। ७,१४,१६, ८१,१४६,१६०,१७४।

आरोग्याँ—(सं० अरोग+ध्यञ्) (१) स्वस्थ हुई। उदा० विष रो प्यालो राणा भेज्याँ, आरोग्याँ णा जाँच्याँ। ३७ ४७। (२) परोसा। उदा० राजभोग आरोग्याँ गिरधर सणमुख राखाँ थाल ४७।

आरोग्यो—ग्रहण किया। उदा० करमा बाई को खीच आरोग्यो, होइ परसण पाबन्द। १३६।

आरोग्यो—दे 'आरोग्याँ'।

आवड़ाँ—दे० 'आ'।

आवण—दे० 'आ'।

आवत—दे० 'आदे हीं'।

आवत—दे० 'आ'।

आवाँ—दे० 'आ'।

आवाँगा—दे० 'आ'।

आवाँरी—दे० 'आ'।

आवागमन—(हिं० आवा+सं० गमन) आने जाने का चक्कर। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर आवागमन निवार। १३५।

आवे—दे० 'आ'।

आवै—दे० 'आ'।

आवो—दे० 'आ'।

आवौ—दे० 'आ'।

आस—(सं० आशा) आशा। उदा० तुम दरसण की मास रमैया, कब हरि दरस दिलावैं ६७। १२८।

आसा—उदा० म्हारी आसा चितवनि थारी और णा दूजा दोर। ५।७१,१२४,१५८।

आसण—(सं० आसन) आसन। उदा० आसण माड़ अडिग होय बैठा, याही भजन की रीत। ५५। १८८।

आसन—जं तूं लगण लगाई चावै, तो सीस को आसन कीजै। १६१।

आसा—दे० 'आस'।

आसाढ़ा—(सं० आषाढ़) आसाढ़ का महीना। उदा० मोर आसाढ़ा कुरलहे, घन चात्रग सोइ, हो। ११५।

आसिरो—(सं० आश्रय) आसरा। उदा० और आसिरो णा म्हारा थें विण,तीनूं लोक मंझार। ४।

आसोज—(सं० आश्विन) क्वार का महीना। उदा० सीप स्वाति ही झेलती आसोजाँ सोई, हो। ११५।

आस्याँ—दे 'आ'।

इ

इंद्र-(सं० इंद्र) इंद्र देवताओं के अधिपति। उदा० इंद्र पदवी धरण। इंद्र की पदवी को धारण करने वाले ५ १४३ १४३

इक—(सं० एक) संख्यावाचक विशेषण। उदा० एकै थाणें गोपिया रे इक आँबो इक बूल ५६ ५६ ६५ ८१ ८१ ८१ ८६

इकतारी—एक तार वाला। एक बाजा जो सितार की तरह होता है। एक उदा० बाज्यो झाँझ मृदंग मुरलिया एक—बाज्या कर इकतारी। ७७। उदा० म्हारा बिछड्या फेर न मिलया भेज्या रण एक सन्नेस। ६८। ८७, ८६,११६,११८,११८१२४,१६३,१६३, १६३, १६८,१८६। एकरसूँ—एक रस होकर। उदा० मूनागजोगी एकरसूँ हँसि बोल्यि ५८। । एक—एक ही। उदा० एकै थाणै गोपिया रे, इक आँखों इक कूल। ४६।

एको—एक भी। उदा० मैं निगुणी गुण एको नाहीं तुम हो बगसण हारा। ११२, १७३।

इण—(सं०एष: बहुवचन) इन। उदा० इण चरण कालियाँ नाथ्याँ गोपलीला-करण। १। १,१,१,१,११६।

इन—दे० इण। उदा० छप्पन भोग बुहाइ देहे ,इन भोगनि में दाग। २६। १६२।

इत—(सं० इत: अथवा प्रा० इत्थ)इधर। उदा० इत घण गरजाँ उत घण लरजाँ चमकाँ बिज्जु डरायाँ। १४२।

इमरत—दे० के 'अमरित'।

इमरित—दे० 'अमरित'।

इम्रित—दे० 'अमरित'।

इसड़ा—(सं० एष: + ड़ा) इस प्रकार। उदा० थे तो राणा जी म्हाने इसड़ा लागों ज्यों ग्रच्छन में कैर। ३४।

उ

उकलाँ—(सं० उत्कलिका) उत्कंठा से पुकारना।

उकलाणों—उदा० सावण स्वाति बूँद मन माँही, पीव पीव उकलाणों हो। ७३।

उकलावें—(सं० आकुल) व्याकुल है। उदा० आवण कह गये अजहूँ न आये जियड़ो अति उकलावे। ६७।

उकलाणों—दे० 'उकलाँ'।

उकलावें—दे० 'उकला'।

उघाड़ (सं० उदघाटन

उघाड़ो खोलो उदा० थे तो पलक उघाड़ो दीनानाथ १। १८।

उघारी—बिना कपड़ों के। उदा० ले गयो सारी अनारी, म्हारी, जल में ऊभी उघारी, हे माय १६६।

उचाट—(सं० उच्चाट) उदास। उदा० यें आया बिण सुख णा म्हारो, हियरणों घणों उचाट। ६६।

उचार—(सं० उच्चरित)।

उचारे—उच्चरित करते हैं। उदा० ग्वालन बाल सब करत कुलाहल जय जय सबद उचार १६५

उछाह—(सं० उत्साह) उत्साह। उदा० आनंद उछाह करूँ, तण मण भेंट धरूँ। १२२।

उजलो—(सं० उज्ज्वल) (१) गोरा। उदा० उजलो वरण बागलाँ पावाँ, कामल वरणाँ कारा। १६०। (२)—प्रकाश उदा० धराँ साँवरो ध्यान चित्त उजला कराँ। १६३।

उठ— (सं० उत्थ) (१) उठ—उठ कर। उदा० चरणाश्रित री नेम सकारे नित उठ दरसण जाम्याँ। ३१। १०८ १५४।(२) जेताई दीसाँ धरण गगन माँ, तेताई उठ जासी। १६५।

उठाँ—उठी। उदा० चमक उठाँ सुपनाँ लख सजणी सुध णा भूल्याँ जात ७५।

उठि—उठ कर। उदा० रैण पड़ै तबही उठि जाऊँ। २०।

उठो—उठ जाओ। उदा० उठो लालजी भोर भयो है, सुर नर ठाढे द्वारे। १६५।

उड़—(सं० उड्डयन) समाप्त। उदा० मीराँ कहे प्रभु गिरधर नागर, काचो रंग उड़ जाय। ४०।

उड़त—उड़ता है। उदा० उड़त गुलाल लाल बादला रो रंग लाल, पिचकाँ उड़ावाँ १४८।

उड़ावत—उड़ाते। उदा० काग उड़ावत दिन गया, बूझूँ पिडत जोसी, हो। ११५।

उड़ावाँ—(१) उड़ाती हूँ। उदा० उड़त गुलाल लाल बादला रो रंग लाल, पिचकाँ उड़ावाँ १४८। (२) उड़ूँ। उदा० काँई करयाँ बछ णा बस म्हारी. णा म्हार पख उड़ावाँ री १२१

उड़त—दे० 'उड़'।

उड़ावत—दे० 'उड़'।

उड़ावाँ—दे० 'उड़'।

उण—(सं० अमुन) (१) उनके। उदा० मेरी उणकी प्रीत पुराणी, उण बिण पल न रहाऊँ। २०। (२) उस-उदा० जिण मारग म्हाँरा साध पधारै, उण मारग म्हे जास्याँ। २५।

उणकी—उनकी। उदा० मेरी उणकी प्रीत पुराणी २०।

उत—(इत के सादृश्य पर बना हुआ शब्द) उधर। उदा० इत घण गरजाँ उत घण लरजाँ, चमकाँ बिज्जु डरायाँ १४२।

उतर—(सं० अवतरण)

उतर के— उतर कर उदा० गजमे उतर के खर नहूं चढ़स्याँ, ये तो बात न होई २५। **उतर्‍या**— उतरी हूँ। उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, थे बल उतर्‍या पार १६०।

उतरे—उतरता। उदा० यो तो अमल म्हाँरो कबहु न उतरे, कोटि करो न उपाय ४०।

उतर्‍या—दे० 'उतर'।

उतरो—दे० 'उतर'।

उतावला—(सं० उद् + त्वर) उमड़ कर उदा० बहता कहैगी उतावला रे, ढीं तो लटक बतावे छेह। ५९।

उदासी—(सं० उदास + ई) विरक्त। उदा० सदा उदासी रहै मोरि सजनी, निपट अटपटी रीत ५७। १२६।

उद्र—(सं० उद्र) उदर, पेट। उदा० प्रह्लाद परतग्या राख्यां- हरणाकुस णे उद्र बिदारण। १३७

उधार—(सं० उद्धार)।

उधारण—(१) उद्धार करना। उदा० पाँवडाँ म्हारो भाग सँवारण, जगत उधारण काज। १०१। (२) उद्धार करने वाले। उदा० म्हाँ सुण्याँ हरि अधम उधारण १३७। १३७।

उधारत—उद्धार किया। उदा० असरण सरण कह्याँ गिरधारी, पतित उधारत काज। ६२।

उबार्‌याँ—उबारा, उद्धार किया। उदा० ग्राह गह्याँ गजराज उबार्‌या अछत कर्‌याँ वरदाण। १३६।

ऊधरे—अजामेल अघ ऊधरे जम नाम णसानी जी। १४०।

उधारण—दे० 'उधार'।

उधारत—दे० 'उधार'।

उपकार—(सं० उपकार) भलाई। उदा० खायाँ खास्याँ जीवण जाँवाँ, कोई कर्‌या उपकार। १६७।

उपज—(सं० उत्पद्यते)।

उपजाई—उत्पन्न होती है। उदा० कमठ दादुर बसत जल में जल में उपजाई। ८९।

उपजावै—पैदा करता है उदा० देणि विमणो निर्वाण कूँ है, यूँ उपजावै खीज। २६।

उपजी—उत्पन्न हुई। उदा० चैन चित्त में ऊपजी, दरसण तुम दीजै हो ११५।

उपजाई—दे० 'उपज'।

उपजावै—दे० 'उपज'।

उपाय—(सं० उपाय) उदा० यों तौं अमन म्हारों कवहूँ न उतरे, कोटि करो न उपाय ४०।

उबार्‌याँ—दे० उधार

उमावो—दे० उमाव'

उमंग—(सं० उमंग)।

उमायाँ—उमंगित हुआ। उदा० उमाय इंद्र चहूँ दिसि बरस्याँ दामण छोड्याँ लाज। १४३।

उमँग्यो—उमंगित होती है। उदा० सावन माँ उमँग्यों म्हारों मणरी, भणक सुण्या हरि आवन री। १४६।

उमंग—खुशी। उदा० म्हारे आणद उमंग भर्‌यारो जीव लह्याँ सुखधाम। १४४।

उमंगा—इच्छा। उदा० मीराँ व्याकुल अति अकुलाणी स्याम उमगा लागी। ९१।

उमावो—उमंग। उदा० स्याम मिलण रो घणों उमावो, णित उठ जोऊ बाटड़ियाँ १०८।

उमग्याँ—दे० 'उमंग'।

उमग्या—दे० 'उमंग'।

उमंग—दे० 'उमंग'।

उमंगा—दे० 'उमंग'।

उमग्—(सं० उन्मंडन)।

उमगि—उमड़ कर। उदा० उमगि घटा घन ऊलरि आई, बीजू चमक डरावै हो। ९२।

उमड़्या—उमड़ कर। उदा० काला पीला घट्याँ उमड़्या बरस्याँ चार घरी। ८२।

उमड़—उमड़ कर। उदा० उमड़ घुमड़ घन छाया पवण चल्या पुरवायां। १४२। १४६, १४७।

उमड्याँ—दे० 'उमग्'।

उमरण—(सुमिरण' सं० स्मरण के सादृश्य पर) स्मरण, ध्यान। उदा० साँवरो उमरण साँवरो उमरण, साँवरो ध्याण धराँ री। २१।

उमावो—दे० उमंग।

उर (सं० उर) हृदय उदा० अधर सुधा रस मुरली राजत उर बजनी माल ३

६, ६१, ६४, १०४, १५५ ।

उरि—उदा० बिरह दरद उरि अंतरि मांही, हरि बिण सब सुख कानै हो। ७३।

उरझ्—(सं० अवरुंधन)

उरझी—उलझी । उदा० छूटी अलक कुंडल तै उरझी, झड़ गई कोर किनारी। १७० ।

उरझी—दे० 'उरझ्' ।

उरि—दे० 'उर'

उलट्—(सं० उल्लोडन)

उलट—उलट कर, पुनः । उदा० जोगी होयां जुगत णा जाणा, उलट जणम फिर फाँसी १६५ ।

उलट—दे० 'उलट्' ।

ऊ

ऊँच—(सं० उच्च) ऊँचा । उदा० ऊँच नीच जाने नहीं, रस की रसीलणी । १८६ ।

ऊँचा—ऊपर । उदा० ऊँचा चढचढ़ पंथ निहार्‌यां, कलप कलप अँखियां रातीं । १०६ ।

ऊँचा—दे० 'ऊँच' ।

ऊधरे—दे० 'उधार' ।

ऊधो—(सं० उद्धव) उद्धव, कृष्ण के मित्र। उदा०अपणे करम को वो छै दोस, काकूँ दीजै रे ऊधो अपणें । १८३ ।

ऊधौ—उदा० कागद लै ऊधौजी आयों कहाँ रह्या साथी १८५ ।

ऊपजी—दे०'उपज' ।

ऊपर—(सं० उपरि) (१) पर । दाध्या ऊपर लूण लगायाँ, हिवड़ो करवत सार्‌यां । ८३ । १७१ ।

(२) ऊपरी हिस्से पर—उदा० केसरी चीर दरियाई को लेंगों ऊपर अँगिया मारी १७१ । (३) उस पर उदा० कुसुमल पाग केसरिया जामा, ऊपर फूल हजारी । १७१ ।

ऊपरि—ऊपर । उदा० चोच कटाऊँ पपइया रे ऊपरि कालर लुणा । ८४ ।

ऊपरि—दे० 'ऊपर' ।

ऊभ—(सं० ऊर्ध्व, प्रा० उब्भ ऊभा—) उठ कर । उदा० ऊभा बैठ्यां बिरहणी डाली, बोला कंठ णा सार्‌यां ८३ ।

ऊभी—(१) खड़ी । मदन सरोज बदन की सोभा, ऊभी जोऊँ कपोल ।५८। २०२। (२) थी ।—उदा० ले गयो सारी अनारी, म्हारी जल में ऊभी उघारी है माय । १६६

ऊभ्यां—खड़ी । उदा० ऊभ्यां ठाढ़ी अरज करूँ छूं करतां करतां भोर । ५ ।

ऊभा—दे० 'ऊभ्' ।

ऊभी दे० 'ऊभ्'

ऊलर सं० उद्+लल नीची ।उदा०

ऊभ्या—दे० 'ऊभ' ।

ऊलर—(सं० उद्+लल्) नीचा । उदा० घूमंट घटा ऊलर होइ आई, दामिन दमक डरावै । ७८ ।

ऊलरि—उदा० उमगि घटा घन ऊलरि आई, बीजू चमक डरावै हो । ८२ ।

ऊलरि—दे० 'ऊलर' ।

ए

ए—(सं० ए) संबोधन का चिह्न । उदा० यो तो अमल म्हांरो कबहुँ न उतरे, कोटि करो न उपाय । ४० । १६८ ।

एक—दे० 'इक' ।

एकरसूं—दे० 'इक' ।

एकै—दे० 'इक' ।

एकौ—दे० 'इक' ।

एही—(सं० एषः) यही । उदा० मीराँ कूं प्रभु मिल्या हे, एही भगति की रीत । २६ ।

ऐ

ऐंडो—(सं० आवेष्टन) ऐंठा । उदा० म्हांसूं ऐंडो डोले हो, औरन सूं खेलै धमाल । १८१ ।

ऐ—एक । उदा० है कोइ जग में राम सनेही, ए उरि साल मिटावै हो । ६२ ।

ऐण—(ऐण) पूरा । उदा० विरह विथा तासूं री कह्यॉं पैठी करवत ऐण । १०३ ।

ऐसी—(सं० ईदृश्) इस तरह । उदा० ऐसी लगन लगाइ कहां तू जासी । ४६ । ५२, ५६, ८६, १७४, १७६, १८४, १८८, १८६, १८६, १८६ ।

ओ

ओ—(सं० अहो) संबोधन का चिह्न । उदा० तण मण धण सब भेंट करूँ, ओ भजण करूं मैं थारा ११४

ओखद—(सं० औषधि) औषधि । उदा० जतन करो जन्तर लिखी बांधों, ओखद लाऊँ घँसिके ७ ७३ ६०

ओखी—(सं० ओख) तेज। उदा० भो समुन्द अपार देखाँ अगम ओखी धार। १६६।

ओगुण—दे० 'अवगुण'।

ओछा—(सं० तुच्छ) ओछा, हमेशा एक तरह न रहने वाला।

ओछातणा—ओछे व्यक्ति के साथ। उदा० ज्यूँ डूगर का वाहला रे, यूँ ओछातणा सनेह। ५६।

ओछी—नीच। उदा० नीचे कुल ओछी जात, अति ही कुचीलणी। १८६।

ओर-(स० अवर) (१) तरफ़। उदा० तनक हरि चितवाँ म्हारी ओर। ५। ८। (२) कोई और (दे० और)। उदा० म्हारी आसा चितवनि थारी, ओर णा दूजा दोर। ५। २८, २०२।

ओलगिया—(?) अलग रहने वाला पर-देसी। उदा० म्हारो ओलगिया घर आज्यो जी। ११६।

ओलूँ—(सं० ओल) स्मरण। उदा० परम सनेही राम की नीति ओलूँ री आवै। ६७।

औ

औगणहारा—दे० 'अवगुण'।

औगणहारी—दे० 'अवगुण'।

औगुण—दे० 'अवगुण'।

औघट—(सं० अव + घट्ट) अटपट। उदा० पाँव न चालै पंथ दूहेलो, आडा औघट घाट। ४४।

और—(सं० अपर) कोई और। उदा० और आसिरो णा म्हारा थें विण, तीनूँ लोक मँझार। ४। ७, २५, ४०, ४८, १२४, १३२, १६७।

औरन—(१) औरों का। उदा० मीरा लागो रग हरी, औरन अँटक परी। २५। (२)—औरों से। उदा० स्याम म्हाँसूँ ऐंडो डोले हो, औरन सूँ खेलै धमाल। १८१।

औरहि औरे—कुछ का कुछ। उदा० कृष्ण रूप छकी है ग्वालिन औरहि औरै बोलै। १७८।

औराँ सूँ—दूसरों से। उदा० साँवलिया सूँ प्रीत, औराँ सूँ अखड़ा। १६३।

क

कँई (सं० क + अपि) कोई। उदा० मासर वासो मजो ने बैठो हये नयो कँन

कान्ह र । १६१ ।
कँगना—(सं० कंकण) कंगन, हाथ में पहनने का आभूषण । उदा० गोपी दही मथत सुनियत है, कंगना के झणकार । १६५ ।
कँवल—(सं० कमल) कमल । उदा० सुभग मीतल कँवल कोमल, जगत ज्वाला हरणा । १ । ११, ३५, ३८, ४६, ६७, ७६, १०१, ११०, १३१, १४२, १६४, १६१, १६५ । **कमर्या**—उदा० स्याम कन्हैया स्याम कमर्या, स्याम जमण रो नीर । १६६ । **कमल**—उदा० सुन्दर वदन कमल दल लोचण, बाँका चितवण णेणा समाणी । ११ । १२७,१४७, १६८, १६६, १७०, १७१, १७२ । **कवल**—उदा० मैं तो दासी थारे चरण कवल की, मिल बिछुरन मत कीजो जी । १११ ।
कंचन—(सं० कंचन) सोना । उदा० जैसे कंचन दहत अगिन में, निकसत बारा-बाणी । ३८ ।
कटक—(सं० कंटक) करकट । उदा० सब जग कूड़ो कंटक दुनिया, दरध न कोई पिछाणे हो । ७३ । **काँटो**—काँटा उदा० यो संसार बीड़रो काँटो, गेल प्रीतम अटकास्यौं । ३१ ।
कंठ—(सं० कण्ठ) गले । उदा० हँस हँस मीराँ कंठ लगायो, तो म्हारे नौसर हार । ४० । ७१, ७८, ८३ ।
कंत—(सं० कांत) पति । उदा० मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, पूरब जणम को कंत । १२५ । १६८ ।
कंप—(सं० कंपन) काँपना । **कंपत है**—काँपता है । उदा० कलम धरत मेरो कर कंपत है, नैन रहे झड़ लाय । ३६ । **काँपाँ** काँपती है । उदा० सबदाँ सुणताँ मेरी छतियाँ काँपाँ, मीठो थारो बैण । १०३ ।
काँइ—उदा० भलो कह्याँ काँइ कह्याँ बुरो री सब लया सीस चढ़ाय । १३ ।
काँई—उदा० मीराँ रे प्रभु और णा काँई, राख्या अब री लाज । ४८ । ६६, १४०, १६६ । **काइ**—उदा० म्हारो काइ णा बस सजणी, नैण झरत दोऊ नीर । १५५ ।
कूयाँ—कोई । उदा० म्हाँरा री गिरधर गोपाल दूसराँ णाँ कूयाँ । १८ । १८ ।
कउवा—(सं० काक) कौवा । उदा० प्रीतम कूँ पतियाँ लिखूँ कउवा तू ले जाइ । ८४ ।
काग—कउवा । उदा० काग उड़ावत दिन गया, बूझूँ पिंडत जोसी हो । ११५ ।
कछ—(सं० किंचित्) कुछ । उदा० । दद्‌या छिण छिण घट्या पल पल, जात ण कछ बार । १६६ । **कछु**—(१) कुछ । उदा० दरस बिना मोहि कछु न सुहावै, जक न पड़त है आँखड़ियाँ । १०८ । १२८, १३०, १६७, १८०, १६२ । (२) कोई—उदा० काँई कर्‌याँ, कछु णा बस म्हारो, णा म्हारे पंख उड़ावाँ री । १२१ ।
कछु और—कोई दूसरी । उदा० ज्यो तोकों कछु और विथा हो, नाहिन मेरो बसिके । ७ ।
कछुक—कोई भी । उदा० कछुक ओगुण हम पै काढ़ो, मैं भी कान सुणाँ । ६० ।
कछू—कुछ । उदा० राम हमारे हम है राम के, हरि बिन कछू न सुहावै । ६७ ।
कट—(सं० कटि) कमर । उदा० पीताम्बर कट उर बैजणताँ, कर सोहाँ री बाँसी । ६ । ८, १० ।
कटारी—(सं० कट्टार) कटार । उदा० प्रेमनी प्रेमनी प्रेमनी रे, मने लागी कटारी प्रेमनी । १७३ । १७४ ।

कटोरौं—(सं० काँस + ओरा) कटोरा, एक बर्तन। उदा० कणक कटोरौं इम्रत भर्‌याँ, पीवताँ कूण नट्या री। २००।

कट्—(सं० कर्त्तन) काटना। **कट्याँ**—काटा, दूर किया। उदा० बूड़ताँ गजराज राख्याँ, कट्याँ कुंजर भीर। ६१। १७२। **कटाऊँ**—काट दूँ। उदा० चोंच कटाऊँ पपइया रे, ऊपरि कालर लूँणा। ८४। **काट्याँ**—काट दिया। उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, काट्याँ म्हारी गाँसी। १९५।

कठण—(सं० कठिन) कठिन, कठोर। उदा० क्यासूँ कहवाँ कोण बुझावाँ, कठण बिरहरी धाराँ। ९३। १९२। **कठिण**—कठोर। उदा० कठिण छाती स्याम बिछु-रत, बिरह तें तण तई। १८२।

कठिण—दे० 'कठण'।

काठिन—कठोर। उदा० काठिन क्रूर अक्रूर आयो, साजि रथ कहँ नई। १८२।

कठे—(सं० कुत्र) कहाँ। उदा० द्वार्‌याँ जीवन सरण रावलाँ, कठे जावाँ ब्रजराज। ७८।

कठोर—(सं० कठोर) कड़ा। उदा० हम चितवाँ थें चितवो णा हरि, हिवड़ो वडो कठोर। ५।

कड़ला—(सं० कटक) पैर में पहना जाने वाला कड़ा। उदा० झाँझरिया जगजीवन केरा, कृष्णाजी कड़ला ने काँबी रे। १८१।

कड़वाँ—(सं० कटुक) कड़वा। उदा० अम्रत प्यालो छाड्याँ रे, कुण पीवाँ कड़वाँ नीरा री। २४। ४५।

कडी—(सं० कठोर) बुरी। उदा० साज-नियाँ दुसमण होय बैठ्या सबने लगूँ कडी। ११८।

कणक—(सं० कनक) सोना। उदा० कणक कटोरौं इम्रत भर्‌याँ, पीवताँ कूण न ्या री। २००।

कणी—(?) किधर, कहाँ। उदा० रावरी होइ कणी रे जाऊँ, हे हरि हिवड़ो री लाज। १३२।

कथंता—(सं० कथन) बातें। उदा० तीरथ बरताँ ग्याँण कथंता, कहा लियाँ करवत कासी। १९५।

कथीर—(सं० कस्तीर) राँगा। उदा० काथ कथीर सूँ काम णा म्हारे चढस्याँ घणरी मार्‌याँ री। २४।

कदम—(सं० कदंब) कदंब, एक प्रकार का फूल। उदा० गहे द्रुम डार कदम की ठाड़ो मृदु मुसकाय म्हारी ओर हँस्या। ८। १६६।

कदे—(सं० कदा) कभी। उदा० बालपनाँ की प्रीत रमइयाजी, कदे नाहि आयो थारो तोल। १००।

कन्हैया—(सं० कृष्ण) कृष्ण। उदा० स्याम कन्हैया स्याम कमरयाँ, स्याम जमण रो नीर। १६६। १७६। **काण्हड़ो** कृष्ण। उदा० जणम जणम री काण्हड़ो, कब रे मिलस्यो आय। २०१। **कानूड़ो**—कृष्ण। उदा० सखी म्हारो कानूड़ो कलेजे की कोर। १६४। **कान्ह**—कृष्ण। उदा० छैल छबीले नवल कान्ह सँग, स्यामा प्राण पियारी। १७५। **कान्हाँ**—कृष्ण। उदा० बंसी बजावाँ गावाँ कान्हाँ, संग लियाँ बलवीर। १६१। **कान्हा** कृष्ण। उदा० जमणा किणारे कान्हा धनु चरावाँ, बंशी बजावाँ मीठाँ वाणी। १२।

किसन—उदा० ऊभी राधा प्यारी अरज करत है, सणजे किसन मुरारी। १७१। १७१। **क्रश्न**—कृष्ण। उदा० मैं जल जमुना भरन गई गई थी- आ गयो क्रश्न

मुरारी, हे माव । १६६ । **कृष्ण**—उदा० कृष्ण रूप छकी है, ग्वालिन, औरहि औरे बोलै । १७८ । **कृष्ण जी**—झाँझरिया जगजीवन केरा, कृष्णाजी काइला ने काँवी रे । १४१ । **कानाँ**—उदा० हाँ कानाँ किन गूँथी जुल्फाँ कारियाँ । १६२ ।

कपट—(सं० कपट) छल । उदा० जो तेरे हिय अन्तर की जाणै, तासों कपट ण बणै । १५८ ।

कपाट—(सं० कपाट) दरवाजा । उदा० खाण पाण म्हारे नेक ण भावाँ, नैणा खुला कपाट ।

कपोल—(सं० कपोल) गाल । उदा० कुण्डल झलकाँ कपोल अलकाँ लहराई । १२ । ५८ ।

कब—(सं० कदा) किस समय । उदा० तुम दरसण की आस रमैया, कब हरि दरस दिलावै । ६७ । ५३ ६४, ७४, ७४, ७५, ७९, ७८, ७८, ७८, ८३, ८८, ९५, १०२, १०२, १०२, १०८, १०८, ११०, ११५, १२२, १२३, १४३, १३६, २०१ । **कब की**—कब से । उदा० मैं हाजिर नाजिर कब की खड़ी । ११८ । **कब री**—कब से । उदा० कब री ठाड़ी पंथ निहाराँ, अपने भवण खड़ी । १४ । **कब रो**—कब से । उदा० निस दिन जोवाँ बाट मुरारी, कबरो दरसण पाँवाँ । ६६ । **कबहि**–किस समय । उदा० मीराँ कहै प्रभु कबहि मिलौगे, थाँ विण नैण दुख्यारा । ११२ । **कबहुँ**—कभी । उदा० यो तो अमल म्हारो कबहुँ न उतरे कोटि करो न उपाय । ४० । ८१, १२३ । **कबहूँ**—उदा० कबहूं न दान लियो मनमोहन, गयां गोकल आत जात । १७६ । **कबै**—कब उदा० कबै हसकर • ७४

कब की—दे० 'कब' ।

कबरी—दे० 'कब' ।

कबहि—दे० 'कब' ।

कबहुँ—उदा० दे० 'कब' ।

कबहूँ—दे० 'कब' ।

कबीर—(अरबी कबीर = बड़ा, श्रेष्ठ) भक्त कबीर । उदा० दास कबीर घर बालद जो लाया, नामदेव की छान छवन्द । १३९ ।

कबै—दे० 'कब' ।

कमठ—(सं० कामठ) कछुआ । उदा० कमठ दादुर बसत जल में, जल मे उपजाई । ८९ ।

कमरयाँ—दे० 'कँवल' ।

कमल—दे० 'कँवल' ।

कमान—(फा० कमान) धनुष । उदा० भौंह कमान बान बाँके लोचन, मारत हियरे कसिके । ७ ।

कमोदण—(सं० कुमुदिनी) कुमुदिनी । उदा० चंदा देख कमोदण फूलाँ, हरख भयाँ म्हारे छाज्यो जी । ११६ ।

करंत—दे० 'कर' ।

कर—(१)—(सं० कर) हाथ । उदा० पीतांबर कर उर बैजणताँ, कर सोहो री बाँसी । ६ । २८, ३२, ३६, ३७, ६२, १८४, १६५, २०२ । **करि**—हाथ में । उदा० टेढ़याँ कट टेढ़े करि मुरली, टेढ़्या पाग लर लटके । १० । **कर**—(२) (सं० कृ) करना । **करंत**—करते हीं । उदा० कालिन्दी दह नाग नाथ्याँ, काल फणफण निर्त करंत । १६८ । **कर** (१) कर लिया । उदा० दास मीराँ लाल गिरधर सहज कर बैराग्य । १५८ । (२) करो —उदा० हरि हितु से हेत कर, संसार आसा त्याग । १५८ । (३) पूर्वकालिक कृदंत द्योतक उदा० कब हसकर बतावी

७४। (४) समझ कर—उदा० कर चरणाश्रित पी गई रे, गुण गोविन्द का गाय। ४०। (५) अपणी कर—अपना बनाकर। उदा० मीराँ दासी रावली, अपणी कर जाणी जी। १८०। कर गयाँ—कर गया। उदा० आवण कह गयाँ अजाँ ण आयाँ कर म्हाणे कोल गयाँ। ५२। कर गया—उदा० सावण आवण कह गया बाला कर गया कौल अनेक। ११७। कर दियो—कर दिया। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर इमरित कर दियो जहर। ३४। कर ले—आज्ञार्थ। उदा० अपणे घर को परदा कर ले मैं अबला बौराणी। ३८। १६८। कर रही—उदा० दादुर मोर पपीहा बोलै, कोयल कर रही सोर छै जी। १४५। कर लेसी—कर लेगा। उदा०सीसोद्यो रूठ्यो तो म्हाँरो काँई कर लेसी। ३५। करि करिपा—उदा० करि करिपा प्रतिपाल मो परि, राखो ण आपण देस। ११७। किरपा कर—दया करके। उदा० किरपा कर मोहि दरसण दीज्यो सब तकसीर बिसारी। ११३। करणा—करना। उदा० यो देही रो गरब णा करणा, माटी माँ मिल जासी। १९५। करत—(१) करते। उदा० सोड़त जेज करत नाहि सजनी, जैसे चँमेली के फूल। ५४। १६३, १६५। (२) करती। उदा० मीराँ दासी व्याकुल रे, पिव पिव करत बिहाइ। ८४। १७१। करताँ करताँ—करते-करते। उदा०ऊभ्याँ ठाढ़ी अरज करूँ छूं करताँ करताँ भोर। ५। करता—करती है। उदा० मीराँ दासी अरजाँ करता म्हारो सहारो णा आण। १३६। कर्याँ–(१) करूँ। उदा० काँई कर्याँ कछु णा बस म्हारी णा म्हारे पख उठावाँ री। १२१। कर्याँ छै—करती है। उदा० मीराँ दासी अरज कर्याँ छै म्हारो लाल दयाल। ४७। कर्या—किया। उदा० खायाँ खरच्याँ आवण जावाँ, कोई कर्या उपकार। १९७। १९३। कर्यो—किया। उदा० साँवरी सी किशोर मूरत, कछुक टोनों कर्यो। १७२। करसी—करेगा। उदा० चोरी न करस्याँ जिव न सतास्याँ, काँई करसी म्हारो कोई। २८। करसूं—करती हूं। करसे—करती है। उदा० निन्दा करसे नरक कुंड माँ जासे थासे आँधला अपंग रे। ३०। करस्याँ—किया। उदा० थाँ चरण ध्रुव अटल करस्याँ, सरण असारण सरण। १। करस्यो—कीजिये। उदा० मीराँ के प्रभु हरि अविनासी करस्यो प्रीत खरी। ८२। १९६। करां—(१) करें। उदा० आवा सहेल्याँ रली करा हे, पर घर गवण निवारि। २६। (२) कीजिए। उदा० मीराँ के प्रभु हरि अविनासी भाग लिख्या सो ही पायो। १८८। (३) करती हूं। उदा० ज्याँ ज्याँ चरण धरणाँ धरणी धर, त्याँ त्याँ निरत करा री। २१। ७७, ८८, १५०, १९३, १९२, १९३। करा—करती है। उदा० अरज करा अबला कर जोर्याँ स्याम तुम्हारी दासी। १९५। कराइयाँ—प्रेरणार्थक। उदा० म्हारे घर आवाँ स्याम गोठड़ी कराइयाँ। १२०। करावाँ—कराऊँगी। उदा० हरि मन्दिर माँ निरत करावाँ घुंघर्‌याँ घमकास्याँ। ३१। कराऊँ—बनाऊँ। उदा० दास मीराँ लाल मोइ ऐसी प्रीति करै जोइ। १८६। करों—करूं। उदा० कौन जतन करों मोरी आली, चन्दन लाउ घँसिके। ७। करो—करो। उदा० जतन करो जन्तर लिखो बाँधो ओखद लाऊ

थासके । ७ । उदा० कूर्ची करात् करुणानन्द केरी, नैमो घरेणु मारूं घालूं रे । १८१ । करि--(१) करके । उदा० तन मन धन करि वारणैं, हिन्दे धरि लीजै हो । १६ । ५६, ११७, १५६ । (२) कीजिए--उदा० अब तो वेगि दया करि साहिब, मैं तो तुम्हारी दासकियाँ । १०८ । करिये--कीजिये । उदा० साधु जननी संग जो करिये, चढ़े तो चोगणो रंग रे । ३० । करी--(१) किया । उदा० अब तुम प्रीत अवर सूं जोड़ी, हमसे करी क्यूं पहेली । ८० । १४१ । (२) करके । उदा० जगत वदीत करी मनमोहन, कहा बजावत ढोल । ५८ । करूं (१)--करती हूँ । उदा० ऊभ्यों ठाढ़ी अरज करूं छू करतां करता भोर । ५ । ११२, ११७, ११५, १३५, १६२ । (२) करूं--उदा० कांइ करूं कित जाऊँरी सजनी नैण गुमायो रोइ । ४८ । ७४, ८५, ६७, १७२ । (३) करूं (संभावनार्थ) । उदा० आनंद उछाव करूँ, तण मण भेंट धरूं । १२० । करैं--करते हैं । उदा० प्रीत करैं ते बावरा रे, करि तोड़ै ते कूर । ५६ । करै---करता है । उदा० ४० । ५६, ६६ । कियाँ--(१) किया-- उदा० देख्यां माई हरि मण काठ कियाँ । ५२ । ६८, १८६ (२) करने से--उदा० जो हूँ ऐसी जानती रे बाला, प्रीति किया दुख होय । ५६ । ५३ । किया--(१) करने लगे । उदा० के कहुँ काज किया सन्त का, के कहुँ गैल भुलावना । (२) किया--उदा० कीरत कोई णा किया, थणा करम कुमाणी जी । १४० । किये बनाया । उदा० अभिमान टीला किये बहु कहु जल यहाँ महरास १८८

कीजै--(१) कीजिये । उदा० जिह जिह विधि रीझै हरी, सोई विधि कीजै हो । १६ । ५६, ५६, १०७, १०७, १०८, ११५, १६१ । (२) करते हैं--उदा० लगण लगाई जैसे चकोर चन्दा से, अगनी भक्षण कीजैं । १६१ । कीजो--कीजिए । उदा० मैं तो दासी थारे चरण कवल की, मिल बिछुरन मत कीजो जी । १११ । कीजौ--उदा० किरपा कीजौ दरसण दीजौ, सुध लीजो तत्काल । १२७ । कीज्यॉं--उदा० मीराँ दासी सरणा ज्याशी, कीज्यां वेग निहाल । ४७ । ६६ । कीज्यो--उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर मिल बिछुड़न मत कीज्यो जी । ५० । कीना--करने से । उदा० मीन जल से बाहर कीना, तुरत मर जाई । ८६ । कीनी--किया । उदा० नेम धरम कोण कीनी मुरलिया, कोण तिहारे पास मैं री । १६७ । कीन्हों - किया । उदा० मैं भोली भोलापन कीन्हों । ४८ । कीन्हो-- उदा० दास मीराँ राम भजि कै, तण मण कीन्हों पेस । ११७ । कीयाँ--करने से । उदा० जोहूँ ऐसी जानती रे, प्रीत कीयां दुख होय । ५६ । काँइ--(१) । उदा० भलो कह्याँ काँइ कह्याँ बुरोरी सब लया सीस चढ़ाय । १३ । (२) (स० किम्) क्या । काँई--(सं० किमर्थम्) क्या । उदा० थारो कोल बिरुद जग थारो, थे काई बिसर गयाँ । ५२ । कोइ--वर हीणों अपणों भलो है, कोढ़ी कुष्टी कोइ । २६ । २६, ५३, ७३, ६२, ११६, ११८, १७७, १६२ । कोई-- (१) कोई व्यक्ति । उदा० कोई निन्दो कोई बिन्दो मैं तो गुण गोविन्द का गास्यां २५ २५ २५ २० २३

३२, ५५, ५६ ७२, ७३, १०७, १२२, १३३, १७८, १६७। (२) (सं० किम्) क्या। उदा० चोरी न करस्याँ जिव न सतास्याँ।

करक्—(ध्वन्यात्मक) चिकटना।

करकाँ—दे० 'करक्'।

करकाँ जाय—टूटा जाता है, फटा जाता है। उदा० वैद मरण ण जाणाँ री म्हारो हिवड़ो करकाँ जाय। ७२।

करण—दे० 'कर्'।

करणाँ—(सं० करुण।) दया। उदा० करणाँ सुणि स्याम मेरी। ६४। **करुणा निधाण**—करुणा के भंडार, अत्यधिक करुणालु। उदा० मेरी कानाँ सुणज्यौ जी करुणा निधाण। १३६। **करुणानंद**—दुखी जनों को आनंदित करने वाले। उदा० कूँची करावुँ करुणानंद केरी, तेमाँ घरेणु माऊँ घालूँ रे। १४१।

करत—दे० 'कर्'।

करताँ—दे० 'कर्'।

करता—दे० 'कर्'।

करतार—(सं० कर्त्तार) ईश्वर। उदा० माता पिता जग जन्म दिया री, करम दियाँ करतार। १६७।

करतारी—(सं० कर+ताल+ई) हाथ की ताली, दोनों हथेलियों को एक दूसरे पर मारने की क्रिया। उदा० गावत चार धमार राग तँह, दै दै कल करतारी। १७५।

करम—(सं० कर्म) (१) पाप। उदा० कीरत कोंई णा किया, घणा करम कुमाणी जी। १४०। (२) कर्म—उदा० साधाँ जणरी निंद्या ठाणाँ, करम रा कुगत कुमाँवाँ। १५६। १८३। (३) भाग्य ० अपणे करम को वो छ दोस, काकूँ दीजै रे ऊधो अपणाँ। १८३। १८६, १६७।

करमाबाई—(सं० कर्म+अनु० बावा+ई) भक्त करमाबाई। उदा० करमाबाई को खीच आरोग्यो, होइ परसण पावन्द। १३६।

करयाँ—दे० 'कर'।

करया—दे० 'कर'।

करयो—दे० 'कर'।

करवत—(सं० करपत्र) आरा। **करवत लूँगी कासी**—(काशी में मुक्ति पाने के लिये आरे से अपना गला काटने की एक अंधविश्वासपूर्ण परंपरा रही है) काशी में आरे से अपना गला काट कर मुक्त हो जाऊँगी। उदा० तेरे खातिर जोगण हूँगी, करवत लूँगी कासी। ४६। ६५, ८३, १०२, १६५।

करसी—दे० 'कर'।

करसूँ—दे० 'कर'।

करसे—दे० 'कर'।

करस्याँ—दे० 'कर'।

करस्यो—दे० 'कर'।

कराँ—दे० 'कर'।

करा—दे० 'कर'।

कराइयै—दे० 'कर'।

करावाँ—दे० 'कर'।

करावुँ—दे० 'कर'।

करि—दे० 'कर'।

करिये—दे० 'कर'।

करी—दे० 'कर'।

करुणा—दे० 'करणाँ'।

करुणानंद—दे० 'करणाँ'।

करूँ—दे० 'कर'।

करेजा—(सं० कालेय) कलेजा। उदा० रेजा रेजा भया करेजा अन्दर देखो मसिक

७। **कलेजा**—उदा० विरह भवंगम डस्यौं कलेजा, मा लहर हलाहल जागी। ६१। **कलेजे**—उदा० सखी म्हारो कानूड़ो कलेजे की कोर। १६४। **कलेजो**—आकुल व्याकुल रैण बिहावाँ बिरह कलेजो खाय। १०१।

करै—दे० 'कर'।

करै—दे० 'कर'।

करो—दे० 'कर'।

करो—दे० 'कर'।

कलंगी—(तु० कलगी) मोती या सोने का बना हुआ सिर का एक गहना। उदा० रतण जटित सिर पेच कलंगी, केसरिया सब साज। १५२।

कल (१)—(सं० कल्य) चैन। उदा० बिरह व्याकुल अनल अंतर कल णाँ पड़ता दाय। ४२। ५३, ८७, ६१, ६३, ६८, १०३, १०६, ११३, १२३, १३०।

कल—(२) (सं० कल) (१) कला। उदा० सुघर कला प्रवीण हाथन सूँ, जसुमति जू णे सवारियाँ। १६२। (२) सुंदर। उदा० गावत चार धमार राग तँह, दै दै कल करतारी। १७५। **कलि**—चैन। उदा० तुम देखे बिनि कलि न परति है, तलफि तलफि जिव जासी। ६९।

कलप—(सं० कल्पन) तड़पना। **कलप-कलप**- तड़पकर। उदा० ऊँचा चढ़-चढ़ पथ निहार्‌याँ, कलप कलप अँखियाँ रातीं। १०६। **कलपाँ**—कलपती हूँ। उदा० थे बिछड्या म्हाँ कलपाँ प्रभुजी, म्हारो गयाँ सब चैण। १०३।

कलप-कलप—दे० 'कलप'।

कलपाँ—दे० 'कलप'।

कलम—(अ० कलम) लिखने की कलम लेखनी। उदा० कलम धरत मेरो कर कंपत है नैन रहे झड़ लाय। ७६।

कलस—(सं० कलश) घड़ा। उदा० हूं जल भरने जात थी सजनी, कलस माथे धर्‌यो। १७२।

कलि—दे० 'कल'।

कलियाँ—(सं० कलिका) कली का बहुवचन। उदा० चुणि चुणि कलियाँ सेज बिछायो, नखसिख पहर्‌यो साज। १५१।

कलेजा—दे० 'करेजा'।

कवल—दे० 'कँवल'।

कस—(सं० कर्ष)। **कसिके**—जोर से। उदा० भौंह कमान बान बाँके लोचन, मारत हियरे कसिके। ७। **कसे**—जड़े हुए। उदा० कित गई प्रभु मोरी टूटी टपरिया, हीरा मोती लाल कसे। १८७। **कस्यो**—कसा है। उदा० पितांबर कट काछनी काछे, रतन जटित माथे मुकुट कस्यो। ८।

कसर—(अ० कसर) कमी। उदा० एक बेर दरसण दीजै, सब कसर मिटि जाई। ८६।

कसाई—(अ० कसाई) जानवरों की हत्या करने वाला। उदा० क्रोध कसाई रहत घट में कैसे मिलै गोपाल। १५८।

कसिके—दे० 'कस'।

कसूमल—(सं० कुसुभ) कुसुभी रंग, कुसुम के रंग का लाल। उदा० कहो कसूमल साड़ी रँगावाँ, कहो तो भगवाँ भेस। १५३। **कुसुमल**—उदा० कुसुमल पाग केसरिया जामा, ऊपर फूल हजारी। १७१। **कुसुम्बी**—उदा० साँवरिया रो दरसण पास्यूँ पहण कुसुंबी सारी। १५४

कसे—दे० 'कस' ।

कस्यो—दे० 'कस' ।

कष्ट—(सं० कष्ट) पीड़ा । उदा० गज बूडताँ अरज सुण धावाँ, भगताँ कष्ट निवारण । १३७ ।

कहँ—(सं० कुत्र + स्थाने) कहाँ । उदा० राजा रूठ्यो नगरी त्यागाँ, हरि रूठ्याँ कहँ जाणा । ३९ । १८२ । **कहाँ**—उदा० ऐसी लगन लगाइ कहाँ तू जासी । ८६ । ६८, १५८, १८५ । **कहाँ कहाँ**—किस-किस स्थान पर । उदा० कहाँ कहाँ जाऊं तेरे साथ कन्हैया । १७६ । **कहुँ**—कहीं । उदा० कैं कहुँ काज किया संतन का कैं कहुँ गैल भुलावना । ८५ । १५८ ।

कह—(सं० कथन) कहना । **कहत न आवै**—कहते नहीं बनता । उदा० बात कहूँ तो कहत जाऊं तेरे साथ कन्हैया । **कहवा**—कहूँ । उदा० क्यासूं कहवाँ कोण बुझावाँ, कठण विरहरी धाराँ । ६३ । **कहसी**—कहेगा । उदा० ताके संग सिधारताँ हे, भला न कहसी कोइ । २६ । **कहुँ**—कहीं । उदा० कैं कहुँ काज किया संतन का कै कहुँ गैल भुलावना । ८५ ।

कहत—दे० 'कह' ।

कहवाँ—दे० 'कह' ।

कहसी—दे० 'कह' ।

कहा—कह दिया । उदा० जगत बदीत करी मनमोहन, कहा बजावत ढोल । ५८ । १८७ । **कहिए**—कहूँ । उदा० गुरुजन कठिन कानि कासौं री कहिए । १८४ । **कहिया**—(१) कहना (तुम कहना) । उदा० विपत हमारी देख तुम चाले, कहिया हरिजी सूँ जाय । ७६ । (२) कहूँ—उदा० कोण सुणे कासूँ कहिया री, मिल पिव तपण बुझाय । १०१ ।

कहा—(१) (सं० कथम्) क्या । उदा० कहा कहं कित जाऊं मीरा सजनी, बैद न कूण बुनावै । ३८ । ८५, ८८, ११८, १६६, १८६, १७२, १९५, १९५ । (२) दे०—'कह' ।

कहिये—(१) बताइये । उदा० कहा बोझ मीराँ में कहिये सौ पर एक घड़ी । ११८ । (२) कहलाते हैं । उदा० तुम मेरे प्रतिपालक कहिये, मैं गरीबी तेरी । ६८ ।

कहियौ—कहना । उदा० जाय वाके पास कहियौ मीरा थां बिहारी है । १७४ । **कहूँ**—कहती हूँ । उदा० बेरि बेरि पुकारि कहूँ, प्रभु आरति है तेरी । ६३ । ७२, ६२ । **कहे**—कहती हैं । उदा० मीराँ कहे प्रभु गिरधर नागर धारोई नाम भणा । ६० । ६५, १४१ । **कहै**—कहती है, कहते हैं । उदा० जाके संग सिधारता है, भला कहै सब कोइ । २६ । ४०, ४६, ५४, ५५, १००, ११२, १२७, १९१ । **कहौ**-कहो । उदा० मीराँ कहै मैं भई बावरी, कहो तो बजाऊं ढोल । १०० । १५३, १५३, १५२ ।

कह्यौ—(१) कहा । उदा० म्हारो मण मगण स्याम लोक कह्याँ भटकी । ९ । १८, १३, १४, २२, २२, २२, २२, ३६, ३६, ६२, ७२, १०१, १०३, १२१ । (२) कहने में । उदा० का कहूँ कुण मानी मेरी, कह्याँ न को पतियावै हाँ । ६२ । **काँ**—कहती हूँ । उदा० थे कह्यां छाण म्हाँ काँ चोइड़े, लिया बजन्ता ढोल । २२ ।

कहिए—दे० 'कह' ।

कहिया—दे० 'कह' ।

कहियौ—दे० 'कह' ।

कहे—दे० 'कह' ।

कहै—दे० 'कह' ।

कहो—दे० 'कह' ।

कह्याँ—दे० 'कह' ।

काँ—(१) (सं० कार्य अथवा कृत) संबंध सूचक अव्यय । उदा० घर-घर तुलसी ठाकुर पूजा दरसण गोविन्द जी का । १६० । १६०, १७०, १६०, १६१ । **का**—उदा० कोई निन्दो कोई बिन्दो म्हे तो गुण गोविन्द का गास्या । २५, ३५, ३५, ३८, ४०, ४१, ५३, ८५, ११८, १२३, १३२, १३२, १३२, १३६, १३८, १६१, १८७ । **कौ**—उदा० तुम गजगीरी कौ चूतरो रे, हम बालू की भीत । ५६ । **कौ**—का, के, की । उदा० मीरां कूं प्रभु दरसण दीज्याँ पूरब जनम कौ कौल । २२ । ४०, ४६, ७३, ८१, १२५, १३०, १३६, १३६, १५८, १७१, १७७, १७८, १८०, १८३, १८५, १८८, १६१ । **कौ**—का । उदा० लगण लगी कौ पैंडो ही न्यारो पाँव धरत तन छीजै । १६१ ।

काँइ—(१) (सं० किम्) क्या । उदा० काँइ करूं कित जाऊं री सजनी नैण गुमायो रोइ । ८८ । (२) दे० 'कोंड' । **काँई**—क्या । उदा० मीसोदो रूठ्यो तो म्हारो काँई कर लेसी । ३५ । १२१ । **का**—क्या । उदा० का कहूँ कुण मार्ग मेरी, कह्याँ न को पतियावै हो । ६२ ।

काँई—(१) (सं० किमर्थम्) क्यों । उदा० थारो कोन्ह बिरुद जग थोरो, थे काई बिसर गयाँ । ५२ । (२) दे० 'कंई' । (३) दे० 'काँइ' । **काँई काँई**—कैसे-कैसे । उदा० थांरी काँई काँई बोल सुणावा म्हारा साँवरा गिरधारी । ५१ । **काइ**—कैसे । उदा० खान पान सुध बुध सब बिसरयाँ, काइ म्हारो प्राण जियाँ । ५२ ।

कूयाँ—कोई । उदा० म्हारो री गिरधर गोपा दूसरी णा कूयाँ १८ १८

काँची—(सं० काच) कच्ची । उदा० स्याम विणा जग खारो लागाँ, जगरी बाताँ काँचा । १६ । **काँचूं**—उदा० सासर बासो सजी ने बैठी हवे नथी कँई काँचूं रे । १८१ । **काचाँ**—कच्ची । उदा० बूझ्या माणं सदण बावरी, स्याम प्रीतम्हाँ काचाँ । ३७ । **काचे**—कच्चे । उदा० काचे ते तातणे हरिजीए बाँधी, जेम खेंचे तेम तेमनी रे । १७३ । **काचो**—उदा० मीराँ कहे प्रभु गिरधर नागर काचो रंग उड़ जाय । ४० ।

काँटो—दे० 'कटक' ।

काँनै—(सं० काण) अधूरे । उदा० बिरह दरद उरि अंतरि माँही, हरि बिणि सब सुख काँनै हो । ७२ ।

काँपाँ—दे० 'कंप' ।

काँबी—(?) एक प्रकार का पैर का गहना । उदा० झाँझरिया जगजीवन केरा, कृष्णाजी कड़ला ने काँबी रे । १४१ ।

का—(१) दे० 'काँ' (२) दे० 'काँई' ।

काइ—(१) दे० 'कँई' (२) दे० 'काँई' । (१)

काकूं—(सं० कः+सं० कक्ष) किसको । उदा० अपणे करम को वो छै दोस, काकूं दीजे रे ऊधो अपणे । १८३ ।

काग—दे० 'कउवा' ।

कागद—(सं० कागद, अ० कागज) सन, रुई, पटुए आदि को सड़ाकर बनाया हुआ महीन पत्र जिस पर अक्षर लिखे या छापे जाते हैं । यहाँ 'कागद' का अर्थ है पत्र । उदा० कागद ले राधा बाँचण बैठी भर आई छाती । १८५ ।

काचाँ—दे० 'काँची' ।

काचे दे० काँचा

काचो—दे० 'काची'।

काछनी—(सं० कक्ष) काछनी, फेटा अथवा कमर में बाँधने का कपड़ा। उदा० पीतांबर कटि काछनी काछे रतन जटित माथे मुकट कस्यो। ८। **काछी**—धारण करके। उदा० काछी गोप भेष मुकुट, गोधन सँग चार्‍यूँ। १८४। **काछे**—बांधे हुए। उदा० पीताबर कट काछनी काछे, रतन जटित माथे मुकट कस्यो। ८।

काछी—दे० 'काछनी'।

काछे—दे० 'काछनी'।

काज—(१) (सं० कार्य) काम। उदा० छैल विराणो लाख को हे, अपणे काज न होइ। २६। ६७, ८५, ९१, १०९, १३२, १३६, १७०, २०२। (२) कारण। उदा० धरती रूप नवां नवां धर्‍याँ इंद्र मिलण रे काज। १६३।

काम—उदा० गंगा जमणा काम णा म्हारे, म्हाँ जावाँ दरियावाँ री। २४। २४, २४, २४, २४, २४, १५७।

कामा—काम। उदा० तुम मिलिया मैं बोहो सुख पाऊँ सरैं मनोरथ कामा। ११४। **कारज**—कार्य। उदा० मथ भगताँरा कारज साधाँ, म्हारा परण निभाज्यो जी। ११६।

काजल—(सं० कज्जल)। उदा० आँखों में लगाने का अंजन। उदा० काजल टीकी हम सब त्यागा, त्याग्यो छै बांधन जूड़ो। ३२। ३४।

काढ्याँ—दे० 'काढ़'।

काठ—(सं० काष्ठ) कठोर। उदा० देखा माई हरि मण काठ कियाँ। ५२। ८९, ८६, ९०।

काढ़—(सं० कर्षण)। **काढ़**—निकाल। उदा० दध मथ घृत काढ लयाँ डार दया छूयाँ १८। **काढ़ी**—निकाली। उदा० कछुक ओगुण हम पै काढ़ी, मैं भी कान सुणा। ९०।

काढ़—दे० 'काढ़'।

काण—(सं० कर्ण) (१) कान से। उदा० मीराँ के प्रभु दरसण दीज्यो, मेरी अरज काण सुण लीज्यो। १२६। १३४। **कान**—कान से। उदा० कछुक ओगुण हम पै काढ़ी मैं भी कान सुणा। ९०। **कानाँ**—कान का बहुवचन। उदा० कानाँ बिच कुंडल गले बिच सेली, अंग भभूत रमाय। ९८। १३६। (२) **काण**—मर्यादा। उदा० लोक लाज की काण न मानूँ। ३५। ३८। **कानि**—उदा० गुरुजन कठिन कानि कासों री कहिए। १८४।

काण्हड़ो—दे० 'कन्हैया'।

काथ—(सं० कथ) कत्थ। उदा० काथ कथीर सूं काम णा म्हारे, चढ़स्या घणाँरी सार्‍याँ री। ५०।

कान—दे० 'काण'।

कानाँ—दे० 'काण' (१)। दे० 'कन्हैया'

कानि—दे० 'काण' (२)।

कानूड़ो—दे० 'कन्हैया'।

कान्ह—दे० 'कन्हैया'।

कान्हाँ—दे० 'कन्हैया'।

कान्हा—दे० 'कन्हैया'।

काम—(१) (सं० कामना) इच्छा, कामना। उदा० बिसरि जावाँ दुख निरखा पियारी सुफल मनोरथ काम। १४४। १५८, १६६। (२) दे० 'काज'।

कामदाराँ—(सं० कार्य < काम + दार + आँ) प्रबंधक। उदा० कामदाराँ सूँ काम णा म्हारे, जावा म्हा दरबाराँरी। २४।

कायाँ—(सं० किम् + एवम् +) किस प्रकार उदा० अबोलणाँ जग बीतण

लागो कायाँरी कुसलात । ६६ ।

काया—(सं० काय) दशा । उदा० बिरह नागण मोरी काया डसी है, लहर लहर जिव जावें । ७५ ।

कारज—दे० 'काज' ।

कारण—(सं० कारण) हेतु । उदा० भगत कारण रूप नरहरि, धर्यां आप सरीर । ६१ । ६८, ८०, ६३, ६४, ६८, १०८, ११७, १२६, १२६, १३७, १६८ ।

कारौ—(सं० काला) काला रंग । उदा० उजलो बरण बागलाँ पावाँ, कोमल बरणाँ कारों । १६० । **कारियाँ**—काली । उदा० हो कानाँ किन गूँथी जुल्फाँ कारियाँ । १६२ । **कारी**—काली । उदा० (इक) कारी अँधियारी बिजली चमकै, बिरहिणी अति डरपाये रे । ८१ । **अलकाँ कारी**—काली अलकें, काली जुल्फे । उदा० मोर मुगट माथ्याँ तिलक बिराज्याँ, कुण्डल अलकाँ कारी जी । २ । **कालर**—काला । उदा० चोंच कटाऊँ पपइया रे, ऊपरि कालर लूणा । ८४ । **काला**—उदा० काला नाग पिटार्‌याँ भेज्या, सालगराम पिछाणा । ३६ । **कालियाँ**—काला नाग । उदा० इण बरण कालियाँ नाथ्याँ गोपी लील्या करण । १ । **काली**—उदा० काली पीली बदली में बिजली चमके, मेघ घटा घनघोर छै जी । १८५ ।

कारियाँ—दे० 'कारो' ।

काल—(सं० काल) मौत । उदा० गायां गाया हरि गुण निस दिन, काल ब्याल री बाँची । १६ । १६८, १६८, १८३, १६४ ।

कालर—(१) (देशज) बंजर । उदा० कालर अपणो ही भलो हे, जामें निपजै चीज । २६ ( ) दे० कारा

काला—दे० 'कारा' ।

कालिन्दी—(सं० कालिंदी) कालिन्दी पर्वत से निकली नदी, यमुना । उदा० कालिंदी दह नाग नाथ्याँ काल फणफण निर्त करंत । १६८ ।

कालियाँ—दे० 'कारा' ।

काली—दे० 'कारा' ।

कासी—(सं० काशी) काशी शहर । उदा० अठसठ तीरथ सतों रे चरणाँ, कोटि कासी ने कोटि गंग रे । ३० । ४६, ६५, १६५ ।

कासूं—(सं० कस्य) किससे । उदा० कोण सुणे कासूं कहियारी, मिल्या पिव तपण बुझाय । १०१ । १०३ । **कासौं**—उदा० गुरुजन कठिन कानि कासौ री कहिए । १८४ ।

कासौं—दे० 'कासूं' ।

काहे—(सं० कथम्) क्यों । उदा० श्री लाल गोपाल के सँग, काहे नाहीं गई । १८२ ।

किवारे—(सं० कपाट) दरवाजे । उदा० रजनी बीती भोर भयो है, घर घर खुले किवारे । १६५ । **किवारियाँ**—(इयाँ प्रत्यय) दरवाजा । उदा० जो तुम आओ मेरी बखरियाँ, जरि राखूँ चन्दन किवारियाँ । १६२ ।

किण—(सं० केन) (१) किसके । उदा० किण सँग खेलूं होली, पिया तज गये है अकेली । ८० । (२) किसने । उदा० किण बिलमाये हेली । ८० । **किन**—किसने । उदा० हो कानाँ किन गूँथी जुल्फाँ कारियाँ । १६२ ।

किणारे—(फा० किनारा) किनारे पर । उदा० जमणा किणारे कान्हा धेनु चरावाँ

बंशी बजावाँ मीठाँ वाणी । ११ । **किनारी**—साड़ी का किनारा । उदा० छुटी अलक कुंडल तें उरझी झड़ गई कोर किनारी । १७० ।

कित—(सं० कुत्र) कहाँ । उदा० काँइ करूँ कित जाऊँ री सजनी नैण गुमायो रोइ । ४४ ।

किन—दे० 'किण' ।

किनारी—दे० 'किणारे' ।

किर्पानिधान—दे० 'किरपा' ।

कियाँ—दे० 'कर्' ।

किया—दे० 'कर्' ।

किये—दे० 'कर्' ।

किरपा—(सं० कृपा) कृपा, दया । उदा० किरपा कर मोहिं दरसण दीज्यो, सब तकसीर बिसारी । ११३ । ११७, १२७, १३७ । **किर्पानिधान**—कृपा करने वाले । उदा० गिरधारी शरणाँ थारी आया, राख्याँ किर्पानिधान । १३४ । **क्रिपा**—उदा० तुम विण मेरे अवर न कोई, क्रिपा रावरी कीजै । १०७ ।

किरीट—(सं० किरीटन्) मुकुट के ऊपर का छोटा मुकुट । उदा० मोर चन्द्रका किरीट मुगट छब सोहाई । १० ।

किवारियाँ—दे० 'किवारें' ।

किसका—(सं० कस्य) किस व्यक्ति का । उदा० आत न दीसे जात न दीसे, जोगी किसका मीत । ५५ । ५७ ।

किसन—दे० 'कन्हैया' ।

किसोर—(सं० किशोर) ग्यारह से पन्द्रह वर्ष तक की अवस्था का बालक । उदा० साँवरी सी किसोर मूरत, कछुक टोनों कर्‌यो । १७२ ।

की—(दे० 'का') । उदा० मीराँ कूँ प्रभु मिल्या हे, एही भगति की रीत । २६ । ६, ३५, ३८, ४२, ४६, ४६, ४८, ५५, ५८, ५६, ५६, ६०, ६३, ६५, ६५, ६७, ६७, ६७, ७०, ७०, ७४, ८०, ८४, ८८, ८६, १००, १०८, १०८, १०८, १११, ११३, ११८, १२५, १३०, १३४, १३६, १३६, १४८, १५१, १५८, १५८, १६३, १६४, १६४, १६६, १६७, १६७, १६६, १६६, १७१, १७१, १७१, १७१, १७४, १७५, १७७, १८३, १८६, १८६, १६१, १६७ ।

कीजैं—दे० 'कर' ।

कीजो—दे० 'कर' ।

कीजौ—दे० 'कर' ।

कीज्यो—दे० 'कर' ।

कीज्यौ—दे० 'कर' ।

कीना—दे० 'कर' ।

कीनी—दे० 'कर' ।

कीन्हों—दे० 'कर' ।

कीन्हौं—दे० 'कर' ।

कीयाँ—दे० 'कर' ।

कीर—(सं० कीर) तोता । उदा० गणका कीर पढ़ावताँ, बैकुण्ठ बसाणी जी । १४० ।

कीरत—(सं० कीर्ति) यश । उदा० कीरत काँई णा किया, घणा करम कुमाणी जी । १४० ।

कुंज—(सं० कुञ्ज) वृक्षों और लताओं से ढकी हुई जगह । उदा० कुंज भय हेरी हेरी । ६४ । १५४, १५८, १६८, १७४, १७६, १७७ । **कुंजन-कुंजन**—कुंज कुंज में । उदा० कुंजन-कुंजन फिर्‌या साँवरा, सबद सुण्या मुरली का । १६० । **कुंजा**—कुंज में । उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, कुंजाँ गैल फिराँ जी । ८१ ।

कुंजन-कुंजन—दे० 'कुंज' ।

कुंजर—(सं० कुंजर) हाथी भक्त गजेन्द्र

जिस पर विष्णु की कृपा थी। उदा० अरध नाम कुंजर लयाँ, दुख अवध घटाणी जी। १४०।

कुंजा— दे० 'कुंज'।

कुंड—(सं० कुण्ड) गड्ढा, गढ़ा। उदा० निन्द्या करसे नरक कुंड माँ, जामे धामे आंधलाँ अपंगरे। ३०।

कुंडल—(सं० कुण्डल) सोने-चाँदी आदि का बना हुआ कानों का आभूषण, मुरकी। उदा० कुंडल झलकाँ कपोल अलकाँ लहराई। १२। १, ३, ९८, १३१, १५२, १६१, १६४, १७०, १७१, २०२।

कुगत—(सं० कु+गत) बुरी बातें, कुकर्म। उदा० माधाँ जणरी निन्द्या ठाणाँ, करम रा कुगत कुमावाँ। १५६।

कुचीलणी—(सं० कुचैल+णी) मैले-कुचैले वस्त्रों वाली स्त्री। उदा० नीचे कुल ओछी जात, अति ही कुचीलणी। १८६।

कुटंब—(सं० कुटुम्ब) परिवार। उदा० कुल कुटंब सजण सकल बार बार हटकी। ६। **कुटंबाँ**—उदा० सकल कुटंबाँ बरजताँ, बोल्या बोल बनाय। १३। **कुणबो**—उदा० सुरल्यौ धुण सुण बीसरो म्हारो कुणबो गेह। १०५।

कुटंबाँ—दे० 'कुटंब'।

कुण—(सं० कःपुनः, प्रा० कवण) (१) कौन। उदा० भीलरयाँ री काम णा म्हाँरो, डासणं कुण जावाँ री। ७४। २४, ६२, १५६, १८५, १८५। (२) किस—उदा० तीवड़ी आवाँ णा मारो रात, कुण विधि होय परभात। ७५। १३७। (३) किसने उदा० राकल कुण विलमाइ राख्यो, विरहीण है बहार ११६ **काण** (१) कौन। उदा० कहा करूँ कित जाऊँ कोरी सजनी, बैदना कुण बुतावै। ७४। (२) किस—उदा० हमरत पाइ विषाँ क्यूं दीज्याँ कूँण गाँव री रीत। ५६। **कूण**—(१) कौन। उदा० पिव मेरा मै पीव की रे, तु निव कहे सू कूण। ८४। १३८, २००। (२) किस। उदा० कूण सखी सूं तुम रंग राते, हम सूं अधिक पियारी। ११३। (३) क्या। उदा० हरि बिन कूण गती मेरी। ६३। **कोण** कौन। उदा० क्यासूं कहवाँ कोण बुझावाँ, कठण विरह री धाराँ। ९३। १०१, १३१, १६७, १६७। **कौन**—कौन-सा। उदा० कौन जतन करों मोरी आली, चन्दन लाऊँ घंसिके। ७। ६०।

कुणबो— दे० 'कुटंब'।

कुणे—(सं० कःपुनः+एवम्) क्यों, किस-लिए। उदा० जग माँ जीवणा थोड़ा, कुण लयाँ भवभार। १६७।

कुबजा—(सं० कुब्जा) कृष्ण की एक दासी जो कुबड़ी थी। वह कृष्ण से प्रेम करती थी। उदा० भीलण कुबजा तारयाँ गिरधर, जाण्याँ सकल जहाण। १३४।

कुबधि—(सं० कु+बुद्धि) बुरी बुद्धि। उदा० यो ससार कुबधि रो भाँडो, साध संगत णा भावाँ। १५६।

कुमत—(सं० कु+मति) बुरी मति अथवा बुरी बुद्धि। उदा० गयाँ कुमत लयाँ साधाँ सगत, श्याम प्रीत जग साँची। १६।

कुमाँ—(सं० काम)। **कुमावाँ**—कमाता है, इकट्ठा करता है। उदा० साधाँ जणरी निन्द्या ठाणाँ, करम रा कुगत कुमावाँ। १५६

कुमाणी—कमाया । उदा० कीरत काँई णा किया, घणा करम कुमाणी जी । १८० ।

कुम्हलास्याँ—(सं० कु + म्लान) कुम्हला जाऊँगी । उदा० हरि रूठ्याँ कुम्हलास्याँ हो माई । ३५ ।

कुरलहे—(सं० कुर + लह्) करुण शब्द करता है । उदा० मोर अमाड़ाँ कुरलहे, घन चातग मोड, हो । ११५ । **कुरलीजें**—उदा० बैसाख वणराइ फूलवै, कोइल कुरलीजै हो । ११५ ।

कुरलीजें—दे० 'कुरलहे' ।

कुल—(सं० कुल) घराना, जाति । उदा० कुल कुटम्ब सजण सकल बार बार हटकी । ९ । १७, ३८, ६१, ६३, १०४, १०६, १२८, १८६ ।

कुलनासी—(कुल + नाश + ई)—कुल का नाश करने वाली । उदा० लोग कह्याँ मीराँ बावरी, सासु कह्याँ कुलनासी री । ३६ ।

कुलाहल—(सं० कोलाहल) शोर । उदा० ग्वाल बाल सब करत कुलाहल, जय जय सबद उचारे । १६५ ।

कुष्टी—(सं० कुष्टिन् + ई) कोढ रोग से पीडित । उदा० वर हीणो अपणो भलो हे, कोढी कुष्टी कोइ । २६ । **कोढ़ी**—कोढ़ी कुष्टी कोइ । २६ ।

कुसंग—(सं० कु + संग) बुरी संगत । उदा० तज कुसंग सतसंग बैठ णित, हरि चरचा सुण लीजै । १९९ ।

कुसलात—(सं० कुशल) कुशल । उदा० अबोल्णाँ जुग वीतण लागाँ कायाँरी कुसलात । ६६ ।

कुसुमल—दे० 'कसूमल' ।

कुसुम्बी—दे० 'कसूमल' ।

कूँ—(सं० कक्ष) (१) को । उदा० मीरा कूँ प्रभु दरसण दीज्यो, पूरब जनम को कोल । २२ । २६, ४४, ५९, ६७, ७४, ७४, ८०, ८४, ८७, ९४, १०८, १२०, १२२, १३५, १८७, १९० १९९ । (२) का —उदा० चौमास्याँ री बावड़ी, ज्याँ कूँ नीर णा पीवाँ । २८ ।

को—को । उदा० मीराँ को प्रभु राखि लई है, दासी अपणी जाणी । ३८ । कूँ उदा० मीराँ कूँ प्रभु मिल्या हे, एही भगति की रीत । २६ ।

कूँची—(सं० कुञ्चिका) कुंजी, चाबी । उदा० कूँची करावूँ करुणानन्द केरी तेमाँ घरेणु मारूँ धारूँ रे । १४१ ।

कूँण—दे० 'कुण' ।

कूकर—(सं० कुक्कुर) कुत्ते । उदा० काम कूकर लोभ डोरी, बाँधि मोहि चण्डाल । १५८ ।

कूड़ो—(सं० कूट) कूड़ा, बिना काम का । उदा० थाँरे देसाँ में राणा साध नहीं छै, लोग बसै सब कूड़ो । ३२ । ७३ ।

कूदाँ—(सं० कूर्द) कूदा । उदा० कूद्यो जल अन्तर णाँ डरयो थें एक बाहु अणन्त । १६८ ।

कूयाँ—दे० 'कुंइ' ।

कृश्न—दे० 'कन्हैया' ।

कृष्ण—दे० 'कन्हैया' ।

के—(सं० कृत) संबंधकारकीय चिह्न) । उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, निरख निरख बदन म्हारो मनड़ो फँस्यो । ८ । १६, २०, २०, २५, ३०, ३२ ३४, ४१, ४१, ४२, ४६, ५४, ५७, ५८, ६७, ७३, ७६, ९२, ९८, १०८, ११४, ११८, १२२, १२३, १२४, १२५ १२९ १३४ १४३ १४५

१०६, १४७, १५१, १५२, १५३, १५८, १६२, १६३, १६३, १६४, १६५, १६५, १६५, १६७, १६६, १७०, १७१, १७३, १७५, १७६, १७६, १७७, १७७, १७८, १७६, १८०, १८१, १८२, १८३, १८७, १८८, १८९, १९८, १९८, १९९, १९९। केरा—का। उदा० झाँझरिया जगजीवन केरा, कृष्णाजी कल्ला ने न्यारी रे। १९१। केरी—की। उदा० न्हाँ बतावें बिछूड़न बन केरी, म्हार सूँ मो मारे है रे। १९१। ६५, १९१, १९८।

केरा—दे० 'के'।

केरी—दे० 'के'।

केल्याँ—(सं० केलि) खेल। उदा० भरी प्रेम रा हौज, हम केल्याँ करीं। १९३।

केस—(सं० केश) बाल। उदा० रतण आभरण भूखण छाड़्याँ, खोर किया सिर केस। ६८। ६७, १५३।

केसर—(सं० केसर) बालों की तरह रेशे वाला एक सुगंधित पदार्थ। उदा० केसर रो तिलक भाल, लोचन सुखदाई। १२। १४८, १७५। केसरिया—केसर के रंग का। उदा० रतण जटित सिर पेंच कलंगी, केसरिया सब साज। १५२। १७१, १७१।

कै—(सं० किम्) या। उदा० कै कहूँ काज किया संतन का, कै कहूँ गैल भुलावना। ८५। कै—या। उदा० कै तो जोगी जग मैं नाहीं, कैर बिसारी मोइ। ४४। ७३। (२) (सं० कृत) कर। उदा० दास मीराँ राम भजि कै तण मण कीन्हीं पेस। ११७। कैर—(१) या उदा० कै तो जोगी जग मैं नाहीं कैर बिसारी मोइ। ४४।

कै—दे० 'कै'।

कैर—(१) काँटे। उदा० थे तो राणाजी म्हाँने इसड़ा लागो ज्यों ब्रच्छन में कैर। ३४। (२) दे० 'कै'।

कैसे—(सं० कीदृश) किस प्रकार। उदा० मीराँ तो गिरधर बिन देखे, कैसे रहे घर बसिके। ७। ५६, ७६, १५८, १५८, १५६, १७४।

कोँ—दे० 'का'।

को—(१) दे० 'कूँ'। (२) का, के, की। उदा० मीराँ कूँ प्रभु दरसण दीज्याँ, पूरब जन्म को कोल। २२। २६, ४०, ४६, ७३, ८१, ८८, १२५, १३२, १३६, १३६, १५८, १७१, १७७, १७८, १८०, १८३, १८५, १८८, १९१। (३) (सं० कः) कौन। उदा० को बिरहिनी को दुख जाँणै हो। ७३। ७४, ६२।

कोइ—उदा० वर हीणो अपणों भलो है, कोढ़ी कुबटी कोइ। २६। २६, ५२, ७३, ९२, ११६, ११८, १७७, १९२। कोई—उदा० कोई निन्दो को ईबिन्दो म्हे तो गुण गोविन्द का गास्याँ। २५। २५, २५, ३३, ३३, ३३, ५५, ५६, ७३, ७३, १०७, १३२, १३३, १७८, १९७। कोई—कोई। उदा० जब लागी तब कोउ न जाने, अब जानी संसार। १२७। क्याँई—कोई। उदा० सगाँ सनेहाँ म्हारे णाँ क्याँई, बसयाँ सकल जहाण। १३६। कोय—कोई। उदा० दासी मीराँ लाल गिरधर मिलणा बिछड़्या कोय। ४३। ५६, ७०, ७०, १०२।

कोइल—(सं० कोकिल) कोयल। उदा० आँबाँ की डालि कोइल इक बोले, मेरो मरण अरु जग केरी हाँसी ६५ ६२

११५, १४३। **कोयल**—उदा० डारा बैठ्या कोयल बोल्या करस्याँ म्हारी हाँसी। ४५।

कोई—(१) दे० 'कँइ'। (२) (सं० किम्) क्या। उदा० चोरी न करस्याँ जिव न सतास्याँ, काँई करसी म्हाँरो कोई। २५।

कोउ—दे० 'कँइ'।

कोट्याँ—(सं० कोटिक) करोड़ों। उदा० कणक कटोराँ इम्रित भर्‌याँ, पीवताँ कूण नट्या री। २००। **कोटाँ**—उदा० छप्पण कोटाँ जणाँ पधार्‌याँ दुल्हो सिरी ब्रजनाथ। २७। **कोटि**—उदा० अठसठ तीरथ संतों ने चरणे, कोटि कासी ने कोटि गंग रे। ३०। ४०।

कोटाँ—दे० 'कोट्याँ'।

कोटि—दे० 'कोटि'।

कोढ़ी—दे० 'कुष्टी'।

कोण—दे० 'कुण'।

कोमल—(सं० कोमल) नर्म, मुलायम। उदा० सुभग सीतल कँवल कोमल, जगत ज्वाला हरण। १।

कोय—दे० 'कँइ'।

कोयल—दे० 'कोइल'।

कोर—(सं० कोण) (१) टुकड़ा। उदा० सखी म्हारो कानूड़ो कलेजे की कोर। १९४। (२) **कोना**—उदा० छुटी अलक कुतल तें उरझी झड़ गई कोर किनारी। १७०।

कोल—(सं० कोल) वचन। उदा० मीराँ कूँ प्रभु दरसण दीज्याँ पूरब जन्म को कोल। २२। **कौल**—उदा० सावण आवण कह गया बाला, कर गया कौल अनेक। ११७।

कौ—दे० 'काँ'।

कौन दे० 'कुण'।

कौल—दे० 'कोल'।

क्यों—(सं० किम् ?) (१) क्यों। उदा० स्याम क्याँ री बिमारी। ७७। (२) किस। उदा० जाणाँ णा मिलण बिध क्याँ होय। ४३।

क्याँई—दे० 'कँइ'।

क्याँसूँ—किससे। उदा० क्यासूँ मणरी बिथा बतावाँ, हिवड़ो म्हा अकुलावाँ। ७८। ९३।

क्याँने—(सं० किम्) क्यों। उदा० राणा जी थे क्याँने राख्रो म्हाँसूँ बैर। ३४। **क्या**—क्यों। थारे कारण कुल-जग छाड़्याँ, अब थें क्याँ बिसरायाँ। १०६। **क्यूँ**—उदा० देखि बिराणे निवाँण कूँ है क्यूँ उपजावै खीज। २९। ५९, ६३, ८०, ८०, ८७, ९०, १०१, १०८, १८२। **क्यूँकर**—किसलिए। उदा० साँकड़लो सेर्‌याँ जन मिलिया क्यूँकर फिरूँ अपूठी। ३३।

क्या—(१) दे० 'क्याँने'। (२) (फ़ा० या) या। उदा० क्या जाणा म्हारो प्रीतम प्यारो, क्या जाणा म्हा पीर। १५५।

क्यासूँ—दे० 'क्या'।

क्यूँ—दे० 'क्याँने'।

क्यूँकर—दे० 'क्याँने'।

क्वाँरी—(सं० कौमार्य) अविवाहित। उदा० चरण सरण री दासी मीराँ, जणम जणम री क्वाँरी। ५१।

क्रिपा—दे० किरपा।

क्रीड्या—(सं० क्रीड्) खेलने हैं। उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, क्रीड्या संग बलबीर। १६१।

क्रोध—(सं० क्रोध) गुस्सा। उदा० क्रोध कसाई रहत घट में, कैसे मिले गोपाल। १५८ १९९

ख

खड़ी—(सं० खटक, प्रा० खड) खड़ी हूँ। उदा० कब री ठाड़ी पथ निहारा, अपने भवण खड़ी। १८। ८०, ११८, ११८, ११८। **खरी**- खड़ी होकर। उदा० म्हारा पिया परदेशां बसस्या, भीज्यां बार खड़ां। ८२।

खताँ- (अ० खता) गलती। उदा० जणम जणम री खताँ पुराणी, णाम स्याम मट्याँ री। २०७।

खप्पर--(सं० खर्पर) भिक्षा माँगने का बर्तन। उदा० माला मुदरा मेखला रे वाला, खप्पर लूंगी हाथ। ११७।

खबर---(अ० खबर) समाचार। उदा० थे बिण म्हारे कोण खबर ले, गोवरधन गिरधारी। १३१।

खर--(सं० खर) गधा। उदा० गज से उतर के खर नहिं चढ़स्यां, ये तो बात न होई। २५।

खरचाँ—(अ० खर्च) खर्च किया। उदा० खायाँ खरचा जीवण जावाँ, कोई कर्‌या उपकार। १६७। **खरची**—खर्च करने के लिए। उदा० नाकरी में दरसण पास्यूं, सुमिरण पास्यूं खरची। १५४।

खरची- दे० 'खरचाँ'।

खरी—(१) (सं० खर) सच्ची। उदा० मीराँ रे प्रभु हरि अविनासी करस्यां प्रीत खरी। ८२। (२) दे० 'खड़ी'।

खा---(सं० खादन)। **खाई**---(१) खाती। उदा० जाद प्रीतम जी सूँ यूँ कहै रे थाँरी बिरहणि धान न खाई। ८४। (२) खाता है—उदा० काट लकरी वन धरी, काठ घुन खाई। ८६।

खाऊँ—खाती हूँ। उदा० जो पहिरावै सोई पहिरूँ, जो दे सोई खाऊँ। २०।

खाती— खाती हूँ। उदा० पाना ज्यूं पीली पड़ी रे (बाला), अन्न नहीं खाती। १८५। **खाय**—खाती है। उदा० मूल ओखद णा लाग्याँ, म्हाणे प्रेम पीड़ा खाय। ६०। **खायाँ**—खाया। उदा० खायाँ खरचाँ जीवण जावाँ, कोई कर्‌या उपकार। १६७। **खायो**—उदा० दध मेरो खायो मटकिया फोरी, लीणो भुज भर साथ। १७६। **खासी**—खाएगा। उदा० वरन कर्‌यां अबिनासी म्हारो, काल व्याल णा खासी। १६४। **खाजे**—खाइये। उदा० पोर न खाजे आरी रे, मूरख न कीजै मित। ५६। **खाण**—खाना। उदा० तेरे कारण सब हम त्यागे खान पान पै मन नहीं लागे। १२६।

खाइ—दे० 'खा'।

खाई—दे० 'खा'।

खाऊँ—दे० 'खा'।

खाण—(सं० खादन) खाना। **खाण-पाण**—खाना-पीना। उदा० खाण पाण म्हाणे फीकाँ सो लागाँ नैण रहाँ मुरझावाँ। ६६। ६६। **खान-पान**—उदा० खान पान सुध बुध सब बिसर्‌याँ काइ म्हारो प्राण जियाँ। ५२।

खातिर—(अ० खातिर) लिए । उदा० तेरे खातिर जोगण हूँगी, करवत लूँगी कासी । ४६ ।

खाती—दे० 'खा' ।

खान—दे० 'खाण' ।

खाय—दे० 'खा' ।

खायाँ—दे० 'खा' ।

खायो—दे० 'खा' ।

खाराँ—(सं० क्षार) कड़वा, बुरा । उदा० स्याम विणा जग खाराँ लागाँ, जगरी वाताँ काँची । १६ । ११२, १६० । **खारी**—बुरी । उदा० होली पिया बिन लागाँ री खारी । ७७ ।

खारो—दे० 'खाराँ' ।

खासी—दे० 'खा' ।

खिजावै—(सं० खिद्यते) गुस्सा दिलाती है । उदा० सास लड़ै मेरी ननद खिजावै, राणा रह्या रिसाय । ४२ ।

खिलारी—(सं० क्रीडा) खिलाड़ी, खेलने वाला । उदा० मनमोहन रसिक नागर भये, हो अनोखे खिलारी । १७० ।

खींच—(सं० कृसर) खिचड़ी । उदा० करमाबाई को खींच आरोग्यो, होइ परसण पाबन्द । १३६ ।

खीज—(सं० खिद्यते) । उदा० देखि विराणै नि ण कूँ हे, क्यूँ उपजावै खीज । २३ ।

खीण—(सं० क्षीण) क्षी , उदा० अंग खीण व्याकुल भयाँ मुख पिय पिय वाणी हो । ८७ ।

खुल—(सं० खुड्) । **खुला**—खुला हुआ । उदा० खाण पाण म्हारे नेक ण भावाँ, नैणा खुला कपाट । ९९ । **खुले**—खुले हुए । उदा० रजनी बीती भोर भयो है, घर घर खुले किंवारे । १६५ ।

खुला—दे० 'खुल' ।

खुले—दे० 'खुल' ।

खूंट्याँ—(सं० खुड्) उदित हुआ । उदा० पूरबला काँई पुन खूँट्या माणसा अवतार । १९६ ।

खूबसूरत—(फा० खूबसूरत) सुन्दर ।

खूबी—(फा० खूबी) गुण । उदा० चार दिना की करले खूबी, ज्यूँ दाड़िमदा फूल । १९८ ।

खूयाँ—(सं० क्षेपण) खोया । उदा० माधाँ ढिग बैठ बैठ, लोक लाज खूयाँ । १८ । **खोय**—खो गया । आया म्हारा आगणाँ फिर गया मैं जाण्या खोय । ४३ ।

खेंचे—(सं० कर्षण) खींचे । उदा० नाचे नें तातणे हरिजीए बाँधी, जेम खेंचे तेम तेमनी रे । १७३ ।

खेत—(सं० क्षेत्र) वह स्थान जहाँ खेती होती है । उदा० दास धना को खेत निपजायो, गज की टेर सुनन्द । १३६ ।

खेल—(सं० क्रीड्) । **खेलण**—खेलने । उदा० पँचरँग चोला पहर्‌या सखी म्हाँ झिरमिट खेलण जाती । २३ । **खेलत**—खेलते हैं । उदा० फाग जू खेलत रसि। साँवरो । १७५ । **खेलत हैं**—खेलते है । उदा० होरी खेलत हैं गिरधारी । १७५ । **खेलहैं**—फागुण फागा खेलहै, बणराइ जरावै हो । ११५ । **खेलूँ**—खेलती हूँ (संभावनार्थ) । उदा० रैण दिना वाके सँग खेलूँ, ज्यूँ त्यूँ वाहि रिझाऊ । २० । ८० । **खेलै**—खेलता है । स्याम म्हाँसूँ ऐंडो डोले हो, औरन सूँ खेलै धमाल । १८१ ।

खेल्याँ—खेलती हूँ । उदा० होली खेल्या स्याम संग रँग सूँ भरी, री । १४८ ।

खेलण—दे० 'खेल' ।

खेलत हैं—दे० 'खेल' ।

खेलहूं--दे० 'खेल' ।
खेलूं---दे० 'खेल' ।
खेलै---दे० 'खेल' ।
खेल्यां--- दे० 'खेल' ।
खेह---(सं० क्षार) राख । उदा० दीपक जाण्या पीर णा पतंग जल्या जल खेह । १०५ ।
खोय---दे० 'खूवा' ।
खोर---(सं० क्षौर) । खोर किया--- मुड़वा दिया । उदा० न्हाण आभरण भूषण छाड़्या, खोर किया सिर केस । ६८ ।
खोल्---(सं० खुड) । खोल---खोल दो । उदा० अंग भभूति गले मृगछाला, तू जन गुढ़िया खोल । ५८ । खोले---खोलता है । उदा० म्हारो अँचरा णा छुवें, बाँको घूंघट खोले, हो । १८१ । खोल्या---खोला । उदा० पाट ण खोल्या मुखाँ णा बोल्या, साँझ भयाँ परभात । ६६ ।
खोले---दे० 'खोल्' ।
खोल्या---दे० 'खोल्' ।

ग

गंग---(सं० गंगा, एक नदी जो हिमालय से निकलती है । उदा० अड़सठ तीरथ संतों के चरणें, कोटि काशी ने कोटि गंग रे । ३० । गंगा---उदा० गंगा जमणा काम णा म्हारे, म्हा जावाँ दरियावाँ री । ०८ । १८५ ।
गई---दे० 'जा' ।
गउवन---(सं० गो) गाएं । उदा० कित गई प्रभु मोरी गउवन बछिया, द्वारा बिच हंसली फंसे । १८७ । गउवन के---गायों के । उदा० माखन रोटी हाथ में लीनी, गउवन के रखवारे । १६५ ।
गगन---(सं० गगन) आसमान । उदा० जेनाई दीसाँ धरण गगन मां, तेनाई उठ जासी । १६५ । १२० ।
गज---(सं० गज) हाथी । उदा० गज से उनर क बार नहिं पकुम्याँ य तो बात न होई । ८५ । १३७, १३९, १४० ।
गजराज---गजेन्द्र । उदा० जग तारण भौ भीत निवारण थे राख्याँ गजराज । ४८ । ६१, १३४, १३६ ।
गजराज---दे० 'गज' ।
गजगीरी---(फा० गच+गीर+ई) चूने और सुरखी से पिटी जमीन, मजबूत । गजगीरी को चूतरो---गच किया हुआ, मजबूत चबूतरा । उदा० तुम गजगीरी को चूंतरो रे, हम बालू की भीत । ५९ ।
गड़ी---(सं० गर्त) चुभ गई । उदा० चित्त चढ़ी म्हारे माधुरी मूरत, हिवड़ा अणी गड़ी । १४ ।
गणका---(सं० गणिका) वेश्या । उदा० गणका कीर पढ़ावताँ बैकुण्ठ बसाणी जी १४० गणिका उदा० डूबता

गजराज राख्याँ गणिका चढ्या विमाण। १३४।

गणगौर—(सं० गण + गौरी) एक प्रकार का व्रत जो चैत्र शुक्ल तृतीया को पड़ता है। उदा० रे साँवलिया म्हारे आज गणगौर, छै जी। १४५।

गण—(सं० गणन)।

गणताँ गणताँ—गिनते-गिनते। उदा० गणताँ गणताँ घिस गयाँ रेखाँ, आँगरियाँ री सारी। ७७। ८६, १३४। **गणै**—गिनते हैं। उदा० हिरदे हरि को नाम ण गणै, मुख तें मनिया गणै। १५८। **गिणता गिणता**—उदा० गिणता-गिणता घँस गई रे म्हाँरा आँगलियारी रेख। ११७।

गणा—(सं० गण) लोग। उदा० भगत गणा प्रभु परचाँ पावाँ, जावाँ जगताँ दुर्‌या री। २४।

गणिका—दे० 'गणका'।

गणै—दे० 'गण'।

गत—(सं० गत) गति, दशा। उदा० घायल री गत घायल जाण्याँ, हिवड़ो अगण संजोय। ७०। ७०, १८६। **गती**—उदा० हरि बिन कूण गती मेरी। ६२।

गमाया—(सं० गमन्) गँवा दिया। उदा० आया था ए लोभ के कारण, मूल गमाया भूल। १९८। **गमावाँ**—गँवाती हूँ। उदा० साध संगत माँ भूल णा जावाँ मूरख जणम गमावाँ। १५६।

गमावाँ—दे० 'गमाया'।

गयाँ—दे० 'जा'।

गयाँताँ—दे० 'जा'।

गया—दे० 'जा'।

गये दे० जा

गयो—दे० 'जा'।

गरक—(अ० गर्क)। **गरक गयो**—प्रवेश कर गया। उदा० तरकस तीर लग्यो मेरे हियरे, गरक गयो सनकाणी। ३८।

गरजत—(सं० गर्जन)। **गरजत है**—गरजता है। उदा० उमड़ घुमड़ चहुँ दिस से आया, गरजत है घन घोरा, रे। १४७। **गरजाँ**—गरजने लगा। उदा० इत घण गरजाँ उत घण लरजाँ चमकाँ बिज्जु डरायाँ। १४२। **गरजि**—गरजकर। उदा० गगन गरजि आयो, बदरा बरसि भायो। १२०।

गरजि—दे० 'गरजत'।

गरब—(सं० गर्व) गर्व, घमण्ड। उदा० इण चरण गोबरधन धार्‌या, गरब माधवा हरण। १। १९५।

गर—(सं० गलन)। **गराँ**—गल गए। उदा० पाँच पोंडु री राणी द्रुपता, हाड हिमालाँ गराँ। १८९।

गरुण—(सं० गरुड़)। उदा० गरुण छाड पग धाइयाँ पमुजूण पटाणी जी। १४०।

गल—(सं० गल) गले मे। उदा साँप पिटारो राणाजी भेज्यो, द्यो मड़तणी गल डार। ४०। **गले**—गले में। उदा० अंग भभूत गले मृगछाला, तू जन गुढ़िया खोल। ५८। ९४, ९८।

गलिन—(सं० गल ? = गला) गलियों। उदा० बिन्द्रावन री कुंज गलिन माँ गोविन्द लीला गास्यूँ। १५४। १७६, १७७। **गलियन**—उदा० आवत मोरी गलियन में गिरधारी। १७१। **गलियाँ**—उदा० म्हारी गलियाँ णाँ फिरे, वाँके आँगण डोले, हो। १८१। **गली**—गली में। उदा० वारी वारी हो राम हूँ वारी. तुम आज्या गली हमारी ११३ **गेल** गला

गावाँ ताल बजावाँ, पावाँ आणद हाँसी । ६ । ३१, १६१ । **गावै**—गाते है । उदा० म्हा मह्यीं बसंत पंचमी, फागा सद गावै हो । ११५ । **गास्याँ**—गाऊँगी । उदा० माई म्हाँ गोविन्दा गुण गास्याँ । ३१ । २५, ३१, १६७ । **गास्यूँ**—गाऊँगी । उदा० विन्द्रावन री कुंज गलिन माँ गोविन्द लीला गास्यूँ । १५४ । **गास्यो**—गाओगी । सेज सवाँर्या पिय घर आस्याँ, सखयाँ सख्याँ मंगल गास्यो । १४६ ।

गाइयाँ—दे० 'गा' ।

गागर—(स० गर्गर) घड़े के आकार का बर्तन । उदा० चोवा चंदण अरगजा म्हा, केसर णो गागर भरी रीं । १४८ । १७० ।

गाजै—(सं० गर्जन) गर्जन करती है । उदा० इक गाजै बाजै पवन मधुरिया, मेहा अति झड़ लाये रे । ८१ । **गाज्याँ**—गर्जन किया । उदा० गाज्याँ बाज्याँ पवन मधुरयो, अंबर बदराँ छाज्यो । १४६ ।

गाज्याँ—दे० 'गाजै' ।

गाज्यो—दे० 'गा' ।

गाणा—दे० 'गा' ।

गात—(सं० गात्र) शरीर । उदा० लपट झपट मोरी गागर पटकी, साँवरे सलोने लोने गात । १७६ ।

गाढा—(सं० गूढ़) कठिन । उदा० गोविन्द गाढा छौ जी, दीलरा मित । १२५ ।

गाम—दे० 'गाँव' ।

गाय—दे० 'गा' ।

गायाँ गायाँ—दे० 'गा' ।

गावण—दे० 'गा' ।

गावत—दे० 'गा' ।

गावाँ—दे० 'गा' ।

गावै दे० 'गा' ।

गास्याँ—दे० 'गा' ।

गास्यूँ—दे० 'गा' ।

गारी—(सं० गालि) अपशब्द । उदा० सखी साइनि मोरी हँसत हैं, हँसि हँसि दे मोहि गारी, हे माय । १६६ ।

गास्यो—दे० 'गा' ।

गिणता गिणता—दे० 'गणताँ गणताँ' ।

गिरधर—(सं० गिरिधर) कृष्ण । उदा० दासि मीरा लाल गिरधर, अगम तारण तरण । १ । ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १७, १८, १६, २० २०, २१, २२, २३, २४, २७, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ४०, ४१, ४२, ४६, ४७, ४८, ४६ ५०, ५२, ५५, ६०, ६०, ६१, ७६, ८३, ८६, ८८, ८६, ६०, ६४, १०६, १०७, १०६, ११०, ११०, ११६, १२१, १२२, १२७, १२८, १२६, १३१, १३४, १३५, १४१, १४२, १४८, १५२, १५३, १५७, १५८, १५६, १६०, १६१, १६२, १६३, १६४, १६६, १६६, १७१, १७३, १७५, १७६, १७७, १७८, १८०, १८४, १८६, १६०, १६१, १६२, १६८, १६६, २०२ । **गिरधरलाल**—उदा० थें जीम्या गिरधरलाल । ४७ । **गिरधारी**—उदा० मण म्यारो लाग्यां गिरधारी जगरा बोल सह्या । २६ । ५१, ५१, ६२, ७७, १३१, १३४, १६६, १७१, १७५ । **गिरधारीलाला**—उदा० म्हाणे चाकर राखाँ जी गिरधारी लाला चाकर राखाँ जी । १५४ । **गिरवरधारी**—उदा० या छब देख्याँ मोह्याँ मीराँ मोहन गिरवर धारी जी । २ । **गिरिधर**—उदा० मीरा रे प्रभु गिरिधर नागर बेग मिल्यो महाराज १४३ १४५ १४६ १४७

१५४, १६८, १७० ।

गिरधरलाल—दे० 'गिरधर' ।

गिरधारी—दे० 'गिरधर' ।

गिरधारीलाला—दे० 'गिरधर' ।

गिरवरधारी—दे० 'गिरधर' ।

गिरिधर—दे० 'गिरधर' ।

गुजरिया—(सं० गुर्जरी) गुजर जाति की स्त्री । उदा० मैं मटकी सिर चली गुजरिया, आगे मिले बाबा नन्द जी के छोना । १७७ ।

गुझवाती—(सं० गुह्+वार्ता) रहस्य वाली बात । उदा० स्याम सनेमी कबहु ण दीन्ही, जानि बूझ गुझवाती । १२३ ।

गुड़िया—(सं० गुह्) रहस्य । उदा० अंग भभूति गले मृगछाला, तू जन गुड़िया खोल । ५८ ।

गुण—(सं० गुण) अच्छाई । उदा० गाया गावाँ हरि गुण निसदिन, काल ब्याल री बाँचा । १६ । २५, ३१, ३५, ३६, ६०, ४१, ११२, १२६ । **गुणवंत**—(सं० गुणवन्त) गुणी, गुणोंवाला । उदा० तुम गुणवत बड़े गुणसागर, मैं हूं जी औगणहारा । ११२ । **गुणसागर**—गुणों के सागर, वह व्यक्ति जिसमें बहुत-से गुण हों । उदा० तुम गुणवंत बड़े गुणसागर··· । ११२ । **गुणहीन**—बिना गुणों के । उदा० म्हा गुणहीन गुणागर नागर, म्हा हिवड़ो रो साज । ४८ । **गुणा**—गुणों से । उदा० गिरधर रिझाणा कौन गुणा । ६० । **गुन**—उदा० मीरां रे प्रभु गिरधर नागर, गुन गावा सुख पास्यां । ३१ ।

गुणवंत—दे० 'गुण' ।

गुणसागर—दे० 'गुण' ।

गुणहीन—दे० 'गुण' ।

गुणा—दे० गुण

गुणागर—दे० 'गुण' ।

गुन—दे० 'गुण' ।

गुपाल—(सं० गोपाल) गोपाल, कृष्ण । उदा० गोहने गुपाल फिरूं, ऐसी आवत मण में । १८४ । **गोपाल**—उदा० मीराँ प्रभु संता सुखदायाँ, भक्त बछल गोपाल । ३ । १८, १२७, १५८, १८२, १८२ ।

गुफा—(सं० गुहा) गुंबज । उदा० आसण माँडि गुफा में बैठो, ध्यान हरी को लगायो । १८८ ।

गुमानी—(फा० गुमान) अभिमानी । उदा० मिलता जाज्यो हो जी गुमानी, थाँरी सूरत देखि लुभाणी । १३० । **नंद को गुमानी**—नंद का अभिमानी बेटा, कृष्ण । उदा० हेरी माँ नन्द को गुमानी, म्हाँरे मनड़े बस्यो । ८ ।

गुमायो—(फा० गुम) खो दी । उदा० काँइ करूँ कित जाऊँरी सजनी नैण गुमायो रोइ । ४४ ।

गुर—(सं० गुरु) गुरु । उदा० और सिंगार म्हाँरे दाय न आवै, यो गुर ग्यान हमारो । २५ । **गुरुजन**—बड़े लोग । उदा० गुरुजन कठिन कानि कासौं री कहिए । १८४ ।

गुरुजन—दे० 'गुर' ।

गुलफाम—(फा० गुलफाम) सुंदर । उदा० हम भई गुलफाम लता, वृन्दावन रैनाँ । १८८ ।

गुलाल—(फा० गुल्लाल) अबीर । उदा० उडत गुलाल लाल बादला रो रंग लाल, पिचकाँ उड़ावाँ । १४८ । १७५ ।

गूँथी—(सं० गुध) गूहना, पिरोना । उदा० हो कानाँ किन गूँथी जुल्फाँ कारियाँ । १६२ ।

गूदड़ी सं० ग्रन्थ हि० गूथ + देसज ड़ी

फटा-पुराना कपड़ा। उदा० साँची पिया जी री गूदड़ी, जामे निरमल रहै सरीर। २६।

गेउ—(सं० गृह) मार्ग। उदा० घरि णा आवाँ गेउ लखावाँ, बाण पड़्या ललचावाँ री। १२१।

गेल—दे० 'गली'।

गेली—(?) पगली। उदा० भोजन भवन भलो नहिं लागै, पिया कारण भई गेली। ८०।

गेह—(सं० गृह) घर। उदा० मुरली धुण सुण बीसराँ म्हारो कुणबो गेह। १०५।

गैल—दे० 'गली'।

गोकुल—(सं० गोकुल) एक प्राचीन गाँव जो वर्तमान मथुरा से पूर्व दक्षिण की ओर है। उदा० म्हारो गोकुल री ब्रजवासी। ६। १६३, १७६, १८६। **गोकुला**—उदा० गोकुला के वासी भले ही आए, गोकुला के बासी। १६३। १६३।

गोठड़ी—(सं० गोष्ठ) गोष्ठी। उदा० म्हारे घर आवो स्याम, गोठड़ी कराइयै। १२०।

गोधन—(स० गो+धन) गायों का धन। उदा० काछी गोप भेष मुकुट, गोधन सँग चारूँ। १८४।

गोप—(सं० गोप) ग्वाले। उदा० सहस गोप बिच स्याम बिराजे, ज्यों तारा बिच चन्द। १३६। १८४।

गोपाल—दे० 'गुपाल'।

गोपी—(सं० गोपी) गोप की स्त्री। उदा० गोपी दही मथत सुनियत है, कँगना के झणकारे। १६५।

गोपी लीला—गोपों की लीला। उदा० इण चरण कालियाँ नाथ्याँ गोपीलीला करण। १।

गोबरधन—(सं० गोवर्द्धन) पर्वत का नाम उदा० थें बिण म्हारे कोण खबर ले, गोवरधन गिरधारी। १३१। १।

गोमत—(स० गोमती) गोमती नदी। उदा० चरण पखार्‌या रतणाकर री धारा गोमत जोर। २०२।

गोबिन्द—(सं० गोपेन्द्र) कृष्ण। उदा० म्हे तो गुण गोविन्द का गास्या, हो माई। ३५। ३६, ४०, १२५, १३६, १४८, २६०। **गोबिन्दाँ**—गोविन्द को। उदा० माई री म्हा लियाँ गोविन्दाँ मोल। २२। **गोविन्दा**—गोविन्द का। उदा० माई म्हाँ गोविन्दा गुण गास्याँ। ३१।

गोविन्दाँ—दे० 'गोविन्द'।

गोबिन्दा—दे० 'गोविन्द'।

गोसाईं—(सं० गोस्वामी) गायों के स्वामी, कृष्ण। उदा० मैं अबला बल नाहि गोसाईं, राखो अबकै लाज। १३२।

गोहने—(सं० गोधन) साथ-साथ। उदा० गोहने गुपाल फिरूँ, ऐसी आवत मण में। १८४।

ग्याँण—(सं० ज्ञान) ज्ञान को। उदा० तीरथ वरताँ ग्याँण कथंता, कहा लिया करवत कासी। १६५। **ग्याण**—ज्ञान। उदा० ग्याण नसाँ जग बावरा ज्याकूँ नीर णा पीवाँ। २८। **ग्यान**—उदा० और सिंगार म्हांरे दाय न आवै, यो गुर ग्यान हमारो। २५। ३३। **ज्ञान**—उदा० पहली ज्ञान मानहि कीन्ही, मैं ममता की बाँधी पोट। १८३।

ग्याण—दे० 'ग्याँण'।

ग्यान—दे० 'ग्याँण'।

ग्राह—(सं० ग्राह) मगरमच्छ। उदा० ग्राह गह्याँ उबार्‌याँ अछत पर्‌याँ

बरदाण । १३६ ।

ग्रिह—(सं० गृह) घर । उदा० तुम देख्या बिन कल न पड़त है, ग्रिह अँगणाँ ण सुहाय । ६८ ।

ग्वालन—(सं० गो+पाल+न) (१) ग्वालों के । उदा० ग्वाल बाल सब करत कुलाहल, जय जय सबद उचारे । १६५ । (२) ग्वालिन । उदा० दधि को नाँव बिसर गई ग्वालन, 'हरिल्यो, हरिल्यो' बोलैं । १७८ । १७८ ।

घ

घँस—(सं० घर्षण) घिस । उदा० गिणता-गिणता घँस गई रे म्हाँरा आँगलियाँरी रेख । ११७ । **घँसिके**—घिसकर । उदा० जतन करों जन्तर लिखी बाधों, औखद लाऊँ घँसिकै । ७ । ७ । **घस**—घिसकर । उदा० जड़ी घस लावै । ७४ । **घिस**—घिस । उदा० गणता गणता घिस गयाँ रेखाँ, आँगरियाँ री सारी । ७७ । **घिस्या**—घिस गया । उदा० आवन जावन पाँव घिस्या रे (बाला) अँखिया भई राती । १८५ ।

घँसिके—दे० 'घँस' ।

घट—(सं० घट) (१) शरीर में । उदा० क्रोध कसाई रहत घट में, कैसे मिले गोपाल । १५८ । (२) हृदय में । उदा० या घट बिरहा सारी लगिहै, कै कोई हरिजन मानैं हो । ७६ । **घट-घट**—सब जगह । उदा० मीराँ प्रभु सरण गह्यीं जाण्या घट घट वाँ । ६ ।

घट (सं० घटन) । **घटसा** (१) घटता है-कम होता है । उदा० बढ़ या छिण छिण घट्या पल पल जाणणा कछु बार । १९६ । (२) दे० 'घटा' । **घटाणी**—घट गई । उदा० अरध नाम कुंजर लयाँ, दुख अवध घटाणी जाँ । १४० ।

घटा—(सं० घटा) घटा । **घट्या**—घटाएँ । काला पीला घट्या उमड्या बरस्यौ चार घरी । ८२ । **घटा**—उदा० घुमँट घटा ऊलर होइ आई, दामिन दमक डरावै । ७४ ।

घटाणी—दे० 'घट' ।

घट्या—दे० 'घट' ।

घण—(सं० घन) बादल । उदा० ज्यूँ चातक घड़कूँ रटै मछरी ज्यूँ पाणी हो । ८७ । **घण**—उदा० घण री धुण सुण मोर मगण भयाँ, म्हारे आँगण आज्यो जी । ११६ । १४२, १४२, १४२, १४६, १४६ । **घन**—उदा० मोर असाढ़ा कुरलहे, घन चात्रग सोह, हो । ११५ । ६२, १४७ ।

घड़ावुँ—(सं० घटन्) गढ़वाऊँ । उदा० बाली घड़ावुं बिट्ठल बर केरी, हार हरी नो मारे हैय रे । १४१ १४१

घड़िया—दे० 'घड़ी'।

घड़ी (सं० घटी)। **घड़िया**—एक घड़ी। उदा० तारां गणतां रेण विहाना, सुख घड़िया री जोवाँ। ८६। ११८, ११८। **घड़ी**—उदा० घड़ी चेण णा आवड़ाँ, थें दरसण विण मोय। १०२।

घण (१) (सं० घन) बड़ा हथौड़ा। उदा० काथ कथीर सूँ काम णा म्हारे, चढ़स्या घण री सारयाँ री। २४। (२) दे० 'घड़'।

घणा—(सं० घन) बहुत। उदा० पोस मही पाला घणा, अबही तुम न्हालो, हो। ११५। १४०। **घणेरा**—काफी मात्रा में। उदा० मीरां रे प्रभु गिरधर नागर थें विण तपण घणेरा। ११०। **घणेरो**—बहुत। उदा० णिरखाँ म्हारो चाव घणेरो मुखड़ा देख्यां थारां। ११०। **घणो**—बहुत। उदा० भोसागर मझधार अधाराँ थें विण घणो अकाज। ६२। ९६, १०८, १५०, १५४।

घणेरा—दे० 'घणा'।

घणेरो—दे० 'घणा'।

घणो—दे० 'घणा'।

घन—दे० 'घड़'।

घमका (अनु०)। **घमकास्याँ**—बजाऊँगी। उदा० हरि मन्दिर माँ निरत करावाँ घूँघर्‌या घमकास्याँ। ३१।

घमकास्याँ—दे० 'घमका'।

घर—(सं० गृह) वासस्थान। उदा० मीराँ तो गिरधर बिन देखे, कैसे रहे घर बसिके। ७। १३, २०, २४, २६, ३८, ७४, ७७, ७८, ९५, ९८, १०९, ११२, ११९, १२०, १२०, १२२, १२४, १३९, १४७, १४९, १५७, १६५, १६५, १८९, १९५। **घर-घर**—घर-घर में। उदा० घर-घर तुलसी ठाकर पूजा, दरसण गोविन्द जी को। १६०। **घरि** घर। उदा० भवण पति थें घरि आज्यो जी। ९६। १२१। **घरि घरि**—घर-घर। उदा० चढ़ती बैस नैण अणियाले, तू घरि घरि मत डोल। ५८। **घरेणु**—घर पर। उदा० छामनो घरेणु मारे सारू रे। १६१।

घर घर—दे० 'घर'।

घरि—दे० 'घर'।

घरि घरि—दे० 'घर'।

घरेणु (१)—(सं० ग्रहण = धारण) गहने। उदा० कूँची करावु करुणानन्द केरी तेमाँ घरेणु मारूँ घालू रे। १४१। (२) दे० 'घर'।

घस—दे० 'घँस'।

घाट—(सं० घट्ट) घाट, मार्ग। उदा० पाँव न चालै पंथ दूहेलो, आड़ा औघट घाट। ४४।

घामा—(सं० घर्म) धूप। उदा० तुम बिच हम बिच अन्तर नाहीं, जैसे सूरज घामा। ११४।

घायल—(सं० घात) घाव से पीड़ित। उदा० घायल री गत घायल जाण्याँ, हिवड़ो अगण सजोय। ७०। ७०, १०२।

घालूं—(सं० घटन) रखूं। उदा० कूँची करावुँ करुणानन्द केरी, तेमाँ घरेणु मारूँ घालूँ रे। १४१।

घाव—(सं० घात) चोट। उदा० बाहरि घाव कछु नहिं दीसै, रोम रोम दी पीर। १९२।

घिस—दे० 'घँस'।

घिस्या—दे० 'घँस'।

घुण—(सं० घुण) घुन, एक प्रकार का कीड़ा। उदा० स्याम बिना बौराँ भयाँ, मण काठ ज्यूँ घुण खाय। ९०। **घुन**—उदा० काठ लकरी बन परी काठ घुन

न्हाई। ८६।

घुन—दे० 'घुग'।

घुमँट—(सं० घूर्णन)। **घुमँट**—घुमड़ कर। उदा० घुमँट घटा ऊमर होइ आई, दामिन दमक डरावै। ७४। **घुमड़**—घुमड़ कर। उदा० उमड़ घुमड़ घण छायाँ पवण चल्याँ पुरवायाँ। १४२। १४६, १४७।

घुमड़—दे० 'घुमँट'।

घुमाय—दे० 'घूम'।

घुरा—(सं० घूर्णन)। **घुरास्याँ**—बजाऊँगी। उदा० नरभै निगाण घुरास्याँ, हो माई। ३५।

घुरास्याँ—दे० 'घुरा'।

घूंघट—(सं० गुंठ) घूंघट। उदा० म्हारो अँचरा णा छूने, बांको घूंघट खोले, हो। १८१।

घुँघर—(सं० घुघुरा या घुघु + रू)। पैरों में बाँधने का घुंघरू। उदा० साज सिंगार बाँध पग घुंघर लोकलाज तज नाची। १६। **घुँघर्याँ**—घूंघरू को। स्याम प्रीत री बाधि घुँघर्याँ मोहण म्हारो साँच्याँ री। १७। ३६। **घूंघरा**—घुँघरू। उदा० बीछिया घूंघरा रामनारायण रा अणवट अंतरजामी रे। १४१। १६३। **घूंघरया**—घुंघरू। उदा० हरि मन्दिर माँ निरत करावाँ घूंघरया घमकास्याँ। ३१।

घुँघर्याँ—दे० 'घुँघर'।

घूंघरा—दे० 'घुँघर'।

घूम—(सं० घूर्णन)। **घुमाय**—घुमाकर। उदा० पिया पियाला अमर रस का, चढ़ गई घूम घुमाय। ८०। **घूम**—घूमकर। उदा० पिया पियाला अमर रस का चढ़ गई घूम घुमाय। ८०। **घूमा**—घूमती हूँ। उदा० घायल री घूमा फिरा म्हारो दरद न जाण्याँ कोय। १०२।

घूमा—दे० 'घूम'।

घृत—(सं० घृत) घी। उदा० दध मथ घृत काढ़ लयाँ डार दया छूयाँ। १८।

घेरी—(सं० ग्रहण) घिर गई। उदा० यौ संसार विकार सागर, बीच में घेरी। ६३।

घोर—(सं० घोर) अँधेरी। उदा० घोर रैणाँ बिजु चमकाँ बार गिणताँ प्रभात। ६६। **घोरा**—गाजे। उदा० उमड़ घुमड़ चहुँदिस से आया, गरजत है घन घोरा, रे। १४७।

घोरा—दे० 'घोर'।

च

चँदण—(सं० चंदन) एक पेड़ जिसके हीर की सुगंधित लकड़ी का व्यवहार देव-पूजन और मस्तक आदि पर लेप में होता है। उदा० अगर चँदण की चिता बणाऊँ, अपणे हाथ जला जा। ८६। **चंदण**—उदा० चोवा चंदण अरगजा म्हा, केसर णो गागर भरी री। १४८। **चंदन**—उदा० कौन जतन करों मोरी आली, चंदन लाऊँ घँसिके। ७। १६२, १७५।

चँमेली—सं० चपकबेलि फूल का नाम

उदा० तोड़त जेज करत नहिं सजनी, जैसे चँमेली के फूल । ५४ ।

चग—(फा० चंग) डफ के आकार का एक छोटा बाजा । उदा० मुरली चंग बजत डफ न्यारो, संग जुवति ब्रजनारी । १७५ ।

चचल—(सं० चंचल) अस्थिर । उदा० णेणा चंचल, अटक णा माण्या, परहथ गयाँ विकाय । १३ । १५५ ।

चंडाल—(सं० चांडाल) क्रूर । उदा० काम कूकर लोभ डोरी, बाँधि मोहिं चडाल । १५८ ।

चद—(सं० चन्द्र) चन्द्रमा । उदा० बदन चद परगासताँ, मन्द-मन्द मुसकाय । १३ । १०१, १३६, १७४ । **चंदा**—चदा देख कमोद फूलाँ, हरख भयाँ म्हारे छाज्यो जी । ११६ । १८०, १६१ ।

चंदण—दे० 'चँदण' ।

चंदन—दे० 'चँदण' ।

चंदा—दे० 'चंद' ।

चंद्रका—(सं० चंद्रक) मोर के पंख के बीच मे स्थित चन्द्रमा के आकार का हिस्सा । उदा० मोर चंद्रका किरीट मुगट छब सोहाई । १२ ।

चकोर—(सं० चकोर) एक पक्षी जो चद्रमा का प्रेमी होता है और चंद्रमा के भ्रम में आकर अंगार खा लेता है । उदा० चंद को चकोर चाहै, दीपक पतंग दाहैं । १७४ । १६१ ।

चढ़्—(सं० उच्चलन) । **चढ़**—संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) उदा० पिया पियाला अमर रस का, चढ़ गई घूम घुमाय । ४० । **चढ़ चढ़**—चढ़-चढ़ कर । उदा० ऊँचा चढ़ चढ़ पंथ निहार्‌याँ, कलप कलप अखियाँ राती । १०६ । १४३ । **चढ़ती**—बीती हुई । उदा० चढ़ती वैस नैण अणियाले, तू घरि घरि मत डोल । ७८ । **चढ़्या**—चढ़ी । उदा० डूबताँ गजराज राख्याँ गणिका चढ़्या विमाण । १३४ । **चढ़स्याँ**—(१) चढ़ूंगी । उदा० गज से उतर के खर नहिं चढ़स्याँ, ये तो बात न होई । २५ । २४ । **चढ़ाय**—(१) चढ़ाकर । उदा० छाड़ि गये विसवासघात करि, नेह केरी नाव चढ़ाय । १७६ । १८२ । (२) संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) । उदा० भलो कह्याँ कोउ कह्याँ बुरोरी सब लया सीस चढ़ाय । १३ । **चढ़ी**—छा गई । उदा० चित्त चढ़ी म्हारे माधुरी मूरत, हिवणा अणी गड़ी । १८ । १८६ । **चढ़े**—चढ़ता है । उदा० साधु जननो सग जो करिये चढ़े तो चौगणो रँग रे । २० ।

चढ़—दे० 'चढ़्' ।

चढ़चढ़—दे० 'चढ़्' ।

चढ़ती—दे० 'चढ़्' ।

चढ़्या—दे० 'चढ़्' ।

चढ़स्याँ—दे० 'चढ़्' ।

चढ़ाय—दे० 'चढ़्' ।

चढ़ी—दे० 'चढ़्' ।

चढ़े—दे० 'चढ़्' ।

चतुर—(सं० चतुर) चालाक । उदा० जोगियो चतुर सुजाण सजणी, ध्यावैं सकर सेस । ११७ ।

चतुरभुज—(सं० चतुर्भुज) चार भुजाओं वाले भगवान् विष्णु (कृष्ण भी विष्णु के अवतार थे ।) उदा० चित्त माला चतुरभुज चूड़लो, शिद सोनी घरे जइये रे । १४१ ।

चमक्—(सं० चमत्कृत) । **चमक**—चमककर । उदा० उमगि घटा घन ऊलरि

आई, बीजू चमक डरावै हो। ६२। **चमक उठाँ**—चौंक उठी। उदा० चमक उठीं सुपनाँ सख जागताँ, मुख णा भूल्याँ जात। ७५। **चमकाँ**—चमकी। उदा० घोर रैणाँ बीजू चमकाँ, बार गिणताँ प्रभात। ६६। १४२। **चमके**—चमकती है। उदा० काली पीली बदली में बिजली चमके, मेघ घटा घनघोर, रे जी। १४५। **चमकै**—चमकती है। उदा० (उठ) कारी अँधियारी बिजरी चमकै, बिरहिणी अति डरपावै रे। ८१।

चमकाँ—दे० 'चमक्'।

चमके—दे० 'चमक्'।

चमकै—दे० 'चमक्'।

चरचा—(सं० चर्चा) स्मरण। उदा० तज कुसंग सतसंग बैठ नित, हरि चरचा सुण लीजै। १९९।

चरण—(सं० चरण) पैर। उदा० मण थे परस हरि रे चरण। १। १, १, १, १, १, ११, ७१, ३५, ३८, ४२, ५१, १२७, १२८, १३१, १४२, १४८, १५७, १६१, १६६, १७१, १७१, १८७, १९१, १९५, २०२। **चरणन**—पैरों में। उदा० मीराँ कहे प्रभु गिरधर नागर चरणन आवे चीत। ५५। ६७, ७६, ११०, १११, ११३, १३०। **चरणनि**—चरणों की। उदा०—रहूँ चरणनि तरि चेरी। ९४। **चरणाँ**—चरणों में। उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, हरि चरणाँ चित धाराँ। ८३। ८५, ९३, १०६, १११, १२८, १४५। **चरणाँरी**—मीराँ सरण गह्याँ चरणाँरी, लाज राखो महाराज। ६२। **चरणे**—चरणों में। उदा० मीराँ कहे प्रभु गिरधर नागर हरि ने चरणे आवूँ रे। १४१। **चरणो**—चरणों में। उदा० अठसठ तीरथ संतों ने चरणे, कोटि कासी ने कोटि गंग रे। ३०। **चरन**—पैर। उदा० मैं तो तोरे चरन लगी गोपाल। १२७।

चरणन—दे० 'चरण'।

चरणनि—दे० 'चरण'।

चरणाँ—दे० 'चरण'।

चरणा—दे० 'चरण'।

चरणे—दे० 'चरण'।

चरणो—दे० 'चरण'।

चरन—दे० 'चरण'।

चरयाँ—(सं० चतुर) चारों। उदा० भगवाँ भेख धर्‌याँ थें कारण, ढूढ्याँ चरयाँ देस। ६८।

चरावाँ—(सं० चर्) चराते हैं। उदा० जमणा किणारे कान्हा धेनु चरावाँ, बंशी बजावाँ मीठाँ वाणी। ११। १५४।

चल्—(सं० चल्)। **चलत**—चलते हुए। उदा० सुणियो मेरी बगड़ पड़ोसण, गेले चलत लागी चोट। १०३। **चलताँ**—चलता है। उदा० थे देख्याँ बिण कल णा पड़ताँ, णेणाँ चलताँ धाराँ। ८३। **चलतै**—चलते हुए। उदा० फाटी तो फूलड़ियां पाँव उभाणे, चलतै चरण घसे। १८७। **चलाय**—चलाकर। उदा० बिरह समँद में छोड़ गया छो, नेह री नाव चलाय। ९४। **चलास्याँ**—चलाऊँगी। उदा० स्याम नाव री झाँझ चलास्याँ, भौसागर तर जास्याँ। ३१। **चली**—चल पड़ी। उदा० ले मटुकी सिर चली गुजरिया, आगे मिले बाबा नन्दजी के छोना। १७७। **चलूँगी**—चलूँगी, अथवा पालन करूँगी। उदा० कोई निन्दो कोई बिन्दो, मैं चलूँगी चाल अपूठी ३३ **चले** संयुक्त क्रिया (सहा

यक क्रिया)। उदा० मैं जाणूँ या पार निभैगी, छाँड़ि चले अधबीच । ५७। **चलेगा**—भविष्यत्। उदा० मैं तो जाँणूँ सग चलेगा, छाँड़ि गया अधबीच । ५५। **चल्याँ**—चली। उदा० उमड़ घुमड़ घण छायाँ पवण चल्याँ पुरवाया। १४२। १५५। **चल्या**—चलता। उदा० चंचल चित्त चल्या णा चाला, बाँध्या प्रेम जजीर। १५५। **चालाँ**—(१) चलो। उदा० चालाँ मगवा जमणा काँ तीर। १६१। १५३, १५३। (२) चलती हूँ। उदा० चालाँ अगम वा देस, काल देख्याँ डराँ। १६३। **चाला**—चलाए। उदा० चन्चल चित्त चल्या णा चाला, बाँध्या प्रेम जजीर। १५५। **चाले**—चले गए। उदा० बिपत हमारी देख तुम चाले, कहिया हरिजी सूँ जाय। ७६। **चालै**—चलता। उदा० पाँव न चालै पंथ दूहेलो, आड़ा औघट घाट। ४४।

चलताँ—दे० 'चल्'।

चलतै—दे० 'चल्'।

चलाय—दे० 'चल्'।

चलास्याँ—दे० 'चल्'।

चली—दे० 'चल्'।

चलूंगी—दे० 'चल्'।

चले—दे० 'चल्'।

चलेगा—दे० 'चल्'।

चल्याँ—दे० 'चल्'।

चल्या—दे० 'चल्'।

चहर—(?)। **चहर रो बाजी**—चिड़ियों का खेल। उदा० यो संसार चहर रो बाजी, साँझ पड्याँ उठ जासी। १६५।

चहुँ—(सं० चतुः) चारों ओर। भरि-भरि मूठि गुलाल लाल चहुँ, देत सबन पै डारी। १७५। **चहुँ दिस**—चारो दिशाएँ। उदा० उमड़ घुमड़ चहुँ दिस से आया गरजत है घन घोरा, रे। १४७। **चहूँ दिस**—चारो दिशाएँ। उदा० उमग्या इन्द्र चहूँ दिस बरसाँ दामण छोड्या लाज। १४३।

चहूँ—दे० 'चहुँ'।

चाकर—(फा० चाकर) नौकर। उदा० म्हाणे चाकर राखाँजी, गिरधारी लाला चाकर राखाँजी। १५४। १५४, १५४।

चाकरी—नौकरी। उदा० चाकरी में दरसण पास्यूँ, सुमिरण पास्यूँ खरची। १५४।

चाख्—(सं० चाप)। **चाख चाख**—चख-चखकर। उदा० अच्छे मीठे चाख चाख बेर लाई भीलणी। १८६।

चाख—दे० 'चाख्'।

चातक—(सं० चातक) पपीहा नामक पक्षी। उदा० ज्यूँ चातक घड़काँ रटै मछरी ज्यूँ पाणी हो। ८७। **चात्रग**—चातक। उदा० चात्रग स्वाति बूँद मन माँही, पीव पीव उकलाँणी हो। ७३। ११५।

चादर—(फा० चादर)। **भगवीं चादर**—भगवे रंग का वस्त्र। उदा० काजल टीकी राणा हम सब त्याग्या भगवीं चादर पहर। ३४।

चार—(सं० चतुर)। चार लोग। अथवा कुछ लोग। उदा० गावत चार धमार राग तँह, दै दै काल करतारी। १७५। **चार घरी**—थोड़ी देर। उदा० काला पीला घट्या उमड़्या बरस्याँ चार घरी। ८२।

चारूँ—(सं० चर्) विचरण करूँ। उदा० काछी गोप भेष मुकुट, गोधन सँग चारूँ। १८४।

चाल—(सं० चल) आचरण। उदा०

कोई निन्दो कोई बिन्दो, मैं चलूँगी चाल अपूठी । ३३ ।

चालाँ—दे० 'चल' ।

चाला—दे० 'चल्' ।

चाले—दे० 'चल्' ।

चालै— दे० 'चल्' ।

चाव– (प्रा० चव) इच्छा । उदा० णिरख्याँ म्हारो चाव घणेरो मुखड़ा देख्याँ थाराँ ।११० । **चावें**—चाहते हो । उदा० जो तूं लगण लगाई चावै, तो सीस की आसन कीजै । १६१ । **चाहाँ**—चाहती हूँ । **भौ सागर म्हाँ बूड्याँ चाहाँ**– भौ सागर में डूबने वाली हूँ । उदा० भौसागर म्हाँ बूड्याँ चाहाँ, स्याम बेग सुध लीज्यो जी । ५० । **चाहे**– चाहता है । उदा० मीराँ के मन अवर न माने चाहे सुन्दर स्यामाँ । ११४ । **चाहै**—चाहता है । उदा० चंद को चकोर चाहै, दीपक पतग दाहैं । १३४ ।

चाहाँ– दे० 'चाव' ।

चाहें– दे० 'चाव' ।

चाहे—दे० 'चाव'

चाहै—दे० 'चाव' ।

चित—(सं० चित्त) मन । उदा० मीरों रे प्रभु गिरधर नागर हरि चरणाँ चित धार्‌याँ । ८३ । ८५, १२५, १४२, १६१ । **चित्त**— मन में । उदा० चित्त चढ़ी म्हारे माधुरी मूरत हिवड़ा अणी गड़ी । १४ । १००, १०६, १११, ११२, ११५, १४१, १५५, १६६, १६३, १६६, । **चीत**—उदा० मीराँ कहै प्रभु गिरधर नागर चरणन आवे चीत । ५५ । **चितचोर**— चित को चुराने वाला । उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर चरण कँवल चितचोर १६४

चितचोर—दे० 'चित' ।

चित्त—दे० 'चित' ।

चितवण–(सं० चेतना) नजर, दृष्टि । उदा० सुंदर वदन कमल दल लोचण, बाँकाँ चितवण णेणां समाणी । ११ । **चितवत**— देखते हुए । उदा० मैं जण तेरा पंथ निहारूँ, मारग चितवत तोरे । ६५ । **चितवनि**—देखने की । उदा० म्हारी आसा । चितवनि थारी, ओर णा दूजा दोर । ५ । **चितवाँ**—(१) देखिए । उदा० तनक हरि चितवाँ म्हारी ओर । ५ । (२) देखते हैं । हम चितवाँ थें चितवो णा हरि हिवड़ो बड़ो कठोर । ५ । **चितवो**—देखते । उदा० हम चितवाँ थें चितवो णा ...... । ५ ।

चितवत—दे०'चितवण' ।

चितवनि—दे० 'चितवण' ।

चितवाँ—दे० 'चितवण' ।

चितवो—दे० 'चितवण' ।

चिता—(सं० चित्या) चुनकर रखी हुई लकड़ियों का ढेर जिसपर मुरदा जलाया जाता है । उदा० अगर चँदण की चिता बणाऊँ, अपणे हाथ जला जा । ४६ ।

चितारियै—(स० चेतना) सुध लीजिए, स्मरण कीजिए (उदा० मैं तो हूँ तुम्हारी दासी, ताकूँ तो चितारियै । १२० । **चितार्‌याँ**—स्मरण किया । उदा० पपइया म्हारी कब रो वैर चितार्‌याँ । ८३ ।

चितार्‌याँ—दे० 'चितारियै' ।

चित्त— दे० 'चित' ।

चीज—(फा०चीज) अनाज । उदा० कालर अपणो ही भलो हे, जामें निपजै चीज । २६ ।

चीत—दे० चित

चीर—(सं० चीर) कपड़ा। उदा० झूठा पाट पटंवरा रे, झूठा दिखणी चीर। २६। ६१, १२२, १३७, १७०, १७१।

चुडलो—(सं० चूडा) हाथ में पहनने का (हाथी दाँत का) चूड़ा। उदा० चित्त माला चतुरभुज चुड़लो, शिव सोने घरे जइये रे। १४१। **चूड़लो**—उदा० बर्‌याँ साजण साँवरो री, म्हारो चुड़लो अमर हो जाय। २०१। **चूड़ों**—उदा० चूड़ों म्हाँरे तिलक अरु माला, सील बरत सिणगारो। २५।

चुण्—(सं० चिनु)। **चुणि-चुणि**—चुन-चुनकर। उदा० चुणि चुणि कलियाँ सेज बिछायो, नखसिख पहर्‌यो साज। १५१।

चुणि—दे० 'चुण्'।

चूँतरौ—(सं० चत्वार) चबूतरा। उदा० तुम गजगीरी को चूँतरौ रे, हम बालू की भीत। ५६।

चूडलो—दे० 'चुड़लो'।

चूडो—दे० 'चुड़लो'।

चेण—(?) चैन। उदा० घड़ी चेण णा आवड़ाँ, थें दरसण विण मोय। १०२। **चैण**—उदा० थे बिछड़्या म्हाँ कलपाँ प्रभुजी, म्हारो गयो सब चैण। १०३। ११८।

चेरी—(सं० चेटक) दासी। उदा० जोगी मत जा मत जा मत जा, पाँइ परूँ मैं तेरी चेरी हौं। ४६। ५८, ६३, ६४, ६४, १३०, १४८, १७८। **चेली**—दासी। उदा० मीराँ कूँ प्रभु दरसण दीज्यो जनम जनम की चेली। ८०।

चेली—दे० 'चेरी'।

चैण—दे० 'चेण'।

चैत—(सं० चेत) स्मरण। उदा० चैत चित्त में ऊमजी दरसण तुम दीजै हो ११५।

चोंच—(सं० चंचु)। पक्षियों के मुँह से निकला हुआ अगला भाग। उदा० चोंच कटाऊँ पपइया रे, ऊपरि कालर लूण। ८४।

चोक—(सं० चतुष्क) मंडप। उदा० दीपाँ चोक पुरावाँ हेली, पिया परदेस सजावा ७८। **चौक**—मंगल अवसर पर भूमि पर आटे आदि के द्वारा की गई रचना, जिसपर देव-पूजन आदि होता है।

चोट—(सं० चुट, आघात। उदा० सूणियो मेरी बगड़ पड़ोसण, गेले चलत लागी चोट। १८३।

चोडडे—(सं० चित्रित्) खुले आम। उदा० थे बह्‌याँ छाणे म्हा काँ चोड्डे लियाँ बजता ढोल। २२।

चोबा—(फा० चोबा) एक तरह का सुगंधित मिश्रित पदार्थ। उदा० चोबा चंदण अर-गजा म्हा, केसर णो गागर भरी १८८।

चोरी—(सं० चुर्) दूसरे की वस्तु बिना बताए ले लेना। उदा० चोरी न करस्याँ जिव न सतास्याँ, कांई करसी म्हांरा कोई। २५।

चोला—(सं० चोल) एक प्रकार का बहुत लंबा और ढीला-ढाला कुरता जिसे प्राय साधु, फ़क़ीर पहनते हैं। उदा० पँचरंग चोला पहर्‌या सखी म्हाँ, झिरमिट खेलण जाती। २२।

चौक—(सं० चतुष्क)।

चौगणो—(सं० चतुर्गुण) चार गुना। उदा० साधु जननो संग जो करिये चढ़े तो चौगणो रंग रे ३०।

चौमास्याँ—(सं० चतुर्मास्य) वर्षा काल के चार महीने। **चौमस्यां की बावडी**—चौमासे या वर्षा ऋतु म

बावड़ी या पोखरी। उदा० चौमस्याँ री बावड़ी, ज्या कूँ नीर णा पीवाँ। २८।

चौरासी—(सं० चतुरशीति) चौरासी लाख योनियाँ। उदा० राम नाम बिनि मुकुति न पावा, फिर चौरासी जावा १५६।

च्यार—(सं० चतुर) चार। **दिन च्यार**—थोड़े दिन। उदा० दासी मीराँ लाल गिरधर जीवणा दिन च्यार। १९६। **दोय च्यारी**—कुछ। उदा० सखियाँ मिलि दोय च्यारी, बावरी भई हैं सारी। १७४।

च्यारी—दे० 'च्यार'।

छ

छक्—(?)। **छकी**—संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया)। **छकी है**—तृप्त हुई है। उदा० कृष्ण रूप छकी है ग्वालिन औरहि और बोलै। १७८।

छकी—दे० 'छक्'।

छतियां—(सं० छादिन्) छाती। उदा० सबदाँ सुणता मेरी छतियाँ काँपाँ मीठो थारो बैण। १०३। **छाती**—हृदय। उदा० थाँ देख्याँ बिण कल णा पड़ताँ जाणे म्हारी छाती। १०६। १२३, १८२, १५८।

छतीशाँ—(सं० षट् + त्रिंश) छत्तीस। **छतीशाँ बिंजण**—छत्तीस प्रकार के पकवान। उदा० छप्पन भोग छतीशाँ बिंजण, पावाँ जन प्रतिपाल। ४७।

छत्र—(सं० छत्र) मुकुट के ऊपर लगा हुआ छत्र के आकार का। उदा० मुकुट ऊपर छत्र बिराजे, कुण्डल की छबि न्यारी। १७१।

छप्पन—(सं०) छप्पन। **छप्पन भोग**—छप्पन प्रकार के भोग उदा० छप्पन भोग छतीशाँ बिंजण, पावाँ जन प्रतिपाल। ४७।

छब—(सं० छवि) छवि—सुन्दरता। उदा० या छब देख्याँ मोह्याँ मीराँ, मोहन गिरवरधारी जी। २। १०, १०, १२, १७, ७१, १३१, १५२, २०२। **छबि**—उदा० सुन्दर बदन जोवताँ, थारी छवि बलिहारी। ५१। १७१। **छबीले**—सुंदर। उदा० छैल छबीले नवल कान्ह सँग स्यामा प्राण पियारी। १७५। **छवी**—सुंदरता। उदा० मुकुट ऊपर छत्र बिराजे, कुण्डल की छवि न्यारी। १७१।

छबि—दे० 'छब'।

छबीले—दे० 'छब'।

छमासी—(सं० षट् + मास + ई) छः महीने की। **भयाँ छमासी रैण**—रात लंबी हो गई। उदा० कल णा परताँ पल हरि मग जोवाँ भयाँ छमासी रैण। १०३।

छवन्द (सं० छद)—छाई उदा०

दास कबीर घर वालद जो लाया, नामदेव की छान छवन्द । १३६ ।
छवि—दे० 'छव' ।
छाँड़—(सं० छोरण) । छाँड़—छोड़कर । उदा० परूण छाँड़ पग धाइयाँ पसुज्ण पटाणी जी । १४० । छाँड़ि—छोड़कर । उदा० मैं तो जाँणूं संग चलेगा छाँड़ि गया अधवीच । ५५ । ५७ । छाँड्याँ—छोड़ा । उदा० भाया छाँड्याँ, बन्धा छाँड्याँ, छाँड्याँ सगाँ सूयाँ । १८ । छाड़्याँ—छोड़ दिया । उदा० अमृत प्यालो छाड़्याँ रे, कुण पीवाँ कड़वा नीरा री । २४ । ६६, १०४, १०४ । उदा० छाड़ि गये बिसवासघात करि णेह केरी नाव चढ़ाय । १७६ । छोड़—छोड़कर । उदा० छोड़ मत जाज्यो जी महाराज । ४८ । ६४ । छोड़्याँ—छोड़ गया । उदा० छोड़्या म्हाँ विस्वास सगाती, प्रेम री बाती जलाय । ६४ । छोड़्या—छोड़ा । उदा० उमग्याँ इन्द्र चहूँ दिस बरसाँ दामण छोड़्या लाज । १४३ । छोड़ी—(संयुक्त क्रिया, मुख्य क्रिया) उदा० पूर्व जनम की प्रीत पुराणी सो क्यूँ छोड़ी जाय ४२ । छोड़े—छोड दिया । उदा० माणिक मोती हम सब छोड़े, गल में पहनी सेली । ८० ।
[छाँ]ड़—दे 'छाड़' ।
[छाँ]ड़ि—दे० 'छाँड़' ।
छाई—(सं० —किसी वस्तु पर किसी दूसरी वस्तु का इस प्रकार फैलना जिससे वह पूरी तरह ढक जाए । छाई है—छाई हुई है । उदा० पात ज्यूं पीरी परी, अरु विपत तन छाई । ८६ ।
छाज्यो—(१) छा जाओ, आच्छादित हो जाए उदा० चंदा देख कमोदण फूलाँ, हरख भया म्हारे छाज्यो जी । ११६ । (२) मिटा दो । उदा० मीराँ विरहण गिरधर नागर, मिल दुख ददा छाज्यो जी । ११६ । छाय—संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) उदा० साँवलिया म्हारो छाय रह्या परदेस । ६८ । १७६ ।
छायाँ—छा गया । उदा० नंदननदन मण भायाँ बादलाँ णभ छायाँ । १४२ । १४२ । छाये—छा गए । उदा० आप तो जाय बिदेसाँ छाये, जिवड़ो धरत ण धीर । १२२ ।
छाँड़्याँ—दे० 'छाँड़' ।
छाड़्याँ—दे० 'छाड़' ।
छाड़ि—दे० 'छाँड़' ।
छाणे—छिपकर । उदा० थे कह्याँ छाणे म्हाँ काँ चोड़े, म्याँ बजंता ढोल ।२२।
छान – छिपकर । उदा० दासि मीराँ लाल गिरधर, छान ये बर बर्‌याँ । १७२ ।
छाती-- दे० 'छतियाँ' ।
छान—(१) (सं० छादन) झोंपड़ी । उदा० दास कबीर घर वालद जो लाया, नामदेव की छान छवन्द । १३६ । दे 'छाणे' ।
छानै— (सं० चालन्) ढूंढने से । उदा० मीराँ के पति रमैया, दूजो नहिं कोई छानै हो । ७३ ।
छामलो—दे० 'साँवरो' ।
छाय —दे० 'छा' ।
छायाँ—दे० 'छा' ।
छाये—दे० 'छा' ।
छिटका—(सं० क्षिप्र) । छिटकावाँ—बिखरा लूं । उदा० कहो तो मोतियन की माँग भरावाँ, कहो छिटकावाँ केस । १३५ ।
छिण—(सं० क्षण) क्षण । उदा० ऐसी कहा वेद पढी छिण मे बिमाण चढी

। १८६ । १६६ । छिन— उदा० था मूरति म्हारे मण अंग छिन भरि न्ह् यौड़ ण जाइ । ११६ । छिनिछिनि—क्षण प्रति क्षण । उदा० पलका पलका मांहि जुग से बीतै, छिनि छिनि विरह जरावै हौ । ६२ ।

छिप्—(सं० क्षेपण) छिप । छिप गई—संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) । उदा० आवत देखी किसन मुरारी, छिप गई राधा प्यारी । १७१ । छुप गई—उदा० म तो छुप गई लाज की मारी । १७१ ।

छिरक्—(सं० क्षिप्) । छिरकत— छिड़कते हैं । उदा० चन्दन केसर छिरकत मोहन, आपने हाथ बिहारी । १७५ ।

छिरकत—दे० 'छिरक्' ।

छी— दे० 'थी' ।

छीज्—(सं० क्षय) । छीजै—क्षीण होता है । उदा० दिन नहिं भूख रैण नहिं निंदरा यूं तण पल पल छीजै हो ।१०७। १६१ ।

छीजै—दे० 'छीज्' ।

छुट—(सं० छुट्) । छूटी—छूटी हुई, खुली हुई । छूटी अलक—बिखरी हुई जुल्फें । उदा० छूटी अलक कुंडल ले उरझी झड़ गई कोर किनारी । १७० । छूटण—छूटने । उदा० लागी लगनि छूटण की नाहीं,अब क्यूं कीजे आंटड़ियाँ । १०८ । छूटी— अलग हुई । उदा० मण की मैल हियतें न छूटी, दियो तिलक सिर धोय । १५८ ।

छुटी—दे० 'छुट्' ।

छुधा—(सं० क्षुधा) भूख । उदा० दीन हीन ह्वै छुधा रत से राम नाम ण लेत । १५८ ।

छुप—दे० 'छिप' ।

छुवे (सं० छुप्) स्पर्श करता है । उदा० म्हांरी अंगुली ण छुवे बांकी बहियाँ मोरे, हो । १८१ ।

छूं—दे० 'हूँ' ।

छूट—दे० 'छुट' ।

छूटण—दे० 'छुट्' ।

छूटी—दे० 'छुट्' ।

छूयां—(सं० छच्छ—) छाछ । उदा० दध मथ काढ़ लयाँ डार दयाँ छूयाँ । १८ ।

छेह—(सं० क्षार) । लटक बतावे छेह—शीघ्र ही नष्ट कर देता है । उदा० बहता बहैजो उतावला रे, वे तो लटक बतावे छेह । ५६ ।

छैं—दे० 'हैं' ।

छैल—(सं० छवि + इल्ल) सुन्दर और बना ठना आदमी । उदा० छैल बिराणै निवांण कूं हे, जामें निपजै चीज । २६ । १७५ ।

छो—(१) दे० 'है' । (२) दे० 'हो' ।

छोड़—दे० 'छांड़' ।

छोड़या—दे० 'छांड़' ।

छोड़ी—दे० 'छांड़' ।

छोड़े—दे० 'छांड़' ।

छोना—(सं० शावक) कुमार । उदा० ले मटुकी सिर चली गुजरिया, आगे मिले बाबा नन्द जी के छोना । १७७ ।

छौ—दे० 'हो' ।

ज

जंजीर—(फा० जंजीर) फंदा। उदा० चंचल चित्त चल्या णा चाला, बाँध्या प्रेम जंजीर। १५५।

जंतर—(सं० यन्त्र) एक तावीज जिसमें मन्त्र या कोई टोटके की वस्तु रहती है। उदा० जतन करो जन्तर लिखी बांधों, ओखद लाऊँ घँसिके। ७। ७।

जइये—दे० 'जा'।

जक—चैन। उदा० दरसण विण मोहि जक ण परत है, चित्त मेरो डावांडोल। १००। १०८, १२६।

जग—(सं० जगत्) संसार। उदा० थें विण म्हारो जग णा सुहावाँ, निरख्याँ सब संसार। ४। १२, १७, १६, १६, १६, २८, २६, २६, ४४, ४५, ४८, ५२,५३, ६५, ७३, ६२, ६३, ६७, १०४, १०६, ११२, १२८, १३३, १४०, १६४, १६७, १६७, २००। **जगत ज्वाला हरण**—संसार के दुखों को हरने वाला। उदा० सुभग सीतल कँवल कोमल जगत ज्वाला हरण। १। १८, ३८, ५८, ८६, १०६ **जगताँ**—जगत से। उदा० भगत गणा प्रभु परचाँ पावाँ, जावाँ जगताँ दूर्‌या री। २४।

जगजीवन—(सं० जगत + जीवन) संसार का जीवन। उदा० झाँझरिया जगजीवन केरा, कृष्णाजी कड़ला ने काँवी रे। १४१।

जगत—दे० 'जग'।

जगतां—दे० 'जग'।

जगमग—(अनु०) चमकीला। उदा० झूठा माणिक मोतिया री। झूठी जगमग पोति। २६।

जगा—(सं० जागरण)। **जगावाँ**—(१) जग रहे हैं, सामने आ रहे हैं। उदा० बड़े घर ताली लागाँ री, पुरबला पुन्न जगावाँ री। २८। (२) जगाते हैं, जगाती है। उदा० गव गोवाँ सुख नींदड़ी म्हारे नैण जगावाँ। २८। ७८। **जागत**—जागते हुए। उदा० पिया बिन मेरी सेज अलूनी, जगत रैण बिहावै। ७४। ६२। **जागाँ**—जागती हूँ। उदा० री म्हाँ बैठ्याँ जागाँ, जगत सब सोवाँ। ८६।

जागा—जागकर। उदा० सूनी सेजाँ ब्याल बुझायाँ जागा रेण बितावाँ। ७८। **जागी**—उत्पन्न हुई। उदा० स्याम मिलण रे काज सखी, उर आरति जागी। ६१। ६१। **जागो**—उठो। उदा० जागो बंसी वारे ललना, जागो मोरे प्यारे। १६५। **जाग्याँ**—उदित हुआ। उदा० भाग हमारो जाग्याँ रे, रतणाकर म्हारी सीर्‌याँ री। २४।

जगावाँ—दे० 'जगा'।

जटित—(सं० जटित) जड़ा हुआ। उदा० पीतांबर कट काछनी काछे, रतन जटित माथे मुकट कस्यो। ८। १५२। **जड़ाय**—संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) ताला

दियो जड़ाय—ताला लगवा दिया। उदा० पहरो भी राख्यो चोकी बिठाय्यो, ताला दियो जड़ाय। ६८।

जड़ो—(सं० जड़) वह वनस्पति जिसकी जड़ औषध के काम में लाई जाय। उदा० अटक्यो प्राण सावरो प्यारो, जीवण मूर जड़ी। ११। ७४।

जणम—(सं० जन्म) जन्म। उदा० मीरा रो गिरधर मिल्यारी, पूरब जणम रो भाग। २७। ५१, १५६, १५८, १६५, १६६, २०१। **जणम जणम**—जन्मजन्मान्तर। उदा० जणम जणम रो कावड़ो। म्हारी प्रीत बुझाय। ६५, ५१, १०१, १०४, १०६, १२८, १५१, १५४, २००, २०१।

जनम—जन्म। उदा० पूर्व जनम की प्रीत पुराणी सो क्यू छोड़ी जाय। ८२। ५८, ६८, १२३, १२५। **जनम जनम**—उदा० मीरा के प्रभु गिरधर नागर, जनम जनम रो साथी। ३। ३०, ७७, ८०, १०४। **जन्म**—उदा० मीरा कूं प्रभु दरसण दीज्यो पूरब जन्म को कोल। ८२। १६७।

जणम जणम—दे० 'जणम'।

जनम—दे० 'जणम'।

जनम जनम—दे० 'जणम'।

जन्म—दे० 'जणम'।

जपाँ—(सं० जप्) जपना है। उदा० सांवरो णाम जपां जग प्राणी, कोट्या पाप कट्यां री। २००।

जब—(सं० यदा) जिस समय। उदा० न्हाय धोय जब देखण लागी, सालिगराम गई पाय। ४१। ६१, ७०, १८७।

जम—(सं० यम) यमदूत। उदा० अजामिल अध पाप ऊधरे जम त्रास नसानी जी। १६०।

जमण—(सं० यमुना) यमुना नदी। उदा० स्याम कन्हैया स्याम कमरयाँ, स्याम जमण रो नीर। १६६। **जमणाँ**—उदा० निरमल णीर बह्या जमणाँ माँ, भोजन दूध दही काँ। १६०। **जमणा**—उदा० जमणा किनारे कान्हा धेनु चरावाँ, वंशी बजावाँ मीठाँ वाणी। ११। २४, १६१, १६१, १६६। **जमणाजी**—यमुना। उदा० आधी रात प्रभु दरसण दीस्यो जमणाजी रे तीरा। १५८। **जमुना**—उदा० मैं जल जमुना भरन गई थी, आ गयो कृष्न मुरारि, हे माय। १६६।

जमणाँ—दे० 'जमण'।

जमणा—दे० 'जमण'।

जमुना—दे० 'जमण'।

जय—(सं० जय)। **जय-जय**—विजय ध्वनि। उदा० ग्वालन बाल सब करत कुलाहल, जय जय सबद उचारे। १६५।

जरजर—(सं० जर्जर) जीर्ण। उदा० धुण मुरली सुण सुध बुध बिसराँ, जर जर म्हारो सरीर। १६६।

जर—(सं० ज्वलन) **जर**—जलाता है। उदा० पलक पलक मोहि जुग से बीतें, छिनि छिनि बिरह जरावै हो। ९२, ११५। **जल**—जलकर। उदा० दीपक जाण्या पीर णा पतंग जल्या जल खेह। १०५। **जल-बल**—जल-बलकर। उदा० जल बल भई भस्म की ढेरी, अपणे अंग लगा जा। ४६। **जला**—जलाकर। उदा० अगर चंदण की चिता बणाऊँ, अपणे हाथ जला जा। ४६। **जलाय**—जलाकर। उदा० छोड्या म्हाँ विश्वास सँगाती, प्रेम री बाती जलाय। ६४। **जलै**—जलता है। उदा० हरि विन जिवड़ो यू जलै रे (बाला), ज्यूँ दीपक

सँग बाती। १८५। **जलो**—संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया)। उदा० मीराँ रो प्रभु गिरधर नागर, दुरजन जलो जा अँगीठी। ३३। **जल्या**—जल गया। उदा० दीपक जाण्या पीर णा, पतंग जल्या जल खेह। १०५। **जाराँ**—जल गया। उदा० बिथा लगाँ तण जाराँ जीवण, तपता बिरह बुझाज्यों जी। ६६। **जारी**—जलाई हुई। उदा० (इक) कारी नाग बिरह अति जारी, मीराँ मन हरि भाये रे। ८१।

जरावै—दे० 'जर'। **जरि राखूँ**—बंद रखूँ। उदा० जो तुम आओ मेरी वखरियाँ, जरि राखूँ चन्दन किवारियाँ। १६२।

जरि—दे० 'जर्'।

जल—(१) (सं० जल)। उदा० असुवाँ जल सींच सींच प्रेम बेल बूयाँ। १८, ८०, ८६, ८६, ८६, ६०, १०१, ११५, ११६, १४६, १५८, १६८, १६६, १६६, १७२, १७३, १७४, १६०, १६१। (२) दे० 'जर्'

जला—दे० 'जर्।

जलाय—दे० 'जर'।

जलै—दे० 'जर'।

जलो—दे० 'जर्'।

जल्या—दे० जर् ?

जस—(१) (सं० यादृश) जिस प्रकार। उदा० लोकलाज कुल काण जगत की, दइ बहाय जस पाणी। ३८। (२) (सं० यश)। उदा०पुतनाम जस गाइयाँ गज सारा जाणी जी। १४०।

जसुमति—(सं० यशोदा) यशोदा। उदा० सुघर कल प्रवीण हाथन सूँ, जसुमति जू णे सवारियाँ। १६२। **जसोदा**—उदा० णन्द जसोदा पुत्र री प्रगट्याँ, प्रभु अविनासी। ६।

जहर—(अ० जहर) विष। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, इमरित कर दियो जहर। ३४। ३८, ४१।

जहाँ—(सं० यत्र) जिस जगह। उदा० जहाँ बैठावे तितही बैठूँ बेचे तो बिक जाऊँ। २०।

जहाण—(फा० जहान,) जहान दुनिया। उदा० भीलण कुबजा तार्‌याँ गिरधर जाण्याँ सकल जहाण। १३४। १३६।

जाँच—(सं० याचन्) **जाँची**—जाँच की। उदा० मीराँ सिरि गिरधर नट नागर भगति रसीली जाँची। १६। **जाँच्याँ**—जाँच करती हूँ। उदा० णाच्च णाच म्हाँ रसिक रिझावाँ, प्रीत पुरातन जाँच्याँ री। १७। ३७।

जाँची—दे० 'जाँच्'।

जाँच्याँ—दे० 'जाँच्'।

जाँणै—(सं० ज्ञान) जानता हूँ। उदा० रोगी अंतर बैद बसत है, बैद ही ओखद जाँणै हो ७३। ७३, । **जाँनै**—जाना। उदा० जब लागी तब कोउ न जाँनै, अब जानी संसार १२७, ।

जाँया—दे० 'जा'

जा[१] (सं० यान)। **गई**—(१) संयुक्त क्रिया (सहायक क्रिया)। उदा० कर चरणामृत पी गई रे, गुण गोविन्द रा गाय ४०। ४०, ४१, ६४, ११७, १७०, १७०, १७८, (२) संयुक्त काल-उदा० मैं जल जमुना भरन गई थी, आ गयो कृश्न मुरारी, हे माय १६६, (३) मूलकाल—उदा० श्री लाल गोपाल के सँग काहे नाहीं गई १८२,। १७४, १८२, १८७, १८७। **गयाँ**—(१) संयुक्त क्रिया (सहायक क्रिया) उदा० णेणाँ चंचल,

अटक था माण्या, पग्हूया गया बिनाय १३, । ५२, ५२, ५२, ७७, १५५ । (२) संयुक्त काल । (मुख्य क्रिया) । उदा० जल जमुना मा भरवा गयाँ ताँ हूताँ गागर माथे हेमनी रे १७३, । (३) मूल काल । उदा० भूख गयाँ निदरा गयाँ पापी जीव णा जावाँ जी ९६ । **गया**—(१) संयुक्त क्रिया (सहायक क्रिया) । उदा० मुगणाँ मा म्हारे परण गया पायाँ अचल सोहाग २७ । ४४, ५५, ५६, ७२, ११७, ११७ । (२) संयुक्त काल (मुख्य क्रिया) । उदा० बिरह समंद मे छाँड़ गया छो, नेह री नाव चलाय ६४ । (३) मूलकाल । उदा० आया म्हारे आगणा फिर गया मैं जाण्या खोय ४३ । ४३, ६४, **गये**— (संयुक्त क्रिया (सहायक क्रिया) । उदा० आवण कह गये अजहूँ न आये जिवड़ो अति उकलावै ६७,।१७९, संयुक्तकाल (मुख्य क्रिया) । उदा० किण सँग खेलूँ होली, पिया तज गये हैं अकेली ८०, (३) मूलकाल । उदा० होजी हरि कित गये नेह लगाय १७९ । (४) अव्यय (बीतने पर) उदा० रैण पड़ै तब ही उठि जाऊँ, भोर गये उठि आऊँ २०, **गयो**—(१) संयुक्त क्रिया (सहायक क्रिया) । उदा० तरकस तीर लग्यो मेरे हियरे गरक गयो सनकाणी ३८, । ६५, १७७, १७७ । (२) मूलकाल । उदा० थे बिछड़्या म्हाँ कलपाँ प्रभुजी, म्हारो गयो सब चैण १०३ । **जइये**—जाइये । उदा० चित्त माला चतुरभुज चुड़लो, शिद सोनी घरे जइये रे १४१ ।

जाँया—जाकर । उदा० जाग कियाँ बलि लेण इन्द्रासण, जाँया पाताल पराँ १८१ **जा** (१) संयुक्त क्रिया (सहायक क्रिया) । उदा० मीरा रो प्रभु गिरधर नागर, दुरजन जलो जा अँगीठी ३३ । ४६, ४६, ४६, ४६ । (२) मूलकाल । उदा० जोगी मत जा मत जा मत जा, पाइ परूँ मैं तेरी चेरी हो ४६ । **जाई**—(संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) । उदा० प्रीतम कूँ पतियाँ लिखूँ कउवा तू ले जाइ ८४ । ८४, ११६ । (२) मूल काल । उदा० प्रीतम बिणि तिमि जाइ न सजणी, दीपक भवन न भावै हो ९२, । (३) जाकर । उदा० मधुबन जाइ भये मधुबनिया, हम पर डारो प्रेम को फंदा १८० ।

जाई—(१) संयुक्त क्रिया (सहायक क्रिया) । उदा० मीन जल से बाहर कीना, तुरत मर जाई ८९, १२, ८९ । **जाऊँ**—(१) सामान्य वर्तमान । उदा० मै तो गिरधर के घर जाऊं २० । (२) संभावनार्थक । उदा० जहाँ बैठावें तितही बैठूं, बेचे तो बिक जाऊँ २० । २०, **कहाँ-कहाँ जाऊँ**—किस-किस जगह जाऊँ । उदा० कहाँ कहाँ जाऊँ तेरे साथ कन्हैया १७६ । **कित जाऊँ**, कहाँ जाऊँ, उदा० काँइ करूं कित जाऊँ री सजनी नैणा गुमायो रोइ ४४ । ८५, १७२, । **कणी रे जाऊँ**—कहाँ जाऊँ । उदा० रावरी होइ कणी रे जाऊँ, है हरि हिवड़ा रो साज । १३२ । **जाज्यो**—जाइये । उदा० छोड़ मत जाज्यो जी महाराज ४८ । ५०, १३० । **जाण न दीजै**—जाने मत दीजिए । उदा० असा प्रभु जाण न दीजै हो १६ । **जाणा**—संयुक्त क्रिया (सहायक क्रिया) **गणताँ णा जाणा**—गिना नहीं जाता । उदा० बिरद बखाणाँ गणताँ णा जाणा थाकाँ वेद पुराण **जात** (१)

जाते हुए। उदा० आत न दीसे जात न दीसे, जोगी किसका मीत ५५, १७६, । (२) जाता (सामान्य वर्तमान)। उदा० मीराँ दासी स्याम राती, ललक जीवणाँ जात ६६ । १९६, (३) संयुक्त क्रिया (सहायक क्रिया) । उदा० चमक उठाँ सुपनाँ लख सजणी, सुध णा भूल्याँ जात ७५ । ८६, (४) संयुक्त काल (मुख्य क्रिया) । उदा० हुं जल भरने जात थी सजनी, कलम माथे धर्‍यो १७२ । १३५ **जाताँ**—जाते हुए। उदा० हरि मंदिर जाताँ पाँव लिया रे दूखे, फिर आवे सारो गाम रे १५७ । **जाती**—सामान्य वर्तमान उदा० म्हारा पियाँ म्हारे हीयड़े बसताँ णा आवाँ णा जाती २३ । २३, १५६, १८५।

जाय (१) संयुक्त क्रिया (सहायक क्रिया) । उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर विणा पल रह्याँ णा जाय १३ । ४२, ४२, ६४, ७२, ७२, ७६, ९०, १०१, १०१, (२) जाकर । उदा० साँप पिटारा राणा भेज्यों, मीराँ हाथ दियो जाय ४१, ७६, १२२ । (३) संभावनार्थक । उदा० क्यूं तरसावाँ अंतरजामी, आय मिलो दुख जाय १०१ । (४) सामान्य वर्तमान । उदा० झगड़ो थाय त्याँ दोढ़ी ने जाय रे मूकी ने घर ना काम, रे १५७ । ४०, । (५) संभावनार्थक । उदा० क्यूं तरसावा अंतरजामी, आय मिलो दुख जाय १०१ ।

जायाँ—संयुक्त क्रिया (सहायक क्रिया) । उदा० पीय विण रह्याँ णा जायाँ ७१ । ७५ । **जावत**—जाता है। उदा० हिल मिल बात बणावत मीठे पीछे जावत भूल ६०, १८५, **जावाँ**—(१) सामान्य वर्तमान उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, बार बार बलि जावाँ १५ । २४ २४ २८ २९, ४८, ६९, ६९, ६९, १०४, १२७, १४४, १५६, १९७ । (२) जाओ । उदा० देस बिदेसा णा जावाँ म्हारी अणेशा भारी ७७ । (३) संभावनार्थक । उदा० कहा, कराँ कित जावाँ सजणी, म्हातो स्याम डसी ८८ । २४ । (४) संयुक्त क्रिया । सहायक क्रिया) । उदा० स्याम विणा सखि रह्या णा जावाँ ६९ । **जावा**—(१) सामान्य वर्तमान । उदा० गंगा जमणा काम णा म्हारे, म्हाँ जावाँ दरियावाँ री २४ । (२) आज्ञार्थक । उदा० पूरब जणम री प्रीत पुराणी, जावा णा गिरधारी ५१ । **जावादे**–जाने दे। उदा० जावादे जावादे जोगी किसका मीत ५७ ।

जावै—संयुक्त क्रिया (सहायक क्रिया) । उदा० मीराँ कूँ प्रभु दरसण दीज्यौ आँणद बरण्युं न जावै ६७ । (२) सामान्य वर्तमान । उदा० प्रीतम पनग डस्यो कर मेरो, लहरि लहरि जिव जावै हो ९२ । ७४ । **जासी**—(१) सामान्य भविष्यत (जाएगा, जाओगे) । उदा० तुम देखे बिन कलि न परति है, तलफि तलफि जिव जासी ४९ । ४९ । (२) संयुक्त क्रिया (सहायक क्रिया) । उदा० जेताई दीसा धरण गगन माँ, तेताई उठ जासी १९५ । १९५, १९५ । **जासे**—सामान्य भविष्यत् (जाएँगे) । उदा० निन्दा करस नरक कुंड माँ, जासे थासे आँधला अपंग रे ३० । **जास्याँ**—सामान्य भविष्यत (जाऊँगी) । उदा० जिण मारग म्हाँरा साध पधाराँ, उण मारग म्हे जास्याँ २५ । २९, ३१, ३१, ३५, **ज्याशी**—उदा० मीराँ दासी सरणा ज्याशी, गई । कीज्याँ बेग निहाल ४७ ।

ज्यासी—संयुक्त क्रिया (सहायक क्रिया)

जाण्यां । उदा० जग सुहाग मिथ्यारी सजणी, होयां हो मट ज्यासी १६४ । जा (सं० यः) जिस । उदा० जा घट बिरहा सोइ लखि है, कै कोई हरिजन मानै हो ७३ । **जाके**—जिसके । उदा० जाके संग सिधारता है, भला कहै सब लोइ ३६ । **जामें**—जिनमें । उदा० कालर अपणो ही भलो है, जामें निपजै चीज ८६ । **जामें**—जिसमें । उदा० साँची पियाजी री गुदड़ी जामें निरमल रहै सरीर २६ ।

जाइ—दे० 'जा''

जाई—दे० 'जा''

जाऊँ—दे० 'जा''

जाके—दे० 'जा''

जाग—(सं० यज्ञ) यज्ञ, हवन । उदा० जाग कियाँ बलि लेण इन्द्रासण, जायाँ पाताल पराँ १८८ ।

जागाँ—दे० 'जगा'

जागा—दे० 'जगा'

जागी—दे० 'जगा'

जागीरी—(फा० जागीर + ई) जागीर । उदा० भाव भगत जागीरी पास्यूँ, जणम जणम री नरमी १५४ ।

जागो—दे० 'जगा'

जाग्याँ—दे० 'जगा'

जाचूँ—(सं० याचन) याचना करूँ । उदा० मीराँ कहै प्रभु गिरधर नागर, हरि चरणे जाचूँ रे १६१ ।

जाज्यो—दे० 'जा''

जाण—[1] दे० जा''

जाण (सं० ज्ञान) जानकर । उदा० जूठे फल लीन्हें राम, प्रेम की प्रतीत जाण १८६ । **जाणई**—जानता । उदा० पाणी पीर ना जाई मीण तलफि तज्याँ देह १०५ । **जाणाँ**—(१) जान लिया । उदा० जाणाँ रे मोहणा, जाणाँ थारी प्रीत । (२) सामान्य वर्तमान (जानती) । उदा० प्रेम भगति रो पैड़ा म्हारो, अवर णा जाणाँ रीत ५६ । **जाणा**—(१) जान लिया । उदा० राणौ भेज्या बिषरो प्याला चरणामृत पी जाणा ३६ । १५५, १५५, १६५ । **जाणि**—जानकर । उदा० आरति तेरी अन्तरि मेरे, आवो अपनी जाणि ४४ ।

जाणी—(१) जानकर । उदा० मीराँ कूँ प्रभु राखि लई है, दासी अपणी जाणी ३८ । (२) समझी । उदा० राणा जी थे जहर दियो म्हे जाणी ३८ । ८७ । (३) सामान्य वर्तमान (जानता है) । उदा० मीराँ दासी राखली, अपणी कर जाणी जी १४० । **जाणूँ**—जानती थी । उदा० मै तो जाँणूँ संग चलेगा, छाँड़ि गया अधबीच ५५ । ५७ । **जाणे**—सामान्य वर्तमान (जानती है) । उदा० थाँ देख्याँ विण कवण पड़ताँ जाणो म्हारी छाती १०६ । (२) जानो, समझो । उदा० सजण सुध ज्यूँ जाणे त्यूँ लीजै हो १०७ । **जाणै**—(१) जानता है । उदा० मीराँ पीड़ा सोइ जाणै, मरण जीवण जिण हाथ ७५ । ७०, १५८, १६२, **जाणो**—(१) जानती हूँ । उदा० हौं तो वाको नीको जाणो, कुंज को विहारी है १७४ । (२) समझो । उदा० म्हाँरी सुध ज्यूँ जाणो ज्यूँ लीजो जी १११ । **जाण्याँ**—सामान्य वर्तमान (जानती) । उदा० जाण्याँ णा प्रभु मिलण विध क्याँ होय ४३।७०, ७०, ७०, १३४ । **जाण्या**—(१ (जानता है) उदा०

मीराँ प्रभु सरणा गह्याँ जाण्या घट घट की ६। ७५, १०२, १०५। (२) जानी, समझी। उदा० आया म्हारे आगणाँ फिर गया मैं जाण्या खोय ४३। **जाण्यूं**—जानती थी। उदा० मैं जाण्यूं हरि नाहि तजेंगे, करम लिख्यो भलि पोच १८३। **जानती**—समझती। उदा० जो हूँ ऐसी जानती रे बाला, प्रीति कियाँ दुष होय ५६। **जानि**—जानकर। उदा० म्याम सनेसो कबहुँ ण दीन्हो, जानि बूझ गुझवाती १२३। **जानी**—जानता है। उदा० जब लागी तब कोउ न जाने, अब जानी संसार, १२७। **जाने**—जानता। उदा० ऊँच नीच जाने नहीं, रस की रसीलणी १८६। **जानो**—जानते हो। उदा० मेरे मण की तुमही—जानो, मेरे ही जीव नौंचित १२५।

जात—(१) दे० 'जो१'। (२) (सं० जाति) जाति। उदा० नीचे कुल ओछी जात, अति ही कूचीलणी १८६।

जाताँ—दे० 'जा१'

जाती—दे० 'जा१'

जादू—(फा० जादू) वह आश्चर्यजनक कृत्य जिसे लोग अलौकिक समझते हैं। उदा० जन्तर मन्तर जादू टोना, माधुरी मूरति बसिके ७।

जानती—दे० 'जाणा२'

जानि—दे० 'जाण२'

जानी—दे० 'जाण्२'

जाने—दे० 'जाण्२'

जामा—(फा० जामा) पहनावा, चुननदार घेरे का एक प्रकार का पहनावा। उदा० कुसुमल पाग केसरिया जामा, ऊपर फूल हजारी १७१।

जामें—दे० जा२.

जासे—दे० 'जा२'

जाय—दे० 'जा१'

जायाँ—दे० 'जा१'

जाराँ—दे० 'जर'

जारी—दे० 'जर'

जावत—दे० 'जा१'

जावाँ—दे० 'जा१'

जावा—दे० 'जा१'

जावादे—दे० 'जा१'

जावे—दे० 'जा१'

जासी—दे० 'जा१'

जासे—दे० 'जा१'

जास्याँ—दे० 'जा१'

जिण—जिस। उदा० जिण मारग म्हाँरा साध पधारे, उण मारग म्हे जास्याँ २५। **जिणरो**—जिसके। उदा० जिणरो पियाँ परदेस बस्याँ री लिख लिख भेज्याँ पाती २३। **जिनसूं**—जिनसे। उदा० अबिनासी सूँ बालवाँ हे, जिनसूं साँची प्रीत २६।

जिणरो—दे० 'जिणा'

जित—(सं० यत्र) जहाँ। उदा० जित जोयाँ तित पाणी पाणी प्यासा भूम हरी ८२।

जिन—मत। उदा० लगी प्रीति जिन तोड़ै रे बाला, प्रीति कीया दुष होय ५६। ११५।

जिनसू—दे० 'जिण'

जियड़ो—(सं० जीव + देशज ड़ो) हृदय। उदा० स्याम बिना जियड़ो मुरझावे, जैसे जल बिन बेली ८०। **जियरो**—हृदय। उदा० तलफाँ तलफाँ जियराँ जायाँ कब मिलियाँ दीनानाथ ७५। **जिव**—(१) जीव, प्राणी। उदा० चोरी न

करस्या जिव न गमाऽस्या, माट चरसी म्हौरो कोई २५ । (२) प्राण । उदा० तुम देखे बिन कलि न परत है, तलफि तलफि जिव जासी ८६ । ७४, ८२ । जिवड़ो—जी, प्राण । उदा० आवण कह गये अजहूँ न आये जिवड़ा अति टकलावे ६७ । जीया जी, 'प्राण' उदा० मीराँ रे हरि थे मिलियाँ बिण तरस तरस जीया जावाँ ६६ जीव—प्राण । उदा० बात कहूँ नाँ कहता न आवै, जीव म्हारो डरराय ७६ । ६३, ६६, १२५, १४८, १५६ । जीवड़ा हृदय । उदा० स्याम सुन्दर पर वारा जीवड़ा डारा स्याम ६३ । जिवड़ो—हृदय । उदा० लागिर दुख जग माहि जिवड़ो, बिन दिन कूरै तोड़ ६७ ।

जियरौ—दे० 'जियड़ो'

जियाँ (सं० जीव्) **जियाँ**—जीते हैं । उदा० खान पान सुध बुध सब बिसर्याँ, काइ म्हारो प्राण जियाँ ५२ । **जिवाँ**—जीवित रहूँ । उदा० हरि बिण क्यूँ जिवाँ री माय ६० । **जीजे**—जीते हैं । उदा० सुन्दर स्याम सुहावणा, मुख देख्याँ जीजे, हो, १६ ।

जीवण—जीना । उदा० मीराँ पीड़ाँ सोड़ जाणै मरण जीवण जिण हाथ ७५ ।

जीवणा—जीना है । उदा० दासी मीराँ लाल गिरधर जीवण दिन च्याँर १६६ । १६७ । **जीवाँ**—जीती । मीण जल बिछुड्या णा जीवाँ, तलफ मर मर जाय ६० । **जीवें**—जीयें । उदा० बिन देख्याँ कैसे जीवें कल ण परत होगे १७४ ।

जिव—दे० 'जि'

जिवड़ो—दे० 'जि'

जिवड़ो—दे० 'जियड़ो'

जिवाँ—दे० जि

जिह—(सं० यस्य) जिस । उदा० जिह जिह विधि रीझ हरी, सोई विधि कीजै, हो १६ ।

जी—(सं० जीव्) आदर सूचक अव्यय । उदा० म्हारो प्रणाम बाँके बिहारी जी २ । २, २, २, १६, २६, २६, २६ ३३, ३४, ३४, ३५, ३८, ४०, ४०, ४४, ४८, ५०, ५०, ५०, ५६, ५६, ६४, ७६, ८४, ६६, ६६, ६६, ६६, ६६, १००, १००, १०३, १११, १११, १११, १११, १११, १११, ११२, ११४, ११६, ११६, ११७, ११६, ११६, ११६, ११६, ११६, १२४, १२६, १२६, १२६, १२६, १३०, १३५, १३६, १३८, १३६, १४०, १४०, १४०, १४०, १४०, १४०, १४०, १४०, १४०, १४०, १४५, १४५, १४५, १४५, १४७, १५०, १५३, १५४, १६०, १७७, १८५, १८५, १८६ । **जू**—जी । उदा० सुघर कला प्रवीण हाथन सूँ, जसुमति जू णे सवाँरियाँ १६२ ।

जीजे—दे० 'जियाँ'

जीम्या—(सं० जेमन) भोजन किया, उदा० थे । जीम्या गिरधर लाल ४७ ।

जीया—दे० 'जियड़ो'

जीव—दे० 'जियड़ो'

जीवड़ा—दे० 'जियडो'

जीवण[१]—(१) (सं० जीवन) जीवन । उदा० हरि म्हारा जीवण प्राण अधार ४ । १४, २२, ६६, ७१, ६६, १०१, १६७ । (२) दे० 'जियाँ' ।

जीवन—उदा० हार्या जीवन सरण रावलाँ. कठे जावाँ ब्रजराज ४८ ।

जीवनि—जीवन । उदा० मीरौ रे प्रभु

स्याम मिलण विणा जीवनि जनम अनेस ६८।

जीवणा—दे० 'जियाँ'

जीवन—दे० 'जीवण'

जीवनि—दे० 'जीवण'

जीवाँ—दे० 'जियाँ'

जीवें—दे० 'जियाँ'

जुग—(सं० युग) युग। उदा० अबोलणाँ जुग जुग बीतण लागो कायाँ री कुसलात ६६। ११७। **जुगसे बीते**—युगों बीत गए। उदा० पलक पलक मोहि जुग से बीतै, छिनि छिनि विरह जरावै हो ९२।

जुगजुग—युग-युग। उदा० जुग जुग भीर हराँ भगतारी, दीश्याँ मोच्छ नेवाज ६२। **जुगाँ जुगाँ**—युग। उदा० जुगाँ जुगाँ री जोवनाँ, बिरहणि पिव पाया, हो १५०।

जुगत—(सं० युक्ति) युक्ति। उदा० जोगी होयाँ जुगत णाँ जाणा, उलट जणम फिर फाँमी १९५।

जुगाँ—दे० 'जुग'

जुलफन—(फा० जुल्फ+न) जुल्फो, उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, इन जुलफन पर वारियाँ १६२। **जुलफाँ**—जुल्फें। उदा० हो कानाँ किन गूँथी जुलफाँ कारियाँ १६२।

जुवति—(सं० युवति) युवतियाँ। उदा० मुरली चंग बजत डफ न्यारो, संग जुवति ब्रजनारी १७५।

जू—दे० 'जी'

जूयाँ—(सं० जुह्वान्) खोजा, ढूँढा। उदा० दूसराँ णाँ कूयाँ साधाँ सकल लोक जूयाँ १८।

जूठे—(सं० जुष्ठ) खाने के बाद का बचा हुआ खाद्य पदार्थ। उदा० जूठे फल लीन्हें राम प्रेम की प्रतीन जाण १८६

जूड़ो (सं० जूट) स्त्रियों द्वारा सिर के बालों का एक साथ बाँधी हुई गाँठ। उदा० काजल टीकी हम सब त्यागा, त्याग्यो छै बाँधन जूड़ो ३२।

जूण—(सं० योनि) प्राणियों के विभाग, जातियाँ अथवा वर्ग पुराणों के अनुसार जिनकी संख्या चौरासी लाख हैं। **पसु-जूण**—पशु की योनि। उदा० सरण छाँड़ पग धाइयाँ पसूजूण पटाणी जी १४०।

जेज—(फा० देर) देर। उदा० तोड़त जेज करत नहि सजनी, जैसे चमेली के फूल।

जेठ—(सं० ज्येष्ठ) जेठ का महीना। उदा० जेठ महीने जल विणा पंछी दुख होई, हो १५५।

जेताई—(सं० कल्पित रूप जितत्तक + सं० हि) जितना। उदा० जताई दीसाँ धरण गगन माँ, तेताई उठ जासी १९५।

जेम—(सं० एषाम्+मुख) जिस ओर। उदा० काचेते तातणे हरिजीए बाँधी जेम खेंचे तेम नेमनी रे १७३।

जै—(सं० यदि) यदि। **जू**—जो, यदि। उदा० फागु जू खेलत रसिक साँवरो, बाढ़यो रस ब्रज भारी १७५। **जैं** उदा० जैं तू लगण लगाई चावै, तो सीस भी आसन कीजे १९१, **जैसे**—(सं० यथा) जिस प्रकार। उदा० जैसे कंचन दहत अगिन में निकसत बारावणी ३८, ५४, ८०, ११४, १२४, १३०, १६१, १९१, १९१, १९१, १९१। **जो**—यदि। उदा० साधु जननो संग जो करिये चढ़े तो चौगणो रंग रे ३०। ८४ **जौ**—यदि। उदा० जौ हूँ ऐसी जानती रे बाला प्रीति कियाँ दुख होय ५६। **ज्यो** यदि उदा० ज्या तो का कुछ और

विथा हो, नाहिन मेरा आसंग ।

जो[१]—(१) (सं० यः) सर्वनाम । उदा० मीरां री लगन लग्यां होणा हो जो ह्वयां १८ । २०, २०, १५८ । (२) दे० 'जै' ।

जोइ—जो, सर्वनाम । उदा० दास मीरां तर्ने सोट ऐसी प्रीत करै जोइ १८६ ।

जो[२] (सं० जुहान ?) । **जोइ जोइ**—जोह-जोहकर । उदा० म्हारे कुहाकें पंथ निहारूं", जोइ जोइ अंखियां राती १२३ । **जोऊं**-जोहूं । उदा० जोगिया जी निसदिन जोऊं बाट ४४ । ५८, ११६, १२६ ।

जोय—(१) जोहने में उदा० जोवतां मग रैण बीना दिवस बीता जोय ८३ । (२) जोहती हूँ । उदा० पंथ निहारां डगर मभारां, ऊभी मारग जोय १०२ । **जोयां** जोहा, देखा । उदा० जित जोयां तित पाणी पाणी घामा भूम हरी ८२ । **जोवत**—बाट जोहते, प्रतीक्षा करते खोजते हुए । उदा० जोगिया कूं जोवत बोहो दिन बीता, अजहूं आयो नाहि ४४ । **जोवां**—जोहती हूँ । उदा० मीरां रे प्रभु गिरधर नागर मग जोवां दिण राती २३ । ४५, ६६, ७१, ७८, ८६, ९६, १०३, १४३ । **जोवै**—जोहती है । उदा० विरहणि पिव की बाट जोवै, राखिल्यो नेरी ६३ । **जोहां**—जोहती हूं । उदा० मीरां रे प्रभु गिरधर नागर, बाट जोहां थें आयां री १२१ ।

जोइ—(१) दे० 'जो' । (२) दे० 'जो[२]' ।

जोऊं—दे 'जो[२]'

जोगण—(सं० योगिन) योगिनी । उदा० तेरे खातिर जोगण हूँगी, करवत लूँगी कासी ४६ । ९४ **जोगणि**—योगिनी । उदा० जोगणि होइ जुग ढूंढस्यूं म्हारा जोगिया री रेख ११७ ।

जोगणि—दे० 'जोगण'

जोगिया—(सं० योगी—या) योगी । उदा० दे० 'जोगी'

जोगी—(सं० योगी) योगी । **जोगिया** उदा० जोगिया जी निसदिन जाऊँ बाट ४४ । ४४, ५३, ५४, ११६, ११७, ११७ । **जोगी**—उदा० नगर आइ जोगी रम गया, रे, मो मन प्रीति न पाइ ४४ । ४६, ४६, ५३, ५५, ५७, ५८, ९७, ९८, १८८, १९५ ।

जोगिया—दे० 'जोगी'

जोड़ी—(सं० जुड्) जोड़ ली, स्थापित कर ली । उदा० अब तुम प्रीत अवर सूं जोड़ी, हमसे करी क्यूं पहेली ८० ।

जोत—(सं० ज्योति) ज्योति, प्रकाश । उदा० बिन पिता जोत मँदिर अँधियारो, दीपक दाय न आवै ७४ । **जोत में जोत**—आत्मा में परमात्मा । उदा० मीरां कहे प्रभु गिरधर नागर जोत में जोत मिला जा ४६ । **जोति**—प्रकाश । उदा० झूठा माणिक मोतिया री, झूठी जगमग जोति २९ ।

जोति—दे० 'जोत'

जोबन—(सं० यौवन) युवावस्था । उदा० पीव कारण पीली पड़ी बाला जोबन बाली वेस ११७ ।

जोय—दे० 'जो[२]'

जोयां—दे० 'जो[२]'

जोर[१]—(फा० जोर) (१) दृढ़ विश्वास । उदा० मीरां के प्रभु गिरिधर नागर, चरणां में म्हारो, जोर छै जी १४५ । (२) तेज । उदा० चरण पखार्‌यां रतणाकर री धारा गोमत जोर २०२ ।

जोर[२] (सं० जन्) है

स्थापित करता है। उदा० बोलत बचन मधुर से मानूं जोरत नाहीं प्रीत ५७। **जोर्‌या**—जोड़कर। उदा० अरज करा अबला कर जोर्‌या, स्याम तुम्हारी दासी १९५। **जोरे**—स्थापित किया। उदा० अवध बदीती अजहुं न आये, दुतियन सूं नेह जोरे ६४।

जोरत—दे० 'जोर२'

जोर्‌या—दे० 'जोर२'

जोरा—(फ़ा० ज़ोर) उमंग। उदा० सावण दे रह्या जोरा रे, घर आयो जी स्याम मोरा, रे १८७।

जोरे—दे० 'जोर२'।

जोवत—दे० 'जो२'

जोवतां—दे० 'जो२'

जोवां—दे० 'जो२'

जोवै—दे० 'जो२'

जोसी—(सं० ज्योतिषिन्) ज्योतिषी। उदा० काग उड़ावत दिन गया, बूझूं पिंडत जोसी, हो ११५। जोसीड़ा (सं० ज्योतिषिन् + देशज प्रत्यय ड़ा) ज्योतिषी। उदा० जोसीड़ा णे लाख बधाया आस्यां म्हारो स्याम १४४।

जोसीड़ा—दे० 'जोसी'।

जोहां—दे० 'जो२'।

जौ—दे० 'जै'

जौहर—(फ़ा० गौहर का अरबी रूप) एक प्रकार का अमूल्य पत्थर। उदा० जौहर की गत जौहरी जाणै, क्या जाण्यां जिण खोय ७०। **जौहरी**—पारखी, रत्न बेचने या परखने वाला। उदा० जौहर की गत गत जौहरी जाणै, क्या जाण्यां जिण खोय ७०।

जौहरी—दे० 'जौहर'

ज्ञान—(दे० 'ग्याण')

ज्यां—(सं० यस्य)। **ज्यां कूं**—जिस को उदा० ग्याण नमां जग बावरा ज्याकूं स्याम ण भावां २८। २८।

ज्यां ज्यां२—जहां जहां। उदा० ज्यां ज्यां चरण धरयां धरणी धर, त्यां त्यां निरत करां री २१।

ज्याशों—दे० 'जा१'

ज्यासी—दे० 'जा१'

ज्यूं—(अप जिम) (१) जैसे, जिस प्रकार। उदा० ज्यूं डूंगर का वाहला रे, यूं ओछा तणा संनेह ५९। ८७, ८७, ९०, १११, १३३, १३३, १९८। (२) की तरह। उदा० पानां ज्यूं पीली पड़ी री, लोग कह्यां पिंडबाय ७२। ८६, १८५। (३) जिस समय। उदा० सजण सुध्र ज्यूं जाणो त्यूं लीजै हो १०७। (४) उसी प्रकार। उदा० म्हांरी सुध्र ज्यूं जानो त्यूं लीजो जी १११।

ज्यों त्यूं—किसी भी तरह, किसी भी कीमत पर। उदा० रैण दिना वाके संग खेलूं, ज्यूं, त्यूं वाहि रिझाऊं २०। **ज्यो**—जिस प्रकार। उदा० मीणा तज सरवर ज्यों मकर मिलन धाई १२। ३८, १३६।

ज्यों—(१) दे० 'जैं'। (२) दे० 'ज्यूं'। (३) सर्वनाम (जो कुछ)। मीरां के प्रभु गिरिधर नागर ज्यों थान्हें सोही थोरा, रे १४७।

ज्वाला—(सं० ज्वाला) ताप, गर्मी। **जगत ज्वाला**—तीनों प्रकार के सांसारिक ताप का दुःख—दैहिक, दैविक और मानसिक। उदा० सुभग सीतल कंवल कोमल, जगत ज्वाला हरण ?

झ

झकझोर—(अनु०) हिलना-डुलना। उदा० मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, कुण्डल की झकझोर १६८। २०२।

झकोर—(अनु०) झटका। उदा० मीराँ कूँ हरिजन मिल्या रे, ले गया पवन झकोर ५६।

झगड़ो—(हि० झकझक से अनु०) लड़ाई। उदा० झगड़ो थाय त्यां दोड़ी ने जाय रे मूकी ने घर ना काम, रे १५७।

झटक्—(सं० झटिति) झटक्—झटके से, शीघ्र ही। उदा० बहुता वहैजी उतावला रे, वे तो झटक बनावे छेह ५६। **झटकी**—झटक गई, गिर गई। उदा० गागर गेंग सिरले झटको, बेसर मूर गई सारी १७०। **झटक्यो**—झटक दी। उदा० झटक्यो मेरी चीर मुरारी १७०।

झटकी—दे० 'झटक्'

झटक्यो—दे० 'झटक्'

झड़[1]—(सं० क्षरण) संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) गिर। उदा० छुटी अलक कुंडल नें उरझी, झड़ गई कोर किनारी १७०।

झड़[2]—(सं० क्षरण) झड़ी। झड़—झड़ी उदा० कलम धरत मेरो कर कंपत है नैन रहे झड़ लाय ७६। ८१, ११५।

झर—झड़ी। उदा० नैन झर लावै ७४। १८६। **झरत**—झड़ती है। उदा० म्हारो काई णा बस सजणी, नैण झरत दोऊ नीर १५५। **झरया**—झड़ता है। उदा० हरि निर्झर अमृत झरया म्हारी प्यास बुझावाँ २८। **झर्‌याँ**—झड़ते हैं। उदा० नेणा म्हारा कह्या णा माण्या णीर झर्‌याँ निश जावाँ री १२१। **झरी**—(१) झड़ी। उदा० रंग रंग री झरी, री १४८। (२) रोई। उदा० बादल देख्याँ झरी स्याम मैं बादल देखाँ झरी ८२।

झणकोर—(सं० झंकार) झंकार। उदा० गोपी दही मथत सुनियत है, कँगना के झण कारे १६५।

झपट्—(सं० झंप)। झपट झमट कर। उदा० लपट झपट मोरी गागर पटकी, साँवरे सलोने लोने गाल १७६।

झर—दे० 'झड़[2]' झरझर—धीरे-धीरे उदा० झर झर बूँदा बरसाँ आली कोयल सबद सुनाज्यो १४६।

झरत—दे० 'झड़[2]'

झरमिट—एक प्रकार का खेल। उदा० वाँ झरमिट माँ मिल्यों साँवरो, देख्याँ तण मण राती २३। **झिरमिट**—उदा० पँचरंग चोला पहर्‌या सखी म्हाँ, झिरमिट खेलण जाती २३।

झर्‌याँ—दे० 'झड़[2]'

झर्‌या—दे० 'झड़[2]'

झरी—दे० 'झड़[2]'

झलकणा—(सं० झल्लिका) जगमगाते हैं। उदा० मोर मुकुट पीताम्बर सोहाँ कुण्डल झलकणा हीर १६१। **झलकाँ**—झलकते हैं। उदा० कुण्डल झलकाँ कपोल अलकाँ

लहराई १२ ।

झलकाँ—दे० 'झलकणा'

झाँझ[1]—(हिं० झनझन से अनुवाद) झाल, एक प्रकार का बाजा । उदा० बाज्यो झाँझ मृदंग मुरलिया बाज्याँ कर इकतारी ७७ । **झाँझरिया**—झाल । उदा० झाँझरिया जगजीवन केरा, कृष्ण जी काडला ने काँवी रे १४१ ।

झाँझ[2]—(अ० जहाज) जहाज । उदा० स्याम नाम री झाँझ चलास्याँ, भोसागर तर जास्याँ ३१ ।

झाँझरिया—दे० 'झाँझ'[1]

झालर—(सं० झल्लरी) लटकी हुई मोतियों की लड़ियाँ । उदा० धजा पताका तट तट राजाँ झालर री झकझोर २०२ ।

झिरमिट—दे० 'झरमिट'

झूंठाँ—(सं० जुष्ठ) असत्य, अवास्तविक । उदा० भो सागर जग बंधण झूँठाँ, झूठाँ कुलरा न्याती १०६ । झूठाँ—उदा०—झूठाँ कुलरा न्याती १०६ । **झूठा**—नकली । उदा० झूठा पाट पटंबरा रे, झूठा दिखणी चीर २६ । २६ । **झूठी**—नकली । उदा० झूठा माणिक मोतिया री झूठी जगमग जोति २६ ।

झूरताँ—(सं० धूलि) सूखते हुए । उदा० प्राण गुमायाँ झूरताँ रे, नैण गुमायाँ रोय १०२ । **झूरै**—शोकाकुल होता है । उदा० नातिर दुख जग माहि जीवड़ो, निस दिन झूरै नांड ६७ ।

झूलणी—(सं० दोलन) झूली वास करने लगी । उदा० हरि जी सूँ बांध्यो हेतु बैकुण्ठ में झूलणी १८६ ।

झेलती—(सं० ज्वलन्) झेलती है, गलती है । उदा० सीप स्वाति ही झेलती, आसोजाँ सोई, हो ११५ ।

ट

टपरिया—झोंपड़ी । उदा० किस गई प्रभु मोरी टपरिया, हीरा, मोती लाल कसे १८७ ।

टर—(सं० टलन) । **टराँ** टलता (सामान्य वर्तमान) । उदा० करम गत टाराँ णाही टराँ १८६ । **टाराँ**—टालने पर । उदा० करम गत टाराँ णाही टराँ १८६ ।

टराँ—दे० 'टर'

टाराँ—दे० 'टर'

टीकीं—(सं० तिलक) टीका, बिन्दी । उदा० काजल टीकी हम सब त्यागा, त्याग्यो छै बाँधन जूड़ो ३२ । ३४ ।

टीला—(सं० अष्ठीला) चट्टान । उदा० अभिमान टीला किये बहु कहु जल कहाँ ठहरात १५८ ।

टूट—(सं० त्रुट्) **टूट्या**—टूटा । उदा० बिरछराँ जो पात टूट्या, लाया णा फिर डार १६६ । **टूटी**—टूटी हुई । उदा०

किन गई प्रभु मारो टूटो टपरियाँ, हीरा मोती, लाल कसे १८७।

टूटया—दे० 'टूट'

टेढ्याँ—(सं० तिरस) टेढ़ी। **टेढ्याँ**—टेढ़ा, **टेढ़े**—तिरछी। उदा० टेढ्याँ कट टेढ़े करि मुरली, टेढ्या पाग लर लटकै १०।

टेढ्या—दे० 'टेढ्याँ'

टेढ़े—दे० 'टेढ्याँ'

टेर—(सं० नाद) पुकार। उदा० दास धना को खेत निपजायो गज की टेर सुनन्द १३६। १७६। **टेरहूँ**—पुकारती हूँ। उदा० बेर बेर मैं टेरहूँ अहे क्रिया कीजै, हो ११५। **टेरी टेरी**—पुकार पुकार कर उदा० रोऊँ नित टेरी टेरी ६४।

टेरहूँ—दे० 'टेर'

टेरी—दे० 'टेर'

टोना—(सं० तंत्र) जादू, टोटका। उदा० जन्तर मन्तर जादू टोना, माधुरी मूरति बसिके ७।७७। **टोनों**—उदा० साँवरी सी किसोर सूरत, कछुक टोनों कर्‌यो १५२।

टोनों—दे० 'टोना'

ठ

ठंड—(सं० स्तब्ध, प्रा० टड्ढ) सर्दी। उदा० मगसर ठंड बहोती पड़ै, मोहि बेग सम्हालो, हो ११५।

ठहर्—(सं० स्थल)। **ठहरात**—(सामान्य वर्तमान) ठहरता है। उदा० अभिमान टीला किये बहु कहु, जल कहाँ ठहरात १५८।

ठहरात—दे० 'ठहर्'

ठाँम—(सं० स्थानम्) जगह। **ठामूँ**—जगह उदा० पाँच सख्याँ मिल पीव रिझाँवा, आणाँद ठामूँ ठाँम १४४।

ठाकर—(सं० ठक्कुर) ठाकुर। उदा० घर-घर तुलसी ठाकर पूजा, दरसण गोबिन्द जी काँ १६०। **ठाकुर**—स्वामी। उदा० मीराँ रे प्रभु हरि अबिनासी तुम मेरे ठाकुर मैं तेरी दासी ६५ १६३

ठाकुर—दे० 'ठाकर'

ठाड्—(सं० स्थातृ)। **ठाड़ो**—खड़ा है। उदा० गहे द्रुम डार कदम को ठाड़ो मृदु मुसकाय म्हारी ओर हँस्यो ८। **ठाड़ी**—खड़ी है। उदा० कब री ठाड़ी पंथ निहाराँ, अपने भवण खड़ी १४।७७। **ठाढ़ी**—खड़ी होकर। उदा० ऊभ्याँ ठाढ़ी अरज करूँ छूं करताँ करताँ भोर ५। ७, १३, ७८। **ठाढ़े**—खड़े हैं। उदा० उठो लालजी भोर भयो है, सुर नर ठाढ़े द्वारे १६५।

ठाड़ो—दे० 'ठाड्'

ठाड़ी—दे० 'ठाड्'

ठाढ़ी—दे० 'ठाड़'

ठाढ़े—दे० 'ठाड्'

ठाण्—(सं० अनुष्ठान)। **ठाणाँ**—ठान लिया उदा० साधाँ जणरी निंदा ठाणाँ

करम रा कुगत कुमाँवाँ १५६ । **ठानी**— ठान ली (भूतकाल)। उदा० बिन देख्याँ कल ना पड़ाँ मन रोसणा ठानी हो ८७।

ठाणाँ—दे० 'ठाण्'

ठाम्—दे० 'ठाँम'

ड

डगर—रास्ता। उदा० पंथ निहाराँ डगर मझाराँ, ऊभी मारग जोय १०२। १२३।

डफ—(अ० दफ) एक प्रकार का बाजा जो चमड़े से मढ़ा रहता है।

डर्—(सं० दर)। **डरताँ**— भय से। उदा० णेणाँ म्हाँरा साँवरा राज्याँ, डरताँ पलक णा लावाँ १५ **डरपाये**— डराती है। उदा० (इक) कारी अँधियारी बिजली चमकै, बिरहिणी अति डर पाये रे, ८१।

डरराय—संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) डर। उदा० बात कहूँ तो कहत न आवै, जीव रह्यो डरराय ७६। **डर्यौ**— डरे। उदा० कूदाँ जल अंतर णाँ डर्यौ थे एक बाहु अणंत १६८। **डराँ**—डरती हूँ। उदा० चालाँ अगम वा देस काल देख्याँ डराँ १९३। **डरायाँ**—डराती है। उदा० इत घण गरजाँ उत घण लरजाँ चमकाँ बिज्जु डरायाँ १४२। **डरावै**—डराती है। उदा० घुमँट घटा ऊलर होइ आई, दामिन दमक डरावै ७५।

डरताँ—दे० 'डर्'

डरपाये—दे० 'डर्'।

डरराय—दे० 'डर'।

डर्यौ—दे० 'डर्'।

डराँ—दे० 'डर्'।

डरायाँ—दे० 'डर्'।

डरावै—दे० 'डर्'।

डस्—(सँ० दंशन)। **डसी**—संयुक्त काल मुख्य क्रिया।—डस लिया। उदा० विरह नागण मोरी काया डसी है, लहर लहर जिव जावै ७४, ८८ **डस्याँ**—डस लिया। उदा० विरह भवंगम डस्याँ कलेजा माँ लहर हलाहल जागाँ ९१। **डस्यो**—डस लिया। उदा० प्रीतम पनंग डस्यो कर मेरो, लहरि लहरि जिव जावै हो ९२।

डसी—दे० 'डस्'

डस्याँ—दे० 'डस्'

डस्यो—दे० 'डस'

डाबराँ—(सं० दभ्र) तालाब। उदा० भीलर्या री काम णा म्हाँरी, डाबराँ कुण जावाँ री २८।

डार[1]—(सं० दारु) पेड़ की टहनी। उदा० गहे द्रुम डार कदम को ठाड़ो मृदु मुसकाय म्हारी ओर हँस्यो ८। १९६। **डारा**— डाल पर। उदा० डारा बैठ्या कोयल बोल्या बोल सण्या रा मासी ८५

डारी—पेड़ की डाली । उदा० आज अनारी ले गयो सारी, बैठी कदम की डारी, हे माय १६६ । १०५ **डालि**—डाल पर । उदा० आंबा की डालि कोइल इक बोले, मेरो मरण अरु जग केरी हांसी ६५ । **डाली**—डाली पर । उदा० ऊभा बैठ्यां विरछरी डाली, बोला कंठ णा सार्‌या ८६ ।

डार[२]—(प्रा० डाल) **डार**—संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) डाल । उदा० सांप पिटारो राणा जी भेज्यो, द्यो मेडतणी गल डार ४० । १८, १८८ । **डार डार आये**—डाल-डालकर आए । उदा० लै अगन प्रभु डार डार आये, भसम हो जाई ८६ । **डारां**—डाल दी है । उदा० मोती चौक पुरावां णेणां, तण मण डारां वारी ५१ । ६३ । **डारि**—डालकर । उदा० **डारि** गयो मनमोहन पासी ६५ । **डारी**—संयुक्त क्रिया (सहायक क्रिया) डाली उदा० लोक लाज बिसारि डारी तबही काज सर्‌यो १७२ । **डारो**—डाल दिया । उदा० मधुबन जाइ भये मधुबनिया, हम पर डारो प्रेम को फंदा १८० । **डारस्यूं**—डाल दूँगी । उदा० नेण बिछास्यूं हिवड़ो डारस्यूं सर पर राख्यूं विराज १०६ ।

डारां—दे० 'डार्[२]'

डारा—दे० 'डार'

डारि—दे० 'डार्[२]'

डारी—(१) दे० 'डार[१]', (२) दे० 'डार्[२]'

डारो—दे० 'डार्[२]'

डारयां—दे० 'डार्[२]'

डारयो—दे० 'डार्[२]'

डालि—दे० 'डार[१]'

डाली—दे० 'डार[१]'

डावांडोल—(डावां + सं० दोल विचलित उदा० दरसण विण मोहि जक णा परत हैं, चित्त मेरो डावांडोल १०० ।

डारस्यूं—दे० 'डार्[२]'

डिगी—(सं० टिक + ई) गिरी । उदा० तुम विण साजन कोइ नहीं हैं, डिगी नाव समंद अड़ी ११८ ।

डूंगर—(सं० तुंग) ऊँचा । उदा० ज्यूं डूंगर का वाहला रे, यूं ओछा तणा संनेह । ५६ ।

डूब्—(प्रा० बुड्डण) । **डूबतां**—डूबते हुए । उदा० डूबतां गजराज राख्यां गणिका चढ़या विमाण १३४ । **डूबि**—डूबकर । उदा० म्हने भरोसो राम को रे (बाला), डूबि तर्‌यो हाथी १८५ ।

डूबतां—दे० 'डूब्'

डूबि—दे० 'डूब्'

डेरे—(सं० स्थैर्य + ना) घर । उदा० म्हारे डेरे आज्यो जी महाराज १५१ ।

डोम—(सं० डम) एक जाति जो बाँस का सूप आदि बनाती है । उदा० सतवादी हरिचन्दा राजा, डोम घर नीरां भरां १८६ ।

डोरी—(सं० डोर) डोर, बटा हुआ धागा । उदा० काम कूकर लोभ डोरी बाँधि मोहि चण्डाल १५८ ।

डोल्—(सं० दोल) । **डोल**—घूम उदा० चढ़ती वैस नैणा अणियाले, तू घरि घरि मत डोल ५८ ।

डोलतां—घूमते हुए । उदा० रोवत रोवत डोलतां सब रैण विहावां जी ९६ । **डोलती**—चलती है । उदा० भजन भाव में मस्त डोलती गिरधर पै बलि जाय ४१ । **डोला**—डोलती हूँ । उदा० ढूंढ़तां बण स्याम डोला मुरलिया धुण माय ६० । **डोली** घूमी उदा० दरद दिवाणी

ण

णंद -- (सं० नद) नंद (कृष्ण के पिता) । उदा० णंद जसोदा पुत्र री प्रगट्यॉं, प्रभु अविनासी ६ ।

णंदकिसोर - नंद किशोर, नंद का पुत्र, कृष्ण । उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, कर गह्यो णंदकिसोर २०२ । नंद को गुमानी — नंद का अभिमानी पुत्र कृष्ण । उदा० हेरी मा नंद को गुमानी म्हारे मनड़े बस्यो ८।१२, ४२, १६८, १७७ । नंद किसोर — उदा० बिन्द्रावन की कुंज गलिन में, नाचत नंद किसोर १६४ । नंदकुमार -- कृष्ण । उदा० नागर नंद कुमार, लाग्यो थारो णेह १०५ । नंदनंदन नंद के पुत्र कृष्ण उदा० नंद नंदन मण भायाँ बादलाँ णाभ छायाँ १४२।१२

नँदलाल—कृष्ण । उदा० बस्याँ म्हारे णे-णण माँ नँदलाल ३ ।

णंद किसोर—दे० 'णंद'

ण -- (१) (सं० न) नहीं । उदा० आवण कह गयाँ अजाँ ण आया, कर म्हाणे कोल गयाँ ५२ । २४, २४ । ५६, ६४, ६६, ७१, ७२, १००, १०१, १०१, १०१, १०२, १०२, १०६, १०८, १०८, ११०, ११०, ११८, १२२, १२३, १२८, १२६, १५८, १५८, १७४, १८१, १९२ । (२) बलात्मक अव्यय । उदा० मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, दरसण द्यो ण मोकूँ आय ९८ । णाँ निषधार्थक अव्यय उदा० दूसरा णाँ कूयाँ साधा सकल लोक जूयाँ १८ । २४, ४३, ७८, १३६, १६८, १८१, १९५ । णाँ—मत । उदा० पूरब जणम री प्रीत पुराणी, जावा णाँ गिरधारी ५१ ।

णा- (१) नहीं । उदा० थें विण म्हाणे जगणा सुहावाँ, निरख्याँ सब संसार ४ । ४, ५, ५, ९, १३, १३, १३, १५, १७, १८, २३, २३, २४, २४, २४, २८, २८, २८, ३७, ४३, ४३, ४८, ६६, ६६, ६६, ६८, ७५, ७५, ७७, ७७, ७७, ७८, ७८, ८३, ८६, ८७, ८७, ९०, ९०, ९३, ९६, ९६, ९९, १०२, १०३, १०४, १०४, १०५, १०६, ११०, १२१, १२१, १२१, १२१, १२८, १२९, १३४, १३६, १४०, १५५, १५५, १५५, १५५, १५६, १५६, १५८, १५८, १६६, १८१, १८२, १९४, १९५, १९६, १९७ । णाही —(णा+ही) नहीं । उदा० करम गत टाराँ णाही टराँ १९९ । न—(१) नहीं उदा० असा प्रभु जाण न दीजै हो १६ । २०, २५, २५, २५, २५, २६, २६, २८, २९, ३०, ३५, ४०, ४०, ४२, ४२, ४४, ४४, ४९, ५३, ५३, ५५, ५५, ५८, ५९, ५९, ६६, ६७, ६७, ६७, ६८, ७०, ७२, ७३, ७४, ७४, ७४, ७६ ७६ ७८ ८० ८१ ४ ८४

८४, ८७, ९२, ९२, ९२, ९२, ९४, ९५, ९८, ९८, ९९, १०७, ११३, ११४, ११६, ११७, ११८, १२१, १२६, १२७, १२९, १३०, १३२, १५६, १५८, १६१, १६७, १९१। (२) बलात्मक अव्यय। उदा० यो तो अमल म्हाँरों कबहूँ न उतरे, कोटि करो न उपाय ४०। **नथी**—नहीं। उदा० सासर वासो सजी ने बैठी, हवे नथी कइ काँचू रे १४१। **नहिं**—नहीं। उदा० नहिं सुख भावै थाँरो देसलड़ो रंग-रूडो ३२। २५, ४४, ५४, ७०, ७३, ८०, १०७, ११८, १३३, १८५, १८८, १९२। **नहीं**—उदा० थारे देमां मे राणा साध नहीं छै, लोग बसै सब कूडो ३२। ८५, ८६, ११८, १२४, १२६, १८६, १८६, **ना**—नहीं। उदा० प्रीत कियाँ सुख ना मोरी सजनी, जोगी मित न कोइ ५३। ८९, ८९, ९१, ९१, १०१, १५७। **नाह**—नहीं। उदा० आऊँगी मैं नाह रहूँगी (रे म्हारा) पीव बिना परदेस ११७, **नाँहि**—नहीं। उदा० जोगिया कूँ जोवत बोहो दिन बीता, अजहूँ आयो नाहि ४४। ५३, १००, १३०, १३२, १८३। **नाहिन**—नहीं। उदा० ज्यों लोको कछु और बिथा हो, नाहिन मेरो बसिके ७। **नाहीं**—नहीं। उदा० कै तो जोगी जग में नाहीं, कैर बिसारी मोइ ४४। ५७, १०८, ११२, ११४, ११६, १३३, १८२। **नातिर**—नही तो। उदा० नातिर दुख जग 'माँहि जीवड़ो, निस दिन भूरै तोइ ९७।

णाभ—(सं० नभ्) नभ। उदा० नंदनँदन मण भायाँ बादलाँ णाभ छायाँ १४२।

णवाँ—(सं० नव नया उदा० हरे हरे णवाँ कुंज लगास्यूँ बीचा बीचा वारी १५४, **नव**—नई, उदा० मीरा रे प्रभु कबरे मिलोगे, नित नव प्रीत रसी ८८। **नवल**—नई, नवीन। उदा० छैल छबीले नवल कान्ह संग स्यामा प्राण पियारी १७५। **नवाँ-नवाँ**—नए-नए। उदा० धरती रूप नवाँ नवाँ धर्‌या इन्द्र मिलण रे काज १४३।

णास्—(सं० नश्)। **णसानी**—दूर हो गई। उदा० अजामिल अघ उधरे जम त्रास णसानी जी १४०। **णसाय**—नष्ट कर दिया। उदा० बरणा वर्‌याँ बापुरो जणम्या जणम णसाय २०१।

णसानी—दे० 'णास्'

णसाय—दे० 'णास्'

णाँ—दे० 'ण'

णां—दे० 'ण'

णा—दे० 'ण'

णाच्—(सं० नृत्य) नाच। **णाच णाच**—नाच-नाचकर। उदा० णाच णाच म्हाँ रसिक रिझावाँ, प्रीत, पुरातन जांच्या री १७। **णाच्या**—नाचती हूं। उदा० ताल पखावज मिरदंग बाजा, साधाँ आगे णाच्याँ ३७। ६। **णाच्या**—नाची। उदा० पग बाँध घुँघर्‌याँ णाच्यारी २६। **नाँचत**—नाचता है। उदा० एक गावत एक नाँचत एक करत हाँसी १६३। **नाचत**—नाचते हैं। उदा० बिन्द्राबन की कुंज गलिन में नाचत नंद किसोर १६४। **नाची**—नृत्य किया। उदा० साज सिंगार बाँध पग घुँघर लोकलाज तज नाची १९। **नाच्या**—नाची। उदा० म्हा गिरधर आगाँ नाच्यारी १७।

णाच्याँ—दे० 'णाच्'

णाच्या—दे० णाच

णातो—(सं० ज्ञाति) नाता। उदा० णातो सांवरो री म्हारूं, नतक म तोड्या जाय ७२।

णाम—(सं० नाम) नाम। उदा० म्हारो मण सांवरा णाम ल्ह्या री २००। **नांव**—नाम। उदा० आदि अन निज नांव तेरो, हीया में फेरो ६३। १७८, १६१। **नाम**—स्याम नाम रो झाझ चलास्या, भोसागर तर जास्यां ३१। ३५, ६०, ६०, १३०, १४०, १४०, १४१, १५६, १५७, १५८, १५८, १७७, १६६, १६६ **नाम का**—उदा० पिया पियारा नाम का रे और न रंग सोहाल ४०। **नाम नुं**—नाम का। उदा० पेटी बड़ावूं पुरुषोत्तम केरी, श्रीकम नाम नुं तालूं रे १४१।

णाही—दे० 'ण'

णिरवाट—(सं० निः+वर्त्म) निराश्रय, उदा० मीरां थे बिण भई बावरी, छाड्या णा णिरवाट ६६।

णित—(सं० नित्य) नित्य, प्रतिदिन। उदा० तज कुसंग सतसंग बैठ णित, हरि चरचा सुण लीजै १६६।

णिभ्—(सं० निर्वाह)। **णिभाज्या**—निभा जाओ। उदा० सांवरो म्हारो प्रीत णिभाज्यो जी १२६। **णिभावां**—निभाइये। उदा० मीरां दासी जणम जणम री, भगतां पैज णिभावां १०४।

णिभाज्या—दे० 'णिभ्'

णभावां—दे० 'णिभ्'

णरख्—(सं० निरीक्षण) **णिरख**—देखकर। उदा० लगण म्हारी स्याम सूं लागी, णेणा णिरख सुख पाय २०१।

णरखां—देखने को। उदा० णिरखां म्हारो चाव घणेरो मुखड़ा देख्या थारां ११०। **निरख** देखकर उदा० पल पल थारो रूप निहारां निरख निरखती मदमाती १०६। **निरखण**—देखने। उदा० रूप सुरंगा सांवरो, मुख निरखण जावां २८। **निरखती**—प्रतीत होती हूँ। उदा० पल पल थारो रूप निहारां निरख निरखती मदमाती १०६। **निरखां**—देखती हूँ। उदा० बिसरि जावां दुख निरखां पियारी सुफल मनोरथ काम १८८। **निरख्यां**—देखा। उदा० थे बिण म्हाणे जग णा सुहावां, निरख्यां सब संसार ४।

णिरखां—दे० 'णिरख'

णिहार—देखकर। उदा० मीरां रे प्रभु दासी रावली, लीज्यो णेक णिहार ४। **निहारत**—देखते हुए। उदा० पिय रो पथ निहारत सब रैण बिहानी हो ८७। **निहारां**—देखती हूँ निहारती हूँ। उदा० कब री ठाढ़ी पंथ निहारां, अपणे भवण खड़ी १४। ६१, १०२, १०६। **निहारूं**—देखती हूँ। उदा० मैं जन तेरा पंथ निहारूं, मारग चितवत तोरे ६५। १११, १२३, १२५। **निहार्‌यां**—निहारती हूँ। उदा० ऊँचा चढ़ चढ पंथ निहार्‌यां कलप कलप अखियां राती १०६।

णिरख—दे० 'णिरख्'

णिरखां—दे० 'णिरख्'

णींद—(सं० निद्रा) नींद। उदा० मा हिरदां बस्यां सांवरो म्हारे णींद न आवां २८। **नींद**—उदा० रमैया बिन नींद न आवै ७४। ७४, ७८, ८७, ६२, १०२। **नींदड़ी**—(नींद+ड़ी) सब सोवां सुख नींदड़ी म्हारे नैण जगावां २८।

णीर—(सं० नीर) पानी। उदा० णेणा म्हारा कह्या णा माणा णीर झर्‌यां

निश जावाँरी १२५ । १६० । **णीराँ**—पानी । उदा० सतवादी हरिचन्दा राजा, डोम घर णीराँ भराँ १८३ । **नीर**—पानी । उदा० चौमास्याँ री बावड़ी, ज्याँकूँ नीर णा पीवाँ २८ । १५५, १६६, **नीरा**—पानी । उदा० अमृत प्यालो छाड्याँ रे, कुण पीवाँ कड़वाँ नीरा री २४ ।

णे—(सं० कर्ण) को । उदा० सखि म्हाँरो सामरिया णे, देखवाँ कराँरी २१ । १४८

णेक—(फा० नेक) थोड़ा । उदा० मीराँ रे प्रभु दासी रावली, लीज्यो णेक णिहार ४ । **णेक णा**—तनिक भी नहीं । उदा० लोक लाज कुलरा मरज्यादाँ, जगमाँ णेक णा राच्याँरी १७ । **नेक**—बिल्कुल । उदा० खाण पाण म्हारे नेक णा भावाँ, नैणा खुला कपाट ६३ ।

णैण—(सं० नयन) नयन, आँख । उदा० बारिज भवाँ अलक मतवारी, णैण रूप रस अँटके १० । **णैणण**—आँखों मे । उदा० बस्याँ म्हारे णैणण माँ नँदलाल ३ । **णैणाँ**—आखें । उदा० णैणाँ लोभाँ अटकाँ शक्याँ णा फिर आय १३ । १४, ५१, ६३ । **णैणा**—आँखें । उदा० मोहण मूरत साँवराँ सूरत णैणा बण्या विशाल ३ । १०, ११, १३, १५, १५, ७८, ८६, १२१, २०१ **णैणा**—आँख । उदा० मग जोवाँ दिण बीताँ सजणी, णैणा पड्या दुखरासी ४५, १०३ । **नेण**—आँख । उदा० नेण बिछास्यूँ हिवड़ो डास्यूँ, सर पर राख्यूँ बिराज १०६ । १९० । **नैण**—आँख । उदा० सब सोवाँ सुख नींदड़ी म्हारे नैण जगावाँ २८ । ४४, ५८, ६८, १०७, १०८, ११२, १५५, १८५ । **नैणज**—आखों से । उदा० नैणज देखूँ नाथ नै धाई करूँ आदेस ११६ । **नैन**—आँखें । उदा० नैन झर लावै ७४ । **नैणाँ**—आखों । उदा० आव सखी मुख देखिये, नैणाँ रस पीजै, हो १६ । ५०, ६२, ११०, १३६, १५० । **नैणा**—आँखों । उदा० पिया म्हारे नैणा आगाँ रहज्यो जी ५० ।

णेवाजाँ—(फा० नवाज) कृपा । उदा० प्रीतम दिया सनेसड़ा म्हारो घणो णेवाजाँ, हो १५० ।

णेह—(सं० स्नेह) । उदा० मीराँ दासी जणम जणम री, थारो णेह लगाय २०१ । १७८, १७१, १७९, १८० ।

णैण—दे० 'णण'

णो—(१) (सं०—आनाम्) सबंधकारकीय चिन्ह (का, की) । उदा० प्रह्लाद परतग्या राख्याँ, हरणाकुस णो उद्र बिडारण १३७ । १३७, १४८ । **नो**—सबंधकारकीय चिन्ह । उदा० सानद जननो संग न करिये, पड़ें भजन में भंग रे ३० । १४१, (२) मत । उदा० नैणा आगाँ रहज्यो, म्हाणे भूल णो जाज्या जी ५० ।

त

तदुल स० तन्दुल चावल उदा० भीलणी का बर सुदामा का तदुल भर

मुठड़ी मुकंद १३९ ।

तँह--(सं० तत् + स्थान) वहाँ । उदा० गावत चार धमार राग तँह, दै दै कल करतारी १७५ ।

तई---(सं० तापन = हि० तावना) तप रहा है । उदा० कठिन छाती स्याम बिछुरत, बिरह में तन तई १८२ ।

तकसीर---(अ० तकसीर) अपराध । उदा० किरपा कर मोहिं दरसण दीज्यो, सब तकसीर बिसारी ११३ ।

तज्---(सं० त्यज्) । **तज**--छोड़ । उदा० मीणा तज सरवर ज्यों मकर मिलन धाई १२ । १६, ७७, ८०, ९५, ९९ । **तजूँ**---छोड़ूँ (संभावनार्थक) । उदा० बिरह की मारी मैं बन बन डोलूँ, प्रान तजूँ करवत ल्यूँ कासी ६५ । **तजेंगे**---छोड़ेंगे, त्याग देंगे । उदा० मैं जाण्यूँ हरि नाहिं तजेंगे, करम लिख्यो भलि पोच १८३ ।

तज्याँ---छोड़ दिया । उदा० पाणी पीर णा जाणई, मीन तलफि तज्याँ देह १०५ ।

तज---दे० 'तज्'

तजूँ---दे० 'तज्'

तजेंगे---दे० 'तज्'

तज्याँ--दे० 'तज्' ।

तट---(सं० तट)---किनारे । **तट तट**---किनारे-किनारे । उदा० धजा पताका तट तट राजाँ झालर री झकझोर २०२ ।

तण---(सं० तन) शरीर । उदा० तण वाराँ म्हाँ जीवण वाराँ, वाराँ अमोलक मोल २२ । २३, २६, ३६, ५१, ६६, ७१, ९६, १०७, ११०, ११६, १२०, १८२ १८४ २०० । **तन** शरीर । उदा० हे मा बडी बडी अखियन वारो साँवरो, मो तन हेरत हँसिके ७ । ११, १६, ३८, ४४, ८६, ९४, ९४, ११२, १७४, १९१, १९१ । **तनह**---शरीर । उदा० तनह मैं व्यापी पीर, मण मतवारी हैं १७४ । **तनही**---शरीर ही । उदा० लगण लगी जैसे जल मछियन सें, बिछड़त तनही दीजै १९१ ।

ततकाल---(सं० तत्काल) शीघ्र ही, उसी क्षण । उदा० किरपा कीजौ दरसण दीजौ, सुध लीजो ततकाल १२७ ।

तन--दे० 'तण'

तनक---(सं० तनिक) थोड़ा । उदा० तनक हरि चितवाँ म्हारी ओर ५ । ७२ ।

तनह---दे० 'तण'

तनही---दे० 'तण'

तपण--(सं० तपन) ताप, गर्मी । उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, थें विण तपण घणेरा ११० । **तपताँ**---तपित, तपा हुआ । उदा० बिथा लगाँ तण जाराँ जीवण, तपता बिरह बुझाज्याँ जी ९६ । **तपन**---गर्मी । उदा० बिरह बुझावण अन्तरि आवो, तपन लगी तन माहिं ४४ । **ताप**---गर्मी । उदा० तणरी ताप मिट्याँ सुख पास्याँ हिलमल मंगल गाज्यो जी ११९ ।

तपता---दे० 'तपण'

तपन---दे० 'तपण'

तब---(सं० तदा) उस समय । उदा० जब लागी तब कोउ न जाने, अब जानी संसार १२७ । **तबहीं**---तभी । उदा० लोक लाज बिसारि डारी, तबहीं कारज सर्‌यो १७२ । **तबही**--तभी । उदा० रैण पड़ै तबही उठि जाऊँ, भोर गये उठि आऊँ २० ।

तबहीं---दे० तब

तबही— दे० 'तब'

तर—(फ़ा० तर) संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया)। **तर जास्याँ**—पार कर जाऊँगी। उदा० स्याम नाम रा झाँझ चलास्याँ, भोसागर तर जास्याँ ३१। ३५। **तरण**—नौका, नाव। उदा० दासि मीराँ दासी लाल गिरधर अगम तारण तरण १। **तरै**—तर जाते हैं। उदा० दास मीराँ तरै सोइ ऐसी प्रीति करै जोइ १८६। **तर्‌यो**—तर गया। उदा० म्हने भरोसो राम को रे (वाला), डूबि तर्‌यो हाथी १८५। **तार** तार दो, बेड़ा पार लगा दो। उदा० तुम सरणागत परम दयाला, भवजल तार मुरारी ११३। १३३। **तारण**—(१) तारने वाला। उदा० मीराँ दासी लाल गिरधर अगम तारण तरण १। ४८, १६६। (२) दूर करने वाले। उदा० अधम उधारण भव भय तारण १३७। **तार्‌याँ**—तारा। उदा० अजामील अपराधी तार्‌याँ तार्‌याँ नीच सुदाण १३४। **तारी**—तार दिया। उदा० पत्थर की अहिल्या तारी, बन के बीच पड़ी ११८। **तिरताँ**—तर जाते हैं। उदा० नाम लेताँ तिरताँ सुण्याँ, जंग पाहण पाणी जी १४०।

तरकस—(फ़ा० तरकश) तीर रखने का चोगा। उदा० तरकस तीर लग्यो मेरे हियरे, गरक गयो सनकाणी ३८।

तरण—दे० 'तर्'

तरश्—(सं० तर्षण)। **तरशा**—तरसती है। उदा० अखयाँ तरशा दरसण प्यासी ४५। **तरस तरस**—ललच ललचकर। उदा० मीराँ रे हरि थे मिलियाँ बिण तरस तरस जीया जावाँ ६६ **तरसावाँ**—(१) तरसाते हो। उदा० क्यूँ तरसावाँ अंतरजामी, आय मिलो दुख जाय १०१। १०४। **तरसी**—तरसी हुई। उदा० भाव भगत जागीरी पास्यूँ, जणम जणम री तरसी १५४। **तरसै**—तरसती है। उदा० नैण दुखी दरसण कूं तरसै नाभिन बैठे गाँसड़ियाँ १०८।

तरशा—दे० 'तरश्'

तरस—दे० 'तरश्'

तरसावाँ—दे० 'तरश्'

तरसी—दे० 'तरश्'

तराजाँ—(फ़ा० तराज़) तराजू। उदा० थे कह्याँ मुँहोंघो म्हा कह्याँ सस्ता, लिया री तराजाँ तोल २२।

तरि—(सं० तले = तरे = तरि) नीचे। उदा० रहूँ चरणनि तरि मेरो ६५।

तरै—दे० 'तर'

तर्‌यो—दे० 'तर'

तलफ—(अनु०) तड़पकर। उदा० मीण जल बिछुड़्या णा ज्यावाँ, म्हाणे प्रेम पीड़ा खाय ६०। **तलफ तलफ**—तड़प तड़प कर। उदा० तलफ तलफ कल णा पड़ाँ बिरहानल लागी ६१। १६७। **तलफत**—(सामान्य वर्तमान) तड़पता है। उदा० मीराँ व्याकुल बिरहिणी रे, तुम बिनि तलफत प्राणि ४८। **तलफत तलफत**—तड़पते हुए। उदा० तलफत तलफत बहु दिन बीता, पड़ी बिरह की पासड़ियाँ १०८। **तलफाँ तलफाँ**—तड़प-तड़पकर। उदा० तलफाँ तलफाँ जियरा जावाँ कब मिलियाँ दीनानाथ ७५। **तलफि**—तड़पकर। उदा० पाणी पीर णा जाणई, मीण तलफि तज्याँ देह १०५। **तलफि तलफि**—तड़प-तड़पकर। उदा० तुम दरसे बिन कलि न परति है तलफि

तलफि जिव जासी ४१ ।

तलफल—दे० 'तलफ्'

तलफाँ—दे० 'तलफ्'

तलफि—दे० 'तलफ्'

तलब—(अ० तलब) परेशानी । उदा० अष्ट करम की तलब लगी है, दूर करो दुख भार १३५ ।

ता—(सं० तत्) । **ताकूँ**—उसको । उदा० मै तो हूँ तुम्हारी दासी, ताकूँ तो चिता-रियै १०० । **ताके**—उसके । उदा० ताके मग सीधारताँ हे भला न कहसी कोइ २६ । **तासों**—उससे । उदा० जो तेरे हिय अंतर की जाणै तासों कपट ण वणे १५८ ।

ताहि—(१) (बलात्मक) उसी । उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, ताहि के रँग में भीजै ११६ । (२) उसको । उदा० बिलार बिषया लालची रे, ताहि भोजन देत १५८ ।

ताकूँ—दे० 'ता'

ताके—दे० 'ता'

तातणे—(स० तंति) तागे । उदा० काचे ते तातणे हरिजीए बाँधी, जेम खेंचे तेम तेमनी रे १७३ ।

ताता—(सं० तप्त) गर्म । उदा० पिण ताता पिण सीतला रे, पिण बैरी पिण मित ५१ ।

ताननि—(सं० तान+नि) स्वरों । मीराँ के प्रभु बस कर लीने, सप्त ताननि की फाँसु, री १६७ ।

ताप—दे० 'तप'

तामें—(सं० तत्=ता+में) उसमें । उदा० श्रवण सुनत मेरी सुध बुध बिसरी, लगी रहत तामें मन की गाँसु, री १६७ ।

तार—दे० 'तर'

तारण—दे० 'तर्'

तारयाँ—दे० 'तर्'

ताराँ—(सं० तारक) तारे । उदा० ताराँ गणताँ रेण बिहाना, सुख घड़िया री जोवाँ ८६ । **तारा**—तारे । उदा० सहस गोप बिच स्याम बिराजे, ज्यों तारा बिच चन्द १३१ ।

तारा—दे० 'ताराँ'

तारी—(१) दे० 'तर्' । (२) (सं० तव+कृत+ई) तुम्हारा । उदा० मणे लागी सरण तारी ७७ ।

तारे—दे० 'तर'

ताल—(१) (सं० ताल) करतल, वह ध्वनि जो दोनों हथेलियों को एक दूसरे पर मारने से होती है । णाच्याँ गावाँ ताल बजावाँ पावाँ आणद हाँसी ६ । ३७ । (२) (सं० तल्ल) तालाब । उदा० आया सावण भादवा भरीया जल थल ताल ११६ ।

ताला—(सं० तालक) दरवाजे आदि मे बंद करने का एक उपकरण उदा० पहरो भी राख्यो चौकी बिठार्यो, ताला दियो जड़ाय ४२ । **तालूँ**—ताला । उदा० पेटी घड़ावुँ पुरुषोत्तम केरी श्रीकम नाम नुँ तालूँ रे १४१ । **तालो लागाँ**—बंद हो गया, संबंध टूट गया । उदा० बड़े घर तालो लागाँ री, पुरबला पुन्न जगावाँ री २४ ।

तालाबेली—व्याकुलता । उदा० बहू दिन बीते अजहुँ न आये, लग रही ताला-बेली ८० ।

तालूँ—दे० 'ताला'

तालो—दे० 'ताला'

तासों—दे० 'ता'

ताहि—दे० 'ता'

तित—(सं० तत्र) वहाँ। उदा० जित जोयाँ तित पाणी पाणी प्यासा भूम हरी ८२। **तितही**—वहीं। उदा० जहाँ बैठावे तितही बैठूं, बेचे तो बिक जाऊँ २०।

तितही—दे० 'तित'

तिमि—(सं० तिमिर) अंधकार। उदा० प्रीतम विणि तिमि जाइ न सजणी, दीपक भवन न भावै ९२।

तिरताँ—दे० 'तर्'

तिलक—(सं० तिलक) पूजा पाठ के अवसर पर केसर आदि का लगाया गया टीका। उदा० मोर मुगट माथ्याँ तिल्क बिराज्याँ, कुण्डल अलकाँकारी जी २। ३, १२, २५, १५८।

तिहारी—(सं० त्वम् + हार + ई) तुम्हारी उदा० जाय वाकूं ऐसे कहियो मीराँ तो तिहारी हें १७४। **तिहारे**—तुम्हारे। उदा० नेम धरम कोण कीनी मुरलिया, कोण तिहारे पासु, री १६७। **तिहारो**—तुम्हारा। उदा० मेरे आसा और ण स्वामी, एक तिहारो ध्याण १२४।

तीजाँ—(सं० तृतीया) तीज (राजस्थान का एक प्रसिद्ध त्यौहार। उदा० सावण मैं झड़ लागियो, सखि तीजाँ खेलै हो ११५।

तीन—(सं० त्रीणि) संख्यावाचक विशेषण। उदा० पाँच पहर धंधे में बीते, तीन पहर रहे सोय १५९। १८७। **तीनूं**—तीनों। उदा० और आसिरो णा म्हारा थे बिण, तीनूं लोक मँझार ४।

तीर[1]—(फ़ा० तीर) बाण। उदा० तरकस तीर लग्यो मेरे हियरे, गरक गयो सनकाणी ३८। १५५, १६१।

तीर[2]—(सं० तीर) किनारे। उदा० मुरलिया बाजाँ जमणा तीर १६६। **तीरा**—किनारे उदा० आधी रात प्रभु दरसण दीन्यो जमणा जी रे तीरा १५४।

तीरथ—(सं० तीर्थ) तीर्थ। उदा० अडसठ तीरथ संतो ने चरणो कोटि कासी ने कोटि गंग रे ३०। १३३, १९५।

तीरा—दे० 'तीर[2]'

तुम—(सं० त्वम्) तुम (मध्यम पुरुष, एक वचन, सर्वनाम) (१) विभक्ति रहित। उदा० तुम गजगीरी को चूँनरीरे, हम बालू की भीत ५९। ६३, ६५, ७६, ८०, ९५, ११२, ११२, ११३, ११३, ११३, ११४, ११४, ११५, ११५, ११५, १२५, १३२, १५१, १६२। (२) शून्य विभक्ति सहित। उदा० मीराँ व्याकुल बिरहिणी रे, तुम बिनि तलफत प्राणि ४४। ४९, ५२, ६७, ८४, ९७, ९८, १०७, ११२, ११२, ११३, ११४, ११८, १२४। **तुम बिच**—(हिं० तुम + सं० विच) तुममें। उदा० तुम बिच हम बिच अंतर नाही, जैसे सूरज घामा ११४। **तुमरे**—तुम्हारे। उदा० मीराँ कहै प्रभु तुमरे दरस बिन, लगत हिवड़ा में सूल ५४। **तुम्हारी**—उदा० अब तो वेगि दया करि साहिब, मैं तो तुम्हारी दासलियाँ १०८, ११३, १२०, १९५। **तूँ**—तुम। उदा० जै तूँ लगण लगाई चावै, तो सीस की आसन कीजै १९१। **तू**—उदा० ऐसी लगन लगाइ कहाँ तू जासी ४९। ५८, ८४, ८४, ९८। **तेरा**—तुम्हारा। उदा० मैं जण तेरा पथ निहारूँ, मारग चितवत तोरे ९५। **तेरी**—उदा० आरति तेरी अंतरि मेरे, आवो अपनी जाणि ४४। ४६, ६३, ६५, ९४, १३३, १५१। **तेरे**—उदा० तेरे खातिर जोगण हूँगी, करवत लूँगी कासी ४१ ९४ ११६ १२६ १५८ १७६

तेरै—तुम्हारे। उदा० घर आवो म्याम, मेरे मैं तो लागूं पाँव तेरै १२०। **तेरो**—उदा० आदि अंत निज नाँव तेरो हीया में फेरो ६३ । १६३ । **तोइ**—तुम्हारे लिए। उदा० नातिर दुख जग माहि जीवड़ो, निस दिन झूरै तोइ ६७। **तोकों**—तुमको। उदा० ज्यों तोको कछु और बिथा हो, नाहिन मेरो वसिके ७। **तोरे**—तुम्हारे। उदा० मैं जन तेरा पंथ निहारूँ, मारग चितवत तोरे ६५, १२७, १८७। **तोही सूँ**—तुमसे। उदा० रमईया मेरे तोही सूँ लागी नेह ५६।

तुमरे—दे० 'तुम'

तुम्हारी—दे० 'तुम'

तुरत—(सं० तुर) एकदम। उदा० मीन जल से बाहर कीना, तुरत मर जाई ८६।

तुलसी—(सं० तुलसी) एक प्रकार की मंजरी। उदा० घर-घर तुलसी ठाकर पूजा दरसण गोविन्द जी काँ १६०। १६०।

तूं—दे० 'तुम'

तू—दे० 'तुम'

तें—(सं० अंत) करणकारकीय चिन्ह) से। उदा० मण की मैल हियतें छूटी, दियो तिलक सिर धोय १५८। १७०, १८२।

ते[1]—(सं० त:) वे। उदा० प्रीत करै ते बावरा रे, करि तोडै ते कूर ५६। ५६, ५६, १७३।

ते[2]—(सं० अंते) अपादानकारकीय चिन्ह (से)। उदा० गागर रँग सिरते झटकी, झड़ गई कोर किनारी १७०।

ते[3]—(सं० तद्) तब। उदा० साधु जननो संग जो करिये चढ़े ते चौगणो रंग रे ३०।

तेताई—(सं० कल्पित रूप तियतक+सं० हि०) उतना. वह सब कुछ। उदा० जेताई दीसों धरण गगन माँ, तेताई उठ जासी १६५।

तेम—(सं० तेषाम्+मुख) उस ओर। उदा० काचे ते तातणे हरिजीए बाँधी, जेम खेंचे तेम तेमनी रे १७३।

तेमनी—(सं० तेषाम्+मुख+?) उसी तरह। उदा० काचे ते तातगे हरिजीए बाँधी, जेम खेंचे तेम तेमनी रे १७३।

तेमाँ—(सं० तेषाम्+मध्ये) उसमें। उदा० कूँची कराबुं करुणानन्द केरी, तेमाँ घरेणु मारूँ घालूं रे १४१।

तेरा—दे० 'तुम'

तेरी—दे० 'तुम'

तेरे—दे० 'तुम'

तेरै—दे० 'तुम'

तेरो—दे० 'तुम'

तो[1]—(सं० तु) विशेषार्थक निपात। उदा० मीराँ तो गिरधर बिन देखे, कैसे रहे घर वसिके ७। २५, २५, ३४, ३६, ४०, ४०, ४०, ४४, ५५, ५६, ५६, ६०, ८८, ६४, १०८, १०८, १११, १११, १११, ११८, ११८, १२०, १२०, १२२, १२७, १३०, १३३, १५७, १७१, १७४, १७४, १८०,

तौ—विशेषार्थक निपात। उदा० जै तूँ लगन लगाई चावै, तौ सीस की आसन कीजै १९१।

तो—(सं० तदा) तब। उदा० जहाँ बैठावें तितही बैठूँ, बेचे तो बिक जाऊँ २०। ३५, ७६, १००, १५३, १८७।

तोइ—दे० 'तुम'

तोकों—दे० 'तुम'

तोडै—दे० 'तोड़'

तोड़त—दे० 'तोड़'

तोड—(सं० तुड)। **तोड़याँ**—तोड़ा।

उदा० णातो साँवरो री म्हासूँ, तनक न तोड़्याँ जाय ७२। **तोड़ै**—तोड़ते हैं। उदा० लागी प्रीत जिन तोड़ै रे बाला, अधिक कीजो नेह ५६। **तोड़त**—तोड़ते हुए। उदा० तोड़त जेज करत नहिं सजनी, जैसे चँमेली के फूल ५४।

तोड़्याँ—दे० 'तोड़्'

तोरण—(सं० तोरण) बन्दनवार। उदा० सुपणा मा तोरण बंध्यारी सुपणामां गह्या हाथ। २७।

तोल्१—(सं० तुल) तौलकर। उदा० थें कह्याँ मुंहोंघो म्हाँ कह्याँ सस्तो, लिया री तराजाँ तोल २२।

तोल२—(सं० तुल्) समझ। उदा० बाल-पनाँ की प्रीत रमइया जी, कदे नहिं आयो थारो तोल १००।

तोस—(सं० संतोष) संतोष। उदा० सील घूंघरा बांधि तोस निरताँ कराँ १६३।

त्याँ—(सं० तत्र) वहाँ। उदा० ज्याँ ज्याँ चरण धरणाँ धरणी धर, त्याँ त्याँ निरत कराँ री २१, १५७।

त्याग्—(सं० त्यज्)। **त्याग**—छोड़कर। उदा० हरि हितु से हेत कर, संसार आसा त्याग १५८। **त्यागाँ**—(१) त्याग दूँगी। उदा० राजा रूठ्याँ नगरी त्यागाँ, हरि रूठ्याँ कहँ जाणाँ ३६। (२) छोड़ दिया। उदा० थारे कारण जग जण त्यागाँ लोक लाज कुल डाराँ ६३। **त्यागा**—त्याग दिया। उदा० गहण गाँठी राणा हम सब त्यागा, त्याग्यो कररो चूड़ो ३२। ३२, ३४। **त्यागी**—छोड़ दी। उदा० पीव पीव म्हाँ रटाँ रैण दिन लोक लाज कुल त्यागी। **त्यागे**—छोड़ दिए। उदा० तेरे कारण हम सब त्यागे, पाण पाण पै मण नहीं लागे १२६। **त्याग्या**—त्याग दिया। उदा० काजल टीकी राणा हम सब त्याग्या भगवाँ चादर पहर ३४। **त्याग्यो**—छोड़ दिया। उदा० महल अटारी हम सब त्याग, त्याग्यो थाँरो बसनों सहर ३४। ३२, ३२।

त्यागाँ—दे० 'त्याग्'

त्यागा—दे० 'त्याग्'

त्यागी—दे० 'त्याग्'

त्यागे—दे० 'त्याग्'

त्याग्या—दे० 'त्याग्'

त्याग्यो—दे० 'त्याग्'

थ

थई—(सं० कल्पित रूप भवंतक:) हुआ। उदा० मुज अबला ने मोटी निराँत थई रे १४१।

थल—(सं० स्थल) पृथ्वी। उदा० आया सावण भादवा भरीया जल थल ताल ११६।

थोड़ा—(सं० स्तोक) कम। उदा० जग माँ जीवणा थोड़ा कुण लयाँ भवभार १६७।

थाँ—(सं० कल्पित रूप तुष्मैं + कृतक) (१) तुमने। उदा० कहा भयाँ थाँ भगवा पहर्‌याँ, घर तज लयाँ सन्यासी। (२) तुम्हें। उदा० थाँ देख्याँ विण कल ण पडताँ जाणे म्हारी छाती १०६। (३) तुम्हारे। उदा० मीराँ कहै प्रभु कबहि मिलौगे थाँ बिण नैण दुख्यारा ११२। थाँणे—तुम्हें। उदा० थाँणे काँई काँई बोल सुहावाँ म्हाँरा साँवराँ गिरधारी ५१। थाँने—तुम्हें। उदा० म्हाँरो जणम जणम रो साथी, थाँने णा बिसर्‌याँ दिन राती १०६। थाँरो—तुम्हारी। उदा० सुणि पावेली बिरहणी रे, थारो रालैली पाँख मरोड़ ८४। १२६, १३० थाँरे—तुम्हारे। उदा० थाँरे देसाँ में राणा साध नही छै, लोग बसै सब कूड़ो ३२। थाँरो—तुम्हारा। उदा० नहिं सुख भावै थाँरो देसलड़ो रँगरूड़ो ३२। ३४। थाराँ—तुम्हारी। उदा० मैं तो दासी थाराँ जनम जनम की थे साहब सुगणा ६०। ११० थारा—तुम्हारा। उदा० थारा सबद सुहावण रे, जो पिव मेला आज ८४, ११२। थारी—तुम्हारी। उदा० मीराँ रे प्रभु हरि अविनासी, थारी सरण गह्याँ २६। ३६, ५१, ५६, ६६, ७१, ६६, १३४, १३८, १५२, १५६। थारे—तुम्हारे। उदा० तणमण जीवण प्रीतम वार्‌या, थारे रूप लुभावाँ ६६। ६३, १०४, १११, ११४, १४०। थारो—(१) तुम्हारा, आपका। उदा० थारो रूप देख्याँ अँटकी ६। ५२, ५२, ८४, १००, १००, १०३। (२) तुमसे। उदा० मीराँ दासी जणम जणम री, थारो णेह लगास १०१। १०५ १०६ (इन दूसरे प्रकार के प्रयोगो को कीय भी माना जा सकता है)। थारोई—(बलात्मक) तुम्हारा ही। उदा० मीराँ कहे प्रभु गिरधर नागर, थारोई नाम भणा ६०। थें—(१) तू। उदा० मण थें परस हरि रे चरण १। ४, ४, ५, २२, २२, २८, ४७, ४८, ४८, ५०, ६०, ६१, ६२, ६४, ६६, ६६, १०१, १०१, १०२, १०२, १०३, १०४, १०४, १०४, ११०, ११८, १२६, १३४, १३७, १४०, १६८, १६८। (२) तुम्हारे। उदा० भगवाँ भेख धर्‌याँ थें कारण, ढूढ़्याँ चार्‌याँ देस ६८। ६६, १०१, १०१, १२१, १२८, १३१, १३७, १३८, १५५, १६४, १६७। थे—(१) तुम उदा० थे तो राणा जी म्हाँनि इमड़ा लागो ज्यों ब्रच्छन में कैर ३४। ५२, ६४, १४६। (२) तुमने। उदा० राणा जी थे क्याँनि राखो म्हाँसूँ बैर ३४। ३८, ६१, ६३। (३) तुमको। उदा० थे देख्याँ बिण कल णा पड़ताँ, णेणा चलताँ धारा ६३। (४) तुमसे। उदा० मीराँ रे हरि थे मिलियाँ विण तरस तरस जीया जावाँ ६६। तुम्हारे। उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर गिरधर नागर, थे बिण फटा हियाँ ४२। ६६, १०५।

थाँणे—दे० 'थाँ'

थाँने—दे० 'थाँ'

थाँरो—दे० 'थाँ'

थाँरे—दे० 'थाँ'

थाँरो—दे० 'थाँ'

था—(सं० कल्पित रूप भवंतकः) भूतकाल की सहायक क्रिया। उदा० आया था ए लोभ के कारण, मूल गमाया भूल १६८। थी—उदा० मैं जल जमुना भरन गई थी आ गयो कृस्न मुरारी हे माय

१६६ ।

थाकाँ—(सं० स्था = हिं० थाक + आँ) थक गए। उदा० बिरद बखाणाँ गणताँ गा जाणा, थाकाँ वेद पुराण १३४।

थाणे—(सं० स्थान) स्थान पर। उदा० एकै थाणै रोपिया रे, पूरब जनम की प्रीत ५६।

थाप्याँ—(सं० स्थापन) स्थापित किया उदा० संकट मेट्या भगत जणाराँ थाप्या पुन्न रा पाज १०६।

थाय—हो। उदा० झगड़ो थाय त्याँ दोड़ी ने जाय रे मूकी ने घर ना काम रे १५७।

थारा—दे० 'थाँ'

थारी—दे० 'थाँ'

थारे—दे० 'थाँ'

थारो—दे० 'थाँ'

थासे—होंगे। उदा० अड़सठ तीरथ संतों ने चरणे, कोटि कासी ने कोटि गंग रे ३०।

थी—दे० 'था'

थे—दे० 'थाँ'

थे—दे० 'थाँ'

थोरा—(सं० स्तोक) थोड़ा, कम। उदा० मीराँ के प्रभु गिरिधर नागर, ज्यों चाहै सोही थोरा, रे १८७।

द

दंदा—(सं० द्वन्द्व)। उदा० मीराँ विरहण गिरधर नागर, मिल दुख दंदा छाज्यो जी ११

द्—(सं० दान)। **दइ**—संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) दी। उदा० लोकलाज कुल काण जगत की, दइ बहाय जस पाणी २८। **दयाँ**—दिया। उदा० सखियन सब मिल सीख दयाँ मन एक न मानी हो ८७। १२८। **दया**—दिया। उदा० दध मथ घृत काढ़ लयाँ डार दया छूयाँ १८, १०८। **दियाँ**—(१) देने से (क्रियार्थक संज्ञा)। उदा० जोगी म्हाँने दरस दियाँ सुख होइ ६७। (२) दिया (पूर्ण क्रिया द्योतक)। उदा० माता पिता जग जन्म दियाँ री करम दियाँ करतार १६७। **दिया**—दे दिया, (पूर्ण क्रियाद्योतक)। उदा० थें कर दिया परतीत पिछाणी जी १४०। १५०। **दियो**—(१) संयुक्त क्रिया (सहायक क्रिया) दिया। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, इमरित कर दियो जहर ३८। ४२. (२) दिया (पूर्ण क्रियाद्योतक)। उदा० राणा जी थे जहर दियो म्हे जाणी ३८। ४१, १५८। **दिलावै**—देंगे। उदा० तुम दरसण की आस रमैया, कब हरि दरस दिलावै ६७। **दीजै**—(१) संयुक्त क्रिया (सहायक क्रिया) दीजिए। उदा० असा प्रभु जाण न दीजै १६, ८६, ११५, ११५, १६६। (२) मुख्य क्रिया। उदा० अपणे करम को वो छै दोस काकूं दीजै रे ऊधो अपणे १८३। १६१, १६१, १६१, १६१। **दीजो**—दीजिए। पल पल भीतर पंथ निहारूँ, दरसण म्हाँने दीजो जी १११ १११

१११। **दीजो**—दीजिए। किरपा कीजो दरसण दीजो, सुध लीजो ततकाल १२७। **दीज्यां**—(१) देते हैं। उदा० इमरत पाइ विषाँ क्यूँ दीज्याँ कूँणा गाँव री रीत ५६। (२) दीजिए। उदा० मीराँ कूँ प्रभु दरसण दीज्याँ, पूरब जन्म को कोल २२। ९६। **दीज्यौ**—दीजिए। उदा० मीराँ कूँ प्रभु दरसण दीज्यौ, आँणद वरण्यूँ न जावै ६७। ११६, १२६, १५१, १५८। **दीन्ह**—संयुक्त क्रिया (सहायक क्रिया) दिया। उदा० जहर का प्याला राणा भेज्या, अमृत दीन्ह बनाय ४१। **दीन्हो**—दिया। उदा० स्याम सनेसो कबहुँ ण दीन्हो, जानि बूझ गुझबाती १२३।
दीयो—दीजिए। उदा० पिया दरसण दीयो आय थें विण रह्या ण जाय १०१
दीस्यो—दीजिए। उदा० मीराँ के प्रभु दरसण दीस्यो थे चरणाँ अधाराँ ९३। १३४, १५४। **दूँगी**—(भविष्यत्)। तेरे कारण जोगण हूँगी, दूँगी नग बिच फेरी ९४। **दे**—(१) देता है। उदा० जो पहिरावै सोई पहिरूँ जो दे सोई खाऊँ २०। (२) संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया)। उदा० सावण दे रह्या जोरा रे, घर आयो जी स्याम मोरा, रे १४७। **देस्याँ**—देंगे। उदा० चरण कँवल गिरधर सुख देस्याँ, राख्याँ नैणाँ नेरा ११०। **देस्यूँ**—दूँगी। उदा० मीराँ रे प्रभु हरि अबिनासी, देस्यूँ प्राण अँकोर ५। **देहे**—दूँगी। उदा० छप्पन भोग बुहाइ देहे इन भोगनि मे दाग २६। **दै दै**—दे दे कर। उदा० गावत चार धमार राग तँह, दै दै कल करतारी १७५। **दैण** देने के लिए। उदा० मीराँ रे प्रभु कबरे मिलोगे दुख मेटण सुख दैण १०३। **द्यो**—सहायक क्रिया। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर दरसन द्यो ने बलबीर १२२। **द्यो**—दो (सहायक क्रिया। उदा० साँप पिटारो राणा जी भेज्यो, द्यो मेड़तणी गल डार ४०। ४०। **द्यौ**—दो। उदा० मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी दरसण द्यो ण मोकूँ आय ९८।

दध—(सं० दधि) दही। उदा० दध मथ घृत काढ़ लयाँ डार दया छूयाँ १८। १७६। **दधि**—दही। उदा० दधि को नाम बिसरि गयो प्यारी, 'लेलेहु री कोइ स्याम सलोना १७७। १७८। **दही**—उदा० निरमल णीर बह्या जमणाँ माँ, भोजन दूध दही काँ १६०।

दधि—दे० 'दध'

दमक—(हिं० चमक का अनु०) चमककर। उदा० घुमँट घटा ऊलर होइ आइ दामिन दमक डरावै ७४।

दयाँ—दे० 'द'

दया—दे० 'द'

दयाल—(सं० दयालु) दयालु। उदा० मीराँ दासी अरज कर्याँ छे, म्हारो लाल दयाल ४७।

दर—(सं० द्वार)। **दर दर**—द्वार द्वार, प्रत्येक द्वार पर। उदा० दरद की मार्याँ दर दर डोल्याँ बैद मिल्या नहिं कोय ७०।

दरद—(फ़ा० दर्द) पीड़ा। उदा० दरद की मारी दर दर डोल्याँ बैद मिल्या नहिं कोय ७०। ७०, ७३, १०२। **दरद दिवाणी**—दर्द से दिवानी, पीड़ा के कारण विक्षिप्तावस्था में आ जाना। उदा० हेरी म्हाँ दरद दिवाणी म्हाराँ दरद न जाण्याँ कोय ७०। ९७। **दरध**—पीडा। उदा० सब जग कूडो कंटक दुनिया,

दरध न कोई पिछाँणै हो ७३ ।

दरध—दे० 'दरद' ।

दरबाराँ—(फा० दरबार) में । उदा० कामदाराँ सूं काम णाँ म्हारे, जावा म्हा दरबाराँ री २४ ।

दरस—(सं० दर्शन) दर्शन, साक्षात्कार । उदा० मीराँ कहै प्रभु तुमरे दरस बिन, लगत हिवड़ा में सूल ५४ । ६७, ७८, ८०, ९७, १०३, १०८, १२८, १३०, १९४ । **दरसण**—दर्शन । उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, दरसण दीज्यो दासी ६ । १५, २२, ३१, ३६, ४५, ६७, ६७, ६७, ६९, ७२, ८०, ८५, ८६, ९३, ९४, ९६, ९८, १००, १०१, १०२, १०८, १११, ११३, ११५, ११५, ११५, ११६, १२६, १२७, १५४, १५४, १५४, १५४, १६० । **दरसन**—दर्शन । उदा० मीराँ कहे प्रभु कबरे मिलोगे, दरसन विण दिन दोरे ९५ । २८, १२२ ।

दरियाई—(फा० दरियाई) विशेष प्रकार का कपड़ा (साटन) जिसको दरयाव भी कहते हैं । उदा० केसरी चीर दरियाई को लेंगों, ऊपर अँगिया भारी १७१, **दरियावाँ** (फा० दरिया) नदी । उदा० गंगा जमणा काम णा म्हारे, म्हाँ जावाँ दरयावाँ री २४ ।

दल[1]—(सं० दल) समूह । उदा० सुन्दर बदन कमल दल लोचण, बाँकाँ चितवण णेणा समाणी ११ । १६९ ।

दल[2]—(सं० दलन) । **दल के थंभण**—बाधाओं को कुचलकर । उदा० प्रीत निभावण दल के थंभण, ते कोई बिरला सूर ५९ ।

दह—(सं० दहन **दह** उदा० कालिन्दी दह नाग नाथ्याँ, काल फण निर्त करंत १६८ । **दहत**—तपकर । उदा० जैसे कँचन दहत अगिन में निकसत बारावाणी ३८ । **दाध्या**—जले हुए । उद.० दाध्या ऊपर लूण लगायाँ, हिवडो करवत सार्‌याँ ८३ । **दाहें**—जलाता है । उदा० चंद को चकोर चाहे दीपक को पतंग दाहें १७४ ।

दही—दे० 'दध'

दाँवन—(फा० दामन) पल्ला, आँचल । उदा० भीजे म्हारो दाँवन चीर, सावलियो लूम रह्यो रे १२२ ।

दा—(सं० कृतक) का (संबंधकारकीय चिन्ह, उदा० चार दिना की करले खूबी, ज्यूं दाड़िम दा फूल १९८ । **दी**—की । उदा० लागी सोही जाणै कठण लगण दी पीर १९२ । १९२ ।

दाग—(फा० दाग़) बुराई । उदा० छप्पन भोग बुहाइ दे हे, इन भोगनि में दाग २६ ।

दाड़िम—(सं० दाड़िम) अनार । उदा० चार दिना की करले खूबी, ज्यूं दाडिम दा फूल १९८ ।

दादर—(सं० दर्दुर) मेंढक । उदा० दादर मोर पपइया बोलै, कोयल सब्द सुणावे रे ८१ । ९२ । **दादुर**—मेंढक । उदा० कमठ दादुर बसत जल में, जल से उपजाई ८९ । १४२, १४३, १४५, १४७ ।

दाध्या—दे० 'दह'

दान—(सं० दान) । उदा० कबहूं न दान लियो मनमोहन, सदा गोकुल आत जात १७६ ।

दामण—(सं० दामिनी) उदा० उमग्याँ इन्द्र चहूं दिस बरसाँ दामण छोड्‌या लाज ४३, १४६ । **दामिन**—बिजली । उदा० घुमट घटा ऊलर होइ आई दामिन दमक

डरावे ७४।
दामिन—दे० 'दामण'
दाय—(?) (१) पसंद । उदा० और सिंगार म्हांरे दाय न आवै, यों गुर ग्यान हमारो २५। ४२, ७४।
दास—(सं० दासि) दासी, सेविका। उदा० दास मीराँ लाल गिरधर, मिल्या सुख छाई ८९। ११७, ११७, १३३, १३९, १३९, १५८, १८५, १८६। **दासड़ियाँ**—(दास +देशज प्रत्यय ड़िया) दासी। उदा० अब तो बेगि दया करि साहिब, मैं तो तुम्हारी दासड़ियाँ १०८। **दासि**—उदा० दासि मीराँ लाल गिरधर, अगम तारण तरण १। ६१, ६३, १७२, १८२। **दासी**—उदा० मीराँ रे प्रभु दासी रावली, लीज्यो णेक णिहार ४। ६, ३८, ४३, ४५, ४७, ४७, ४९, ५१, ६०, ६५, ६६, ७१, ८४, ८५, ९७, १०१, १०४, १११, ११३, १२०, १२९, १३६, १४०, १४८, १५१, १६३, १९४, १९५, १९६।
दाहें—दे० 'दह'
देख—(सं० दृश्)। **दखावाँ**—दिखाओगे। उदा० पिया कब दरस दखावाँ ७८। **दिखणी**—दिखाई देने वाला। उदा० झूठा पाट पटंबरा रे, झूठा दिखणी चीर २६। **दिखाय**—दिखाया। बाबल बैद बुलाइया री, म्हाँरी बाँह दिखाय ७२। **दीखा**—दिखाई दिया, मिला। उदा० दीखा णाँ कोई परम सनेही, म्हारे सँदेसा लावाँ ७८। **दीठ**—संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) दिखाई। उदा० साँवरो नंद नँदन दीठ पड्याँ माई १२। **दीठी**—दिखाई दी। उदा० सत संगति मा ग्यान सुणौछी, दुरजन लोगाँ ने दीठी ३३। **दीस्याँ** दिखा दिया। उदा० जुग जुग भीर हराँ भगताँ री, दीस्याँ मोच्छ नेवाज ६२। **दीसाँ**—दीख पड़ता है। उदा० जेताई दीसाँ धरण गगन माँ, तेताई उठ जासी १९५, **दीसे**—दिखाई देता है। उदा० आत न दीसे जात न दीसे, जोगी किसका मीत ५५। **दीसै**—दिखाई देता। उदा० बाहरि घाव कछु नहिं दीसै, रोम रोम दी पीर १९२। **देख**—देखकर। उदा० बिपत हमारी देख तुम चाले, कहिया हरिजी सूँ जाय ७६। ११६। **देखण**—देखने (क्रियार्थक संज्ञा) न्हाय धोय जब देखण लागी, सालिगराम गई पाय ४१। **देखत**—देखते ही (तात्कालिक कृदंत)। उदा० गिरिधर म्हाँरो साँचों प्रीतम, देखत रूप लुभाऊँ २०। १६३, १८७, १८७। **देखवाँ**—संयुक्त काल (मुख्य क्रिया) देखा। उदा० सखि म्हाँरो सामरिया णे, देखवाँ कराँ री २१। **देखाँ**—(१) देखो। उदा० देखाँ माई हरि मण काठ कियाँ ५२। १९०, १९६। (२) देखकर उदा० बादल देखाँ झरी स्याम मैं बादल देखाँ झरी ८२। **देखि**—देखकर। उदा० देखि बिराणी निवाँण कूँ हे, क्यूँ उपजावै खीज २६। १३०। **देखिये**—देखो। उदा० आव सखी मुख देखिये, नेणाँ रस पीजै, हो १६। **देखी**—देखी पूर्ण (क्रिया द्योतक)। उदा० ऐसी सूरत या जग माँही फेरि न देखी सोइ ५३। ८६, १७१। **देखूँ**—संभावनार्थक। उदा० नैणज देखूँ नाथ नैं धाई करूँ आदेस ११६। **देखे**—पूर्ण क्रियाद्योतक। उदा० तुम देखे बिन कलि न परति है, तलफि तलफि जिव जासी ४९। ७। **देखो**—आज्ञा। उदा० रेजा

रेजा भयो करेजा, अंदर देखो धँसिके ७।
देख्याँ—(१) देखकर (पूर्वकालिक कृदंत)। उदा० या छब देख्याँ मोह्याँ मीराँ, मोहन गिरवरधारी जी २। ६, १०, १६, १८, १८, २३, ६२ (२) देखे (पूर्ण क्रिया-द्योतक)। उदा० बिन देख्याँ कल ना पड़ाँ मन रोस णा ठानी हो ८७। ६३, ६८, १०६, ११३। (३) देखने का (क्रिया-र्थक संज्ञा)। उदा० णिरखाँ म्हारो चाव घणेरो मुखड़ा देख्याँ थाराँ ११०। **देख्यो**—देखा (पूर्ण क्रियाद्योतक)। उदा० या ब्रज में कछू देख्यो री टोना १७७। **देष्याँ**—देखा। उदा० बिन देष्याँ कैसे जीवेँ कल ण परत हीये। १७४।

दिखणी—दे० 'दिख'

दिखाय—दे० 'दिख'

दिण—(सं० दिन) दिन। उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, मग जोवाँ दिण राती २३। ४५। **दिन**—उदा० जोगिया कूँ जोवत बोह्यो दिन बीता, अजहूँ आयो नाहिं ४४। ५५, ६६, ८०, ६१, ६५, १०६, १०७, १०८, ११५, ११६, ११८, १६६। **निसदिन**—प्रतिदिन। उदा० जोगिया जी निसदिन जोऊँ बाट ४४। ६६, ७१, ६१, ६७। **चार दिनाँ**—कुछ दिनों। उदा० चार दिनाँ की कारले खूबी, ज्यूँ दाड़िम दा फूल १६८।

दिन—दे० 'दिण'

दिनाँ—दे० 'दिण'

दियाँ—दे० 'द'

दिया—दे० 'द'

दियो—दे० 'द'

दिलावें—दे० 'द'

दिवस (सं० दिवस) दिन उदा० रात दिवस कल नहिं परत है तुम मिलियाँ बिन मोड़ ५३।

दिवाँणी—(फा० दीवानी) दिवानी, पागल उदा० मीराँ तो अब प्रेम दिवाँणी, साँव-लिया वर पाणा ३६। **दिवाणी**—दिवानी। उदा० हेरी म्हाँ दरद दिवाणी म्हाराँ दरद न जाणयाँ कोय ७०, ६७, १३०।

दिवाणी—दे० 'दिवाँणी'

दिस—(सं० दिशा) दिशा, ओर। चहूँ दिस—चारो तरफ। उदा० उमग्याँ इन्द्र चहूँ दिस बरसाँ दामण छोड़या लाज १४३।

दी—दे० 'दा'

दीखा—दे० 'दिख'

दीठ—दे० 'दिख'

दीजे—दे० 'द'

दीजो—दे० 'द'

दीजौ—दे० 'द'

दीज्याँ—दे० 'द'

दीज्यो—दे० 'द'

दीज्यौ—दे० 'द'

दीनानाथ—(सं० दीना+नाथ) दीनो के स्वामी, कृष्ण। उदा० माई म्हाणो सुपणा माँ परण्याँ दीनानाथ २७। ७५, ११८।

दीन्ह—दे० 'द'

दीन्हो—दे० 'द'

दीप—(सं० दीपक) दीपक, दीया। उदा० लगण लगी जैसे पतंग दीप सेँ वारि फेर तन दीजे १६१। **दीपक**—उदा० बिन पिया जोत मँदिर अँधियारो दीपक दाय न आवै ७४। ६२, १०५, १७४, १८५। **दीपाँ**—बहुल में दीपकों से। उदा० दीप चोक पुरावाँ हेली, पिया परदेस सजाव ७८।

दीयो दे० 'द'

दीरघ सं० दीर्घ लम्बी उदा० दीरघ

णेण निरख कूं देखाँ, वण वण फिरताँ मारां १६० ।

दील—(फ़ा० दिल) हृदय । उदा० गोविंद गाढा छौजी, दील रा मित १२५ ।

दीश्याँ—दे० 'दिख्'

दीसाँ—दे० 'दिख्'

दीसे—दे० 'दिख्'

दीसै—दे० 'दिख्'

दीस्यौ—दे० 'दिख्'

दुख—(सं० दुःख) पीड़ा । उदा० जोगिया मे प्रीत कियाँ दुख होइ ५३ । ६७, ७३, ७७, ६४, ६७, १०१, १०३, ११५, ११६, १३५, १४०, १४४, १५६ । **दुखड़ा**—(दुख+ड़ा) पीड़ा । उदा० जोगिया री प्रीतड़ी है दुखड़ा रा मूल ५४ । **दुखभार**—परेशानियों का भार अथवा दुखों का समूह । उदा० अष्ट करम की तलब लगी है, दूर करो दुखभार १३५ । **दुखरासी**—दुखराशी, दुखों का ढेर । मग जोवाँ दिण बीताँ सजणी, णैंण पड्या दुखरासी ४५ । **दुखारी**—दुखी । उदा० दुगधा आरण फिरैं दुखारी, सुरत, बसी सुन माँनें हो ७३ । **दुखिया**—दुखी । उदा० दुखिया णा सुखिया करो, म्हाणे दरसण दीज्यां जी ६६ । **दुखी**—उदा० नैण दुखी दरसण कूं तरसैं, नाभिन बैठ साँसड़िया १०८ । **दुष**—जौ हूँ ऐसी जानती रे बाला, प्रीति कियाँ दुष होय ५६ । **दुष्यारा**—दुखी । उदा० मीराँ कहे प्रभु कबहि मिलौगे, थाँ विण् नैण दुष्यारा ११२ ।

दुखड़ा—दे० 'दुख'

दुखभार—दे० 'दुख'

दुखरासी—दे० 'दुख'

दुखारी—दे० 'दुख'

दुगधा—(सं० दुग्ध) दूध देने वाली । उदा० दुगधा आरण फिरैं दुखारी, सुरत, बसी सुत मानैं हो ७३ ।

दुतियन—(सं० दूतिका) दूतियाँ । अवध बदीती अजहूं न आये, दुतियन सूं नेह जोरे ६५ ।

दुनिया—(अ० दुनिया) संसार । उदा० सब जग कूड़ो कंटक दुनिया, दरध न कोई पिछाँणै हो ७३ ।

दुरजन—(सं० दुर्जन) बुरे लोग । उदा० मीराँ रो प्रभु गिरधर नागर, दुरजन जलो जा अँगीठी ३३ ।

दुष—दे० 'दुख'

दुष्यारा—दे० 'दुख'

दुसमण—(फ़ा० दुश्मन) दुश्मन, शत्रु । उदा० साजनियाँ दुसमण होय बैठया सबने लगूं कड़ी ११८ ।

दुसासण—(दुः+शासन) दुश्शासन । उदा० द्रुपद सुता णो चीर बढ़ायाँ, दुसासण मद मारण १३७ ।

दुहेली—(सं० दुर्हेल) दुखी । उदा० दरस बिन खड़ी दुहेली ८० ।

दूँगी—दे० 'द्'

दूइज—(सं० द्वितीया) दूज, एक पक्ष की दूसरी तिथि । उदा० हो गए श्याम दूइज के चंदा १८० ।

दूख्—(सं० दुःख) **दूखाँ**—दुखी हो गए । उदा० दरस विण दूखाँ म्हारा णैण १०३ । **दूखे**—दूखता है, पीड़ित होता है । उदा० हरि मंदिर जाँता पाँवलिया रे दूखे, फिरे आवे सारो गाम रे १५७ ।

दूखाँ—दे० 'दूख्'

दूखे—दे० 'दूख्'

दूजा—(सं० द्वितीय) दूसरा । उदा० म्हारी आसा चितवनि थारी ओर णा

दूजा दोर ५ । दूजो—दूसरा । उदा० मीराँ के पति रमैया, दूजो नहिं कोइ छानै हो ७३ । दूजौ—दूसरा । उदा० मीराँ रे कोइ नाहीं दूजौ, दरसण दीज्यौ आइ ११६ ।

दूजो—दे० 'दूजा'

दूजौ—दे० 'दूजा'

दूध—(सं० दुग्ध) । उदा० निरमल णीर बह्या जमणाँ माँ, भोजन दूध दही काँ १६० ।

दूर—(सं० दूर) बहुत फासले पर । उदा० साधाँ संगत हरि सुख पास्यूँ जग सूँ दूर रह्या २६ । १३५, १३६, १८७ । दूर्‌या—दूर । उदा० भगत गण प्रभु परचाँ पावाँ, जावाँ जगलाँ दूर्‌या री २४ । दूरी—फासला । उदा० मुझे दूरी क्यों म्हेली ८० । ११५ ।

दूर्‌या—दे० 'दूर'

दूरी—दे० 'दूर'

दूल्हो—(सं० दुर्लभ) दूल्हा । उदा० छप्पण कोटाँ जणाँ पधार्‌याँ दूल्हो सिरी ब्रजनाथ २७ ।

दूसराँ—(सं० द्वि + स्वत: कोई और । उदा० म्हाराँ री गिरधर गोपाल दूसराँ णाँ कूयाँ १८ ।

दूहेलो—(सं० दुर्हेल) कठिन । उदा० पाँव न चालै पंथ दुहेलो, आड़ा औघट घाट ४४ ।

दृष्टि—(सं० दृष्टि) नजर । उदा० आली साँवरो की दृष्टि, मानूं प्रेम री कटारी है १७४ ।

दे—दे० 'द्'

देख—दे० 'दिख्'

देखण—दे० 'दिख्'

देखत—दे० 'दिख्'

देखवाँ—दे० 'दिख्'

देखाँ—दे० 'दिख्'

देखि—दे० 'दिख्'

देखिये—दे० 'दिख्'

देखी—दे० 'दिख्'

देखूँ—दे० 'दिख्'

देखे—दे० 'दिख्'

देखो—दे० 'दिख्'

देख्याँ—दे० 'दिख्'

देख्यो—दे० 'दिख्'

देत—दे० 'द्'

देव—(सं० देव) देवता, विष्णु । उदा० देव काती में पूजहे, मेरे तुम होई, हो ११५ देवन—बहुत से देवता । उदा० हय को बपु धरि दैत सघार्‌यो सार्‌यो देवन को काज १३२ ।

देवन—दे० 'देव'

देष्याँ—दे० 'दिख्'

देस—(सं० देश) देश । उदा० राणो जी रूठ्याँ बाँरो देस रखासी ३५ । ६८, ७७, ७७, ९७, ११६, ११७, १५३, १५३, १९३ । देसलड़ो—देश । उदा० नहिं सुख भावै उदा० थाँरो देसलड़ो रँगरूड़ो ३२ । देसाँ—देश । थाँरे देसाँ में राणा साध नहीं छै, लोग बसै सब कूड़ो ३२ ।

देस्याँ—दे० 'द'

देस्यूँ—दे० 'द'

देह—(सं० देह) शरीर । उदा० मीरो रे प्रभु साँवरे रे, थे विण देह अदेह १०५ । अदेह—बिना शरीर के । उदा०...थे विण देह अदेह १०५ । देही (देह + ई)—शरीर का । उदा० यो देही रो गरब णा करणा माटी माँ मिल जासी १९५ ।

देही—दे० 'दहे'

देहै दे० द्'

दै—दे० 'द्'

दैण—दे० 'द्'

दैत—(सं० दैत्य) राक्षस। उदा० हय को वपु धरि दैत सधार्‍यो सार्‍यो देवन को काज १३२।

दो—दे० 'द्'

दोऊ—(सं० द्वौ ?) दोनों। उदा० म्हारो काई णा बस सजणी नैण झरत दोऊ नीर १५५। **दोय**—दोनों को। उदा० बिरह ब्याकुल अनल अंतर कल णाँ पड़ता दोय ४३। १७४।

दोय—दे० 'दोऊ'

दोर—ठौर। उदा० म्हारी आसा चितवनि थारी, ओर णा दूजा दोर ५।

दोरे—(सं० दुर्) कठिन, बुरे। उदा० मीराँ कहे प्रभु कबरे मिलोगे, दरसन बिण दिन दोरे ९५।

दौड़ीने—(सं० द्रु) दौड़कर। उदा० झगड़ो थाय त्याँ दौड़ीने जाय रे मूकी ने घर ना काम, रे १५७।

द्यो—दे० 'द्'

द्रुपता—(सं० द्रौपदी) राजा द्रुपद की कन्या द्रौपदी। उदा० पाँच पाँडु री राणी द्रुपता, हाड़ हिमालाँ गराँ १८९। **द्रुपद**—उदा० भरी सभाँ मा द्रुपद सुताँ री, राख्या लाज मुरारी १३१। १३७। **द्रोपता**—उदा० द्रोपता री लाज राख्याँ थे बढ़ायाँ चीर ६१।

द्रुपद—दे० 'द्रुपता'

द्रुम—(सं० द्रुम) पेड़। उदा० गहे द्रुम डार कदम को ठाड़ो मृदु मुसकाय म्हारी ओर हँस्यो ८।

द्रोपता—दे० 'द्रुपता'

द्वाराँ—(सं० द्वार+आँ) दरवाजे पर। उदा० मूरख जण सिंहासण राजाँ, पण्डित फिरताँ द्वाराँ १९०। **द्वारा**—दरवाजा। कित गई मोरी गउवन की बछिया, द्वारा बिच हँसती फसे १८७। **द्वारे**—दरवाजे पर। उदा० उठो लाल जी भोर भयो है, सुर नर ठाड़े द्वारे १६५।

द्वारा—दे० 'द्वाराँ'

द्वारे—दे० 'द्वाराँ'

ध

धँस्—(सं० ध्वसन्)। **धँसिके**—धँसकर। उदा० रेजा रेजा भयो करेजा, अन्दर देखो धँसिके ७। **धसे**—धँस गए। उदा० फाटी तो फूलड़ियाँ पाँव उभाणे, चलतै चरण धसे १८७।

धँसिके—दे० 'धँस्'

धँसे—दे० धँस्

धंधे—(सं० धन+धा ?) काम। उदा० पाँच पहर धंधे में बीते, तीन पहर रहे सोय १५९।

धजा—(सं० ध्वज) झंडा। उदा० धजा पताका तट तट राजाँ झाँलर री झकझोर

२०२ ।

धत्ता—(?) पक्का, कभी न उतरने वाला । उदा० यो तो रंग धत्ताँ लयो ए माय ४० ।

धन—(सं० धन) रुपया-पैसा आदि । उदा० तन मन धन गिरधर पर वाराँ चरण कँवल मीराँ विलमाणी ११ । १७, ११२ ।

धना—(सं० धन्ना) धन्ना भगत । उदा० दास धना को खेत निपजायो, गज की टेर सुनन्द १३९ ।

धमार—(अनु०) धमार एक राग । उदा० गावत चार धमार राग तँह, दै दै कल करतारी १७५ ।

धमाल—(अनु०) कलाबाजी, एक प्रकार का खेल । उदा० स्याम म्हाँसूँ ऐंडो डोले हो, औरन सूँ खेलै धमाल १८१ ।

धर्—(सं० धर्) । **धर**—रखकर । उदा० अधर मधुर धर वंशी बजावाँ, रीझ रिझावाँ व्रजनारी जी २ । **धरण**—धरने वाला । उदा० इण चरण प्रहलाद परस्याँ, इंद्र पदवी धरण १ । **धरणाँ**—रखा । उदा० ज्याँ ज्याँ चरण धरणाँ धरणी धर, त्याँ त्याँ निरत कराँ री २१ । **धरत**—(१) पकड़ते हुए । उदा० कलम धरत मेरो कर कंपत है नैन रहे झड़ लाय ७६ । (२) धरता है । उदा० आप तो जाय विदेसाँ छाये, जिवड़ो धरत ण धीर १२२ । १५५ । (३) रखते हुए । उदा० लगण लगी को पैंडो ही न्यारो, पाँव धरत तन छीजै १९१ । **धर्‌याँ**—धारण किया । उदा० नटवर प्रभु भेष धर्‌याँ रूप जग लोभाई १२ । ६१, ६८, ११० । **धर्‌यो**—रखा । **उदा०** हूँ जल भरने जात थी सजनी कलस माथे धरयो १७२ **धराँ**—ध्याण धराँ—स्मरण करती हूँ । उदा० साँवरो उभरण साँवरो सुमरण साँवरो ध्याण धराँ री २१ । ८८, १९३ । (२) **धरा—धीर**—धीरज रखना । उदा० मुरली म्हारी मण हर लीन्हो, चित्त धराँ णा धीर १९६ । **धरि** (१) संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) रख । उदा० तन मन धन करि वारणैं, हिरदे धरि लीजै, हो १६ । (२) धारण करके । उदा० हय को वपु धरि दैत सधार्‌यो सार्‌यो देवन को काज १३२ । **धरी**—पड़ी हुई । उदा० मीराँ दासी गिरधर नागर, चेरी चरण धरी री १४८ । **धरूँ**—धरूँगी । उदा० आनंद उछाव करूँ, तण मण भेंट धरूँ १२० । **धरे**—रखे हुए । उदा० कोई स्याम मनोहर ल्होरी, सिर धरे मटकिया डोलै १७८ । **धर्‌याँ**—(१) धारण किया । उदा० रतण सिंघासण आप बिराज्याँ, मुगट धर्‌याँ तुलसी काँ १९० । **धर्‌या**—धारण किया । उदा० धरती रूप नवाँ नवाँ धर्‌या इंद्र मिलण रे काज १४३ । **धार्‌याँ**—धारण किया, लगाया । उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, हरि चरणाँ चित्त धार्‌याँ ८३ । १ । **धारूँ**—धारण करूँ (संभावनार्थक) । उदा० मुरली कर लकुट लेऊँ पीत बसन धारूँ १९४ ।

धर—दे० 'धर्'

धरण—(१) दे० 'धर्' । (२) (सं० धरणि) पृथ्वी । उदा० जेताई दीसाँ धरण गगन माँ तेताई उठ जासी १९५ ।

धरणी धर—(सं० धरणि + धर) पृथ्वी को धरने वाले, कृष्ण । उदा० ज्याँ ज्याँ चरण धरणाँ धरणी धर, त्याँ त्याँ निरत करा री । २१ ।

धरत—दे० धर

धरती--(सं० धारत्री) पृथ्वी। उदा० धरती रूप नवाँ नवाँ धर्‌याँ इंद्र मिलण रे काज १४३।
धरम—(सं० धर्म) उदा० धर्म नेम धरम कोण कोनी मुरलिया, कोण तिहारे पासु, री १६७।
धरयाँ—दे० 'धर्'
धरयो—दे० 'धर्'
धराँ—दे० 'धर्'
धरि—दे० 'धर्'
धरी—दे० 'धर्'
धरूँ—दे० 'धर्'
धरे—दे० 'धर्'
धरयाँ—दे० 'धर्'
धरया—दे० 'धर्'
धसे—दे० 'धँस्'
धा—(सं० 'धाव') **धाईया**—दौड़ा। उदा० गरुण छाँड़ पग धाइयाँ पसुजूण पटाणी जी १४०। **धाई**—(१) दौड़ी। उदा० मीणा तज सरवर ज्यों मकर मिलन धाई १२। (२) दौड़कर। उदा० नैणज देखूँ नाथ नैं धाई करूँ आदेस ११६। **धाय**—दौड़कर। उदा० साजाँ सिंगार सुहाणाँ सजणी, प्रीतम मिल्याँ धाय २०१। **धावाँ**—भागे। उदा० गज बूडताँ अरज सुण धावाँ, भगताँ कष्ट निवारण १३७।
धाइयाँ—दे० 'धा'
धाई—दे० 'धा'
धान—(सं० धान्य) अन्न। उदा० जाइ प्रीतम जी सूँ यूँ कहै रे, थाँरी विरहणि धान न खाई ८४।
धाम—(सं० धाम) घर। उदा० धाम ण भावाँ नींद णा आँवाँ, विरह सतावाँ मोय १०२।
धाय दे० 'धा'
धार—(स० धार्) (१) धारा अथवा प्रवाह उदा० याँ संसार सब बह्यो जात है, लख चौरासी री धार १३५। (२) किनारा। उदा० भो समुंद अपार देखाँ अगम ओखी धार १९६। **धाराँ**—धारा। उदा० थे देख्याँ बिण कल णा पड़ताँ, णैणाँ चलताँ धाराँ ९३। ९३, १६०। **धारा**—उदा० चरण पखार्‌याँ रतणाकर री धाराँ गोमत जोर २०२।
धारयाँ—दे० 'धर्'
धाराँ—दे० 'धार'
धारा—दे० 'धार'
धारूँ—दे० 'धर्'
धावाँ—दे० 'धा'
धीर—(सं० धैर्य) ढाढस, धैर्य, धीरज। उदा० व्याकुल प्राण धर्‌या णा धीर ण वेग हर्‌याँ म्हा पीराँ ११०।
धुन—(सं० ध्वनि) ध्वनि। ढूँढ़ताँ बण स्याम डोला, मुरलिया धुन पाय ९०। १०५, १६६।
धूतारा—(सं० धूर्त) धूर्त। उदा० धूतारा जोगी एकरसूँ हँसि बोलि ५८।
धेण—(सं० धेनु) गाय। उदा० बिन्द्रावन माँ धेण चरावाँ, मोहन मुरली वालो १५४। **धेनु**—गाय। उदा० जमणा किणारे कान्हा धेनु चरावाँ वंशी बजावाँ मीठाँ वाणी ११।
धेनु—दे० 'धेण'
धोय—(सं० धाव् प्रा० धोअ) धोकर। उदा० न्हाय धोय जब देखण लागी, सालिगराम गई पाय ४१। ४१, १५८।
ध्याण—(सं० ध्यान) ध्यान। उदा० साँवरों उमरण साँवरो सुमरण, साँवरो ध्याण धराँ री २१। **ध्यान**—(१) स्मरण उदा० गिरधर ध्यान धराँ

निस बासर, मण मोहण म्हारे बसी ८८। १२४। (२) स्मरण। उदा० आसण माँडि गुफा में बैठो, ध्यान हरी को लगायो १८८। ध्यावै—ध्यान लगाते हैं। उदा० जोगियो चतुर सुजाण सजणी ध्यावै संकर सेस ११७।

ध्रुव—(सं० ध्रुव) उत्तानपाद के पुत्र। उदा० इण चरण ध्रुव अटल करस्याँ, सरण असरण सरण १।

न

नंद—दे० 'णंद'

नंदकिसोर—दे० 'णंद'

नंदकुमार—दे० 'णंद'

नद नंदन—दे० 'णंद'

नंदलाल—दे० 'णंद'

न—दे० 'ण'

न्—(सं० नय्)। नई—ले गए। उदा० कठिन क्रूर अक्रूर आयो, साजि रथ कहँ नई १८२।

नई—'दे० न्'

नखसिख—(सं० नख + शिख) नाखून से शरीर तक। उदा० रूँम रूँम नखसिख लख्याँ, ललक ललक अकुलाय १३। १५१। नखसिखाँ—नख से शिख तक। उदा० इण चरण ब्रह्माण्ड भेट्याँ नख-सिखाँ सिरी भरण १।

नगर—(सं० नगर) शहर। उदा० नगर आइ जोगी रम गया रे, मो मन प्रीति न पाइ ४४। ५६, ११६। नगरी—(नगर + ई) नगर। उदा० राजा रूठयाँ नगरी त्यागाँ, हरि रूठ्याँ कहँ जाणो ३९ नग्र शहर उदा० तेरे कारण जोगण हूँगी हूँगी नग्र बिच फेरी ६४।

नागर—नगर में रहने वाला, चतुर। उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, दर-सण दीज्यो दासी ६। ८, १०, १३, १५, १६, २०, २१, २३, २४, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३६, ३७, ४०, ४२, ४६, ४८, ४९, ५०, ५२, ५५, ६०, ७६, ८३, ८६, १०५, १०६, १०७, १०९, ११०, ११६, १२१, १२२, १२७, १२८, १२९, १३१, १३५, १४१, १४२, १४३, १४५, १४६, १४७, १४८, १५२, १५३, १५४, १५७, १६०, १६१, १६२, १६४, १६५, १६६, १६८, १६९, १७०, १७२, १७३, १७५, १७६, १७७, १७८, १८०, १८९, १९०, १९१, १९५, १९७, १९८, १९९, २००।

नगरी—दे० 'नगर'

नग्र—दे० 'नगर'।

नट—(१) (सं० नट) नाचने वाला (कृष्ण) उदा० मीराँ सिरि गिरधर नट नागर भगति रसीली जाँची ११ नट की

नाचने वाले की (कृष्ण की)। उदा० बिसर्‌याँ णा लगण लगाँ मोर मुगट नटको ९। **नट के**—नाचने वाले के (कृष्ण के) उदा० मीराँ प्रभु रे प्रभु रूप लुभाणी, गिरधर नागर नटके १०। **नटवर**—नाचने वालों में श्रेष्ठ। उदा० नटवर प्रभु भेष धर्‌याँ रूप जग लोभाई १२।

नट्—(२) (सं० नट्)। **नटया**—इंकार किया। उदा० कणक कटोराँ इम्रत भर्‌याँ, पीवताँ कूण नट्‌या री २००।

नटवर—दे० 'नट (१)'

नटया—दे० 'नट् (२)'

नथनी—(सं० नाथ्) नाक मे पहनने का आभूषण, बुलाक। उदा० मोर मुकुट मनोहर सोहै नथनी की छवि न्यारी१७१।

नयी—दे० 'ण'

नदयाँ—दे० 'नदिया'

नदियाँ—(सं० नद्य) नदी। **नदयाँ**—नदियाँ (बहु वचन) उदा० नदयाँ निरमल धाराँ मभुंद कर्‌याँ जल खाराँ १६०। **नदिया**—उदा० भादवै नदिया वहै, दूरी जिन मेलै, हो, ११५।

नर—(सं० नर) मनुष्य। उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, भजण विणा नर फीकाँ १६०। १६५।

नरक—(सं० नरक) नर्क। उदा० निन्दा करसे नरक कुंड माँ, जासे थासे आँधला अपंग रे ३०।

नरहरि—(सं० नरहरि) नृसिंह। उदा० भगत कारण रूप नरहरि धर्‌याँ आप सरीर ६१।

नरेस—(सं० नरेश) स्वामी, राजा। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, सुणज्यो बिड़द नरेस १६३।

नव दे० 'णावाँ'

नवल—दे० 'णावाँ'

नवाँ—दे० 'णावाँ'

नस—(सं० नष्ट)। **नसाँ**—चला गया नष्ट हो गया। उदा० ग्याण नसाँ जग बावरा ज्याकूँ नीर णा पीवाँ २८। **नसाणी**—नष्ट हो गई। उदा० सखी म्हारी नींद नसाणी हो ८७।

नसाँ—दे० 'नस'

नसाणी—दे० 'नस्'

नहिं—दे० 'ण'

नहीं—दे० 'ण'

नाँव—दे० 'णाम'

नाँचत—दे० 'णाच'

ना—(१) दे० 'ण'। (२) (सं० नाम्) संबंधकारकीय चिन्ह बिछियाँ घूँघरा रामनारायण ना अणवट अंतरजामी रे १४१। **नी**—(सं० नाम् = ना + ई) की। उदा० प्रेम नी प्रेम नी रे, मने लागी कटारी प्रेम नी १५३। एक स्थान पर 'नी' का अर्थ से भी हो सकता है—चाँच मढाऊँ थारी सोवनी रे, तू मेरे सिरताज ८४। **नो**—का। उदा० साकट जन नो संग न करिये, पड़े भजन में भंग रे ३०। १४१। **नाग**—(सं० नाग) सर्प। उदा० काला नाग पिटार्‌याँ भेज्या, सालगराम पिछाणा ३९। ८१, १६८। **नागण**—नागिन (स्त्रीलिंग)। उदा० बिरह नागण मोरी काया डसी है, लहर लहर जिव जावँ ७४।

नागर—दे० 'नगर'

नाचत—दे० 'णाच्'

नाची—दे० 'णाच्'

नाच्या—दे० 'णाच्'

नाजिर—(अ० नाजिर)। **हाजिर नाजिर**—आँखों के सम्मुख उदा० मैं हाजिर

नाजिर कब की खड़ी ११८ ।

नातिर—दे० 'ण'

नाथ—(सं० नाथ) स्वामी। उदा० नैणज देखूँ नाथ नै धाई करूँ आदेस ११६। १७६।

नाथ्याँ—(सं० नाथ्) नाथ दिया, बाँध दिया। उदा० इण चरण कालियाँ नाथ्याँ गोपीलीला करण १। १६, १७६।

नाद—(१) (सं० नाद) आवाज। उदा० लगण लगाई जैसे मिरघे नाद से, सनमुख होय सिर दीजै १९१।

नाद—(२) एक प्रकार का बाजा। उदा० सेली नाद बभूत न बटवो, अजूं मुनी मुख खोल ५८।

नाभिन—(सं० नाभि + देशज प्रत्यय न) नाभी में। उदा० नैण दुखी दरसण कूँ तरसै, नांभिन बैठ साँसड़िया १०८।

नाम—दे० 'णाम'

नामदेव—(सं० नामदेव) भक्त नामदेव (प्रसिद्ध कृष्ण भक्त)। उदा० दास कबीर घर बालद जो लाया, नामदेव की छान छवन्द १३९।

नारि—(सं० नारी) स्त्री। उदा० गोकुल की नारि देखत, आनंद, सुखरासी १६३। **नारी**—स्त्री। उदा० म्हारि आँगण स्याम पधारो, मंगल गावाँ नारी ५१।

नारी—दे० 'नारि'

नाव—(सं० नौका) नौका। उदा० आदि अंत निज नाँव तेरो हीया में फेरी ६३। ६४, ११८, १७९।

नाह—दे० 'ण'

नाहि—दे० 'ण'

नाहिन—दे० 'ण'

नाहीं—दे० 'ण'

निंदा सं० निंदा बुराई उदा० निंदा करसे नरक कुंड माँ, जासे थासे आँधला अपंग रे ३०। **निंदो**—बुराई। उदा० कोई निंदो कोई विंदो म्हे तो, गुण गोविंद का गास्याँ २५। ३३। **निंद्या**—निंदा। उदा० साधाँ जण री निंद्या ठाणाँ, करम रा कुगत कुमाँवाँ १५६।

निंदो—दे० 'निंदा'

निंद्या—दे० 'निंदा'

निकटि—(सं० निकट) पास, नजदीक। उदा० बिपत पड्याँ कोइ निकटि ण आवै, सुख में सबको सीर १९२।

निकर—(सं० निकर्) संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) निकल। उदा० री म्हारा पार निकर गयाँ, सावरे मार्‌या तीर १५५। **निकल्याँ आय**—आ निकला। उदा० म्हाँ ठाढ़ी घर आपणी, मोहन निकल्याँ आय १३। **निकसत**—निकलता है। उदा० जैसे कंचन दहत अगिन में निकसत बारावाणी ३८। **निकसि**—संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) निकल। उदा० पंड माँसूं प्राण पापी, निकसि क्यूँ णा जात ६६। **निकस्या**—संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) निकला। उदा० मेरा प्राण निकस्या जात, हरि बिन ना सरै माई ८९।

निगुणी—(सं० नि + गुण + ई) गुण रहित। उदा० मैं निगुणी गुण एको नाही, तुम हो बगसणहारा ११२।

निज—(सं० निज) अपना। उदा० आदि अंत निज नाँव तेरो, हीया में फेरी ६३।

नित—(सं० नित्य) प्रतिदिन। उदा० चरणाश्रित रो नेम सकारे, नित उठ दरसण जाम्याँ ३१। ६७, ८८, ९४, १०८ १५४

निदरा—(सं० निद्रा) नींद । उदा० भूख गयाँ निदरा गयाँ पापी जीव णा जावाँ जी ९६ । १०१, १०७, ११८ ।

निधाण—(सं० निधान) खजाना । उदा० दे० 'करणा निधाण' ।

निपज्—(सं० निष्पद्) **निपजै**—पैदा होती है, उपजती है । उदा० कालर अपणो ही भलो हे, जामें निपजै चीज ५२ । **निप-जायो**—पैदा किया । उदा० दास धना को खेत निपजायो, गज की टेर सुनंद १३९ ।

निपजै—दे० 'निपज'

निपजायो—दे० 'निपज'

निपट—(हिं+नि+पर) बिल्कुल । उदा० निपट बंकट छब अँटके १० । १०, ५७ ।

निभ्—(सं० निभ) । **निभावण**—निभाना उदा० प्रीत निभावण दल के षंभण, ते कोई बिरला सूर ५९ । **निभैगी**—निभ जाएगा । मैं जाणूं या पार निभैगी, छाँड़ि चले अँधबीच ५७ ।

निभावण—दे० 'निभ्'

निभैगी—दे० 'निभ्'

निरख—दे० 'णिराव'

निरखण—दे० 'णिरख्'

निरखाँ—दे० 'णिरख्'

निरख्याँ—दे० 'णिरख्

निरत—(सं० नृत्य) नाच । उदा० ज्याँ चरण धर्‌याँ धरणी धर, त्याँ त्याँ निरत कराँ री ०१ । ३१ । **निरता**—नृत्य । उदा० सील घूँघराँ बाँध तोस निरता कराँ १६३ ।

निरत—नृत्य । उदा० कालिंदी दह नाग नाथ्याँ, काल फण फण निर्त करंत १६८ ।

निरता—दे० 'निरत'

निरभै—(सं० निर्+भय) भय रहित । उदा० निहभै निसाण घुरास्याँ, हो भाई ३५ ।

निरमल—(सं० निर्+मल) मलरहित, स्वच्छ । उदा० साँची पियाजी री गूदडी, जामे निरमल रहै सरीर २६ । १६०, १६१, १९० ।

निर्झर—(सं० निर्झर) झरना । उदा०—हरी निर्झर अमृत झर्‌या, महारी प्यास बुझावाँ २८ ।

निर्त—दे० 'निरत'

निवाँण—(?) बागीचा । उदा० देखि विराणे निवाँण कूँ है, क्यूँ उपजावै खीज २६ ।

निवार्—(सं० नि:+वार) **निवार**—दूर करो (आज्ञा) । उदा० मीराँ दासी राम भरोसे, जग का फंदा निवार १३३ । १३५, १३५ । **निवारण**—छुट-कारा—दिलाने वाले । उदा० जग तारण भोभीत निवारण, थें राख्याँ गजराज ४८ । १३७ । **निवारि**—छोड़कर । उदा० आवो सहेल्या रली कराँ हे, पर घर गवण निवारि २६ । **निवारो**—दूर करो । उदा० मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, परो निवारो नी सोच १८३ ।

निवारु—दे० 'निवार्'

निवारण—दे० 'निवार'

निवारि—दे० 'निवार्'

निवारो—दे० 'निवार्'

निश—(सं. निशा) रात । उदा० णेणा म्हारा कह्याँ णा माणा, णीर झर्‌याँ निश जावाँ री १२१ । **निसदिन**—प्रतिदिन । उदा० जोगिया जी निसदिन जोऊँ बाट ४४ । १९, ६६, ७१, ७८, ९१, ९७ ।

निसबासर रात दिन । उदा० गिरधर

ध्यानधरां निसवासर, मण मोहण म्हारे बसी ८८।

निसदिन—दे० 'निश'

निसबासर—दे० 'निश'

निसाण—(फा० निशान) नगाड़ा। उदा० निरभै निसाण घुरास्याँ, हो माई ३५।

निहाल—(फ़ा० निहाल) प्रसन्न। उदा० मीराँ दासी सरणा ज्याणी, कीज्याँ वेग निहाल ४७।

निहारत—दे० 'णिहार्'

निहाराँ—दे० 'णिहार'

निहारूँ—दे० 'णिहार्'

निहार्याँ—दे० 'णिहार्'

नींद—दे० 'णींद'

नींदड़ी—दे० 'णींद'

नी—दे० 'ना २'

(१) 'उदा मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, परो निवारोनो सोच १८३।

नीकाँ—(सं० व्यक्त = नीक + आँ) अच्छा। उदा० आली म्हाणे लागाँ वृन्दावण नीकाँ १६०। **नीको**—(नीक + ओ) अच्छा। उदा० हौं तो वाको नीको जाणो, कुंज को विहारी हैं १७४। **नीकौ**—(नीक + औ) अच्छा। उदा० वाको रस नीको लगै रे, वाकी लागै सूल ५६।

नीको—दे० 'नीकाँ'

नीकौ—दे० नीकाँ''

नीच—(सं० नीच) बुरा। उदा० अजामील अपराधी तार्याँ तार्याँ नीच सदाण १३४। **ऊँच नीच**—बड़ा छोटा। उदा० ऊँच नीच जाने नहीं, रस की रसीलणी १८६। **नीचे**—छोटे। उदा० नीचे कुल आछी जात, अति ही कुचीलणी १८६।

नींचित (सं० नि + चित) निश्चित। उदा० मेरे मण की तुमही जानो मेरे ही जीव नींचित १२५।

नीचे—दे० 'नीच'

नीति—(सं० नीति) व्यवहार की नीति। उदा० परम सनेही राम की नीति ओलूँरी आवैं ६७।

नीर—दे० 'णीर'

नीरज—(सं० नीर + ज) कमल। उदा० नैण नीरज में अब बहे रे (बाला), गंगा वहि जाती १८५।

नीराँत—(?) भरोसा! उदा० मुज अबला ने मोटी नीराँत थई रे १४१।

नीरा—दे० 'णीरा'

नुँ—(सं० आनाम्) का। उदा० पेटी घड़ावुँ पुरुषोत्तम केरी भीकम नाम नु तालुं रे १४१।

ने—(१) (सं० नाम्) निरर्थक। उदा० अड़सट संतों ने चरणे कोटि कासी ने कोटि गंग रे ३०। (इस छंद में 'ने' का अर्थ और भी माना जा सकता है।

ने—(२) (?) कर्त्ता कारक का चिन्ह। उदा० सूल सेज राणा ने भेजी, दीज्यो मीराँ सुलाय ४१। १८७

ने—(३) (सं० कर्णे) कर्म कारक का चिन्ह। उदा० राणा जी म्हाने या बदनामी लगे मीठी ३३। १४०, १४१, १७३ (मने-मुझको)।

ने—(४) (?) से, अपादान कारक का चिन्ह। उदा० जोगिया ने कहज्यो जी आदेस ११७।

ने—(५) (सं०—आनाम्) संबंध कारक का चिन्ह। उदा० अड़सठ तीरथ संतों नेचरणो कोटि कासी ने कोटि गंग रे ३०। १४१।

ने—(६) (सं० न) बलात्मक। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर दरसन दो ने बलबीर १२२

नेक— दे० 'णेक'

नेण—दे० 'णेण'

नेम—(सं० नियम) नियम से, रीति से। उदा० चरणाश्रित रो नेम सकारे, नित उठ दरसण जास्या ३१ । १६७ ।

नेरा—(सं० निकट) नजदीक । उदा० चरण कँवल गिरधर सुख देस्याँ राख्या नैणाँ नेरा ११० । **नेरी**—निकट नजदीक उदा० विरहणि पिव की बाट जोवै, मैं सरण हूँ तेरी ६३ ।

नेरी—दे० 'नेरा'

नेवछावराँ—(सं० न्यौछावर) न्यौछावर । उदा० रतन करा नेवछावराँ, ले आरत साजाँ, हो १५० ।

नेवाज—(फा० नवाज) कृपालु । उदा० जुग जुग भीर हराँ भगताँ री, दीश्याँ मोच्छ नेवाज ६२ ।

नेह—(सं० स्नेह) प्रीति, प्यार । उदा० रमईया मेरे तोही सूँ लागी नेह ५६ । ५६, ६४, ६५, १०५ । **नेहड़ा**—(नेह + देशज प्रत्यय ड़ा) प्रीति । उदा० प्रभु जी थें कहाँ गया नेहड़ा लगाय ६४ । **नेहरो**—प्रीति । उदा० हरि सागर सूँ नेहरो, नैणाँ बाँध्या सनेह, हो १५० ।

नेहड़ा—दे० 'नेह'

नेहरो—दे० 'नेह'

नै—(सं० कर्णे) कर्म कारक का चिन्ह । उदा० नैणज देखूं नाथ नै धाई करूँ आदेस ११६ ।

नैण—दे० 'णेणा'

नैणज—दे० 'णेण'

नैन—दे० 'णेण'

नैणाँ—दे० 'णेण'

नैण—दे० 'णेण'

नो—दे० 'ना'

नौसर—(सं० नौ + हिं० सर) नौ लखा, नौ लड़ी वाला । **नौसर हार**—नौ लखा हार । उदा० हँस हँस मीराँ कंठ लगायो, यो तो म्हारे नौसर हार ४० ।

न्याती—(१) (सं० ज्ञाति) नाता, रिश्ता । उदा० भो सागर जग बंधण, झूठाँ झूठाँ कुलरा न्याती १०६ ।

न्यारी—(सं० निराकृत = न्यारा का स्त्रीलिंग रूप) अनोखी । उदा० मोर मुगट पीतांबर शोभा, कुंडल री छब न्यारी १३१ । १७१, १७१ । **न्यारो**—न्यारा । उदा० प्रेम भगति को पैंड़ो ही न्यारो हमको गैल बता जा ४६ । १७५, १९१ ।

न्हा—(सं० स्नान) **न्हाय**—नहाकर । उदा० न्हाय धोय जब देखण लागी, सालिगराम गई पाय ४१ । ४१ ।

न्हाय—दे० 'न्हा'

न्हाल्—(सं० निभाल्) । **न्हालो**—निहारो उदा० पोस मही पाला घणा, अबही तुम न्हालो, हो ११५ ।

न्हालो—दे० 'न्हाल्'

प

पंख—(सं० पंख) पक्षी का पर । उदा० । काँई करयाँ कछू णा बस म्हारी-

णा म्हारे पंख उड़ावाँ री १२१।

पँच—(सं० पच) पाँच। **पँचरँग**—पाँच रंगों (तत्वों) से बना। उदा० पँचरँग चोला पहर्‌या सखी म्हाँ, झिरमिट खेलण जाती २३।

पंचमी—(सं० पंचमी) शुक्ल या कृष्ण पक्ष की पाँचवीं तिथी। **बसंत पंचमी**—वसंत ऋतु की पंचमी जो एक त्यौहार के रूप में धूम-धाम से मनाया जाता है। उदा० महा महीं वसंत पंचमी, फागा सब गावै हो ११५।

पंछी—(सं० पक्षी) पक्षी। उदा० जेठ महीने जल बिणा पंछी दुख होई, हो ११५। १८४।

पंड—(सं० पिंड) शरीर। उदा० पंड माँसूं प्राण पापी, निकसि क्यूं णा जात ६६।

पंडर—सफेद, पीली। उदा० मीराँ दासी भई हैं पंडर पलट्या काला केस ६७।

पंडित—(सं० पंडित) धार्मिक अनुष्ठान करने वाला व्यक्ति अथवा ब्राह्मण। उदा० मूरख जण सिंघासण राजाँ, पंडित फिरताँ द्वाराँ १९०।

पंथ—(सं० पथ) रास्ता। उदा० कब री ठाडी पंथ निहाराँ, अपने भवण खडी १४। ४४, ८७, ९१, ९५, १०२, १०६, १११, १२३, १२५।

पखार्‌याँ—(सं० प्रक्षालन) पखारा, धोया, उदा० चरण पखार्‌याँ रतणाकर री धारा गोमत जोर २०२।

पखावज—(सं० पक्ष + वाद्य) एक प्रकार का बाजा। उदा० ताल पखावज मिरदंग बाजा, साधाँ आगे णाच्याँ ३७।

पग—(सं० पग) पैर। उदा० साज सिंगार बांध पग घुंघर लोकलाज तज नाची १९। ३६, १४०।

पगट्—(सं० प्रगट) प्रगट्याँ—प्रगट हुए। उदा० णद जसोदा पुत्र री प्रगट्याँ प्रभु अविनासी ६।

पटंबरा—(सं० पाट + अंबर + आ) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र। उदा० झूठा पाट पटंबरा रे, झूठा दिखणी चीर २६।

पटकी—(सं० पतन + कारण) पटक दी गिरा दी। उदा० लपट झपट गोरी गागर पटकी, साँवरे सलोने लोने गात १७९।

पटा—(सं० पाट) घूँघट। उदा० पटा णा खोल्या मुखाँ णा बोल्या, साँझ भयाँ परभात ६६।

पटा—(सं० पट) पटाणी—मुक्त हो गई। उदा० गरूण छाँड़ पग धाइयाँ पसुजूण पटाणी जी १४०। **पट्‌या**—( ) मिल गए, एकाकार हो गए। उदा० मीराँ रे प्रभु हरि अविनासी, तण मण स्याम पट्‌या री २००।

पटाणी—दे० 'पटा'

पट्‌या—दे० 'पटा'

पठाई—(सं० प्रस्थान) भेजी। उदा० कहा भावज ने भेंट पठाई, तंदुल तीन पसे १८७।

पड्—(सं० पत)। **पड्याँ**—पड़ने पर। उदा० विपत पड्याँ कोइ निकटि न आवै, सुख में सबको सीर १९२। १९५। **पड्यो**—पड़ गया। उदा० म्हारे गेल पड्यो गिरधारी, हे माय आज अनारी १६९।

पड़ाँ—पड़ा। उदा० तलफ तलफ ज्वाल पड़ाँ बिरहानल लागी ९१। **पड़त**—संयुक्त काल (मुख्य क्रिया) पड़ता। उदा० तुम देख्याँ बिण कल न पड़त है, ग्रिह

अँगणे ण सुहाय ६८। १०८, ११३, १२३ । **पड़ताँ**—(१) मूल काल । उदा० थाँ देख्याँ विण कल ण पड़ताँ, जाणे म्हारी छाती १०६ । ९३ । **पड़ता**—पडती है । उदा० विरह व्याकुल अनल अतर कलणाँ पड़ता दोय ४३ । **पड़ाँ**—पडता । उदा० बिन देख्याँ कल ना पड़ाँ मन रोस णा ठानी हो ८७ । **पड़ी**—पड़ गई । उदा० आली री म्हारे णैणाँ बाण पड़ी १४ । ७२, १०८, ११७, ११८, १८५ । **पड़े**—पड़ता है । उदा० साकट जननो संग न करिये, पड़े भजन में भंग रे ३० । **पड़ै**—पडती है । उदा० रैण पड़ै तबही उठि जाऊँ, भोर गये उठि आऊँ २० । ११५ । **पड़्याँ**—(१) पड़ गई है । उदा० घरि णा आवाँ गेउ लखावाँ, बाण पड़्या ललचावाँ री १२१ । (२) संयुक्त क्रिया (सहायक क्रिया) पड़ा । उदा० साँवरो नंद नँदन, दीठ पड़्याँ माई १२ । **परत**—संयुक्तकाल (मुख्य क्रिया) पड़ता । उदा० रात दिवस कल नाहि परत है, तुम मिलियाँ बिनि मोइ ५३ । १००, १२६, १३०, १७४ । **परताँ**—पडता । उदा० कल णा परताँ पल हरि सग जोवाँ छमासी रैण १०३ । **परति**—संयुक्त काल (मुख्य क्रिया) पडता । उदा० देखे विन कलि न परति है—४९ । **पराँ**—पड़ गया । उदा० जाग कियाँ बलि लेण इंद्रासण जाँया पाताल पराँ १८९ । **परी**—पड़ी । उदा० पात ज्यूँ पीरी परी, अरु विपत तन छाई ८९ । २५, ८९, १२४, १३३, **परूँ**—पड़ती हूँ । उदा० जोगी मत जा मत जा मत जा, पाँइ परूँ मैं तेरी चेरी हौं ४६ । **परो** पढ गया उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, अब तो णेह परो कछु मंदा १८० ।

पड़्याँ—दे० 'पड़्'

पड़्यों—दे० 'पड़्'

पड़त—दे० 'पड़्'

पड़ताँ—दे० 'पड़्'

पड़ता—दे० 'पड़्'

पड़ाँ—दे० 'पड़्'

पड़ी—दे० 'पड़्'

पड़े—दे० 'पड़्'

पड़ै—दे० 'पड़्'

पड़ोसण—(सं० प्रतिवेश = पड़ोस + अण) पड़ोस में रहने वाली स्त्री । उदा० सुणियो मेरी पगड़ पड़ोसण, गेले चलत लागी चोट १८३ ।

पड़्याँ—ते० 'पड'

पढ़्— (सं० पठ) । **पढ़ावताँ**—पढ़ाते हुए । उदा० गणका चीर पढ़ावताँ, बैकुंठ बसाणी जी १४० । **पढ़ी**—भूतकाल । उदा० ऐसी कहा वेद पढ़ी, छिण में विमाण चढ़ी १८६ ।

पढ़ावताँ—दे० 'पढ़्'

पढ़ी—दे० 'पढ़्'

पतंग—(सं० पतंग) पतंगा । उदा० दीपक जाण्या पीर णा पतंग जल्या जल खेह १०५ । १७४, १९१ ।

पतणी—(सं० पत्नी) पत्नी । उदा० थे रिख पतणी किरपा पायाँ, विप्र सुदामाँ विपत विडारण १३७ ।

पताका—(सं० पताका) झण्डा । उदा० धजा पताका तट तट राजाँ झाँलर री झकझोर २०२ ।

पति—(सं० पति) स्वामी । उदा० मीराँ के पति रमैया, दूजो नाहि कोइ छानै हो ७३ **भवण पति** तीनों लोको के स्वामी

उदा० भवण पति थे घरि आज्यो जी ९६ ।

पतित—(सं० पत्) गिरे हुए । उदा० असरण सरण कह्याँ गिरधारी, पतित उधारत पाज ६२ । **पतियाँ**—दे० 'पाती'

पतियावै—(सं० प्रत्यय, प्रा० पत्तिआव) विश्वास करता है । उदा० का कहूँ कुण माणै मेरी, कह्याँ न को पतियावै हो ९२ ।

पतीज्याँ—(प्रा० पत्तिआव) विश्वास किया । उदा० लोक णा सीझ्याँ, मण ण पतीज्याँ, मुखड़ा सबद सुणाज्यो जी १८६ ।

पत्थर—(सं० प्रस्तर) पत्थर । उदा० पत्थर की तो अहिल्या तारी, वण के बीच पडी ११८ ।

पदवी—(सं० पद + वी) उपाधि । उदा० इण चरण प्रहलाद परस्याँ, इंद्र पदवी धरण १ ।

पधार्—(सं० पग + धार) । **पधाराँ**—आए । उदा० हरि पधारयाँ आगणाँ गया मैं अभागण सोय ४३ । **पधारैं**—पधारते हैं । उदा० जिण मारग म्हाँरा साध पधारें, उण मारग म्हे जास्याँ २५ । **पधारो**—आओ । उदा० म्हाँरे आँगण स्याम पधारो, मंगल गावाँ नारी ५१ ।

पधारयाँ—आए । उदा० छप्पण कोटाँ जणाँ पधार्याँ दूल्हो सिरी व्रजनाथ २७ ।

पधार्या—पधारे । उदा० मीराँ रे सुखसागर स्वामी, भवण पधार्या स्याम १४४ ।

पधाराँ—दे० 'पधार

पधारैं—दे० 'पधार'

पधारो—दे० 'पधार्'

पधार्याँ—दे० पधार

पधार्या—दे० 'पधार्'

पनंग—(सं० पन्नग) सर्प । उदा० प्रीतम पनंग डस्यो कर मेरो, लहरि लहरि जिव जावै हो ९२ ।

पपइया—(अनु०) पपीहा । उदा० दादर मोर पपइया बोलै, कोयल सबद सुणावे रे ८१ । ८३, ८४, १४२, १४३, १४७ ।

पर—(१) (सं० उपरि) अधिकरण कारक का चिन्ह । उदा० सब संतन पर तन मन वारों, चरणा कँवल लपटाणी ३८ । ११, ९३, १६३, १७१ **परि**· पर । **मो परि**—मुझ पर । उदा० करि करिणा प्रतिपाल, मो परि, राखो ण आगण देस ११७ । **पर** (२) (सं० उपरि) ऊपर । उदा० कहा बोझ मीराँ में कहिये, सौ पर एक घड़ी ११८ ।

पर—(३) (सं० पर) दूसरे । उदा० आवो सहेल्या रली कराँ हे, पर घर गवण निवारि २६ ।

परगासताँ—(सं० प्रकाश्) प्रकाशित हुआ । उदा० वदन चंद परगासताँ, बोल्या बोल बलाय १३ ।

परचा—(सं० परिचय) परिचय । उदा० भगत गणा प्रभु परचाँ पावाँ, जावाँ जगताँ दूर्या री २४ ।

परण—(१) (सं० परिणायन) विवाह । सुपणा माँ म्हारे परण गया पायाँ अचल सोहाग २७ । **परण्याँ**—विवाह किया । उदा० माई म्हाणो सुपणा माँ परण्याँ दीनानाथ २७ ।

परण—(२) (सं० प्रण) प्रतिज्ञा । उदा० सब भगताँ रा कारज साधाँ, म्हारा परण निभाज्यो जी ११९ ।

परण्याँ दे० परण १

परत—दे० 'पड़'

परतग्या—(सं० प्रतिज्ञा) प्रतिज्ञा, वचन। उदा० प्रहलाद परतग्या राख्याँ हरणाकुस णो उद्र विदारण १३७।

परताँ—दे० 'पड़'

परति—दे० 'पड़'

परतीत—(सं० प्रतीत), प्रतीत विश्वास। उदा० सरणागत थें वर दिया, परतीत पिछाणी जी १४०।

परदा—(फा० परदा) पर्दा, छिपाव। उदा० अपणे घर का परदा कर ले, मैं अबला बौराणी ३८।

परदेस—(सं० पर+देश) दूसरे देश में, परदेश। उदा० दीप चोक पुरावाँ हेली, पिया परदेस सजावाँ ७८। २३, ६८, ११७। **परदेसाँ**—दूसरे देश मे। उदा० म्हारा पिया परदेसाँ बसताँ, भीज्याँ बार खरी ८२।

परभात—(सं० प्रभात) सुबह। उदा० पटा णा खोल्या मुखाँ णा बोल्या, साँझ भयाँ परभात ६६। ७५।

परम—(सं० परम्) बहुत। उदा० दीखा णाँ कोई परम सनेही, म्हारे सँदेसा लावाँ ७८। ६७। **परमदयाला**—बहुत दयालु। उदा० तुम सरणागत परम दयाला, भव जल, तार मुरारी ११३।

परमदयाला—दे० 'परम'

परमपद—(सं० परम+पद) परमात्मा का पद, मोक्ष। उदा० मीराँ रे प्रभु थारी सरणाँ, जीव परमपद पावाँ १५६।

परस्—(सं० स्पर्श) **परस**—स्पर्श करो। उदा० मण थे परस हरि रे चरण १। **परस्याँ**—स्पर्श किया। उदा० इण चरण प्रहलाद परस्याँ, इंद्र पदवी धरण १।

परस दे० परस

परसण—(सं० प्रसन्न) प्रसन्न। उदा० करमा बाई को खीच आरोग्यो, होइ परसण पावंद १३९।

परस्याँ—दे० 'परस्'

परहथ—(सं० पर+हस्त) दूसरे के हाथ में। उदा० णेणाँ चंचल, अटक णा माण्या, परहथ गयाँ विकाय १३।

पराँ—दे० 'पड़'

परि—दे० 'पर १'

परी—दे० 'पड़्'

परूँ—दे० 'पड़्'

परो—(१) दे० 'पड़्'। (२) (सं० पर) दूर। उदा० मीराँ के प्रभु हरि अविनासी परो निवारो नी सोच १८२।

पल—(सं० पल) समय का एक प्राचीन विभाग जो मिनट से छोटा तथा क्षण से बड़ा होता है। उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर विण पल रह्याँ णा जाय १३। १७, २०, १०३, १०६, १०९, १११, १११, १९६, १९६। **पलपल**—उदा० दिन नहिं भूख रैण नहिं निदरा, यूँ तण पल पल छीजै १०७। १५। **पल भर**—उदा० निसदिन पंथ निहाराँ पिवरो, पलक णा पल भर लागी ९१।

पलक—(सं० पल+क) (१) आँख के ऊपर वाले चमड़े के बाल। उदा० णेणाँ म्हाँरा साँवरा राज्याँ, डरताँ पलक णा लावाँ २५। ९१, ९२, ११६, ११८। पलक को नीचे ऊपर करना। उदा० पलक पलक मोहि जुग से बीतैं, छिनि छिनि विरह जरावै हो ९२।

पलट्या—(सं० प्रलोठन) पलट गए। उदा० मीराँ दासी भई है पंडर पलट्या काला केस ९७।

स० पवन हवा उदा० उमड

घुमड़ घण छायाँ पवण चल्याँ पुरवायाँ १४२ । १४६ । पवन—उदा० मीराँ कूँ हरिजन मिल्या रे, ले गया पवन झकोर ५९ । १४९ ।

पवन—दे० 'पवण'

पशु—(सं०) चार पैरोवाला प्राणी (कुत्ता, शेर, हाथी आदि) । उदा० पशु पंछी मरकट मुनी, श्रवण सुणत बैनाँ १८४ । पसुजूण—पशु की योनि । उदा० गरुण छाँड़ पग धाइयाँ पसुजूण पटाणी जी १४० ।

पसुजूण—दे० 'पशु'

पसे—(सं० प्रसर) आधी अंजुली । उदा० कहा भावज ने भेंट पठाई, तन्दुल तीन पसे १८७ ।

पहण्—(सं० परिधान)। पहण—पहनकर। उदा० साँवरिया रो दरसण पास्यूँ, पहण कुसुम्बी सारी १५४ । पहर—(१) पहन कर । उदा० कागज टीकी राणा हम सब त्याग्या भगवीं चादर पहर ३४ । पहर्याँ—पहना । उदा० कहा भयाँ थाँ भगवा पहर्याँ, घर तज लयाँ सन्यासी १९५ । पहर्या—पहना । उदा० पँचरँग चोला पहर्या सखी म्हाँ, झिरमिट खेलण जाती ७३ । पहर्यो—पहना । उदा० चुणि चुणि कलियाँ सेज बिछायो, नखसिख पहर्यो साज १५१ । पहिरावै—पहनाता है । उदा० जो पहिरावै सोई पहिरूँ जो दे सोई खाऊँ २० । पहिरूँ—पहनती हूँ । उदा० जो पहिरावै सोई पहिरूँ, जो दे सोई खाऊँ २० ।

पहण—दे० 'पहण्'

पहर—दे० 'पहण्'

पहरो—(सं० प्रहर+देशज प्रत्यय ओ) पहरा उदा० पहरो भी राख्यो चौकी बिठार्याँ, ताला दियो जड़ाय ४२ ।

पहर्याँ—दे० 'पहण्'

पहर्या—दे० 'पहण्'

पहर्यो—दे० 'पहण्'

पहिरूँ—दे० 'पहण्'

पहली—(सं० प्रथम) क्रमवाचक विशेषण । उदा० पहली ज्ञान मानहिं कीन्हौ, मैं ममता की बाँधी पोट १८३ ।

पहेली—(सं० प्रहेलिका) घुमाव फिराव की बात । उदा० अब तुम प्रीत अवर सूँ जोड़ी, हमसे करी क्यूँ पहेली ८० ।

पाँइ—(सं० पाद) पाँव, पैर । उदा० जोगी मत जा मत जा मत जा, पाँइ परूँ मैं तेरी चेरी हौं ४६ । पाँय—पाँव । उदा० घर आवो स्याम, मेरे मैं तो लागूँ पाँय तेरैं १२० । पाँव—उदा० पाँव न चालै पंथ दूहेलो, आड़ा औघट घाट ४४ । १८५, १९१ । पाँवलिया—पैर । उदा० हरि मंदिर जाँता पाँवलिया रे दूखे, फिर आवे सारो गाम रे १५७ । पावाँ—पाँव से । उदा० चालाँ वाही देस प्रीतम, पावाँ चालाँ वाही देस १५३ ।

पाँख—(सं० पक्ष) पंख । उदा० सुणि पावेली बिरहणी रे, थारी रालैली पाँख मरोड़ ८४ ।

पाँच—(सं० पंच) संख्यावाचक विशेषण उदा० पाँच पहर धंधे में बीते, तीन पहर रहे सोय १५९ । १८९, १९४ ।

पाँडु—(सं० पांडव) पाण्डव । उदा० पाँच पाँडु री राणी द्रुपता, हाड़ हिमालाँ गर्याँ १८९ ।

पाँय—दे० 'पाँइ'

पाँव—दे० 'पाँइ'

पाँवड़ाँ—(सं० प्राघुणक) पाहुन मेहमान । उदा० पाँवड़ाँ म्हारा भाग सँवारण जगत

उधारण काज १०६।
ँवलिया—दे० 'पाँइ'
पाँवाँ—दे० 'पा'
ा—(१) (सं० प्र+आप्)। **पाँवाँ**—पाऊँगी। उदा० निस दिन जोवाँ बाट मुरारी, कबरो दरसण पाँवाँ ६६। **पाइ**—पाया। उदा० नगर आइ जोगी रम गया रे, मो मन प्रीति न पाइ ४४। **पाई**—उदा० वन बन ढूंढ़त मैं फिरी, आली सुधि नहीं पाई ८६। **पाऊँ**—पाती हूँ। उदा० तुम मिलियाँ मैं बोहो सुख पाऊँ, सरैं मनोरथ कामा १४४। **पाणा**—पाना हैं। उदा० मीराँ तो अब प्रेम दिवाँणी साँवलिया वर पाणा ३६। **पाय**—(१) पाकर। उदा० ढूँढ़ताँ बण स्याम डोला, मुरलिया धुण पाय ६०। (२) सयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) पाया। उदा० न्हाय धोय जब देखण लागी, सालिग-राम गई पाय ४१। २०१। **पायाँ**—(१) पालिया। उदा० सुपणाँ माँ म्हारे परण गया पायाँ अचल सोहाग २७। १३७। **पाया**—प्राप्त किया। उदा० जुगाँ जुगाँ री जोवनाँ, विरहणि पिव पाया, हो १५०। **पायो**—(१) संयुक्त काल (मुख्य क्रिया) पाया। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर वर पायो छै पूरो ३२। (२) पा लिया। उदा० या भव में मैं बहु दुख पायो, संसा सोग निवार १३५। १५६, १८८, १८८। **पावद**—पाया। उदा० करमाबाई को खीँच आरोग्यो, होइ परसण पावद १३६। **पावाँ**—(१) पाते है। उदा० णाच्याँ गावाँ ताल बजावाँ, पावाँ आणद हाँसी ६। ६, २४। (२) पाती हूँ। उदा० म्हारो हिरदाँ बस्याँ मुरारी पल पल दरसण पावाँ १५। ४७, ५६, ६०। (३) पाऊँ (संभावनार्थक)। उदा० मीराँ रे प्रभु थारी जीव परमपद पावाँ १५६। (४) प्राप्त करता है। उदा० राम नाम बिनि मुकुति न पावाँ, फिर चौरासी जावाँ १५६। **पावेली**—पावेगी। उदा० सुणि पावेली विरहणी रे, थारो रालैली पाँख मरोड ८४। **पावै**—पाते है। उदा० चरण कँवल की लगनि लगी नित, बिन दरसण दुख पावै ६७। १२५। **पास्याँ**—पाऊँगी। उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, गुन गावाँ सुख पास्या ३१। ११६। **पास्यूँ**—पाऊँगी। उदा० चाकरी मे दरसण पास्यूँ, सुमिरण पास्यूँ खरची १५४। २६, १५४, १५४। **पास्यो**—पाएगा। उदा० मीराँ रे प्रभु हरि अबिणासी, भाग भल्याँ जिण पास्यो १४६।

पा—(२) (सं० पा) **पाइ**—पिलाकर। उदा० इमरत पाइ विषाँ क्यूँ दीज्याँ कूँण गाँव री रीत ५६। **पाण**—पाना। उदा० खाण पाण म्हाणे फीकाँ सो लागाँ नैण रहाँ मुरझावाँ ६६। ६६, १२६। **पान**—पीना। उदा० खान पान सुध बुध सब बिसर्‌याँ काइ म्हारो प्राण जियाँ ५२। **पाय**—संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) पिला। उदा० विष को प्यालो राणो जी भेज्यो द्यो मेड़तणी ने पाय ४०। **पियत**—पीते हैं। उदा० देख्याँ रूप मदन मोहन री, पियत पियूखन मटकें १०।
पिया—पी लिया। उदा० पिया पियाला अमर रस का चढ़ गई घूम घुमाय ४०। ४०, ७४, ७४, ७४, ७४, ७७, ७७,
पी—(१) संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया)। उदा० कर चरणामृत पी गई रे, गुण गोविंद रा गाय ४० २ पीकर

उदा० राणां भेज्या बिखरो प्याला चरणा मृत पी जाणा ३६ । **पीऊँ**—आज्ञा । उदा० आव सखी मुख देखिये, नैणाँ रस पीवँ, हो १६ । १६६ । **पीय**—पीकर । उदा० राणा विषरो प्याला भेज्याँ, पीय मगण हूयाँ १८ । **पीवण**—संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) पीने । उदा० न्हाय धोय जब पीवण लागी, हो गयी अमर अँचाय ४१ । **पीवताँ**—पीने से । उदा० कणक कटोराँ इम्रित भर्याँ, पीवताँ कूण नट्या री २०० । **पीवाँ** - (१) पीती है, पीता है, । उदा० अम्रत प्यालो छाड्याँ रे, कुण पीवाँ कड़वाँ नीरा री २४ । २८ । (२) पीया (भूतकाल) । उदा० विष रो प्यालो राणा भेज्याँ, पीवाँ मीराँ हाँसी री ३६ । **प्यास्याँ**--पिलाऊँगी । उदा० तण मण वार्याँ हरि चरणा माँ दरसण अमरि प्यास्याँ री २६ ।

पाई—दे० 'पा (१)' दे० 'पा (२)'

पाई—दे० 'पा (१)'

पाऊँ—दे० 'पा (१)'

पाग—(हिं० पग, सं० पदक) पगड़ी । उदा० टेढ्याँ कर टेढ़े करि मुरली, टेढ्या पाग लर लटके १० । १७१ ।

पाज—(सं० प्रतिज्ञा) मर्यादा । उदा० सकट मेट्या भगत जणाराँ, थाप्या पुन्न रा पाज १०६ ।

पाट—(सं० पट्ट) कपड़ा । उदा० झूठा पाट पटंबरा रे, झूठा दिखणी चीर २६ ।

पाण—दे० 'पा (२)'

पाणा—दे० 'पा¹'

पाण—(१) पान का पत्ता । उदा० तुम आया बिन सुध नहीं मेरे, पीरी परी जैसे पाण १२४ **पानाँ** पान उदा० पानाँ ज्यूँ पीली पड़ी री, लोग कह्याँ पिंडवाय ७२ । **पाना**—पान । उदा० पाना ज्यूँ पीली पडी रे (वाला), अन्न नहीं खाती १८५ ।

पाणी—पानी । उदा० लोकलाज कुल काण जगत की, दइ बहाय जस पाणी ३८ । ८२, ८२, ८७, १०५, १३०, १४०, १६१ ।

पात—(सं० पात) पत्ता । उदा० पात ज्यूँ पीरी परी, अरु विपत तन छाई ८९ । १६६ ।

पाताल—(सं० पाताल) पृथ्वी से नीचे के लोक । उदा० जाग क्रियाँ बलि लेण इन्द्रासण जाँयाँ पाताल पराँ १८६ ।

पाती-- (स० पत्री) पत्र । उदा० जिणरो पियाँ परदेस बस्याँ री लिख लिख भेज्या पाती २३ । १२३, १८५, १८५ । **पतियाँ**—पत्र (बहुबचन) । उदा० पतिया मैं कैसे लिखूँ लिख्योरी न जाय ७६ । ८४ ।

पान—दे० 'पा (२)'

पानाँ—दे० 'पाण'

पाना—दे० 'पाण'

पाप—(सं० पाप) बुरा कार्य, गुनाह । उदा० साँवरो णाम जपाँ जग प्राणी, कोट्याँ पाप कट्याँ री २०० । **पापी**—बुरा काम करनेवाला । उदा० पढ़ माँसूँ प्राण पापी, निकसि क्यूँ णा जात ६६ ।

पापी—दे० 'पाप'

पावन्न—दे० 'पा¹'

पाय—(१) 'पा¹' । (२) 'पा²'

पायाँ—दे० 'पा (१)'

पाया—दे० 'पा (१)'

पायो—दे० पा १

पार—(सं० पार) किनारा उदा० मैं जाणूँ या पार निभैगी, छाँड़ि चले अध-बीच ५७। १२६, १३५, १२८, १५५, १६६, १६७।

पाला—(सं० प्रालेय) बहुत सर्दी के कारण पृथ्वी पर गिरी हुई भाप की तह। उदा० पोस मही पाला घणा, अवही तुम न्हलो हो ११५।

पावड़—दे० 'पा (१)'

पावन—(सं० पावन) पवित्र। उदा० पतित पावन प्रभु गोकुल अहीरणी १८६।

पावाँ—(१) दे 'पा (१)' (२) दे० 'पाँई'

पावेली—दे० 'पा (१)'

पावे—दे० 'पा (१)'

पासड़ियाँ—(१) (सं० पाश+ड़ियाँ) पाश मे, फंदे में। उदा० तलफत तलफत बहु दिन बीता, पड़ी विरह की पासड़ियाँ १०८। (२) पास, नजदीक। उदा० राति दिवस यह आरति मेरे, कब हरि राखै पासड़ियाँ १०८। **पासी**—बंधन। उदा० डारि गयो मनमोहन पासी ६५। **पासू**—पास। उदा० नेम धरम कोन कीनी मुरलिया, कौन तिहारे पासु, री १६७।

पास्याँ—दे० 'पा (१)'

पास्यूँ—दे० 'पा (१)'

पास्यो—दे० 'पा (१)'

पावेली—दे० 'पा (१)'

पावै—दे० 'पा (१)'

पास्याँ—दे० 'पा (१)'

पास्यूँ—दे० 'पा (१)'

पास्यो—दे० 'पा (१)'

पियत—दे० 'पा (२)'

पिया—दे० 'पा (२)'

पी—दे० पा २

पीजे—दे० 'पा (२)'

पीय—दे० 'पा (२)'

पीवण—दे० 'पा (२)'

पीवताँ—दे० (२)'

पीवाँ—दे० 'पा (२)'

प्यास्वाँ—दे० 'पा (२)'

पाहण—(सं० पाषाण) पत्थर। उदा० नाम लेताँ तिरताँ सुण्याँ, जग पाहण पाणी जी १४०।

पिंडत—(सं० पंडित) पंडित। उदा० काग उड़ावत दिन गया, बूझूँ पिंडत जोसी, हो ११५।

पिंडबाय—(सं० पिंड वायु) पीलिया, एक प्रकार का रोग। उदा० पानाँ ज्यूँ पीली पड़ी री, लोग कह्याँ पिंडबाय ७२।

पिचकाँ—(सं० पिच्च+कारक) पिचकारी उदा० उड़त गुलाल लाल बादला रो रंग लाल, पिचकाँ उड़ावाँ १४८।

पिछाँणौ—(सं० प्रत्यभिज्ञान) पहचानता है। उदा० सब जग कूड़ो कंटक दुनिया दरध न कोइ पिछाँणौ हो ७३।

पिछाणा—पहचान लिया। उदा० काला नाग पिटार्‌याँ भेज्याँ, सालगराम पिछाणा ३६। **पिछाणी**—पहचानी। उदा० सर-णागत थे वर दिया, परतीत पिछाणी जी १४०।

पिछाणा—दे० 'पिछाँणौ'

पिछाणी—दे० 'पिछाँणौ'

पिटारा—(सं० पिटक) टोकरा। उदा० साँप पिटारा राणा भेज्यो, मीराँ हाथ दियो जाय ४१। **पिटारो**—टोकरा। उदा० साँप पिटारो राणा जी भेज्यो, द्यो मेड़तणी गल डार ४०। **पिटार्‌याँ**—पिटारा। उदा० काला नाग पिटार्‌याँ भेज्या पिछाण ३६

पिटारो—दे० 'पिटारा'

पिटार्‍याँ—दे० 'पिटारा'

पित—(सं० पितृ) पिता । उदा० मात पिता जग जन्म दियाँ री करम दियाँ करतार १९७ ।

पिय—(सं० प्रिय) प्रियतम । उदा० वा बिरियाँ कब होसी म्हारो हँस पिय कंठ लगावाँ ७० । ८७, ८७, ८७, १४६, १५० । **पियाँ**—प्रियतम । उदा० म्हाराँ पियाँ म्हारे हियड़े बसताँ णा आवाँ णाँ जाती २३ । २३, २६, २६ । **पिया**—प्रियतम । उदा० पिया म्हारे नैणा आगाँ रहज्यो जी ५० । ७७, ७८, ७८, ७८ ८०, ८०, ८२, ९५, ११५, १४०, १४४ । **पियाजी को**—प्रियतम का । उदा० लूण अलूणो ही भलो है, अपणे पियाजी को साग २६ । **पिव**—प्रियतम । उदा० बिरहणि पिव की बाट जोवै, राखिल्यौ नेरी ६३ । ७७, ८४, ८४, ८४, ८४, ८४, ८४, ९१, १०१, ११०, १५० । **पीया**—प्रितयम । उदा० पीया विण रह्याँ णा जायाँ ७१ । **पीव**—प्रिय । उदा० चात्रग स्वाति बूँद मन माँही, पीव पीव उकलाणै हो ७३ । ७५, ७७, ८४, ९१, ९१, ११७, ११७, १२२, १४४ ।

पियत—दे० 'पा (२)'

पियाँ—दे० 'पिय'

पिया—(१) दे० 'पा (२)' । (२) दे० 'पिय'

पियारा—(सं० प्रीति) प्यारा । उदा० मीराँ के प्रभु स्याम मनोहर प्रेम पियारा मीत ५७ । **पियारी**—प्यारी । उदा० सूनी बिरहन पिव बिन डोलैं, तज गया पीव पियारी ७७ । ११३ ।

पियारी दे० 'पियारा'

पियाला—(फा० प्याला) प्याला । उदा० पिया पियाला नाम का रे, और न र सोहाय ४० । ४० ।

पियु—(सं० पीयूष) पपीहे की आवाज म्हा सोवूँ छी अपणे भवण माँ पियु पियु करताँ पुकार्‍याँ ८३ ।

पियूखन—(सं० पियूष) अमृत । उदा० देख्याँ रूप मदन मोहन री, पियत पियूखन मटके १० ।

पिव—दे० 'पिय'

पी—दे० 'पा (२)'

पीछै—(सं० पश्चात्) पीछे, बाद में । उदा० हिल मिल बात बणावत मीठी, पीछै जावत भूल ५४ ।

पीजे—दे० 'पा (२)'

पीड़—(सं० पीड़ा) पीड़ा । उदा० अंग वेदन बिरह री म्हारी पीड़ णा जाणी हो ८७ । **पीड़त**—पीड़ित, पीड़ा ग्रस्त । उदा० रावलो बिड़द म्हाण रूड़ो लागाँ, पीड़त म्हारो प्राण १३६ । **पीड़ाँ**—पीड़ा, दुःख । उदा० मीरा पीड़ाँ सोइ जाणै मरण—जीवण जिण हाथ ७५ । **पीर**-पीड़ा । उदा० मीराँ री प्रभु पीर मीटाँगा जब बैद साँवरो होय ७० । १०५, १०५, १५५, १६६, १७४, १९२, । **पीराँ**-पीड़ा । उदा० व्याकुल प्राण धर्‍याँ णा धीर ण वेग हर्‍याँ म्हा पीराँ ११० ।

पीड़त—दे० 'पीड़'

पीड़ाँ—दे० 'पीड़'

पीतांबर—पीला वस्त्र । उदा० मुरली कर लकुट लेऊँ, पीत बसन धारूँ १८४ ।

पीतांबर—पीला वस्त्र । उदा० पीताबर कट उर बैजणताँ, कर सोहाँ री बाँसी ११८, १३१, १५४, १६१, १६२, १६४ ।

पीरी पानी उदा० पात ज्यूँ पीरी

परी, अरु बिपत तन छाई ८६। **पीला**—पीली। काला पीला घट्या उमड़्या बरस्याँ चार घरी ८२। **पीली**—उदा० पानाँ ज्यूँ पीली पड़ी री, लोग कह्याँ पिडवाय ७२। ११७, १४५, १८५।

पीतांबर—दे० 'पीत'

पीय—दे० 'पा२'

पीया—दे० 'पिय'

पीर—दे० 'पीड़'

पीराँ—दे०'पीड़'

पीरी—दे० 'पीत'

पीला—दे० 'पीत'

पीली—दे० 'पीत'

पीव—दे० 'पिय'

पीवण—दे० 'पा२'

पीवताँ—दे० 'पा२'

पीवाँ—दे० 'पा२'

पुकार—(सं० प्रकुश्)। पुकारि-पुकार कर। उदा० बेरि बेरि पुकारि कहूँ प्रभु आरति है तेरी ६३। **पुकारियै**—पुकारिये। उदा० सारंग सबद सुनि, बिरहनी पुकारियै १२०। **पुकार्‌याँ**—पुकार रहा था। उदा० म्हा सोवूँ छी अपणे भवण माँ पियु पियु करताँ पुकार्‌याँ ८३।

पुकारि—दे० 'पुकार'

पुकारियै—दे० 'पुकार'

पुकार्‌याँ—दे० 'पुकार'

पुजा—(सं० पूजन)। **पुजाय**—पूजा कराकर। उदा० आपहि आप पुजाय के रे, फूले अंग णा समात १५८। **पूजहें**—पूजते हैं। उदा० देव काती में पूजहें, मेरे तुम होई, हो ११५।

पुजाय—दे० 'पुजा'

पुतनाम—(सं० पूत+नम) पवित्र नाम। उदा० पुतनाम जस गाइयाँ गज सारा जाणी जी १४०।

पुन्न—(सं० पुण्य) पुण्य। उदा० णद जसोदा पुन्न री प्रगट्याँ, प्रभु अविनासी ६। २४, १०६, १६६।

पुरब—(सं० पूर्व) पिछले। उदा० मीराँ रो गिरधर मिल्यारी, पुरब जणम रो भाग २७। **पुरबला**—पूर्व जन्म। उदा० बड़े घर तालो लागाँ री, पुरबला पुन्न जगावाँ री २४। **पूरब**—पूर्व। उदा० मीराँ कूँ प्रभु दरसण दीज्याँ पूरब जन्म को कोल २२। ५१, ५६, १२३, १२५। **पुरबला**—पिछले जन्म। उदा० पूरबला काँई पुन्न खूँट्याँ मणसा अवतार १६६। **पूर्व**—पिछले। उदा० पूर्व जनम की प्रीत पुराणी, सो क्यूँ छोड़ी जाय ४२।

पुरबला—दे० 'पुरब'

पुरवायाँ—(सं० पूर्व+वायु) पुरवाई (पूर्व दिशा से बहने वाली हवा)। उदा० उमड़ घुमड़ घण छायाँ पवण चल्याँ पुरवायाँ १४२।

पुराण—(सं० पुरातन) हिंदुओं के धर्म से संबंधित आख्यानग्रंथ। उदा० बिरद बखाणाँ गणताँ णा जाणा, थाकाँ वेद पुराण १३४।

पुरानी—(सं० पुरातन) काफी दिनों की। उदा० मेरी उणकी प्रीत पुराणी, उण बिण पल न रहाऊँ २०। ४२, ५१, २००। **पुरातन**—पुरानी। उदा० णाच णाच म्हाँ रसिक रिझावाँ, प्रीत पुरातन जाँच्याँ री १७।

पुरातन—दे० 'पुरातन'

पुरावाँ—(सं० पूर्ण) पूरती हूँ। उदा० मोती चोक पुरावाँ णेणाँ, तण मण डाराँ वारी ५१। ७८।

पुरुष सं० पुरुष ब्रह्मा कृष्ण उदा०

थारी छब प्यारी लागे राज, राधावर महाराज १५२। १७१, १७१, १७४, १७५, १७७। प्यारे—प्रिय प्रेमपात्र। उदा० प्यारे दरसण दीयो आय थें बिण म्हा ण जाय १०१ । १२३, १६५। प्यारो—प्यारा। उदा० अटक्याँ प्राण साँवरो प्यारो जीवण मूर जड़ी १४। १५५

प्यारी—दे० 'प्यारा'

प्यारे—दे० 'प्यारा'

प्यारो—दे० 'प्यारा'

प्याला—दे० 'प्यालो'

प्यालो—(फ़ा० प्याला) प्याला। **प्याला**—एक प्रकार का छोटा कटोरा । उदा० राणी भेज्या बिषरो प्याला चरणामृत पी जाणा ३६ । ४१ । **प्यालो**—उदा० राणा बिषरो प्यालो भेज्याँ, पीव मगण हूयाँ १८। २४, ३६, ३७, ४०, ५०।

प्यास—(सं० पिपासा) तृष्णा, इच्छा। हरि निर्झर अमृत झर्‌या म्हारी प्यास बुझावाँ ३४। **प्यासा**—वह व्यक्ति जिसको प्यास लगी हो (विशेषण) **प्यासा भूम हरी**—हरियाली से पूर्ण भूमि प्यासी है। उदा० जित जोयाँ तित पाणी पाणी प्यासा भूम हरी ८२। **प्यासी**—प्यासी हैं। उदा० अखयाँ तरशा दरसण प्यासी ४५।

प्यासा—दे० 'प्यास'

प्यासी—दे० 'प्यास'

प्यास्याँ—दे० 'पा (२)'

प्रगट्या—दे० 'प्रगट'

प्रणाम—(सं० प्रणाम) अभिवादन, नत-मस्तक होना। उदा० म्हारो प्रणाम बाँके बिहारी जी २।

प्रतिपाल—(सं० प्रतिपालिका) पालन पोषण करने वाला। उदा० छप्पण भोग छतीशाँ बिजण, पावाँ जन प्रतिपाल ४७। ६३, ११७।

प्रभात—(सं० प्रभात) सुबह। उदा०। घोर रैणाँ बिजु चमकाँ बार गिणताँ प्रभात ६६।

प्रभु—(सं० प्रभु) ईश्वर। उदा० मीराँ प्रभु संताँ सुखदायाँ, भक्त बछल गोपाल ३। ४, ५, ६, ८, ६, १०, १२, १२, १३, १५, १६, १६, २०, २१, २२, २३, २४, २४, २४, २६, २६, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३६, ३७, ३८, ४०, ४१, ४२, ४३, ४६, ४७, ४८, ४६, ५०, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ६०, ६३, ६४, ६४, ६५, ६७, ६८, ७०, ७१, ७२, ७४, ७६, ७७, ८०, ८२, ८३, ८४, ८६, ८८, ८६, ९०, ९२, ९३, ९५, ९८, १०३, १०३, १०५, १०६, १०७, १०८, १०६, ११०, ११२, १२१, १२२, १२३, १२४, १२५, १२६, १२७, १२८, १२६, १३१, १३२, १३४, १३५, १३५, १३७, १३८, १४१, १४२, १४३, १४५, १४६, १४७, १४६, १५१, १५२, १५३, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १५६, १६०, १६१, १६२, १६४, १६५, १६६, १६७, १६८, १६६, १७०, १७१, १७३, १७५, १७६, १७७, १७८, १७६, १८०, १८१, १८३, १८४, १८५, १८६, १८६, १८७, १८७, १८८, १८६, १६०, १६१, १६४, १६५, १६७, १६८, १६६, २००, २०१, २०२, २०२। **प्रभू**—प्रभु। उदा० प्रभू बिन ना सरै माई ८६।

प्रवीण—(सं० प्रवीण) चतुर । उदा० सुघर कला प्रवीण हाथन सूं, जमुमति जू णे सवारियाँ १६२ ।

प्रहलाद—(सं० प्रहलाद) हिरण्यकश्यप का बेटा । उदा० इण चरण प्रहलाद परस्याँ, इन्द्र पदवी धरण १ । १३७

प्राण—(सं० प्राण) शरीर की वह वायु जिससे मनुष्य जीवित रहता है । उदा० हरि म्हारा प्राण अधार ४ । ५, १४, ५२, ६५, ६६, ८६, १०२, ११०, १३६, १५५, १७२, १७५ । **प्राणि**—प्राण । उदा० मीराँ व्याकुल बिरहिणी रे, तुम बिनि तलफत प्राणि ४४ ।

प्राणि—दे० 'प्राण'

प्राणी—(सं० प्राणिन्) प्राणधारी, सांसारिक लोग । उदा० साँवरो णाम जपाँ जग प्राणी, कोट्याँ पाप कट्याँ री २०० ।

प्रियतम—(सं० प्रियतम) प्रेम पात्र । उदा० मेरे प्रियतम प्यारे राम कूँ, लिख भेजूँ रे पाती १२३ । **प्रीतम**—प्रियतम । उदा० प्रीतम पल छब णा बिसरावाँ, मीराँ हरि रँग राच्याँ री १७ । २०, ३१, ६६, ७१, ८४, ८४, ६२, ६२, ६२, ११२, १५०, १५३, १५५, १६४, २०१ ।

प्रीत—(सं० प्रीति) प्यार । उदा० णाच णाच म्हाँ रसिक रिझावाँ, प्रीत पुरातन जाँच्याँ री १७ । १७, १६, २०, २६, ३७, ४२, ५१, ५३, ५३, ५६, ५७, ५६, ५६, ५६, ५६, ८०, ८२, ८८, १००, १२८, १७४, १६३, २०१ । **प्रीतड़ी**—(प्रीत + देशज प्रत्यय) प्रीत । उदा० जोगिया री प्रीतडी है दुखड़ा रो मूल ५४ । **प्रीति**—प्यार उदा० नगर आइ जोगी रम गया रे, मो मन प्रीति न पाइ ४४ । ५६, १८६ ।

प्रीतड़ी—दे० 'प्रीत'

प्रीति—दे० 'प्रीत'

प्रेम—(सं० प्रेम) प्यार । उदा० असुवाँ जल सींच सींच प्रेम बेल बूयाँ १८ । ३६, ४६, ५६, ५७, ६४, ७४, ६०, १५५, १७३, १७३, १७३, १७३, १७४, १८० ।

फ

फँस्—(सं० पाश्) । **फँस्यो**—फँसा है । उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, निरख बदन म्हारो मनड़ो फँस्यो ८ । **फसे**—कित गई प्रभु मोरी टूटी टपरिया, हीरा, मोती, लाल फसे १८७ । **फाँसी**—फँसते हैं । उदा० जोगी होयाँ जुगत णाँ जाणा, उलट जणम फिर फाँसी १९५ **फाँसु**—फँसा लिया । उदा० मीराँ के प्रभु बस कर लीने, सप्त ताननि की फाँसु, री १६७ ।

फँस्यो—दे० 'फँस्',

फंदा—(सं० बंध) जाल । उदा० मीराँ दासी राम भरोसे, जग का फंदा निवार १३३ १८०

फट्—(सं० स्फाटन्)। **फटत**— फटता है। उदा० राति दिवस मोहिं कल ण पड़त है, हीयो फटत मेरी छाती १२३। **फटा**— फट गया। उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, ये बिण फटा हियाँ ५२। **फाटी** (१) फटी हुई। उदा० फाटी तो फूलड़ियाँ पाँव उभाणें, चलतै चरण धसे १८७। (२) फट गई। उदा० नाव फाटी प्रभु बाल बाँधो, बूड़त है बेरी ६३।

फटा—दे० 'फट्'

फणफण—(सं० फन) फुंकार कर। उदा० कालिन्दी दह नाग नाथ्यॉं, काल फण-फण निर्त करंत १६८।

फल— (सं० फल) वनस्पति में होने वाला वह बीज या गूदे से परिपूर्ण बीजकोश जो किसी विशिष्ट ऋतु में उत्पन्न होता है। मीराँ में 'फल' एक विशेष फल (बेर) के लिए प्रयुक्त हुआ है। उदा० जूठे फल लीन्हें रास, प्रेम की प्रतीत जाण १८६।

फसे—दे० 'फँस्'

फाँसी—दे० 'फँस'

फाँसु—दे० 'फँस्'

फागा—(सं० फाल्गुन) फागुन के महीने मे पड़ने वाला त्यौहार (होली)। उदा० फागुण फागा खेलहैं वणराइ जरावै हो ११५। ११५। **फागु**—होली। उदा० फागु जू खेलत रसिके साँवरो, बाढ़्यो रस ब्रज भारी १७५। **फागुण**—फागुन का महीना। उदा० फागुण फागा खेलहैं, वणराइ जरावै हो ११५।

फागु—दे० 'फागा'

फागुण—दे० 'फागा'

फाटी—दे० 'फट्'

फिर[१]—(सं० प्रेरणा अथवा प्रा० (कल्पित रूप) पेरन) पुन दोबारा उदा० णेणाँ लोभाँ अटकाँ शक्या णा फिर आय १३। ४३, १५६, १६५, १६६। **फेर**— फिर दोबारा। उदा० म्हारा बिछड़्या फेर न मिलया भेज्याँ णा एक सन्नस ६८। **फेरि**— फिर। उदा० ऐसी सूरत या जग माँही फेरि न देखी सोइ ५३।

फिर[२]—(सं० प्रेरण प्र०, पेरन)। **फिर**—संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) घूम। उदा० हरि मंदिर जाँता पाँवलिया रे दूखे, फिर आधे सारो गाम रे १५७। **फिरताँ**—(१) फिरती हूँ, फिरते हैं (सामान्य वर्तमान)। उदा० दीरघ नैण मिरघ कूँ देखाँ, वण वण फिरताँ माराँ १९०। १९०। **फिराँ**—फिरता हूँ। उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, कुंजाँ गैल फिरा री २१। **फिरा**—फिर रही हूँ। उदा० घायल री घूमा फिरा म्हारो दरद ण जाण्या कोय १०२। **फिरी**—घूमी। उदा० वन बन ढूँढ़त मैं फिरी, आली सुधि नहीं पाई ८६। **फिरूँ**—घूमूँ (संभावनार्थक)। उदा० साँकडली सेर्‌याँ जन मिलिया क्यूँ कर फिरूँ अपूठी ३३। १८४। **फिरे**— फिरता है। उदा० म्हारी गलियाँ णाँ फिरे, वाँके आँगण डोले, हो १८१। **फिरै**—फिरता है। उदा० दुगधा आरण फिरै दुखारी, सुरत, बसी सुत मानैं हो ७३। **फिर्‌या**—फिरी। उदा० कुंजन कुंजन फिरया साँवरा, सबद सुण्या मुरली काँ १६०।

फिरताँ—दे० फिर्[२]'

फिराँ—दे० 'फिरै[२]'

फिरा—दे० 'फिर्[२]'

फिरी—दे० 'फिर्[२]'

फिरूँ दे० 'फिर[२]'

फिर—दे० 'फिर²'

फिरै— दे० 'फिर²'

फिर्यां—दे० 'फिर्²'

फीकां—(सं० अपक्व) स्वाद रहित। उदा० खाण पाण म्हारा फीकां सो लागां नैण रह्याँ मुरझावाँ ६९। १६०।

फूल¹—(सं० फुल्ल) पुष्प (संज्ञा)। उदा० साँझ भई मीराँ सोवण लागी, मानो फूल बिछाय ४१। ५४, १७१, १९८। **फूलन सेज**– फूलों की सेज। उदा० फूलन सेज सूल होइ लागी, जागत रैणि बिहावै हो ९२। १९१।

फूलडियाँ—(सं० फुल्ल + डी + आ) जूतियाँ। उदा० फाटी तो फूलडियाँ पाँव उभाणे, चलतै चरण धसे १८७।

फूलन—दे० 'फूल¹'

फूल²—(सं० प्रफुल्लित) (क्रिया)।

फूलवै—फूलते हैं। उदा० वैसाख वणराइ फूलवै, खाण पाण म्हाणे फीकां सो लागां नैण रह्याँ मुरझावाँ ६९। १६०।

फूल¹—(सं० फुल्ल) पुष्प (संज्ञा)। उदा० साँझ भई मीराँ सोवण लागी, मानो फूल बिछाय ४१। ५४, १७१, १९८। **फूलन सेज**—फूलों की सेज। उदा० फूलन सेज सूल होइ लागी, जागत रैणि बिहावै हो ९२। १९१।

फूल²—(सं० प्रफुल्ल) (क्रिया)। **फूलवै**—फूलते हैं। उदा० वैसाख वणराइ फूलवै कोइल कुरलीजै हो ११५। **फूलाँ**—खिली। उदा० चंदा देख कमोदण फूलाँ, हरख भयाँ म्हारे छाज्यो जी ११९। **फूले**—फूलता है। **फूले अंग न समात**—बहुत प्रसन्न होना है। उदा० आपहि आप पुजाय के रे, फूले अँग न समात १५८।

फूलवै— दे० 'फूल्'

फूलाँ—दे० 'फूल्'

फूले—दे० 'फूल्'

फेटा—(सं० पेट) कमर के नीचे पहनने का कपड़ा।

फेर¹—दे० 'फिर'

फेर²—(सं० प्रेरण, प्रा० पेरन) चक्कर।

फेर्³—(सं० प्रेरण, प्रा० पेरन)। **फेरती**— फिरवाती। उदा० जो हूँ ऐसी जानती रे बाला, प्रीति कियाँ दुख होय ५९। **फेरा फेरी**—आवागमन। उदा० रुम रुम साता भयाँ भइ उर में, मिटि गई फेरा फेरी ९४। **फेरी**—स्मरण किया (भूतकाल)। उदा० आदि अंत निज नाँव तेरो, हीया मे फेरी ६३। **दूँगी नग बिच फेरी**—नगर में चक्कर लगाऊँगी। उदा० तेरे कारण जोगण हूँगी, दूँगी नग बिच फेरी ९४।

फेरा फेरी—दे० 'फेर्³'

फेरि—दे० 'फिर¹'

फोर्—(सं० स्फोटन)। **फोरी**—फोड़ दी (भूतकाल)। उदा० दध मेरो खायो मटकिया फोरी, लीणो भुज भर माथ १७६।

ब

बद फ़ा० बदा) सेवक उदा० वदे बदगी मति भूल ११८

बंधण—(सं० बंधन) बंधन, बाँधने की क्रिया। उदा० भो सागर जग बंधण झूठाँ कुलरा न्याती १०६। १२८।

बंधा—(सं० बंधु) मित्र। उदा० भायाँ छाड्याँ, बंधा छाँड्याँ, छाँड्याँ सगाँ सूयाँ १८।

बंसी—(सं० वंशी) बाँस की नली का बना हुआ एक प्रकार का बाजा, जिसको मुरली या बाँसुरी भी कहते हैं। उदा० बंसी बजाँवा गावाँ कान्हाँ, सँग लियाँ बलवीर १६१। **बंसीवारे**—बाँसुरीवाले, कृष्ण। उदा० जागो बंसीवारे ललना, जागो मोरे प्यारे १६५।

बाँसी—बाँसुरी। उदा० पीताम्बर कट उर बैजणताँ, कर सोहाँ री बाँसी ६। **बाँसुरी**—उदा० भई हों बावरी सुन के बाँसुरी, हरि बिनु कछु न सुहाये माई १६७।

बंसीवारे—दे० 'बंसी'

बखाण्—(सं० व्याखान्)। **बखाणाँ**—बखान किया। उदा० बिरद बखाणाँ, गणताँ णा जाणा, थाकाँ बेद पुराण १३४।

बखाणाँ—दे० 'बखाण्'

बगड़—(फा० बगल) बगल। **बगड़ पड़ोसण**—मकान की बगल में रहने वाली पड़ोसिन। उदा० सुणियो मेरी बगड़ पड़ोसण, गेले चलत लागी चोट १८३।

बगसणहारा—(फ़ा० बक्श + हिं० ना + स० धारक) क्षमा करने वाले। उदा० मैं निगुणी गुण एकौ नाहीं तुम हो बगसणहारा ११२।

बचन—(सं० वचन) वचन, बोल। उदा० बोलत बचन मधुर से मानू जोरत नाहीं प्रीत ५७।

बछिया—(सं० वत्स) गाय का बच्चा। उदा० कित गई प्रभु मोरी टूटी टपरिया, हीरा, मोती, लाल कसे १८७।

बजंता—दे० 'बज्'

बज्—(सं० वाद्य)। **बजंता**—बजाकर। उदा० थें कह्याँ छाणे म्हाँ काँ चोड्डे, लियाँ बजंता ढोल २२। **बजत**—बजता है। उदा० मुरली चंग बजत डफ न्यारो, संग जुवति व्रजनारी १७५। **बजावाँ**—बजाती हूँ। उदा० बंसी बजाँवा गावाँ कान्हाँ, संग लियाँ बलवीर १६१। **बजाऊँ**—बजाऊँ (संभावनार्थक)। उदा० मीराँ कहै मैं भई रावरी, कहो तो बजाऊँ ढोल १००। **बजावत**—बजाते हुए। उदा० जगत बदीत करी मनमोहन, कहा बजावत ढोल ५८। **बजावाँ**—बजाती हूँ, बजाता है (सामान्य वर्तमान)। उदा० अधर मधुर धर वंशी बजावाँ, रीझ रिझावाँ, व्रजनारी जी २। ६, ११, १६१। **बाज्यो**—बज रहा है। उदा० बाज्यो झाँझ मृदंग मुरलिया बाज्याँ कर इकतारी ७७।

बजत—दे० 'बज्'

बजाऊँ—दे० 'बज्'

बजावाँ—दे० 'बज्'

बजावत—दे० 'बज्'

बटवो—(सं० वर्तुल) कमंडल। उदा० सेली नाद बभूत न बटवो, अजूँ मुनी मुख खोल ५८।

बड़—(सं० वर्द्धन) बड़े। उदा० मीराँ के प्रभु रामजी बड़ भागण रीझै हो १६। १०४। **बड़ी बड़ी**—विशाल। उदा० हे मा बड़ी बड़ी अँखियन वारो, साँवरो मा तन हेरत हँसिके ७ **बड़े**

बहुत। उदा० तुम गुणवंत बड़े गुणसागर, मैं हूँ जी औगणहारा ११२। **बड़े घर**—वह घर जहाँ ब्रह्म का निवास है, परलोक। उदा० बड़े घर तालो लागाँ री, पुरबला पुन्न जगावाँ री २४। **बड़ो**—बहुत। उदा० हम चितवाँ थें चितवो णा हरि, हिवड़ो बड़ो कठोर ५।

बड़ी—दे० 'बड़'

बड़े—दे० 'बड़'

बड़ो—दे० 'बड़'

बढ़—(सं० वर्द्धन)। **बढ़्या**—बढ़ता है। उदा० वढ़्या छिण छिण घट्या पल पल, जात णा कछु बार १६६। **बढ़ायाँ**—बढ़ाया। उदा० द्रोपता री लाज राख्याँ थे बढ़ायाँ चीर ६१। **बाढ़्यो**—बढ़ गया। उदा० फागु जू खेलत रसिक साँवरो बाढ़्यो रस ब्रज भारी १७५।

बढ़्या—दे० 'बढ़'

बढ़ायाँ—दे० 'बढ़'

बण[१]—(सं० वन) जंगल। उदा० ढूँढताँ बण स्याम डोला, मुरलिया धुण पाय ६०। **बणराइ**—जंगल के राजा। उदा० बैसाख वणराइ फूलवै, कोइल कुरलीजै हो ११५। **बन**—वन। उदा० विरह की मारी मैं बन डोलूँ, प्राण तजूँ करवत ल्युँ कासी ६५। ८६, ८९, ८९, ६४, ६४, ११८।

बण[२]—(सं० वर्णन)। **बणाऊँ**—बनाऊँ (संभावनार्थ)। उदा० अगर चँदण की चिता बणाऊँ, अपणे हाथ जला जा ४६। **बणावत**—बनाता है। उदा० हिल मिल बात वणावत मीठी पीछे जावत भूल ५४। **बणे**—बनता है। उदा० अब णा वणे मुरारी सरण गह्याँ वह जावाँ १०४। १५८। **बणै**—बनेगा। उदा० अब तो म्याँ कैसे वणै रे पूरब जनम की प्रीत ५९। **बण्या**—बने। उदा० मोहण मूरत साँवराँ सूरत णेणा बण्या विशाल ३।

बणज—(सं० वनज) कमल के समान कोमल। उदा० णेणाँ बणज बसावाँ री, म्हारा साँवरा आवाँ १५।

बणराइ—दे० 'बण'

बणाऊँ—दे० 'बण[२]'

बणावत—दे० 'बण[२]'

बणे—दे० 'बण[२]'

बणौ—दे० 'बण[२]'

बण्या—दे० 'बण[२]'

बतला—(सं० वार्ता)। **बतलावै**—बात करोगे। उदा० कबै हँस कर बतलावै ७४। **बता**—संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया)। **बता जा**—बता जाओ। उदा० प्रेम भगति को पैंड़ों ही न्यारो हमको गैल बता जा ४६। **बतावाँ**—बताऊँ। उदा० क्यासूँ मण री बिथा बतावाँ, हिवड़ो रह्या अकुलावाँ ७८। **बतावे**—बताता है। उदा० बहुता बहै जी उतावला रे, वे तो लटक बतावे केह्व ५९।

बता—दे० 'बतला'

बतावाँ—दे० 'बतला'

बतावे—दे० 'बतला'

बदन—(सं० वदन) मुँह। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, निरख बदन म्हारो मनड़ो फँस्यो ८। ११, १३, ५१, ५८, १८४।

बदनामी—(फ़ा० बदनामी) लोकनिंदा, अपयश। उदा० राणा जी म्हाने या बदनामी लगे मीठी ३३।

बदरा—सं० वारिद जल से उठी हुई

वह भाप तो घनी होकर आकाश में छा जाती है और फिर पानी की बूंदों के रूप में गिरती है इसी को घन या मेघ भी कहते हैं। उदा० गाज्याँ बाज्याँ पवन मधुरयो, अंबर बादराँ छाज्यो १४९। **बदरा**—बादल। उदा० गगन गरजि आयो, बदरा बरसि आयो १२०। **बदरिया**—बादल। उदा० बरसाँ री बदरिया सावन री, सावण री मन भावण री १४६। **बदली**—बादल का छोटा टुकड़ा। उदा० काली पीली बदली मे बिजली चमके, मेघ घटा घन घोर, छै जी १४५। **बादर**-बादल। उदा० मतवारो बादर आए रे, हरि को सनेसो कबहूँ न लाये रे ८१। **बादल**—बादल। उदा० बादल देखा झरी स्याम मैं बादल देखाँ झरी ८२। **बादलाँ**—बादल। उदा० नदनंदन मण भायाँ बादलाँ णभ छायाँ १४२। **बादला**—बादल। उदा० उड़त गुलाल लाल बादला रो रंग लाल पिचकाँ उड़ावाँ १४८। १४९।

बदरा—दे० 'बदराँ'

बदरिया—दे० 'बदराँ'

बदली—दे० 'बदराँ'

बदीत—(सं० विदित) विदित किया। उदा० जगत बदीत करी मनमोहन, कहा बजावत ढोल ५८।

बदीती—(सं० व्यतीत) बीत गई। उदा० अवध बदीति अजहूँ न आये, दुतियन सूँ नेह जोरे ९५।

बधाया—(सं० बर्द्धन) बधाई। उदा० जोसीड़ा णे लाख बधाया आस्याँ म्हारो स्याम १४४।

बन—दे० 'बण'

बनाय सं० वर्णन बनाते हैं उदा० सकल कुटम्बाँ, बरजताँ, बोल्या बोल बनाय १३। ४१।

बभूत—(सं० विभूति) भभूत, भस्म। उदा० सेली नाद बभूत बटवो, अजूँ मुनी मुख खोल ५८।

बर[1]—(सं० वर) (१) पति। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, बर पायो छै पूरो ३२। १७२। (२) श्रेष्ठ। उदा० बाली घड़ावुं बिट्ठल बर केरी, हार हरी नो मारे हृये रे १४१। **बर**[2] (?)।

बर्याँ—वरण किया। उदा० बर्याँ साजण साँवरो री, म्हारो चुड़लो अमर हो जाय २०१। २०१। **बर्यो**—वरण किया। उदा० दासि मीराँ लाल गिरधर, छान ये वर बर्यो १७२। १७२।

बरज्—(सं० वर्जन)। **बरजताँ**—मना किया। उदा० सकल कुटम्बाँ बरजताँ, बोल्या बोल बनाय १३। **बरजाँ**-मना करो। उदा० थें मत बरजाँ माइड़ी, साधाँ दरसण जावाँ २८। **बरजी**—मना की गई। उदा० बरजी री म्हाँ स्याम विणा न रह्याँ २९।

बरजाँ—दे० 'बरज्'

बरजी—दे० 'बरज्'

बरण—(सं० वर्ण) रंग। उदा० उजलो बरण बागलाँ पावाँ, कोमल बरणाँ काराँ १९०। २०१। **बरन**—वर्ण। उदा० बरन कर्‌याँ अविनासी म्हारो, काल व्याल णा खासी १९४। **बरण्यूं**—(सं० वर्णन) वर्णन। **बरण्यूं न जावै**—वर्णन नहीं किया जाता। उदा० मीराँ कूं प्रभु दरसण दीज्यो, आँणद बरण्युं न जावै ६७।

बरत—(सं० व्रत) उपवास। उदा० चुडों म्हारे तिलक अरु माला सील बरत

सिणगारो २५ । **बरताँ**—व्रत। उदा० तीरथ बरताँ ग्याण कथंता, कहा लियाँ करवत कासी १६५ ।

बरताँ—दे० 'बरत'

बरदाण—(सं० वरदाण) वर देकर। उदा० ग्राह गह्याँ गजराज उबार्‌याँ, अछत कर्‌याँ बरदाण १३६ ।

बरन—दे० 'वरण'

बर्‌याँ—दे० 'बर²'

बर्‌यो—दे० 'बर²'

बरस्—(सं० वर्षण)। **बरसाँ**—बरसा। उदा० उमग्याँ इन्द्र चहूँ दिस बरसाँ दामण छोड़्या लाज १४३। १४६, १४६, १४६। **बरसि**—बरसकर। उदा० गगन गरजि आयौ, बदरा बरसि भयो १२०। **बरस्या**—बरसे हुए। उदा० बरस्या वौ हो दिल भया बल बरस्यौ पलक न जाइ ११६। **बरस्याँ**—बरसीं। उदा० काला पीला घट्या उमड्या बरस्याँ चार घरी ८२। **बरस्यौ**—बरसे हुए। उदा०······भया बल बरस्यौं पलक न जाइ ११६ ।

बरसाँ—दे० 'बरस्'

बरसि—दे० 'बरस्'

बरस्या—दे० 'बरस'

बरस्याँ—दे० 'बरस'

बरस्यौ—दे० 'बरस्'

बल¹—(सं० बल) जलकर। उदा० जल बल भई भस्म की ढेरी, अपणे अंग लगा जा ४६ ।

बल²—(सं० बल) शक्ति, ताकत। उदा० म्हा अबला बल म्हारों गिरधर, थें म्हारों साज ४८। ४६, ११६, १३२। **थें बल उतर्‌या पार**—तुम्हारे ही भरोसे पार उतरी उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर थें बल उतर्‌या पार १६७। **सबल**—बलवान। उदा० मीराँ सरण सबल गिरधर की ३५ ।

बलबीर—(हिं० बलराम+बीर) (१) बलराम कृष्ण के भाई। उदा० बसी बजाँवा गावाँ कान्हाँ संग लियाँ बलबीर १६१। १६१। (२) बलराम के भाई कृष्ण। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, दरसन दो न बलबीर १२२ ।

बलि—(सं० वलि) बलिहारी। उदा० गिरधर प्रभु अंग अंग, मीराँ बलि जाई १२। १५, २०, ४१, १२०, १८६। **बलिहारियँ**—न्यौछावर कीजिए। उदा० मीराँ कूँ सरणि लीजै, बलि बलिहारियँ १२०। **बलिहारी**—न्यौछावर। उदा० सुन्दर बदन जोवताँ साजण, थारी छवि बलिहारी ५१। ११३, १२७, १३१, १७१ ।

बलिहारियँ—दे० 'बलि'

बलिहारी—दे० 'बलि'

बसंत—(सं० वंसत) वर्ष की छः ऋतुओं में से प्रधान और प्रथम ऋतु, जो चैत और बैशाख के महीने में पड़ती है। उदा० आयाँ बसंत पिया घर णाँरी, म्हारी पीड़ा भारी ७७। ११५ ।

बस¹—(सं० वश) वश। उदा० काँई कर्‌याँ कछु णा बस म्हारी, णा म्हारे पंख उड़ावाँ री १२१। १५५, १६७। **बसिके**—वश का। उदा० ज्यों तोको कछु और बिथा हो, नाहिन मेरो बसिके ७ ।

बस्²—(सं० वस्)। **बसत**—संयुक्त काल (मुख्य क्रिया) रहता। उदा० रोगी अंतर बैद बसत है- बैद ही ओखद जाँण हो ७३ **बसत** संयुक्त काल

(सहायक क्रिया का लोप)। उदा० कमठ दादुर वसत जल में, जल से उपजाई ८९। **बसताँ**—संयुक्त काल (सहायक क्रिया का लोप) वसते हैं। उदा० म्हारा पियाँ म्हारे हीयड़ै वसताँ णा आवाँ णा जाती २३। ८२, १९४। **बसनो**—(क्रियार्थक संज्ञा) वसना, रहना। उदा० महल अटारी हम सब त्याग, त्याग्यो थाँरो बसनो सहर ३४। **बसाँ**—वसी है। उदा० स्याम रूप हिरदाँ वसाँ, म्हारे ओर णा भावाँ २८। **बसाणी**—वस गई। उदा० गणका कीर पढावताँ, वैकुण्ठ वसाणी जी १४०। **बसावाँ**—वसाऊँ। उदा० णेणाँ वणज वसावाँ री, म्हारा साँवरा आवाँ १५। **बसिके**—बसकर। उदा० जंतर मंतर जादू टोना, माधुरी मूरति वसिके ७। **बसी**—बसी हुई है (पूर्ण भूत)। उदा० दुगधा आरण फिरै दुखारी, सुरत, बसी सुत मानै हो ७३। ८८, ८८। **बसे**—(पूर्ण भूत) बस गई है, वसे हैं। उदा० वा मूरति म्हारे मण वसे छिन भरि रह्योइ ण जाइ ११६। १८७, १८७। **बसै**—रहते हैं। उदा० थाँरे देसाँ में राणा साध नहीं छैं, लोग बसै सब कूड़ो ३२। **बस्याँ**—बस गया। उदा० बस्याँ म्हारे णेणण माँ नँदलाल ३। १५, २३। **बस्या**—वसे हैं। उदा० मा हिरदाँ बस्या साँवरो म्हारे णींद न आवाँ २८। **बस्यो**—बसा है। उदा० हेरी मा नंद को गुमानी म्हाँरे मनड़े वस्यो ८।

बसत—दे० 'बस्[२]'

बसताँ—दे० 'बस्[२]'

बसन—(सं० वसन) वस्त्र। उदा० मुरली कर लकुट लेऊँ, पीत बसन धारू १८४।

बसनो—दे० 'बस[२]'

बसाँ—दे० 'बस्[२]'

बसाणी—दे० 'बस्[२]'

बसावाँ—दे० 'बस्[२]'

बसिके—(१) दे० 'बस[१]'। (२) दे० 'बस्[२]'

बसी—दे० 'बस्[२]'

बसे—दे० बस्[२]

बसै—दे० 'वस्[२]'

बस्याँ—दे० 'बस[२]'

बस्या—दे० 'बस्[२]'

बस्यो—दे० 'बस्[२]'

बह्—(सं० वह्) हुआ। **बहता**—बहता हुआ। उदा० बहता वहैजी उतावला रे, वे तो लटक बतावे छेह ५९। **बहा**—संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) **बहा चित्त से दीजै**—चित्त से बहा दीजिए। उदा० काम क्रोध मद लोभ मोह कूँ, बहा चित्त से दीजै १९९। **बहाय**—संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) **दइ बहाय**—बहा दी। उदा० लोकलाज कुल काण जगत की दइ बहाय जस पाणी ३८। **बहि**—संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) **बहि जाती**—बही जाती है। उदा० नैण नीरज अंब बहे रे (बाला), गंगा बहि जाती १८५। **बहे**—प्रवाहित हो। नैण नीरज में अब वहे रे (बाला), गंगा बहि जाती १८५। **बहै**—बहती है। उदा० भादवैं नदिया बहैं, दूरी जिन मेलैं, हो ११५। **बह्या**—बहता है। उदा० नीरमल नीर वह्या जमणा माँ, भोजन दूध दही काँ १६०। **बह्यो**—यो संसार सब वह्यो जात है, लख चौरासी री धार १२५।

बहता—दे० बह्

बहा—दे० 'बह्'

बहाय—दे० 'बह्'

बहि—दे० 'बह्'

बहियाँ—(सं० बाहु) बाँह । उदा० म्हाँरी अँगुली णा छुवे बाँकी बहियाँ मोरि, हो १८१ ।

बहु—(सं० बहुना) बहुत । उदा० बहु दिन बीतें अजहुँ न आये, लग रही तालावेली ८० । १०८, १११, १३५, १५८ । **बहुत**—अधिक । उदा० जक ण परत मन बहुत उदासी, सुन्दर स्याम मिली अबिनासी १२६ । **बहुता**—बहुत । उदा० अवर अधम बहुता थें तार्‌याँ, भाख्याँ सगत सुजाण १३४ । **बहोती**—बहुत ही । उदा० मगसर ठंड बहोती पड़ै मोहि वेगि सम्हालो, हो ११५ । **बोहो**—बहुत । उदा० जोगिया कूँ जोवत बोहो दिन बीता, अजहूँ आयो नाहि ४४ । ११४ ।

बहुत—दे० 'बहु'

बहुता—दे० 'बहु'

बहे—दे० 'बह्'

बहै—दे० 'बह्'

बहोती—दे० 'बहु'

बह्‌याँ—(सं० बह्) वहन कीजिए । उदा० मीराँ रे प्रभु हरि अबिनासी, लाज विरद री बह्याँ १३८ ।

बह्‌या—दे० 'बह्'

बह्‌यो—दे० 'बह्'

बाँकाँ—(सं० वंक) टेढ़ा । उदा० सुंदर बदन कमल दल लोचण, बाँकाँ चितवण णणां समाणी ११ । **बाँके**—टेढ़े । उदा० भौंह कमान वाँके लोचन, मारत हियरे कसिके ७ । **बाँकेबिहारी**—कृष्ण । उदा० म्हारो प्रणाम बाँकाबिहारी जी २

बाँके—दे० 'बाँका'

बाँकेबिहारी—दे० 'बाँका'

बाँच्—(सं० वाच्) । **बाँचण**—बाँचने, पढ़ने (क्रियार्थक संज्ञा) । उदा० कागद ले राधा बाँचण बैठी, भर आई छाती १-५ । **बाँची**—पढ़ा । उदा० गायाँ गायाँ हरि गुण निसदिन, काल व्याल री बाँची १६ । **बाँचै**—पढ़े । उदा० कुण बाँचै पाती, विणा प्रभु कुण बाँचै पाती १८५ । १८५ ।

बाँचण—दे० 'बाँच्'

बाँची—दे० 'बाँच्'

बाँचै—दे० 'बाँच्'

बाँध्—(सं० बंधन) बाँधकर, पहनकर । उदा० साज सिंगार बाँध पग घुँघर, लोकलाज तज नाची १६, ३६, १६३ । **बाँधन**—बाँधना । उदा० काजल टीकी हम सब त्यागा, त्याग्यो है बाँधन जूडो ३२ । **बाँधि**—(१) बाँध दिया । उदा० काम कूकर लोभ डोरी, बाँधि मोहि चण्डाल १५८ (२) बाँधकर । उदा० स्याम प्रीत री बाँधि घुँघर्‌याँ मोहण म्हारो साँच्याँरी १७ । **बाँधी**—बाँध दी । उदा० काचे ते तागणे हरिजीए बाँधी, जेम खेंचे तेम तेमनी रे १७३ । **बाँधे**—बाँधे हुए । उदा० पीताँबर फेटा, बाँधे, अरगजा मुवासी १६३ । **बाँधों**—बाँधूँ (संभावनार्थक) । उदा० जतन करो जंतर लिखी बाँधों ओखद लाऊँ घसिके ७ । **पाल बाँधो**—पाल तानो । नाव फाटी प्रभु पाल बाँधो, बूड़त है बेरी ६३ । **बाँध्या**—बाँध दिया । उदा० चंचल चित्त चल्या णा चाला, बाँध्या प्रेम जंजीर १५५ । **बाँध्यो**—बाँधा स्थापित किया उदा० हरि जी सूँ

बांध्यो हेतु वैकुण्ठ में झूलणी १८६।

बाँध—दे० 'बाँध्'

बाँधन—दे० 'बाँध्'

बाँधि—दे० 'बाँध्'

बाँधी—दे० 'बाँध्'

बाँधे—दे० 'बाँध्'

बाँधौं—दे० 'बाँध्'

बाँधो—दे० 'बाँध्'

बाँध्या—दे० 'बाँध्'

बाँध्यो—दे० 'बाँध्'

बाँरो—(सं० कल्पित रूप अव7 वा+कृतकः>केरो>रो) अपना। उदा० राणो जी रूठ्याँ बाँरो देस रखासी ३५।

बाँलपणे—(सं० बाल+पन) बचपन। उदा० बाँलपणे का मित सुदामा, अब बर्या दूर बसे १८७।

बाँसी—दे० 'बंसी'

बाँसुरी—दे० 'बंसी'

बाँह—(सं०बाहु) हाथ। उदा० बावल वैद बुलाइया री, म्हाँरी बाँह दिखाय ७२। **बाह गह्याँ री लाज**—बाँह पकड़ने की लाज। उदा० अब तो निभायाँ, बाँह गह्याँ री लाज ६२, ११२। **बाँहड़ियाँ**—(बाँह + ड़िया प्रत्यय) बाँह। उदा० स्याम म्हो बाँहड़ियाँ जी गह्याँ १२८।

बाँहड़ियाँ—दे० 'बाँह'

बाखरिया—(फा० बखर) मिट्टी ईंटा आदि का बना हुआ मकान, घर। **मेरी बाखरिया**—मेरे घर। उदा० जो तुम आओ मेरी बाखरियाँ, जरि राखूँ चंदन किंवारियाँ १६२।

बाग—(अ० बाग) बगीचा। उदा० चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ नित उठ दरसण पास्यूँ १५४

बागलाँ—(फ़ा० बग़ल) बगलों का। उदा० उजलो बरण बागलाँ पावाँ, कोमल बरणाँ काराँ १६०।

बाज्—(सं० वाद्य)। **बाजाँ**—बजती है। उदा० मुरलिया बाजाँ जमणा तीर १६६। **बाजा**—बजा (भूतकाल)। उदा० ताल पखावज मिरदंग बाजा, साधाँ आगे णाच्याँ ३७। **बाजै**—बजती है। उदा० (इक) गाजै बाजै पवन मधुरिया. मेहा अति झड़ लाये रे ८१। **बाज्याँ**—बज रहा है, बज रही है। उदा० बाज्यां झाँझ मृदंग मुरलिया बाज्याँ कर इकतारी ७७। **बाज्यो** बजा। बाज्यो झाँझ मृदंग मुरलिया ७७।

बाजाँ—दे० 'बज्'

बाजा—दे० 'बज्'

बाजी—(फ़ा० बाज़ी) खेल। उदा० यो संसार चहर री बाजी खेल पड्याँ उठ जासी १९५।

बाजै—दे० 'बज्'

बाज्याँ—दे० 'बज्'

बाज्यो—दे० 'बज्'

बाट—(सं० वाट) मार्ग, रास्ता। **जोऊँ बाट**—प्रतीक्षा करती हूँ। उदा० जोगिया जी निसदिन जोऊँ बाट ४४, ११३। **जोवाँ थारी बाट**—तुम्हारी बाट जोहती हूँ। उदा० आवाँ मण मोहण जी जोवाँ थारी बाट ९६। **जोवाँ बाट**—बाट जोहती हूँ, प्रतीक्षा करती हूँ। उदा० निस दिन जोवाँ बाट मुरारी, कबरो दरसण पावाँ ६६, ७१। **बाट जोवै**—बाट जोहती है। उदा० बिरहणि पिव की बाट जोवै, राखिल्यो मेरी ६३ **बाट जोहाँ**—बाट जोहती

हूँ। उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, बाट जोहाँ थें आवाँरी १२१। **बाट मैं जोऊँ**—मैं बाट जोहती हूँ। उदा० आव साजनियाँ बाट मैं जोऊँ, तेरे कारण रैंण न सोऊँ १२६। **बाटड़ियाँ**—(बाट+ड़ियाँ प्रत्यय) रास्ता। उदा० स्याम मिलण री घणो उमावो, णित उठ जोऊँ बाटड़ियाँ १०८।

बाटड़ियाँ—दे० 'बाट'

बाढ़्यो—दे० 'बढ़'

बाण—(सं० वर्णन) आदत। उदा० आली री म्हारे णेणाँ बाण पड़ी १४। १२१,

बात—(सं० वार्ता) बात-चीत। उदा० जग से उतर के खर नहिं चढ़स्याँ, ये तो बात न होई २५। ५४, ६६, ६६, ७५, ७६। **बाताँ**—बातें। उदा० स्याम विणा जग खाराँ लागाँ, जगरी बाताँ काँची १६।

बाताँ—दे० 'बात'

बाती—(सं० वर्तिका) दीपक। उदा० छोड्या म्हाँ बिस्वास सँगाती, प्रेम री बाती जलाय ६४। १८५।

बादर—दे० 'बदराँ'

बादल—दे० 'बदराँ'

बादलाँ—दे० 'बदराँ'

बादला—दे० 'बदराँ'

बान—(सं० बाण) बाण। उदा० भौंह कमान बान बाँके लोचन, मारत हियरे कसिके ७।

बापुरो—(सं०बर्बुर) बेचारा। उदा० बरण बर्‌याँ बापुरो जणम्या जणम णसाय २०१।

बाबल—(तु० बाबा) पिता। उदा० बाबल बैद बुलाइया री. म्हाँरी बाँह दिखाय ७२

बाबा नंद—(तु० बाबा+नंद) नंद बाबा (कृष्ण के पिता)। उदा० ले मटुकी सिर चली गुजरिया, आगे मिले बाबा नंद जी के छोना १७७।

बार[1]—(सं० वार) (१) दिन। उदा० घोर रैंणाँ बिजु चमकाँ बार गिणताँ प्रभात ६६। **बार बार**—फिर-फिर। उदा० कुल कुटम्ब सजण सकल बार बार हटकी ६। १५, २०, ६६, ११३। (२) देर। उदा० वढ्या छिण छिण घट्या पल पल जात णा कछ बार १६६। **बारम्बार**—बार-बार। उदा० काँई म्हारो जणम बारम्बार १६६। **बेर**—बार। उदा० एक बेर दरसण दीजै, सब कसर मिटि जाई ८६। **बेरि बेरि**—बार बार। उदा० बेरि बेरि पुकारि कहूँ प्रभु आरति है तेरी ६३। **बेरी**—बार। उदा० एक बेरी देह फेरी, नगर हमारे आइ ११६। **बेर बेर**—बार-बार। उदा० बेर बेर मैं टेरहूँ अहे क्रिपा कीजै, हो ११५।

बार[2]—(सं० बाह्य) बाहर। उदा० म्हारा पिया परदेसाँ बसताँ, भीज्याँ बार खरी ८२। **बाहर**—उदा० मीन जल से बाहर कीना, तुरत मर जाईं ८६। **बाहरि**—बाहर। उदा० बाहरि घाव कछु नहिं दीसै, रोम रोम दी पीर १६२।

बारम्बार—दे 'बार[1]'

बाराबाणी—(सं० बारावानी) बारावानी सोना, शुद्ध किया हुआ सोना। उदा० जैसे कंचन दहत अगिन में, निकसत बाराबाणी ३८।

बारिज—(सं० वारिज) कमल। **बारिज भवाँ**—कमल के समान भौंहें। उदा० बारिज भवाँ अलक मतवारी, णेण रूप रस अँटके १० **बारिज बदन मुख**

कमल। उदा० अवलोकत वारिज बदन, बिवस भई तण में १८४।

बारी[1]—(सं० वाटिका) बाड़ी, वाटिका। उदा० हरे हरे णवाँ कुंज लगास्यूं, बीचा बीचा बारी १५४।

बारी[2]—(सं० अवतारण) न्यौछावर हुई। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल की बारी, हे माय १६६।

बाल—(सं० वाल) बच्चे। **ग्वालन बाल**—ग्वालों के बच्चे। उदा० ग्वालन बाल सब करत कुलाहल, जय जय सबद उचारे १६५।

बालद—(सं० वालद) बैल। उदा० दास कबीर घर बालद जो लाया, नामदेव की छान छवन्द १३६।

बालपनाँ—(सं० वाल+पन+आँ) बचपन। उदा० बालपनाँ की प्रीत रमइया जी, कदे नाहि आयो थारो तोल १००।

बालवाँ—(सं० वल्लभ) प्रियतम। उदा० अबिनासी सूँ बालवाँ हे, जिनसूँ साँची प्रीत २६।

बाला[1]—(सं० वल्लभ) प्यारा। उदा० लगी प्रीति जिन तोड़ै रे बाला, प्रीति कीयाँ दुख होय ५९। ५६, १११, ११७, ११७।

बाला[2]—(सं० बाल) बालिका। उदा० पाना ज्यूं पीली रे (बाला), अन्न नहिं खातै १८५। १८५, १८५।

बाली—(सं० बालिका) (१) नई, कम उम्र की। उदा० पीव कारण पीली पड़ी बाला, जोबन बाली बेस ११७। (२) कान का आभूषण। उदा० बाली घड़ावुं पुरुषोत्तम केरी, तेमाँ घरेणु माऊँ घालूं रे १४१।

बालू (सं० बालुका रेत उदा० तुम गजगीरी को चूँतरौरे, हम बालू की भीत ५९।

बावड़ी—(सं० वाप+ड़ी) गढ़े का पानी। उदा० चौमस्याँ री बावड़ी, ज्याँ कूं नीर णा पीवाँ २८।

बावरा—(सं० वातुल प्रा० बाउल) पागल विक्षिप्त। उदा० स्याम नसाँ जग बावरा ज्याकूं स्याम णा भावाँ २८। ५६, ७५।

बावरी—पगली। उदा० लोग कह्यो मीरों बावरी, सासु कह्याँ कुलनासी री ३६। ३७, ९४, ९७, ९९, १६७, १७४।

बासी—(सं० वास) वासी, रहने वाला। उदा० गोकुला के बासी भले ही आए, गोकुला के बासी १६३।

बाहर—दे० 'बार[2]'

बाहरि—दे० 'बार[2]'

बाहु—(सं० बाहुक) बाँहे। उदा० कूदाँ जल अंतर णाँ डर्याँ थे एक बाहु अणत १६८।

बिंजण—(सं० व्यंजन) पकवान। उदा० छप्पण भोग छतीशाँ बिंजण, पावाँ जन प्रतिपाल ४७।

बिंदो—(सं० वंदन) वंदना करे, प्रशंसा करे। उदा० कोई निन्दो कोई बिन्दो म्हे तो, गुण गोविन्द का गास्याँ २५। ३३।

बिन्द्रावन—(सं० वृन्दावन) बृन्दावन। उदा० बिन्द्रावन माँ धेण चरावाँ, मोहन मुरली वालो १५४। १५४, १६४, १७५। **बृन्दावण**—उदा० आली म्हाणे लागाँ बृन्दावण नीकाँ १६० **बृन्दावन**—उदा० हम भई गुलफाम लता, बृन्दावन रैनाँ १८४।

बिक—(सं० विक्रयण) संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया **बिक जाऊ** उदा० जहाँ बठावें

तितही बढूं, बंचे तो बिक जाऊं २० । बिकाणी—बिक गई । उदा० मीरा गिरधर हाथ बिकाणी लोग कह्याँ बिगड़ी १४ । ४५ । बिकाय—संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) णेणां चंचल अटक णा माण्या, परहथ गयाँ विकाय १३ ।

बिकाणी—दे० 'विक्'

बिकाय—दे० 'विक्'

बिखर्—(सं० विकीर्ण) तितर-बितर होना बिखर वर्यूं णा गई—क्यों नही समाप्त हो गई । उदा० दासि मीरां लाल गिरधर, बिखर वयूं णा गइ । १८२ ।

बिख—(सं० विष) जहर । बिखरू विष को । उदा० मीरां रे प्रभु गिरधर नागर बिखरू अम्रित करां १८१ ।

बिगड्—(सं० विकृत) । बिगड़ी—बिगड़ गई है । उदा० मीराँ गिरधर हाथ विकाणी लोग कह्याँ बिगड़ी १४ ।

बिगड़ी—दे० 'बिगड्'

बिच—(सं० विच) मध्य बीच (मीराँ मे कहीं-कही अधिकरण कारकीय चिह्न के रूप में आया है) उदा० अजहूं न मिल्या राम अविनासी, वन वन विच फिरूँ री ९४ । ९४, ९८, ९८, ११४, ११४, १३६, १३६, १८७, १८८ । बीच—मध्य । उदा० यो संसार विकार सागर, बीच में घेरी ६३ । ११८, १६१ । बीचा बीचा—बीच-बीच में । उदा० हरे हरे पर्वां कुंज लगास्यूं, बीचा बीचा बारी १५४ ।

बिछड्—(सं० विच्छेद) ।

बिछड़त—बिछुड़ते ही । उदा० लगण लगी जैसे जल मछियन से बिछड़त तनहीं दीजै १६१ । **बिछड़न**—वियोग-विछोह उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, मिल बिछड़न मत कीजै हो १०७ **बिछड़्या**—(१) वियोग । उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर मिल बिछड़्या णा होवाँ ८६ । (२) बिछड़े (सभावना) । उदा० दासी मीराँ लाल गिरधर मिल णा बिछड़्या कोय ४३ । (३) बिछड़ा हुआ । उदा० म्हारा बिछड़या फेर न मिलया भेज्या णा एक सन्नेस ६८ । (४) बिछुड़ गए । उदा० थे बिछड़्या म्हा कलपाँ प्रभुजी, म्हारो गयो सब चैण १०३ । **बिछुड़्या बिछुड़कर**—उदा० मीराँ जल बिछुड्या णा जीवाँ तलफ मर मर जाय ९० । **बिछुड़न**—वियोग । उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर मिल बिछुड़न मत कीज्यो जी ५० । **बिछुरत** बिछुड़ते ही । उदा० कठिण छाती स्याम बिछुरत, बिरह तें तण तई १८२ । **बिछुरत**—बिछुड़ते ही । उदा० कठिण छाती स्याम बिछुरत, बिरह तें तण तई १८२ ।

बिछड़त—दे० 'बिछड्'

बिछड़न—दे० 'बिछड्'

बिछड़्या—दे० 'बिछड्'

बिछ्—(सं० विस्तरण) । **बिछाय**—बिछा कर । उदा० साँझ भई मीरां सोवण लागी मानो फूल बिछाय ४१ । **बिछायो** बिछाया । उदा० चुणि चुणि कलियां सेज बिछायो, नखसिख पहर्‌यो साज १५१ । **बिछावाँ**—बिछाती हूँ । उदा० स्याम मिलण सिंगार सजावाँ सुखरी सेज बिछावाँ १५ । **बिछास्यूं**—बिछाऊँगी । उदा० नैण बिछास्यूं हिवड़ो डास्यूं, सर पर राखूं विराज १०६ ।

बिछाय—दे० बिछ्

बिछायो—दे० बिछ

बिछाया—दे० 'बिछ्'
बिछास्यूं—दे० 'बिछ्'
बिछुड्या—दे० 'बिछड्'
बिछुड्न—दे० 'बिछड्'
बिछुरत—दे० 'बिछड्'
बिजली—(सं० विद्युत) बिजली। उदा० इक (कारी) अंधियारी बिजली चमकै, बिरहिणी अति डरपावे रे ८१। १४५। **बिज्जु**—बिजली। उदा० इत घण गरजाँ उत घण लरजाँ चमकाँ बिज्जु डरायाँ १४२। **बीजु**—बिजली। उदा० घोर रैण बिजु चमकां बार गिणातां प्रभात ९६। **बीजू**—बिजली। उदा० उमगि घटा घन ऊलरि आई, बीजू चमक डरावै हो। ९२।
बिज्जु—दे० 'बिजली'
बिट्ठल—(सं० विट्ठल) कृष्ण। उदा० वाली वड़ावुं बिट्ठल केरी, हार हरी नो मारे हैये रे १४१।
बिठार्‌यो—दे० 'बैठ्'
बिडारण—दे० 'बिदारण'
बिड़द—(सं० विरुद) यश। उदा० रावलो बिड़द म्हाणे रूड़ो लागाँ, पीड़त म्हारो प्राण १३६।
बिण—(सं० विना) बिना, के अभाव में। उदा० थें बिण म्हाणे जग णा सुहावाँ, निरख्याँ सब संसार ४। ५२, ६२, ६४, ६६, ७८, ९०, ९३, ९९, १०१, १०१, १०१, १०२, १०३, १०५, १०६, ११०, ११८, १२१, १६०। **बिणा**—बिना। उदा० स्याम बिणा जग खारो लागाँ, जगरी बाताँ काँची १९। २९, १०१, १२८। **बिणि**—बिना। उदा० बिरह दरद उरि अंतरि माही, हरि बिणि सब सुख कानैं हो ७३ **बिन**—बिना। उदा० मीरो ती गिरधर बिन देखे, कैसे रहे घर बसिके ७। २०, ४६, ५४, ५८, ६३, ६७, ७४, ७४, ७७, ८०, ८०, ८७, ८९, ९५, ९८, १००, १०७, ११२, ११२, ११३, १२४, १३०, १५६, १७४। **बिन्ना**—बिना। उदा० स्याम बिना जियड़ो मुरझावे, जैसे जल बिन वेली ८०। ९०, १०८, ११५, ११७, १७४। **बिनि**—बिना। उदा० हेली म्हाँसूं हरि रह्यो न जाय ४२। ४४, ५३, ८४, ८९, ९२। **बिनु**—बिना। उदा० भई हों बावरी सुन के बाँसुरी, हरि बिनु कछु न सुहाये माई १६७।
बिणा—दे० 'बिण'
बिता—(सं० व्यतीत)। **बितावाँ**—बिताती हूँ। उदा० कथासूं मणरी बिथा बितावाँ, हिवड़ो रहा अकुलावाँ ७८। **बीतण**—बीतने। उदा० अबोलणाँ जुग बीतण लागो कायाँरी कुसलात ९६। **बीताँ**—बीत गई। उदा० जोवताँ मग रैण बीताँ दिवस बीताँ जोय ४३। ४५। **बीता**—बीत गया। उदा० जोगिया कूं जोवत बीहो दिन बीता अजहूँ आयो नाहिं ४४। १०८। **बीती**—बीत गई। उदा० रजनी बीती भोर भयो है, घर घर खुले किवारे १९५। **बीते**—बीत गई। उदा० बहु दिन बीते अजहूँ न आये, लग रही तालावेली ८०। १५९। **बीतैं**—बीत गए। उदा० पलक पलक मोहि जुगसे बीतैं, छिनि छिनि बिरह जरावै हो ९२।
बिथा—(सं० व्यथा) व्यथा, पीड़ा। उदा० ज्यों तोकों कछू और बिथा हो, नाहिन मेरो बसिके ७ ७८, ९४ ९६

१०३, १०४।

बिदारण—(सं० विदीर्ण) विदीर्ण करने वाले। उदा० प्रह्लाद परतग्या राख्याँ, हरणाकुस णो उद्र बिदारण १३७।

बिडारण—दूर करने वाले। उदा० थें रिख पतणी किरपा पायाँ विप्र सुदामा विप्र बिडारण १३७।

बिदेसाँ—(सं०+विदेश) विदेश में। उदा० आप तो जाय बिदेसाँ छाये, जिवड़ो धरत ण धीर १२२। **बिदेसा**—विदेश में। उदा० देस विदेसा णा जावाँ म्हारी अणेशा भारी ७७।

बिध—(सं० विधि) नियम। उदा० बिध बिधणा री प्याराँ १९०।

बिधणा—(सं० विधि) ब्रह्मा। उदा० बिध बिधणा री प्याराँ १९०।

बिन—दे० 'बिण'

बिना—दे० 'बिण'

बिनि—दे० 'बिण'

बिनु—दे० 'बिण'

बिपत—(सं० बिपत्ति) विपत्ति, दुःख। उदा० पात ज्यूँ पीरी परी, अरु बिपत तन छाई ८९।

बिबस—(वि+सं० वश) विवश। उदा० अवलोकत बारिज बदन, बिबस भई तण में १८४।

बिरछ—(सं० वृक्ष) वृक्ष। उदा० बिरछ राँ जो पात टूट्या, लाया णा फिर डार १९६। ८३।

बिरद—(सं० बिरुद) यश। उदा० बिरद बखाणाँ गणताँ णा जाणा, थाकाँ बेद पुराण १३४।

बिरला—(सं० विरल) विरला, अनोखा। उदा० प्रीत निभावण दल के षंभण. ले कोई बिरला सूर ५९

बिरह—(सं० विरह) विरह, वियोग। उदा० बिरह ब्याकुल अनल अंतर कलणाँ पड़ता दोय ४३। ४४, ६४, ६५, ७३, ७४, ७४, ७८, ८१, ८५, ८७, ९१, ९४, ९६, ११८, १३०, १८२। **बिरहणि**—विरहिणी। उदा० बिरहणि पिव की बाट जोवै, राखिल्यो नेरी ६३। ८१, ८४, ८६, ११५। **बिरहणी**—विरहिणी। उदा० मीराँ ब्याकुल विरहणी री प्रभु दरसण दीन्यो आय ७२। ८४, ८७, ९६, ७७, ९३। **बिरहा**—विरह। उदा० जा घट बिरहा सोइ लखि है, कै कोई हरिजन मानै हो ७३। ७७। **बिरहिणी**—विरहिणी। उदा० मीराँ ब्याकुल बिरहिणी रे, तुम बिनि तलफत प्राणि ४४। **बिरहिनी**—विरहिणी। उदा० कां बिरहिनी का दुख जाँणै हो ७३।

बिरहणि—दे० 'बिरह'

बिरहणी—दे० 'बिरह'

बिरहा—दे० 'बिरह'

बिरहिणी—दे० 'बिरह'

बिरहिनी—दे० 'बिरह'

बिराज्—(सं० विराज्)। **बिराजाँ**—विराजमान है। उदा० मीराँ रे सुखसागराँ, म्हारे सीस बिराजाँ हो १५०। २०२। **बिराजे**—विराजमान हैं। उदा० सहस गोप बिच स्याम बिराजे, ज्यों तारा बिच चंद १३९। **बिराज्याँ**—विराजमान रहता है। उदा० मोर मुगट माथ्याँ तिलक बिराज्याँ, कुंडल अलकाँकारी जी २। १६०।

बिराजाँ—दे० 'बिराज'

बिराजे—दे० 'बिराज'

बिरियाँ सं० वेला) बेला समय

उदा० वा बिरियाँ कब होसी म्हारो, हँस पिय कंठ लगावाँ ७८।

बिलम—(सं० विलंब) विलंब, देर। उदा० मीराँ व्याकुल बिरहणी, अब बिलम णा कीज्याँ जी ९६। **बिलमाइ**—(१) रोककर। उदा० मैं भोली भोलापन कीन्हों राख्यौ नहिं बिलमाइ ४४। (२) संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया)। उदा० रावल कुण बिलमाइ राख्यो, बिरहणि है बेहाल ११६। **बिलमाये**—रोक लिया। उदा० किण बिलमाये हेली ८०।

बिलमाइ—दे० 'बिलम'

बिलमाये—दे० 'बिलम'

बिलार—(सं० बिड़ाल) बिल्ली। उदा० बिलार बिषया लालची रे, ताहि भोजन देत १५८।

बिसर्—(सं० विस्मरण)। **बिसर**—संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) भूल। उदा० थारो कोल बिरुद जग थारो, थे काँई बिसर गयाँ ५२। १७८। **बिसराँ**—भूल जाती हूँ। उदा० धुण मुरली सुण सुध बुध बिसराँ, जर जर म्हारो शरीर १६६। **बिसराई**—भूली। उदा० डार्‌याँ सब लोकलाज सुध बुध बिसराई १२। **बिसराज्यो**—बिसरा दो, विस्मरण कर दो। उदा० थें छो म्हारो गुण रो सागर, औगुण म्हाँ बिसराज्यो जी १२९। **बिसराणी**—भूल गई। उदा० मीराँ व्याकुल बिरहणी, सुध बुध बिसराणी हो ८७। **बिसरायाँ**—बिसरा दिया है। उदा० थारे कारण कुल-जग छाड़्याँ, अब थें क्याँ बिसरायाँ १०४। **बिसरावाँ**—भूलती। उदा० प्रीतम पल छन णा बिसरावाँ मीराँ हरि रँग राच्याँरी १७। **बिसरि** संयुक्त क्रिया मुख्य क्रिया भूल। उदा० बिसरि जावाँ दुख निरखाँ पियारी सुफल मनोरथ काम १०४। **बिसरी**—भूल गई। उदा० श्रवण सुनत मेरी सुध बुध बिसरी, लगी रहत तासे मन की गाँसु री १६७। **बिसर्‌याँ**—(१) भूला, भूल गया है। उदा० खान पान सुध बुध सब बिसर्‌याँ काइ म्हारो प्राण जियाँ ५२। (२) भूलता, भूलती (सामान्य वर्तमान)। उदा० बिसर्‌याँ णा लगण लगाँ मोर मुगट नटकी ९। १०६। **बिसारि**—भूलकर। उदा० लोकलाज बिसारि डारी, तबहीं काज सर्‌यो १७२। **बिसारी**—(१) भुला दिया। उदा० कै तो जोगी जग मैं नाहीं कैर बिसारी मोइ ४४। ७७। (२) भूलकर। उदा० किरपा कर मोहिं दरसण दीज्यो, सब तकसीर बिसारी ११३। **बीसराँ**—भूल गई। उदा० मुरली धुण सुण बीसराँ म्हारो कुणबो गेह १०५।

बिसर—दे० 'बिसर्'

बिसराँ—दे० 'बिसर्'

बिसराई—दे० 'बिसर्'

बिसराज्यो—दे० 'बिसर्'

बिसराणी—दे० 'बिसर्'

बिसरायाँ—दे० 'बिसर्'

बिसरावाँ—दे० 'बिसर्'

बिसरि—दे० 'बिसर्'

बिसरी—दे० 'बसर्'

बिसर्‌याँ—दे० 'बिसर्'

बिसासघात—(सं० विश्वास + घात) विश्वासघात। उदा० छाड़ि गये बिसवासघात करि, णेह केरी नाव चलाय १७९।

बिसारि—दे० 'बिसर्'

बिसारी दे० बिसर

बिहाइ—(सं० बिहा) व्यतीत की। उदा० मीराँ दासी व्याकुल रे, पिव पिव करत बिहाइ ८४। **बिहानाँ**—बिताइ, व्यतीत की। उदा० ताराँ गणताँ रेण बिहानाँ सुख घडिया री जोवाँ ८६। **बिहावाँ**—बिताती हूँ। उदा० रोवत रोवत डोलताँ सब रैण बिहावाँ जी ९६। **बिहावा**—बिताली हूँ। उदा० आकुल व्याकुल रैण बिहावा, बिरह कलेजो खाय १०१। **बिहावै**—व्यतीत होती है। उदा० पिया बिन मेरी सेज अलूनी, जागत रैण बिहावै ७४, ९२।

बीच—दे० 'बिच्च'

बीचा-बीचा—दे० 'बिच'

बीछियाँ—(सं० वृश्चिक = बिच्छ + इया) पैर की उँगली का आभूषण। उदा० बीछियाँ घूँघरा रामनारायण ना अणवट अंतरजामी रे ४११।

बीजाँ—(सं० बिज्जु) बिजली। उदा० बीजाँ बूँदाँ मेहाँ आयाँ बरसाँ सीतल पवण सुहावण री १४६।

बीजु—दे० 'बिजली'

बीजू—दे० 'बिजली'

बीड़रो—(?) झड़बेरी। उदा० यो संसार बीड़रो काँटो, मेल प्रीतम अटकास्याँ ३१।

बीतण—दे० 'बिता'

बीताँ—दे० 'बिता'

बीता—दे० 'बिता'

बीतो—दे० 'बिता'

बीते—दे० 'बिता'

बीतें—दे० 'बिता'

बीसराँ—दे० 'बिसर'

बुकंद—(सं० भुक्) खाया। उदा० भीलणी का बेर सुदामा का तंदुल भर मुठ्ठी बुकंद १३२।

बुझ्—(सं० बुध्)। **बुझाज्या**—बुझ जाओ। उदा० बिथा लगाँ तण जाराँ जीवण, तपता बिरह बुझाज्याँ जी ९६। **बुझाय**—(१) बुझाइये। उदा० कोण सुणे कासूँ कहियारी, मिल पिव तपन बुझाय १०१। (२) समाप्त कर दी। उदा० जगम जगम री कलपना म्हारी प्रीत बुझाय २०१। **बुझायाँ**—प्रतीत होता है। उदा० सूनी सेजाँ ब्याल बुझायाँ जागाँ रैण बितावाँ ७८। **बुझावण**—बुझाने। उदा० बिरह बुझावण अन्तर आवो, तपन लगी तन माहिं ७४। **बुझावाँ** (१) बुझाना है। उदा० निर्झर अमृत झरया, म्हारी प्यास बुझाया २८ (२) बुझाने हो। उदा० बिरह बिथा ल्यागी उर अंतर, थें आरयाँ णा बुझावाँ १०४। (३) बुझाएगा। उदा० क्यासूँ कहवाँ कोण बुझावाँ, कठण बिरहणी धाराँ ९२। **बुतावै**—बुझाए। उदा० कहा करूँ कित जाऊँ मोरी सजनी, बैदन कोण बुतावै ७४।

बुझाज्या—दे० 'बुझ्'

बुझाय—दे० 'बुझ्'

बुझायाँ—दे० 'बुझ्'

बुझावण—दे० 'बुझ्'

बुझावाँ—दे० 'बुझ्'

बुतावै—दे० 'बुझ्'

बुद्धि—(सं० बुद्धि) बुध, होश। उदा० लगत बेहाल भई तन की सुधि बुद्धि गई १७४। **बुध**—होश। उदा० सवाँ बावरा सुध बुध भूलाँ, पीव जाण्या म्हारी बात ७५। १२, ५२, ८७, १६६, १६७।

बुध—दे० 'बुद्धि'

बुरो—स० विरूप बुरा उदा० भलो

कह्याँ काँइ कह्याँ बुगे री सब लया सीस चढ़ाय १७।

बुलाइया—(सं० ब्रू) बुलाया। उदा० वाबल बैद बुलाइया री, म्हाँरी बाँह दिखाय ७२।

बुहाइदे—दे० 'बुहार'

बुहार्—(सं० बहूकरण)। **बुहाइदे**—ठुकरा दो, दूर कर दो। उदा० छप्पन भोग बुहाइ दे हे, इन भोगनि में दाग २६। **बुहारूँ**—साफ करूँ। उदा० डगर बुहारूँ पंथ निहारूँ जोइ जोइ अखियाँ राती १२३।

बूँद—(सं० बिंदु) पानी अथवा किसी तरल पदार्थ का बहुत थोड़ा अंश जो गिरकर एक छोटी सी गोली का रूप धारण करता है। उदा० चात्रग स्वाति बूँद मन माँही, पीव पीव उकलाँणी हो ७३। **बूँदा**—बूँद। बीजाँ बूदाँ मेहाँ आयाँ बरसाँ सीतल पवण सुहावण री १४६। **बूँदा**—बूँद। उदा० झर झर बूँदा बरसाँ आली कोयल सबद सुनाज्यो १४९।

बूँदा—दे० बूँद'

बूँदा—दे० 'बूँद'

बूझ—(सं० बुद्धि)। **जानबूझ**—जान-बूझकर। उदा० स्याम सनेसो कबहुँ ण दीन्हो, जानि बूझ मुझबाती १२३। **बूझ्याँ**—समझते। उदा० माई म्हारी हरिहूँ न बूझ्याँ बात ६६। **बूझ्या**—समझा। उदा० बूझ्या म्हाणे मदण बावरी, स्याम प्रीतम्हाँ काचाँ ३७। **बूझि**—संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) पूछ। उदा० मेरो नाम बूझि तुम लीज्यो, मै हूँ बिरह दिवाणी १३०। **बूझूँ**—पूछती हू उदा० काग दिन गया बूझूँ पिंडत जोसी, हो ११५। **बूड्** (सं० बूड)

बूड़ताँ—डूबते हुए। उदा० गज बूडताँ अरज सुण धावाँ, भगताँ कष्ट निवारण १२७। **बूड्याँ**—डूब गया। उदा० भोमागर मझधाराँ बूड्याँ, थारी सरण लह्याँ १३८। **बूड्या चाहाँ**—डूबने वाली हूँ। उदा० भौ सागर म्हाँ बूड्या चाहाँ, स्याम बेग सुध लीज्यो जी ५०। **बूड़त**—संयुक्त काल (मुख्य क्रिया) डूबती। उदा० नाव फाटी प्रभु पाल बाँधो, बूड़त है बेरी ६३। **बूड़ताँ**—डूबते हुए। उदा० बूड़ताँ गजराज राख्याँ, कटयाँ कुंजर भीर ६१।

बूडताँ—दे० 'बूड'

बूड्याँ—दे० 'बूड्'

बूड्या—दे० 'बूड्'

बूड़त—दे० 'बूड्'

बूड़ताँ—दे० 'बूड्'

बूयाँ—(सं० वपन) बोया। उदा० असुवाँ जल सींच सींच प्रेम बेल बूयाँ १८।

बूल—(सं० बब्बूर) बबूल। उदा० एकै थाणै रोपिया रे, इक आँबो इक बूल ५६।

बृन्दावण—दे० 'ब्रिंद्रावन'

बृन्दावण—दे० 'बिंद्रावन'

बे—(फ़ा० बे) सामने। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, रहना है बे हजूर १९८।

बेग—(सं० वेग) शीघ्र। उदा० मीराँ दासी सरण ज्याशीं, कीज्याँ बेग निहाल ४७। १२४, १४३। **बेगि**—उदा० बेगि मिलो प्रभु अंतरजामी, तुम बिनि रह्यो न जाइ ८४, १०८।

बेच्—(प्रा० विच्च)। **बेचे**—यदि बेचे उदा० जहाँ बैठावें

तिलही बैठूँ, बेचे तो बिक जाऊँ २० ।

बेड़ा—(सं० वेडा) नौका, नाव । उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, बेड़ा पार लगाज्यो जी १२६ । **बेड़ो**—नौका । उदा० मेरी बेड़ो लगाज्यो पार, प्रभुजी मैं अरज करूँ छूँ १३५ । **बेरी**—छोटा बेड़ा । उदा० नाव फाटी प्रभु पाल बाँधो बूड़त है बेरी ६३ ।

बेर[१]—दे० 'वार[१]'

बेर[२]—(सं वदरी) एक प्रकार का फल । उदा० भीलणी का बेर सुदामा का तंदुल, भर मुठड़ी बुकंद १३६ ।

बेरि—दे० 'दे० बार[१]'

बेरी[१]—दे० 'बेड़ा'

बेरी[२]—दे० 'बार'

बेल—(सं० वल्लरी) लता । उदा०—असुवाँ जल सींच सींच प्रेम बेल बूंयाँ १८ ।

बेला—(सं० वेला) समय । उदा० मीराँ के प्रभु गिरिधर नागर, बेला मंगल गावण री १४६ ।

बेली—(सं० वेल) लता । उदा० स्याम बिना जियड़ो मुरझावे, जैसे जल बिन बेली ८० ।

बेस—(सं० वयस) उम्र । उदा० पीव कारण पीली पड़ी बाला, जोबन बाली वेस ११७ । **बैस**—उम्र । उदा० चढ़ती बैस नैण अणियाले, तू घरि घरि मत डोल ५८ ।

बेसर—(सं० वेसर) नाक में पहनने की बुलाक । उदा० गागर रँग सिरते झटकी बेसर मुर गई सारी १७० ।

बेहाल—(फ़ा० बे+अ० हाल) बुरीहालत में । उदा० रावल कुण बिलमाइ राखो विरहणि है बेहाल ११६ १७४

बैकुण्ठ—(सं० वैकुंठ) वह स्थान जहाँ भगवान विष्णु रहते हैं । उदा० गणका कीर पढ़ावताँ बैकुण्ठ वसाणी जी १४०, १८६ ।

बैजंतीमाल—(सं० वैजयंती) पाँच रंगों की एक प्रकार की माला । उदा० अधर सुधारस मुरली राजाँ उर बैजंती माल ३, १५४ । **बैजणताँ**—बैजयंती की माला । उदा० पीतांबर कट उर बैजणताँ, कर सोहा री भाँगी ६ ।

बैठ्—(सं० वेशन्) । **बैठ बिठाय्यो**—बिठाया । उदा० पहरो भी राख्यो चौकी बिठारयो ताला दियो जड़ाय ४२ । **बैठ**—बैठकर । उदा० नय कुसंग सतसंग बैठ णित, हरि चरचा सुण लीजै १६६ । **बैठ-बैठ**—बैठ-बैठकर । उदा० साधाँ ढिग बैठ बैठ, लोक लाज खूयाँ १८ । **बैठा**—बैठ गया । उदा० आसण माड़ अडिग होय बैठा, याही भजन की रीत ५५ । **बैठावे**—बैठाता है । उदा० जहाँ बैठावें तितही बैठ, बेचे तो बिक जाऊँ २० । **बैठी**—बैठी हुई । उदा० सामर वासो सजीने बैठी, ह्वे नथी कई कांचूं रे १४१ । १६६, १८५ । **बैठूं**—बैठती हूँ । उदा० जहाँ बैठावें तितही बैठूँ, बेचे तो बिक जाऊँ २० । **बैठे**—बैठी है । उदा० नैण दुखी दरसण कूँ तरसी, नाभिन बैठे साँसरिया १०८ । **बैठो**—बैठ जाओ । उदा० आसण माँडि गुफा में बैठो, ध्यान हरी को लगायो १८८ । (३) बैठी है बैठे हैं । उदा० विरहण बैठ्याँ रंगमहल माँ णेण लड़या पोवाँ ८६, ११८ । **बैठ्या**—बैठकर । उदा० डारा बैठ्या कोयल बोल्या बोल सुण्या री गासी ४२ **क्रमा बैठ्याँ** उठत-बैठत

हुए। उदा०—ऊभा बैंठ्यां बिरछरी डाली, बोलाकंठ णा सार्‌यां ८३। **बैंठ्यां**—(१) बैठकर। उदा० री म्हां बैंठ्यां जागां, जगत सब सोवां ८६। (२) बैंठी है। उदा० विरहण बैंठ्यां रगमहल मां, णेण लड़या पोवां६८।

बैंठा—दे० 'बैंठ्'

बैंठावें—दे० 'बैंठ्'

बैंठी—दे० 'बैंठ्'

बैंठूं—दे० 'बैंठ्'

बैंठे—दे० 'बैंठ्'

बैंठो—दे० 'बैंठ्'

बैंठ्यां—दे० 'बैंठ्'

बैंठ्या—दे० 'बैंठ्'

बैंण—(सं० वचन) वचन। उदा० सबदां सुणतां मेरी छतियां कांपां मीठो थारो बैंण १०३। **बैंनां**—वचन। उदा० पशु पछी मरकट मुनी, श्रवण सुणत बैंनां १८४।

बैद—(सं० वैद्य) वैद्य, आयुर्वेद के अनुसार चिकित्सा करने वाला व्यक्ति। उदा० मीरां री प्रभु पीर मीटांगां जब बद सांवरो सोय ७०। ७०, ७२, ७३, ७३।

बैदन—(सं० वेदना) पीड़ा, दु:ख। उदा० कहा करूं किन जाऊं मोरी सजनी, बैदन कूंण बुतावै ७४।

बैर—(सं० वैर) शत्रुता। उदा० राणा जी थे क्यांने राखो म्हांसूं बैर ३४। **बैरी**—शत्रु। उदा० षिण ताता षिण सीतला रे, षिण बैरी षिण मिंत ५९।

बैस—दे० 'वेस'

बैसाख—(सं० वैशाख) वैशाख का महीना। उदा० बैसाख वणराइ फूलवै, कोइल कुरलीज हो ११५

बोझ—(?) भार। कहा बोझ मीरां मे कहिये सौ पर एक घड़ी ११८।

बोल¹—(सं० बोल) बोली। उदा० आवो मनमोहना जी मीठा थारो बोल १००। ४५। **बोल बनाय**—बोली बनाकर, व्यंग्य करके। उदा० सकल कुटंबा कुटबां बरजतां, बोल्या बोल बनाय १३। **बोल सह्यां**—बोली सहन की, ताने सहन किए। उदा० मण म्हारो लाग्यां गिरधारी जगरा बोल सह्यां २६। **बोल सुण्या**—ताने सहन किए। उदा० डारा बैठ्या कोयल बोल्या, बोल सुण्या री गासी ४५। **बोल सुणावां**—बातें सुनाऊँ। उदा० थांणे कांई कांई बोल सुणावां म्हारां सांवरां गिरधारी ५१।

बोल्²—(सं० ब्रू) धातु। **बोल**—बोलो। उदा० पपइया रे पिव की वाणि न बोल ८४। **बोलण**—बोलने। उदा० आयो सावण भादवा रे, बोलण लगा मोर ५९। **बोलत**—बोलता है। उदा० बोलत बचन मधुर से मानूं जोरत नाहीं प्रीत ५७। **बोलां**—बोलते हैं (बहु वचन)। उदा० दादुर मोर पपीहा बोलां, कोयल सबद सुणायां १४२। **बोला**—बोला (भूतकाल)। उदा० ऊभा बैठ्यां बिरछरी डाली, बोला कंठ णा सार्‌यां ८३। **बोलि**—बोलिए। उदा० धूतारा जोगी एकरसूं हँसि बोलि ५८। **बोले**—बोलती है, उदा० आंबां की डालि कोइल इक बोले, मेरो मरण अरु जग केरी हांसी ६५। **बोलै**—बोलते है बोलती हैं, बोलता है। उदा० दादुर मोर पपीहा बोलै, कोयल सबद सुणावै ७४। ८१, ९२, १४५, १४७, १७८, १८१। **बोल्यां**—बोले। उदा० दादुर मोर पपीहा बोल्यां कोइल

मधुराँ साज १४३। **बोल्या**—(१) बोली (भूतकाल)। उदा० पाट णा खोल्या मुखाँ णा बोल्या, साँझ भयाँ परभात ६६। (२) बोलते हैं, बोलती हैं। उदा० सकल कुटंबाँ बरजताँ, बोल्या बोल बनाय १३, ४५, ४५।

बोलण—दे० 'बोल्[२]'

बोलत—दे० 'बोल्[२]'

बोलाँ—दे० 'बोल्[२]'

बोला—दे० 'बोल्[२]'

बोलि—दे० 'बोल्[२]'

बोले—दे० 'बोल्[२]'

बोलै—दे० 'बोल्[२]'

बोल्याँ—दे० 'बोल्[२]'

बोल्या—दे० 'बोल्[२]'

बोहरे—दे० 'बहु'

ब्रजराज—दे० 'राज'

बौपारा—(सं० व्यापार) व्यापार। उदा० सोना रूपाँ सूँ काम णा म्हारे, जावा म्हा दरबाराँ री २४।

बौराँ—(सं० वातुल) पागल। उदा० स्याम बिना बौराँ भयाँ, मण काठ ज्यूँ घुण खाय ९०। *बौराणी*—पागल हो गई हूँ। उदा० अपणे घर का परदा करले, मैं अबला बौराणी ३८।

बौराणी—दे०' बौराँ'

भ

भँवर—(सं० भ्रमर) भौंरा। उदा० लगण लगी जैसे पुसप भँवर सें, फूलन बीच रहीजै १९१।

भंग—(सं० भंग) विघ्न, व्यवधान। उदा० साकट जननो संग न करिये, पड़े भजन में भंग रे ३०।

भ्—(सं० भव्)। **भइ**—(सहायक क्रिया) हुआ। उदा० रुम रुम साता भइ उर में, मिट गई फेरा फेरी ९४। **भई**—(अस्तित्व एवं काल सूचक सहायक क्रिया) हो गई। उदा० मीराँ मगण भई हरि के गुण गाय ४१। ४१, ४६, ५८, ८०, ९४, ९७, ९७, ९९, १००, १६७, १७४, १७४, १७८, १८२, १८४, १८४, १८५ **भयाँ** हुआ उदा० पाट णा खोल्या मुखाँ णा बोल्या, साँझ भयाँ परभात ६६। ८७, ९०, १०२, ११९, ११९, १९५। **भया**—हुआ। उदा० बरस्या वीहो दिन भया शक्ति बरस्याँ पलक न जाइ ११६। **भये**—हुए। उदा० मनमोहन रसिक नागर भये, हो अनोखे खिलारी १७०। १८०। **भयो**—(१) हो गया है। उदा० रेजा रेजा भयो करेजा, अंदर देखो धँसिके ७। १६५। (२) संयुक्त काल (मुख्य क्रिया) हुई। उदा० उठो लाल जी भोर भयो है, सुर नर ठाढ़े द्वारे १६५।

भई—दे० 'भ्'

भक्त—(सं० भक्त)। **भक्त बछल**—भक्त वत्सल उदा० मीराँ प्रभु सताँ सुखदायाँ

भक्त बछल गोपाल ३।

भक्ति—(सं० भक्ति) भगवान के प्रति प्रेम-भाव। उदा० यहि विधि भक्ति कैसे होय १५८।

भक्षण—**भक्षण कीजै**—खाइये। उदा० लगण लगाई जैसे चकोर चंदा से, अगनी भक्षण कीजै १६१।

भगत—(सं० भक्त) भगवान की भक्ति करने वाले। उदा० भगत देख्याँ राजी ह्यायाँ, जगत देख्याँ रूयाँ १८। २४, ६१, १०६, १६०, २०२। **भगताँ**—भक्तों की, भक्तों का। उदा० मीराँ दासी जणम जणम री, भगताँ पेज णिभावाँ १०४। १३७। **भगताँ रा**—भक्तों का। उदा० सब भगताँ रा कारज साधाँ, म्हारा परण निभाज्यो जी ११६। **भगता री**—भक्तों का। उदा० जुग जुग भीर हराँ भगता री, दीश्याँ मोच्छ नेवाज ६२। **भगति**—भक्ति। उदा० मीराँ सिरि गिरधर नट नागर भगति रसीली जाँची १६। २६, ४६, ५६।

भगताँ—दे० 'भगत'

भगता—दे० 'भगत'

भगति—दे० 'भगत'

भगवाँ—(?) जोगिया रंग। उदा० भगवाँ भेख धर्‌याँ थें कारण, ढूढ़्या चार्‌याँ देस ६८। १५३। **भगवा**—जोगिया रंग। उदा० कहा भयाँ थाँ भगवा पहरयाँ, घर तज लयाँ संन्यासी १६५। **भगवीं**—जोगिये रंग की। उदा० काजल टीकी राणा हम सब त्याग्या भगवीं चादर पहर ३४।

भगवा—दे० 'भगवाँ'

भगवीं—दे० 'भगवाँ'

भज्—(सं० भज) धातु **भज** स्मरण करो। उदा० भज मण चरण कँवल अवणासी १६५। **भजि कै**—भजकर। उदा० दास मीराँ राम भजि कै, तण मण कीन्हों पेस ११७। **भजीये**—भजन कीजिए। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर भजीये होनी होय सो होय १५६।

भजण—(सं० भजन) भजन। उदा० तण मण धण सब भेंट करूँ, श्रो भजण करूँ मैं थारा ११२। १६०। **भजन**—उदा० साकट जननो संग न करिये, पड़े भजन में भंग रे ३०। ५५।

भजि—दे० 'भज्'

भजीये—दे० 'भज्'

भटक्—(सं० भ्रम ?)। **भटकी**—रास्ता भूल गई। उदा० म्हारो मण मगण स्याम लोक कह्याँ भटकी ६।

भटकी—दे० 'भटक'

भणक—(सं० भणन) भनक, खबर। उदा० सावन माँ उमँग्यो म्हारो मणरी, भणक सुण्या हरि आवन री १४६।

भणा—(सं० भद्र प्रा० कल्पित रूप भल्ल) भला, अच्छा। उदा० मैं तो दासी थाराँ जनम जनम की, थारोई नाम भणा ६०।

भला—अच्छा। उदा० जाके सँग सिधारताँ है, भला कहै सब लोइ २६। २६। **भलि**—पोच भला-बुरा। उदा० मैं जाण्यूँ हरि नाँहि तजेंगे, करम लिख्याँ भलि-पोच १८३। **भले**—अच्छे। उदा० गोकुला के बासी भले ही आए, गोकुला के बासी १६३। **भलो**—अच्छा। उदा० भलो कह्याँ काँइ कह्याँ बुरोरी सब लया सीस चढ़ाय १३। २६, २६, ८०।

भल्याँ—भला है। उदा० आज म्हाँरो साधु जननो संगरे, राणा म्हाँरा भाग भल्याँ ३० १४६

भभूत—(सं० विभूति) राख। उदा० अंग भभूत गले म्रिघछाला, यो तन भसम करूँरी ६४। ६८। **भभूति**—राख। उदा० अंग भभूति गले मृगछाला, नू जन गुढ़िया खोल ५८। १८८।

भभूति—दे० 'भभूत'

भय—(सं० भय) डर। उदा० भौं सागर भय जग कुल बंधण, डार दयाँ हरि चरणा री १२८। १३७।

भयाँ—दे० 'भ्'

भया—दे० 'भ्'

भये—दे० 'भ्'

भयो—दे० 'भ्'

भर्—(सं० भरण = हिं० भरना — भर्)। **भर मुठड़ी**—एक मुट्ठी। उदा० भीलणी का बेर सुदामा का तन्दुल, भर मुठड़ी बुकंद १३६। **भर**—संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) **लीणे भुज भर साथ**—भुजाओं में भरकर साथ ले लिया। उदा० दध मेरो खायो मटकिया फोरी, लीणो भुज भर साथ १७६। **भर आई छाती**—मन बहुत अधिक प्रसन्नता का होना। उदा० कागद ले राधा बाँचण बैठी, भर आई छाती १८५। **भरण**—भरनेवाले। उदा० इण चरण ब्रह्माण्ड भेद्याँ, नखसिखाँ सिरी भरण १। **भरन गई थी**—भरने गई थी। उदा० मैं जल जमुना भरन गई थी, आ गयो कृश्न मुरारी, हे माय १६६। **भरने जात थी**—भरने जा रही थी। उदा० हूँ जल भरने जात थी सजनी, कलस माथे धर्‌यो १७२। **भरवाँ**—भरने। उदा० जल जमुना माँ भरवाँ गयाँताँ हूती गागर माथे हेमनी रे १७३। **भर्‌याँ**—भरा। उदा० कणक कटोराँ इम्रत भरयाँ पीवताँ कूण नट्‌या री २००। **भर्‌या**—भरा। उदा० बादला रे थे जल भर्‌या आज्यो १४६। **भर्‌यारी**—भरी हुई। उदा० म्हारे आणद उमंग भर्‌यारी जीव लह्याँ सुख-धाम १४४। **भराँ**—(१) भरती हूँ। उदा० सतवादी हरिचंदा राजा, डोम घर णीराँ भराँ। (२) भरा हुआ है। उदा० भराँ प्रेम रा होज, हंस केल्याँ कराँ १६३। **भरावाँ**—भराऊँ। उदा० कहो कसूमल साड़ी रँगावाँ, कहो तो भगवाँ भेस १५३। **भरि-भरि**—भर-भरकर। उदा० भरि भरि मूठि गुलाल लाल चहूँ, देत सबन पै डारी १७५। **भरी**—(१) भरी हुई। उदा० भरी सभाँ मा द्रुपद सुताँ री, राख्या लाज मुरारी १३१। १४८। (२) भर ली। उदा० चोवा चंदण अरगजा म्हा, केसर णो गागर भरी री १४८। भरी, भर गई। उदा० रंग भरी रागराँ भरी री १४८। **भरीया**—भर गया। उदा० आया सावण भादवा भरीया जल थल ताल ११६।

भरण—दे० 'भर'

भरन—दे० 'भर्'

भरने—दे० 'भर्'

भरवाँ—दे० 'भर्'

भर्‌याँ—दे० 'भर्'

भर्‌या—दे० 'भर'

भराँ—दे० 'भर्'

भरवाँ—दे० 'भर्'

भरि—(?) भर, मात्र। उदा० वा मूरति म्हारे मण बसे दिन भरि रह्यौ ण जाइ ११६।

भरि-भरि—दे० 'भर'

भरी दे० 'भर'

भरीया— दे० 'भर्'

भरोसे—(सं० वर + आशा = हिं० भरोसा-भरोसे) आश्रय, आसरा, सहारा। उदा० मीराँ दासी राम भरोसे, जग का फंदा निवार १३३। **भरोसो**—आश्रय। उदा० म्हने भरोसो राम को रे (बाला), डूबि तर्‌यो हाथी १८५।

भरोसो— दे० 'भरोसे'

भला—दे० 'भणा'

भलि— दे० 'भणा'

भली—दे० 'भणा'

भले—दे० 'भणा'

भलो— दे० 'भणा'

भल्याँ—दे० 'भण'

भवंगम—(सं० भुजंगम) साँप। उदा० बिरह भवंगम डस्याँ कलेजा माँ लहर हलाहल जागी ९१। **भुजंग**—साँप। उदा० कमल दल लोचणां थें नाथ्याँ काल भुजंग १६८।

भव—(सं० भव) संसार। उदा० अधम उधारण भव भय तारण १३७। **भव जल**—भवसागर। उदा० तुम सरणागत परम दयाला, भव जल तार मुरारी ११३। **भवभार**—संसार का भार। उदा० जगमाँ जीवणा थोड़ा, कुण लयाँ भवभार १९७।

भवण—(सं० भवन) भवन, घर। उदा० कब री ठाड़ी पंथ निहाराँ, अपने भवण खड़ी १४। ८३, ११४। **भवन**—भोजन भवन भलो नहिं लागै, पिया कारण भई गेली ८०।

भवभार—दे० 'भव'

भवाँ[1]—(प्रा० भमुहा) भौंहें, आँख के ऊपर की हड्डी पर के रोएँ। उदा० वारिज भवाँ अलक मतवारी णेण रूप रस अँटके १०।

भवाँ[2]—(सं० भू) हुई। उदा० भवाँ बावरा सुध बुध भूलाँ, पीव जाण्या म्हारी बात ७५।

भसम—(सं० भस्म) भस्म राख। उदा० ले अगन्न प्रभु डार डार आये, भसम हो जाई ८९। ९४। **भस्म**—उदा० जल बल भई भस्म की ढेरी, अपणे अंग लगा जा ४६।

भस्म— दे० 'भसम'

भाँडो—(सं० भांड) बर्तन। उदा० यो संसार कुबधि रो भाँडो, साध संगत णा भावाँ १५६।

भाए—दे० 'भायाँ'

भाख्याँ—(सं० भाषण) कहते हैं। उदा० अवर अधम बहुता थें तार्‌याँ, भाख्याँ सणत सुजाण १३४।

भाग—(सं० भाग्य) भाग्य। उदा० भाग हमारो जाग्याँ रे, रतणाकर म्हारी सीर्‌याँ री २४। २७, ३०, १०९, १४९, १८८। **भागण**—भाग्य से। उदा० मीराँ के प्रभु रामजी, बड़ भागण रीझै हो १६।

भागण—दे० 'भाग'

भादवाँ—(सं० भाद्र) भादव का महीना। उदा० आयो सावन भादवा रे, बोलण लागा मोर ५९। ११६। **भादवै**—भादो के महीने में। उदा० भादवै नदिया वहै, दूरी जिन मेलै, हो ११५।

भादवै—दे० 'भादवा'

भायाँ—(सं० भान) अच्छा लगा। उदा० नंदनँदन मण भायाँ बादलाँ णभ छायाँ १४२। **भाए**—अच्छे लगे। उदा० (इक) कारी नाग बिरह अलि जारी, मीराँ मन हरि भाए रे ८१ **भायाँ**

अच्छा लगा। उदा० गिगन गरजि आयाँ, बदरा बरसि भायाँ १२०। **भावाँ**—भाते। उदा० ज्याण नसाँ जग बावरा ज्याकूँ स्याम णा भावाँ २८। २८, ७८, ९६, १०२, १२१, १२८, १५८। **भावैं**—अच्छा लगता है। उदा० नहिं सुख भावै थाँरो देसलड़ो रँगरूड़ो ३२। ७४, ७४, ९२, ९२।

भाया—(सं० भ्राता) भाई। उदा० भाया छाँड्याँ, बंधा छाँड्याँ, छाँड्याँ सगाँ सूयाँ १८।

भायौ—दे० 'भायाँ'

भारी—(सं० भार) (१) बड़ा। उदा० देस बिदेसा णा जावाँ म्हारी अणेशा भारी ७७। ७७, १७५। (२) अच्छी कीमती। उदा० केसरी चीर दरियाई को लेंगो, ऊपर अँगिया भारी १७१।

भाल—(सं० भाल) मस्तक। उदा० मोर मुगट मकराकृत कुण्डल अरुण तिलक सोहाँ भाल ३। १२।

भाव—(सं० भाव) विचार। उदा० भजन भाव में मस्त डोलती गिरधर पै बलि जाय ४१। **भाव भगत**—भावात्मक भक्ति। उदा० भाव भगत जागीरी पास्यूँ, सुमिरण पास्यूँ खरची १५४।

भावज—(?) भाभी। उदा० कहा भावज ने भेंट पठाई, तन्दुल तीन पसे १८७।

भावण—(सं० भान) अच्छा लगने लगा। उदा० बरसाँ, री बदरिया सावन री, सावण री मन भावण री १४६।

भाव भगत—दे० 'भाव'

भावाँ—दे० 'भायाँ'

भावैं—दे० 'भायाँ'

भी सं० अपि अव्यय

उदा० पहरो भी राख्यो चौकी बिठार्‍यो, ताला दियो जड़ाय ४२। ६०।

भीज्—(सं० अभ्यंजन)। **भीजे**—भीग गया। उदा० भीजे म्हाँरो दाँवण चीर, सावलियो लूम रह्यो रे १२२। **भीजैं**—भीग गए। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, ताहि के रंग में भीजैं १९९।

भीज्याँ—भीग रही हूँ। उदा० म्हारा पिया परदेसाँ बसताँ, भीज्याँ बार घरी ८२।

भीजे—दे० 'भीज्'

भीजैं—दे० 'भीज्'

भीज्याँ—दे० 'भीज्'

भीत—(सं० भित्ति) दीवार। उदा० सुप गजगीरी को चूँतरो रे, हम बालू की भीत ५९।

भीतर—(सं० अभ्यंतर) अंदर। पल पल भीतर—पल-पल में। उदा० पल-पल भीतर पंथ निहारूँ, दरसण म्हाँने दीजो जी १११।

भीर—(प्रा० भिड्ड = हिं० भीड़—भीर) कष्ट। उदा० बूड़ताँ गजराज राख्याँ, काट्याँ कुंजर भीर ६१। ६१, ६१, ६२।

भीलण—(सं० भिल) भीलनी, भील जाति की स्त्री। उदा० भीलण कुबजा तार्‍याँ गिरधर, जाण्याँ सकल जहाण १३४। **भीलणी**—भीलनी। उदा० भीलणी का बेर सुदामा का तन्दुल, भर मुठड़ी बुकन्द १३९। १८६।

भीलणी—दे० 'भीलण'

भुजंग—दे० 'भवंगम'

भुज—(सं० भुज) भुजा। लीणो भुज भर साथ—भुजाओं में ले लिया, आलिंगन-बद्ध कर लिया उदा० दस मेरो खायो

मटकिया फोरी, लीणो भुज भर साथ १७६ ।

भुलावना—दे० 'भूल्'

भुवणपति - (सं० भवन + पति) संसार के स्वामी । उदा० भुवणपति थें घरि आज्यां जी ६६ ।

भूख—(सं० बुभुक्षा) खाने की इच्छा । उदा० भूख गयां निदरा गयाँ पापी जीव णा जावाँ जी ६६ । १०१, १०७ ।

भूखण—(सं० आभूषण) आभूषण, गहना । उदा० रतण आभरण भूषण छाड्यां, खोर कियाँ सिर केस ६८ ।

भूम—(सं० भूमि) पृथ्वी । उदा० जित जोयाँ तित पाणी पाणी प्यासा भूम हरी ८२ ।

भूल्—(प्रा० भुल्ल) । **भूल**—(१) सयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) बिसर । उदा० नैणां आगाँ रहज्यो, म्हांणे भूल णो जाज्यो जी ५० । ५४, १५६ । (२) कृदंत (पूर्वकालिक) । उदा० आया था ए लोभ के कारण, मूल गमाया भूल १९८ । (३) आज्ञार्थ (भूलो) । उदा० बंदे बंदगी मति भूल १९८ । **भूलाँ**—भूल गई । उदा० भयां बावरा सुध बुध भूलाँ, पीव जाण्या म्हारी बात ७५ । **भूलूं**—भूल जाती हूँ । उदा० बाण विरह का लग्या हिये में, भूलूं ण एक घड़ी ११८ । **भूल्याँ**—संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) । उदा० चमक उठाँ सुपनाँ लख सजणी, सुध णा भूल्याँ जात ७५ ।

भूल—दे० 'भूल्'

भूलाँ—दे० 'भूल्'

भूलूं—दे० 'भूल्'

भूल्याँ—दे० 'भूल'

भेंट—(सं० भट) न्यौछावर उदा० तण मण धण सब भेंट करूं, औ भजण करूं मैं थारा ११२ ।

भेख—(सं० वेश) वेश । उदा० भगवाँ भेख धर्‌याँ थें कारण, ढूढ़्याँ चार्‌याँ देस ६८ ।

भेज्—(सं० व्रजन) । **भेजी**—भेज दिया । उदा० सूल सेज राणा ने भेजी, दीज्यो मीराँ सुलाय ४१ । **भेजूं**—भेजती हूँ । उदा० लिख लिख पतियाँ संदेसा भेजूं कब घर आवै म्हांरो पीव १२२ ।

भेज्याँ—(१) भेजा (भूत) । उदा० राणा विषरो प्यालो भेज्याँ पीय मगण हूयाँ १८ । ३६, ३७, ३९, ३९, ४१, ५०, ६८ । (२) भेजती है (वर्तमान) । उदा० जिणरी पियाँ परदेस बस्याँ री लिख लिख भेज्याँ पाती २३ । **भेज्यों**— भेजा । उदा० साँप पिटारा राणा भेज्यों, मीराँ हाथ दियो जाय ४१ । **भेज्यो**—भेजा । उदा० साँप पिटारो राणाजी भेज्यो, द्यो मेड़तणी ने पाय ४० ।

भेजी—दे० 'भेज्'

भेजूं—दे० 'भेज्'

भेज्याँ—दे० 'भेज्'

भेज्यों—दे० 'भेज्'

भेज्यो—दे० 'भेज्'

भेट्याँ—(प्रा० भिट्ट) स्थापित किया । उदा० इण चरण ब्रह्मान्ड भेट्याँ, नख-सिखाँ सिरी भरण १ ।

भेरी—(सं० वेडा > बेड़ा का बिगड़ा रूप)। **सुख भेरी**—सुख के साधन, सुख तक पहुँचानेवाले । उदा० जन मीराँ कूँ गिरधर मिलिया, दुख मेटण सुख भेरी ६४ ।

भेष—(सं० वेश) वेश रूप । उदा० नटवर प्रभु भेप धर्‌याँ रूप जग लोभाई १२

१८४। भेस—वेश। उदा० कहो कसूमल साड़ी रँगावाँ, कहो तो भगवाँ भेस १५३।

भेस—दे० 'भेष

भो—(सं० भव)। भो सागर—संसार रूपी सागर। उदा० भो सागर जग बंधण झूठाँ, झूठाँ कुलरा न्याती १०६। ३१, ६२, १३८, १३८। भो समुन्द—संसार रूपी सागर। उदा० भो समुन्द अपार देखाँ अगम ओखी धार १६६। भौ सागर—संसार रूपी सागर। उदा० भौ सागर म्हाँ बूड्या चाहाँ, स्याम बेग सुध लीज्यो जी ५०।

भोग—(सं० भोग)। छप्पन भोग—छप्पन प्रकार के पकवान। उदा० छप्पन भोग बुहाइ दे हे, इन भोगनि में दाग २६। राजभोग—राजा का भोजन। उदा० राजभोग आरोग्याँ गिरधर, सण्मुख राखाँ थाल ४७।

भोगनि—भोगों। उदा० इन भोगनि में दाग २६।

भोजन—(सं० भोजन) खाना। उदा० भोजन भवन भलो नहिं लागै, पिया कारण भई गेली ८०।

भोभीत—(सं० भय+भीत) डरा हुआ। उदा० जग तारण भोभीत निवारण, थे राख्यां गजराज ४८।

भोर—(सं० भोर) प्रभात। उदा० ऊभ्याँ ठाढी अरज करूँ छूँ, करताँ करताँ भोर ५। २०, १६५, १६५।

भोला—(प्रा० भुल्ल)। भोलापन—सरलता। उदा० मैं भोली भोलापन कीन्हों, राख्यौ नहिं बिलमाइ ४४। भोली—कुछ न जानने वाली। उदा० मैं भोली भोलापन कीन्हों ४४। १६१।

भोलापन—दे० 'भोला'

भोली—दे० 'भोला'

भौसागर—दे० 'भो'

भौंह—(प्रा० भमुहा) भौंहें। उदा० भौंह कमान वान बांके लोचन, मारत हियरे कसिके ७।

भौसागर—दे० 'भो'

भ्रम्—(सं० भ्रम)। भ्रमि भ्रमि—घूम-घूमकर। उदा० अड़सठ तीरथ भ्रमि भ्रमि आयो, मन नाहीं मानी हार १३३।

भ्रमि—दे० 'भ्रम'

म

मंगल—(सं० मंगल) मंगल गान, शुभ गान, किसी शुभ घड़ी पर गाया जाने वाला गीत। उदा० म्हाँरे आँगण स्याम पधारो मगल गावाँ नारी ५१ ११६ १४६ १४६

मँझार—(सं० मध्य) में, बीच, मध्य। उदा० और आसिरो णा म्हारा थे बिण, तीनूँ लोक मँझार ४।

मतर (स०मंत्र मंत्र उदा० मतर मतर जादू टोना माधुरी मूरति बसिके ७

मंतवारी—(सं० मत्त+वारी प्रत्यय) नशे के कारण मस्त स्त्री। उदा० वारिज भवाँ अलक मंतवारी, णेण रूप रस अटके १०।

मंद—(सं० मंद)। **मंद मंद**—धीरे-धीरे। उदा० बदन चंद परगासताँ, मंद मंद मुसकाय १३। **मंदा**—धीमा। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, अब तो नेह परो कछु मंदा १८०।

मंदा—दे० 'मंद'

मँदिर—(सं० मंदिर) देवालय। उदा० बिन पिया जोत मँदिर अँधियारो, दीपक दाय न आवै ७४। ३१, १५७।

मकर—(सं० मकर) (१) मगरमच्छ। उदा० मीणा तज सरवर ज्यों मकर मिलन धाई १२। (२) मछली। **मकराक्रत कुंडल**—मछली की आकृति वाला कुंडल उदा० मोर मुगट मकराक्रत कुडल अरूण तिलक सोहाँ भाल ३। १५२ **मकराकृत कुंडल**—मछली की आकृति वाला कुडल। उदा० मोर मुकुट मकराक्रत कुडल रसिकाराँ सिरताज १५२।

मकराक्रत—दे० 'मकर'

मकराकृत—दे० 'मकर'

मग—(सं० मार्ग) रास्ता। उदा० मीराँ रे प्रभु गिरिधर नागर मग जोवाँ दिण राती २३। ४३, ४५, ७८, १०३।

मगण—(सं० मग्न) प्रसन्न। उदा० म्हारो मण मगण स्याम लोक कह्याँ भटकी ६। १८, ११६। **मगन**—प्रसन्न। उदा० मीराँ प्रसन्न भई हरि के गुण गाय ४१।

मगन—दे० 'मगण'

मगसर—(सं० मार्ग शीर्ष) अगहन का महीना। उदा० मगसर ठंड बहोती पड़ै, मोहि वेगि सम्हालो हा ११५

मघवा—(सं० मघवन) इंद्र। उदा० इण चरण गोवरधन धार्‌याँ गरव मघवा हरण १।

मछरी—(सं० मत्स्य) मछली। उदा० ज्यूँ चातक घण कूँ रटै, मछरी ज्यूँ पाणी हो ८७।

मछियन—मछलियों से। उदा० लगन लगी जैसे जल मछियन से, बिछड़त तनहीं दीजै १९१।

मछियन—दे० 'मछरी'

मझधार—(सं० मध्य+धार) बीच मे। उदा० भोसागर मझधार अधाराँ थे बिण घणो अकाज ६२। **मझधाराँ**—बीच मे। उदा० भोसागर मझधाराँ बूड्याँ, थारी सरण लह्याँ १३८। **मझारा**—बीच मे उदा० पंथ निहाराँ डगर मझारा, ऊभी मारग जोय १०२।

मझधाराँ—दे० 'मझदार'

मझारा—दे० 'मझधार'

मटकिया—(सं० मृत्तिका) मिट्टी का बना हुआ छोटे आकार का घड़ा। उदा० दध मेरो खायो मटकिया फोरी, लीनो भुज भर साथ १७६। १७८। **मटके**—घड़े (बहुवचन)। उदा० देख्याँ रूप मदन मोहन री, पियत पियूखन मटके १०। **मटुकी**—मटकी। उदा० ले मटुकी सिर चली गुजरिया, आगे मिले बाबा नन्दजी के छोना १७७। **मट्**—(सं० मृष्ट्)। **मट ज्यासी**—मिट जाएगी, समाप्त हो जाएगी। उदा० जग सुहाग मिथ्यारी सजणी, होवाँ हो मट ज्यासी १९४। **मट्या**—मिट गया। उदा० जनम जनम री खताँ पुराणी णाम स्याम मट्यारी २००। **मिटागा**—मिटेंगे, दूर होंगे। उदा० मीराँ री प्रभु पीर मिटागा जब

बँद साँवरो होय ७० । **मिटावै**—मिटाते है । उदा० है कोई जग मे राम सनेही, ऐ उरि साल मिटावै हो ६२ । **मिटि**—(सयुक्त क्रिया, मुख्य क्रिया) । उदा० एक बर दरसण दीजै, सब कसर मिटि जाई ८६ । ६४ । **मिट्याँ**—मिट गया । उदा० तणरी ताप मिट्याँ सुख पास्याँ, हिल मिल मंगल गाज्यो जी ११६ ।

मट्या—दे० 'मट्'

मट्की—दे० 'मटकिया'

मढ्—(सं० मंडन) । **मढ़ाऊँ**—मढ़ दूँगी । उदा० चाँच मढाऊँ थारी सोवनी रे, तू मेर सिरताज ८४ ।

मण—(सं० मनस्) मन, चित्त । उदा० मण थे परस हरि रे चरण १ । ६, २३, २६, ३६, ५१, ५२, ६६, ७१, ७८, ८८, ६०, ११७, १२०, १२१, १२५, १२६, १३३, १४२, १४६, १५८, १६६, १७२, १७४, १७६, १८४, १६५, १६६, २०० । **मणवा**—मण + वा प्रत्यय मन । उदा० चालाँ मणवा जमणा काँ तीर १६१ । **मणरथ**—मनोरथ, मन की इच्छा । उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर मणरथ करस्याँ पूर्‌यारी २४ । **मणे**—मन में । उदा० मणे लागी सरण तारी ७७ । **मन**—हृदय । उदा० तन मन धन गिरधर पर वाराँ चरण कँवल मीराँ बिलमाणी ११ । १६, ३८, ४४, ७३, ७४, ८१, ८५, ८७, ८७, ६६, १०८, ११२, ११४, ११६, १२६, १२६, १४६, १६७ । **मनड़े**—मन में । उदा० हेरी मा नन्द को गुमानी म्हाँरे मनड़े बस्यो ८ । **मनड़ो**—मन में । उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर निरख बदन म्हारो मनड़ो फस्या ८ **मनुआ**—मन उदा० राम नाम रस पीजै मनुआँ, राम नाम रस पीजै १६६ । **मने**—मन में । उदा० प्रेमनी प्रेमनी प्रेमनी रे, मने लागी कटारी प्रेमनी रे १७३ । ('मने' का अर्थ मुझको भी लगाया जा सकता है ।) **मनोरथ**—मन की इच्छा । उदा० तुम मिलियाँ मैं बोहो सुख पाऊँ सरै मनोरथ कामा ११४ । १४४ । **मनोहर**—मन को हरने वाला, मन मोहने वाला । उदा० मीराँ के प्रभु स्याम मनोहर प्रेम पियारा मीत ५७ । १७१, १७८ ।

मणमोहण—(सं० मनमोहन) मन को मोहने वाले, कृष्ण । उदा० आवाँ मण मोहण जी जोवाँ थारी बाट ६६ । **मनमोहन**—कृष्ण । उदा० जगत बदीत करी मनमोहन, कहा बजावत ढोल ५८ । ६५, ७४, १७०, १७६ ।

मनमोहना—मन को मोहने वाले, कृष्ण । उदा० हें मेरो मन मोहना ८५, १००, १७७ ।

मणवा—दे० 'मण'

मणरथ—दे० 'मण'

मणे—दे० 'मण'

मत—(?) निषेधार्थक अव्यय । उदा० थें मत बरजाँ माइड़ी, साधाँ दरसण जावाँ २८ । ४६, ४६, ४८, ५०, ५८, ५६, १०७, १११, १११ । **मति**—मत । बन्दे बन्दगी मति भूल १६८ ।

मतवारी—(सं० मस्त + वारी) नशे में मस्त मतवाली । उदा० तन मैं व्यापी पीर, मण मतवारी हें १७४ । **मतवारो**—मतवाला । **मतवारो बादर**—मतवाले व्यक्ति के समान घूमता हुआ बादल । उदा० मतवारो बादर आए रे हरि को सनेसो कबहुँ न लाये रे ८१

मतवारो - दे० 'मतवारो'

मति — दे० 'मत'

मथ्—(सं० मन्थ्) । मथ मथकर । उदा० दध मथ घ्रत काढ़ लयो, डार दयी छूगो १८ । मथल - मथी हुई । उदा० गोपी वहाँ मथत मृनिकल है, आँगना के झणकारे १६५ ।

मथ — दे० 'मथ्'

मथल— दे० 'मथ्'

मद—(सं० मद) मर्व । उदा० द्रुपद सुता णो चीर बढ़ायाँ, दुसासण मद मारण १३७ । १९९ । मदमाती- मद में मस्त उदा० पल पल थारो रूप निहारां निरख निरखली मदमाँती १०६ ।

मदण—(सं० मदन) मदन, कृष्ण । उदा० बूझ्या मार्ग मदण बावरी, स्याम प्रीतम्हाँ काचाँ ३७ । मदनमोहन— कृष्ण । उदा० देख्याँ रूप मदन मोहन री, पियत पियूखन मटके १० ।

मदन मोहन —दे० 'मदन'

मदमाँती — दे० 'मद'

मधुपुरी—(सं० मधुपुरी) मथुरा । उदा० मीरां के प्रभु कबरे मिलोगे, रहे मधुपुरी छाय १७९ ।

मधुबन—(सं० मधुवन) मथुरा में यमुना नदी के पास स्थित वन । उदा० मधुबन जाइ भये मधुबनिया, हम पर डारी प्रेम को फंदा १८० । मधुबनिया—मथुरा-वासी, मथुरा में रहने वाले । उदा० मधुबन जाइ भये मधुबनिया १८० ।

मधुबनिया—दे० 'मधुबन

मधुर—(सं० मधुर) मीठा । उदा० अधर मधुर धर बंशी बजावाँ, रीझ बजावाँ, रीझ ब्रजनारी जी २,५७ । मधुर्‌यो—(मधुर् + यो) मीठा । उदा० गाज्याँ बाज्याँ पवन मधुर्‌यो, अंबर बदराँ छाज्यो १४६ । मधुराँ – मीठा । उदा० दादुर मोर पपीहा बोल्याँ कोइल मधुराँ साज १४३ । मधुरिया—(मधुर + इया) मधुर । उदा० (टक) गाजैबाजै पवन मधुरिया, मेहा अति झड़लाये रे ८१ ।

मधुर्‌यो—दे० 'मधुर'

मधुरिया—दे० 'मधुर'

मन — दे० 'मण'

मनहे—दे० 'मण'

मनड़ो—दे० 'मण'

मनमोहन— दे० 'मणमोहण'

मनमोहना — दे० 'मणमोहण'

'मनिया'—(सं० माणिक्य) मानिक मोती जो माला पिरोई जाती है । उदा० हिरदे हरि को नाम ण आवै, मुख तें मनिया गणी १५८ ।

मनुआँ—दे० 'मण'

मने—दे० 'मण'

मनोरथ—दे० 'मण'

मनोहर—दे० 'मण'

ममता—(सं० ममता) ममत्व, अपनापन, मोह । उदा० पहली ज्ञान मानहि कीन्हो मैं ममता की बाँधी पोट १८३ ।

मर्—(सं० मरण) संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) मरजाई—मर जाएगी उदा० मीन जल से बाहर कीना, तुरत मर जाई ८९ । मर जाणी—मर जाऊँगी । उदा० दरस विण मोहि कछु न सुहावे तलफ तलफ मर जाणी १३० । मरण—मृत्यु । उदा० आवाँ की डालि कोइल इक बोले, मेरो मरण अरु जग केरी हाँसी ६५ । ७५ । मरे—संयुक्त काल (मुख्य क्रिया) मरेछै—मरते हैं । उदा० लेताँ लेताँ राम नाम रे, लोकन्ति [illegible] मरे छै

१५७। मरै—मरती है। उदा० जल बिना मरै मीन ऐसी प्रीत प्यारी हे १७४। मरूँ—मर जाऊँ (संभावनार्थक)। उदा० मेरे मण में ऐसी आवै, मरूँ जहर विस खाय १७६। मारण—दूर करने वाले उदा० द्रुपद सुता णो चीर बढ़ायाँ, दुसासण मद मारण १३७।

मारत—मारता है। उदा० भौंह कमान बान बाँके लोचन, मारत हियरे कसिके, मारां—मारी हुई, उपेक्षित। उदा० दीरघ नेण मिरघ कूँ देखाँ, वण वण फिरतां मारां १६०। मारी—मारी हुई, पीड़ित उदा० बिरह की मारी मैं बन डोलूँ, प्राण तजुँ करवत ल्यु कासी ६५,७७। मार्‍या—मारा। उदा० री म्हारा पार निकर गयाँ, सावरे मार्‍या तीर १५५।

मरकट—(सं० मर्कट) मकड़ी। उदा० पशु पंछी मरकट मुनी, श्रवण सुणत बैणां १८४।

मरज्यादां—(सं० मर्यादा) प्रतिष्ठा। उदा० लोक लाज कुलरा मरज्यादाँ जग मां णेक णा राख्याँ री १७।

मरण—(१) दे० 'मर्' । (२) दे० 'मरम'

मरम—(सं० मर्म) रहस्य। उदा० तेरो मरम नहिं पायो रे जोगी १८८। मरण—मर्म, पीड़ा रहस्य। उदा० बैदा मरण ण जाणां री म्हारो हिवड़ो करकाँ जाय ७२।

मरे—दे० 'मर्'

.रै—दे० 'मर्'

मरूँ—दे० 'मर्'

.रोड़—(सं० मुरण) संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया) रालैली पाँख मरोड़—पंख मोड़ दूँगी। उदा० सुणि पावेली बिरहणी रे, थारा रालैला पाँख मरोड़ ८४

मस्त—(सं० मत्त) मग्न, प्रसन्न। मस्त डोलती—मग्न होकर घूमती। उदा० भजन भाव में मस्त डोलती गिरधर पै बलि जाय ४१।

महल—(अ० महल) प्रासाद, बहुत बड़ा मकान। उदा० महल अटारी हम सब त्याग, त्याग्यो थाँरो बसनो सहर ३८। म्हलां—महल। उदा० म्हैलाँ चढ़-चढ़ जोवाँ सजणी कब आवाँ महाराज १४२।

महा—(सं० माघ) वह चांद्र मास जो पूस के बाद और फागुन मास के पहले पड़ता है। उदा० महा मही बसंत पंचमी, फागा सब गावैं हो ११५।

महाराज—(सं० महाराजा) बहुत बड़ा राजा, यहाँ आदर-सूचक शब्द (कृष्ण के लिए) उदा० छोड़ मत जाज्यो जी महाराज ४८।६२, १०६, १४३, १४३, १५१, १५२।

महीं—(फ़ा० महीना) महीने में उदा० महा मही बसंत पंचमी, फागा सब गावैं हो ११५। मही—महीने में। उदा० पोस मही पाला घणा, अबही तुम न्हालो हो ११५। महीने—महीने में। उदा० जेठ महीने जल बिण पंछी दुख होई हो ११५।

मही—दे० 'मही'

महीने—दे० 'मही'

माँ—(सं० मध्य) में, अधिकरण कारकीय चिह्न। उदा० वाँ करमिट माँ मिल्यो साँवरो, देख्या तण मण राती २३। ३, २७, २७, २७, ३०, ३१, ८३, ८६, ९१, १३१, १४६, १५४, १५६, १६०, १७३, १९५, १९५। माँने—में। उदा० दुगधा आरण फिरै दुखारी, सुरत बसी सुत मानैं हो ७३ माँसू में स उदा०

पड माँसूं प्राण पापी निकसि क्यूं णा जात ६६। माँही—में। उदा० ऐसी सूरत या जग माँही, फेरि न देखी सोइ ५३। ७३, ७३ मा—से। उदा० सत सगति मा ग्यान सुणोंठी, दुरजन लोगाँ ने दीठी ३३। माँहि—में। उदा० बिरह बुझावण अंतरि आवो, तपन लगी तन माँहि ४४। ९७।

माँग—(सं० मार्ग) सिर के बालों की बीच की रेखा जो बालों को दो भागों में विभक्त करके बनाई जाती है। उदा० कहो तो मोतियन माँग भरावाँ, कहो तो छिटकावाँ केस १५३।

माँड—(स० मंडन)। माँडि—बनाकर। उदा० आसण माँडि गुफा में बैठो, ध्यान हरी को लगायो १८८। माड़—लगाकर। उदा० आसण माड़ अडिग होय बैठा, याही भजन की रीत ५५।

माँने—दे० 'माँ'

माँसूं—दे० 'माँ'

माँही—दे० 'माँ'

मा—(१) दे० 'माँ'। (२) ('सं० अंबा) सखी। उदा० हे मा बड़ी-बड़ी अँखियन वारो, साँवरो, मो तन हेरत हँसिके ९। ८। (३) (सं० मम) मेरा। उदा० मा हिरदाँ बस्या साँवरो म्हारे णीद न आवाँ २८। माइड़ी—(माई+ड़ी प्रत्यय) सखी—संबोधन (उदा० थें मत बरजाँ माइड़ी, साधां दरसण जावाँ २८। माई—सखी। उदा० साँवरो नन्द नँदन, दीठ पड़्याँ माई १२। १९, २२, २७, २८, ३१, ३५, ३५, ३५, ३५, ३५, ३९, ५२, ६६, ८९, ८९, १६७, १७२। माय—सखी। उदा० मैं जल जमुना भरन गई था आ गयो कृश्न मुरारी हे माय १६९। ४०, १६०।

माइड़ी—दे० 'मा'

माई—दे० 'मा'

माखन—(सं० म्रक्षण) मक्खन, दूध का वह सार तत्व जो दूध या दही के मथने पर निकलता है। उदा० माखन रोटी हाथ में लीनी, गउवन के रखवारे १६५।

माटी—(सं० मृत्तिका) मिट्टी, धूल। उदा० यो देही रो गरब णा करणा, माटी माँ मिल जासी १९५।

माड़—दे० 'माँड'

माणख—(सं० मनुष्य) आदमी। उदा० माणख जणम अमोलक पायो, सोतें डार्‌यो खोय १५९। माणसा—मनुष्य का। उदा० पूरबला काँई पुन्न खूंट्याँ माणसा अवतार १९६।

माणसा—दे० 'माणख'

माण्—(सं० मान्)। माण—मानती। उदा० णेणा म्हारा कह्या णा माणा णीर झर्‌याँ निश जावाँरी १११। माण्या—मानी। उदा० णेणां चंचल अटक णा माण्या, परहथ गयाँ विकाय १३। मानी—मान लिया। उदा० सखियन सब मिल सीख दयाँ मण एक न मानी हो ८७। १३३। मानूं—मानती हूँ। उदा० बोलत मधुर से मानूं औरत नाही प्रीत ५७। ३५, १७४। माने—मानता। उदा० मीराँ के मन अवर न माने चाहे सुंदर स्यामाँ ११४। मानै—(१) मानता है। उदा० जा घट बिरहा सोइ लखि है, कै कोई हरिजन मानै हो ७३। माणै—मानेगा। उदा० का कहूँ कुण माणै मेरी, कह्याँ न को पतियावै हो ६२।

माणिक स० माणिक्य लाल रग का

मालो—दे० 'माल'
मित—(सं० मित्र) साथी, बंधु। उदा० पिण ताता पिण सीतला रे, पिण वैरी पिण मित ५६। ५३, ५६, १२५, १८७। **मीत**—मित्र। उदा० आत न दीसे जात न दीसे जोगी किसका मीत ५५। ५६, ५७, ५७।
मिट—दे० 'मट्'
मिटाँगाँ—दे० 'मट्'
मिटावै—दे० 'मट्'
मिटि—दे० 'मट्'
मिट्याँ—दे० 'मट्'
मिथ्या—(सं० मिथ्या) झूठ, आडंबर पूर्ण। उदा० जग सुहाग मिथ्या री सजणी, होवाँ हो मट ज्यासी १६४।
मिरघ—(सं० मृग) मृग। उदा० दीरघ नैण मिरघ कूँ देखाँ, वण वण फिरताँ माराँ १६०। **मिरघे**—मृग। उदा० लगण लगाई जैसे मिरघे नाद से, सनमुख होय सिर दीजै १६१।
मिरदंग—(सं० मृदंग) एक प्रकार का बाजा जो ढोलक से कुछ लंबा होता है। उदा० ताल पखावज बाजा, साधाँ आगे णाच्याँ ३७।
मिल्— (सं० मिलन)। **मिल**—मिलकर। उदा० हेल्या मेल्या काम णा म्हारे, म्हाँ जावाँ दरियावाँ री २४। ४३, ५०, ५४, ८६, ८७, १०१, १०७, १११, ११६, १४४। **मिल गया**—प्राप्त हो गया। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, म्हारे मिल गया राज १५२। **मिल जासी**—मिल जाएगा। उदा० यो देही री गरब णा करणा, माटी माँ मिल जासी १६५। **मिलज्यो**—मिल जाओ। उदा० मीराँ रे प्रभु मिलज्यो माधो जनम जनम री क्वाँरी ७७। **मिलता-जाज्यो**—मिलते जाओ। उदा० मिलता जाज्यो हो जी गुमानी, थाँरी सूरत देखि लुभाणी १३०। **मिलन**—मिलने। उदा० मिणा तज सखर ज्यों मकर मिलन धाई १२। **मिलया**—मिला। उदा० म्हारा बिछड़्या फेर न मिलया भेज्या णा एक सन्नेस ६८। **मिल्यो**—मिलो (प्रार्थना)। उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर बेग मिल्यो महाराज १४३। **मिलस्याँ**—मिलेंगे। उदा० साजणी कब मिलस्याँ पिव म्हाराँ ११०। **मिलस्यो**—मिलोगे। उदा० मीराँ रे प्रभु हरि अविनासी, कब रे मिलस्यो आय २०१। **मिलण**—(१) भेंट। उदा० स्याम मिलण सिंगार सजावाँ सुखरी सेज बिछावाँ १५। **मिलण**—मिलने की। उदा० जाण्याँ णा प्रभु मिलण बिध क्याँ होय ४३। ६१, १०८, १४३, १५६। **मिलण बिणा**—मिले बिना। उदा० मीराँ रे प्रभु स्याम मिलण बिणा जीवनि जनम अनेरा ६८। **मिला**—संयुक्त क्रिया (मुख्य)। उदा० मीराँ कहे प्रभु गिरधर नागर जोत मैं जोत मिला जा ४६। **मिलावै**—मिला दे, मिलन करा दे। उदा० को है सखी महेली सजनी, पियाँ कूँ आन मिलावै ७४। **मिलावो**—मिला दो। उदा० साँवरी सूरत आन मिलावो ठाढ़ी रहूँ मैं हँसिके ७। **मिलि**—मिलकर। उदा० सखियाँ मिलि दोय प्यारी, बावरी भई हैं सारी १७४। १८४। **मिलियाँ**—(१) मिले। उदा० रात दिवस कल नाहिं परत है, तुम मिलियाँ बिनि मोइ ५३। ६६। (२) मिलकर। उदा० मीराँ रे प्रभु कबरे मिलोगे मिलियाँ आँणद होइ

एक रत्न । उदा० झूठा माणिक मोतिया री, झूठी जगमग जोति २६ । ८० ।
माणे—(सं० मह्यम+कर्णे) मुझे । उदा० बूझ्या माणे मदण बावरी, स्याम प्रीतम्हाँ काचाँ ३७ ।
माण्या—दे० 'माण्'
माता—(सं० मातृ) माँ, माता । उदा० माता पिता जग जन्म दियाँ री, करम दियाँ करतार १९७ ।
माथे—(सं० मस्तक) माथे पर, मस्तक पर । उदा० पीताम्बर कट काछनी काछे रतन जटित माथे मुकुट कस्यो ८ । **माथ्याँ**—माथे पर । उदा० मोर मुगट माथ्याँ तिलक बिराज्याँ, कुण्डल, अलकाँकारी जी २ ।
माधुरी—(सं० माधुरी) सुंदर । उदा० जतर मंतर जादू टोना, माधुरी मूरति वसिके ७ ।
माधो—(सं० माधव) कृष्ण । उदा० मीराँ रे प्रभु मिलज्यो माधो, जनम जनम री क्वाँरी ७७ ।
मान—(सं० मान) प्रतिष्ठा । उदा० मीराँ के प्रभु वेग मिलो अब, राखो जी मेरो मान १२४ । **मानहिं**—(मान+हिं) मान, प्रतिष्ठा । उदा० पहली ज्ञान मानहिं कीन्हो, मैं ममता की बाँधी पोट १८३ ।
मानो—दे० 'माण्'
मानूँ—दे० 'माण्'
माने—दे० 'माण्'
मानै—(सं० मध्य) में, अधिकरण कारकीय चिह्न । उदा० दुगधा आरण फिरै दुखारी, सुरत बसी सुत मानैं हो ७३ ।
मानै—दे० 'माण्'
मानो हिं० मानना अव्यय जैसे कि उदा० साँझ भई मीराँ सोवण लागी, मानो फूल बिछाय ४१ ।
माय—(१) दे० 'मा'
माया—(सं० लक्ष्मी) छल, ऊपर से कुछ और भीतर से कुछ और । उदा० दरस विणा म्हाणे कछु णा भावाँ जग माया या सुपणा री १२८ ।
मारग—(सं० मार्ग) मार्ग, रास्ता । उदा० जिण मारग म्हाँरा साध पधारै, उण मारग म्हे जास्याँ २५ । २५, ९५, १०२ ।
मारस—दे० 'मर'
माराँ—दे० 'मर्'
मारी—(१) दे० 'मार्' । (२) (हिं० मारना) के कारण । उदा० मैं तो छुप गई लाज की मारी १७१ ।
मारूँ—(हिं० हम=मा+रू) हमारे । उदा० कूँची करावुँ करुणानन्द केरी, श्रीकम नाम नुँ तालूँ रे १४१ । **मारे**—हमारे । उदा० छामलो घरेणु मारे साचुँ रे १४१ । १४१ ।
मारे—दे० 'मारूँ'
मार्‍या—(१) दे० 'मार्' । (२) (?) के कारण । उदा० दरद की मार्‍या दर दर डोल्याँ वैद मिल्या नहिं कोय ७० ।
माल—(सं० माला) हार, फूलों की माला । उदा० अधर सुधा रस मुरली राजाँ उर बैजंती माल ३ । **माला**—रुद्राक्ष की माला जिसे साधू लोग पहनते हैं । उदा० चूड़ो म्हाँरे तिलक अरु माला, सील बरत सिणगारो २५ । ८६, ११७, १४१ । **मालो**—माला । उदा० मोर मुकुट पीतांबर सोहाँ, गल बैजंती मालो १५४ ।
माला दे० माल

५३। ११४। (३) मिलेंगे। उदा० तलफाँ तलफाँ जियराँ आयाँ कब मिलियाँ दीनानाथ ७५। **मिलिया**—मिले। उदा० साँकड़ली सेर्याँ जन मिलिया क्यूँ कर फिरूँ अपूठी ३३। ६४, १५५। **मिली**—मिलिए। उदा० जक ण परत मन बहुत उदासी, सुंदर स्याम मिली अविनासी १२६। **मिले**—(१) मिलेंगे। उदा० क्रोध कसाई रहत घट में कैसे मिले गोपाल १५८। (२) मिल गए। उदा० ले मटुकी सिर चली गुजरिया, आगे मिले बाबा नन्द जी के छोना १७७। **मिलो**—मिलो (आज्ञार्थक)। उदा० वेगि मिलो प्रभु अंतरजामी, तुम बिनि रह्यो ही न जाइ ८४। १०१। **मिलोगाँ**—मिलियेगा। उदा० मीराँ रे प्रभु कबरे मिलोगाँ, थे मिल्याँ सुख होय १२०। **मिलोगे**—मिलोगे (भविष्यार्थक उदा० मीराँ रे प्रभु कबरे मिलोगे, मिलियाँ आँणद होइ ५३। ६४, ७४, ८८, ९५, १०३, १०८, १२३, १७६। **मिलौंगे**—मिलोगे (भविष्यार्थक)। उदा० मीराँ कहै प्रभु कबहि मिलौंगे, थाँ बिण नैण दुख्यारा ११२। **मिलौ**—मिलो (आज्ञार्थक) उदा० मीराँ के प्रभु बेग मिलौ अब, राखो जी मेरो मान १२४। **मिल्याँ**—मिली। उदा० साजाँ सिंगार मुहाणाँ सजणी, प्रीतम मिल्याँ धाय २०१। (२) मिलने मे। उदा० मीराँ रे प्रभु कबरे मिलोगाँ, थे मिल्याँ सुख होय १०२। **मिल्या**—संयुक्त काल (मुख्य क्रिया) मिल्या है—मिला है। उदा० मीराँ कूँ प्रभू मिल्या है एही भगत की रीत २६। **मिल्या**—१ मिला है उदा० मीराँ रो गिरधर मिल्या री, पुरब जणम ५६, ७०। (२) मिलने मीराँ लाल गिरधर, ८६। (३) मिला। मिल्या राम अविनासी फिरूँरी ९४। **मिल्यो**— वाँ झरमिट माँ मिल्यो तण मण राती २३ गया। उदा० थारा म जो पिव मेला आज ८

मिलज्यो—दे० 'मिल्'
मिलला दे० 'मिल्'
मिलन—दे० 'मिल्'
मिलया—दे० 'मिल्'
मिलयो—दे० 'मिल्'
मिलस्याँ दे० 'मिल्'
मिलस्यो—दे० 'मिल्'
मिलण—दे० 'मिल्'
मिला—दे० 'मिल्'
मिलावै—दे० 'मिल्'
मिलावो—दे० 'मिल्'
मिलि—दे० 'मिल्'
मिलियाँ—दे० 'मिल्'
मिलिया—दे० 'मिल्'
मिली—दे० 'मिल्'
मिले—दे० 'मिल्'
मिलो दे० 'मिल्'
मिलोगाँ—दे० 'मिल्'
मिलोगे—दे० 'मिल्'
मिलौंगे—दे० 'मिल्'
मिलौ—दे० 'मिल्'
मिल्याँ—दे० 'मिल्'
मिल्याँ—दे० 'मिल्'
मिल्या—दे० 'मिल्'
मिल्यो दे० मिल्

मींज्—(सं० मर्दन)।

मींजत रई—मलती रही। उदा० रथ चढ़ाय गोपाल लैगो, हाथ मींजत रई १८२।

मींजत—दे० 'मीज्'

मीठाँ—(सं० मिष्ठ) मीठा, मधुर। उदा० जमणा किणारे कान्हा धेनु चरावाँ, वंशी बजावाँ मीठाँ वाणी ११। **मीठी**—मधुर। उदा० राणा जी म्हाने या बदनामी लगे मीठी ३३। ५४, १००, १८६। **मीठो**—मीठे। **मीठो थारो बैण**—तुम्हारे बोल मीठे है। उदा० सबदाँ सुणताँ मेरी छतियाँ काँपाँ मीठो थारो बैण १०३।

मीठी—दे० 'मीठाँ'

मीठो—दे० 'मीठाँ'

मीण—(सं० मीन) मछली। उदा० मीण जल बिछुड़्या णा जीवाँ, तलफ मर-मर जाय ९० । १०५। **मीणा**—मछली। उदा० मीणा तज सरवर ज्यों मकर मिलन धाई १२। **मीन**—मछली। उदा० मीन जल से बाहर कीना, तुरत मर जाई ८९। **मेल्या**—मिलकर। उदा० हेल्या मेल्या कामण म्हारे बेठ्या मित्र सरदाराँ री २४। **मेल्यो**—मिला। उदा० विष को प्यालो राणो जी मेल्यो, द्यो मेड़तणी ने पाय ४०।

मीणा—दे० 'मीण'

मीत—दे० 'मित'

मीन—दे० 'मीण'

मीराँ—(मध्ययुगीन भक्त कवयित्री का नाम। उदा० दासि मीराँ लाल गिरधर, अगम तारण तरण १। २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २० २१ २२ २३ २४ २५ २६, २७, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३६, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४०, ४१, ४१, ४१, ४१, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००, १०१, १०२, १०३, १०४, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११०, १११, ११२, ११३, ११४, ११५, ११६, ११७, ११८, ११९, १२०, १२१, १२२, १२३, १२४, १२५, १२६, १२७, १२८, १२९, १३०, १३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६, १३७, १३८, १३९, १४०, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५, १४६, १४७, १४८, १४९, १५०, १५१, १५२, १५३, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १५९, १६०, १६१, १६२, १६३, १६५, १६६, १६७, १६८, १६९, १७०, १७१, १७२, १७३, १७४, १७५, १७६, १७७, १७८, १७९, १८० १८१, १८२, १८३, १८४, १८५, १८६, १८७, १८८, १८९, १९०, १९१, १९२, १९४, १९५, १९६, १९७, १९८, १९९, २००, २०१, २०२।

मुंहोघो—(सं० महार्घ) महँगा। उदा० थें कह्याँ मुंहोघो म्हाँ कह्याँ सस्तो, लिया री तराजाँ तोल २२।

झाँझ मृदंग मुरलिया बाज्याँ कर इक-तारी ७७। ६०, १६६, १६७ । **मुरली-वालो**—मुरली वाले कृष्ण । उदा० बिन्द्राबन माँ धेण चरावाँ, मोहन मुरली वालो १५४ ।

मुरलीवालो—दे० मुरली'

मुरार—दे० 'मुरारी'

मुरारी—(सं० मुरारि) मुरा के अरि, कृष्ण। उदा० म्हाराँ हिरदाँ बस्याँ मुरारी, पल पल दरसण पावाँ १५ । ६६, ७७, १०४, ११३, १३१, १६६, १७०, १७१, १७१, । **मुरार**—कृष्ण । उदा० या जग मे कोई नहिं अपणा, सुणियौ श्रवण मुरार । १३३ ।

मुसका—(सं० स्मय + कृ) । **मुसकाय**—मुसकराता है । उदा० गहे द्रुम डार कदम को ठाडो, मृदु मुसकाय म्हारी ओर हँस्यो ८ ।

मूकीने—(सं० मुक्त > मूक + ई + ने) छोड़कर । उदा० झगडो थाय त्याँ दौड़ी ने जाय रे मूकीने घर ना काम रे १५७ ।

मूर—दे० 'मूल'

मूरख—(सं० मूर्ख) मूर्ख, बेवकूफ । उदा० साध सँगत माँ भूल णा जावाँ मूरख जणम गुमायाँ १५६ । **मूरखन**—मूर्खों से । उदा० धीर न पाजे आरी रे, मूरखन कीजै मित ५६ ।

मूरत—(सं० मूर्त्ति) शक्ल । उदा० मोहण मूरत साँवराँ सूरत णेणा बण्या बिशाल ३ । १४, १७२ । **मूरति**—आकृत, शक्ल । उदा० जंतर मंतर जादू टोना, माधुरी मूरति बसिके ७ ।

मूरति—दे० 'मूरत'

मूरखन दे० मूरख

मूल सं० मूल मुख्य बात उदा० आया था ए लोभ के कारण, मूल गमाया भूल १६८ । **मूल**—जड़ । उदा० जोगिया री प्रीतड़ी है दुखड़ा रो मूल ५४ । ६८ । **मूर जड़ी**—मूल दवा । उदा० अटक्याँ प्राण साँवरो प्यारो, जीवण मूर जड़ी १४ ।

मृगछाला—(सं० मृगचर्म) हिरण की खाल । उदा० अंग भभूति गले मृगछाला तू जन गुढ़ियाँ खोल ५८ । **म्रिघछाला**—मृग की खाल । उदा० अंग भभूत गले म्रिगछाला, यो तन भसम करूँरी ६४ ।

मृदंग—(सं० मृदंग) एक प्रकार का बाजा जो ढोलक से कुछ लंबा होता है । उदा० बाज्याँ झाँझ मृदंग मुरलिया बाज्याँ कर इकतारी ७७ ।

मृदु—(सं० मृदु) धीरे, मंद-मंद । उदा० गहे द्रुम डार कदम को ठाड़ो, मृदु मुस-काय म्हारी ओर हँस्यो ८ ।

में—(सं० मध्ये) अधिकरण कारकीय चिह्न । उदा० छप्पन भोग बुहाइ दे हे, इन भोगनि में दाग २६ । ३०, ३२, ३४, ३८, ४१, ४६, ५४, ६२, ६३, ६८, ८०, ८६, ६४, ११५, ११५, ११८, ११८, १३३, १३५, १४५, १४५, १५४, १५८, १५६, १६५, १६६, १७१, १७६, १७७, १७७, १७६, १८४, १८४, १८५, १८६, १८८, १६२, १६६ । **मैं**—में । उदा० सावण मैं झड़ लागियो, सखि तीजाँ खेलै, हो ११५ ।

मेखला—(सं० मेखला) योगियों का विशेष प्रकार का कमरबंद । उदा० माला मुदरा मेखला रे बाला, खप्पर लूंगी हाथ ११७ ।

मेघ सं० मेघ मे आच्छा दित जल वाष्प जिससे वर्षा होती है मेह

वर्षा । उदा० काली पीली बदली बिजली चमके। मेघ घटा घनघोर, छै जी १४५ । मेघाँ—(मेघ + आँ) वर्षा । उदा० बीजाँ बूँदाँ मेहाँ आयाँ बरसाँ सीतल पवण सुहावण री १४६ । मेहाँ—मेघ बादल । उदा० बीजाँ बूँदाँ मेहाँ आयाँ बरसाँ सीतल पवण सुहावण री १४६ । मेहा—बादल । उदा० इक गाजै बाजै पवन मधुरिया, मेहा अति झड़ लाये रे ८१ ।

मेघाँ—दे० 'मेघ'

मेटण—दे० 'मट्'

मेट्या—दे० 'मट्'

मेड़तणी—(सं० मेड़ता + ड़ी) मेड़ता की रहनेवाली मीराँ। उदा० बिष को प्यालो राणो जी भेज्यो, द्यो मेड़तणी ने पाय ४० । ४० ।

मेर—(सं० मम + कृत्) । मेरा—मैं का संबंध कारकीय रूप । उदा० पिव मेरा मैं पीव की रे, तू पिव कहै सू कूण ८४ । ८६, १३० । मेरी—मैं के संबंध रूप का स्त्रीलिंग द्योतक । उदा० मेरी उणकी प्रीत पुराणी, उण बिन्नि पल न रहाऊँ २० । ४२, ६३, ७४, ९२, ९४, १०३, १२३, १२६, १३५, १३६, १६२, १६७, १७०, १८३ । मेरे—मेरा का विकारी रूप । उदा० तरकस तीर लग्यो मेरे हियरे, गरक गयो सनकाणी ३८ । ४४, ५९, ६३, ८४, ९५, १०८, ११५, १२०, १२३, १२४, १२४, १२५, १२५, १३२, १५१, १७९ । मेरो—मेरा ही राजस्थानी प्रवृत्ति के अनुसार कहीं-कहीं मेरो हो गया है । उदा० ज्यों तोको कछू और बिया हो नाहिन मेरो बसिके ७ ६५, ७६, ८५, ८५, ९२, १००, १२४, १३०, १७२, १७६, १७६, १७९ ।

मेला—दे० 'मिल्'

मेलै—(सं० मेल) कीजिए । उदा० भादरवे नदिया बहै, दूरी जिन मेलै, हो ११५ ।

मेल्या—दे० 'मिल्'

मेल्यो—दे० 'मिल्'

मेहाँ—दे० 'मेग'

मेहा—दे० 'मेघ'

मै—(१) (सं० मया) सर्वनाम, उत्तम पुरुष एक वचन । उदा० साँवरी सूरत आन मिलावो, ठाढ़ी रहूँ मैं हँसिके ७ । २०, ३३, ३८, ४३, ४३, ४४, ४६, ५५, ५७, ६०, ६०, ६३, ६५, ६५, ७६, ८२, ८४, ९४, ९५, १००, १०८, १११, १११, ११२, ११२, ११२, ११४, ११५, ११७, ११८, १२०, १२०, १२६, १२७, १३०, १३२, १३३, १३५, १६९, १७१, १८३, १८३ । (२) दे० 'में' ।

मैल—(सं० मलिन) बुराई । उदा० मन की मैल हियतें न छूटी, दियो तिलक सिर धोय १५८ ।

मो—(सं० मम) मेरे (सार्वनामिक) विशेषण । उदा० हे मा बड़ी बड़ी अँखियन वारो साँवरो । मो तन हेरत हँसिके ७ । ८४ । मो परि—मुझ पर । उदा० करि किरपा प्रतिपाल मो परि, रखो न अपण देस ११७ । मोइ—मुझको । उदा० कै तो जोगी जग में नहीं कैर बिसारी मोइ ४४ । ५३ । मोकूँ—मुझको । उदा० मीराँ के प्रभु हरि अविनासी दरसण द्यो न मोकूँ आय ९८

मोपरि—मुझ पर । उदा० करि करिपा प्रतिपाल, मोपरि, राखौ ण आपण देस ११७ । **मोय**—मुझे । उदा० धाम ण भावाँ नींद ण आँवाँ, बिरह सतावाँ मोय १०१ । १०२ ।

मोइ—दे० 'मो'

मोकूँ– दे० 'मो'

मोच्छ—(सं० मोक्ष) निवारण, मुक्ति । उदा० जुग जुग भीर हराँ भगताँ री दीश्याँ मोच्छ नेवाज ६२ ।

मोटी—(सं० मुष्ट) पूरी । उदा० मुज अबला ने मोटी नीराँत थई रे १४१ ।

मोतिन—दे० 'मोती'

मोतियन—दे० 'मोती'

मोतिया—दे० 'मोती'

मोती—(सं० मौक्तिअ) एक बहुमूल्य रत्न जो छिछले समुद्रों में सीपों में से निकलता है । **मोतिन**—(मोती + न) मोतियों की । उदा० गल मोतिन की माल बिराजे, चरण कमल बलिहारी १७१ । **मोतियन**—(मोती + अन) मोतियों से । उदा० कहो तो मोतियन माँग भरावाँ, कहो छिटकावाँ केस १५३ । **मोतिया**—(मोती + आ) मोती । उदा० झूठा मणिक मोतिया री, झूठी जगमग जोति २६ ।

मोपर—दे० 'मो'

मोय—दे० 'मो'

मोर[1]—(सं० मयूर:) मोर एक पक्षी । उदा० मोर मुगट माथ्याँ तिलक बिराज्याँ कुण्डल, अलकाँकारी जी २ । ३, ६, १२, १४, ५६, ७४, ८१, ९२, ११५, ११६, १४२, १४३, १४५, १४७, १५२, १५४, १६१, १७१, २०२ ।

मोर मुकुट—मोर के पंख से बना हुआ मुकुट । उदा० मोर मुगट पीताँबर शोभाँ, कुंडल री छब न्यारी १३१ ।

मोर[2]—(सं० मम + केर) । **मोरा**—मेरे । उदा० सावण दे रह्या जोरा रे, घर आयो जी स्याम मोरा, रे १४७ । **मोरि**—मेरी । उदा० सदा उदासी रहै मोरि सजनी, निपट अटपटी रीत ५७ । **मोरी**—मेरी । उदा० कौन जतन करो मोरी आली चंदन लाऊँ घँसिके ७ । ५३, ७४, ७४, ८५, १६६, १७१, १७६, १८७ । **मोरे**—मेरे, मेरा । उदा० पिया अब घर आज्यो मेरे, तुम मोरे हूँ तोरे ६५ । १०७, १६५

मोरा—दे० 'मोर[2]'

मोरि—दे० 'मोर[2]'

मोरे—(१) दे० 'मोर[2]' । (२) (मरोड़ता है । उदा० म्हाँरी अँगुली णा छुवे वाँकी बहियाँ मोरे, हो १८१ ।

मोल—(सं० मूल्य) मूल्य, कीमत । उदा० तण वाराँ म्हाँ जीवण वाराँ, वाराँ अमोलक मोल २२ । २२, ५८ । **मोलै**—मोल के । उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चेरी भई विण मोलै १७८ ।

मोह—(सं० मोह) बंधन । उदा० काम क्रोध मद लोभ मोह कूँ, बहा चित्त से दीजै १९९ । **मोहण**—मोहने वाले, सुन्दर कृष्ण । उदा० मोहण मूरत साँवराँ सूरत णेणा बण्या विशाल ३ । ११, १७, ८८, ९९ । **मोहण रो**—मोहन के । उदा० म्हा मोहण री रूप लुभाणी ११ । **मोहणा**—कृष्ण । उदा जाणाँ रे मोहणा, जाणाँ थाँरी प्रीत ५६ । **मोहन**—(१) कृष्ण । उदा० म्हाँ ठाढ़ी घर घर आपणी, मोहन निकल्याँ आय १३ । २, ७४,

११६, १५४, १७५, १७५। **मन मोहना**—मन को मोहने वाले, कृष्ण उदा० हे मेरो मन मोहना ८५। **मोहने**—(मोहन+ने) मोहन ने। उदा० माई मेरो मोहने मण हर्यो १७२। **मोह्याँ**—मोहित हुई। उदा० था छब देख्याँ मोह्याँ मीराँ, मोहन गिरवरधारी जी २।

मोहि—(सं० मम+हिं बलात्मक) मुझको। उदा० किरपा कर मोहि दरसण दीज्यो, सब तकसीर बिसारी ११३। ११५, १३०, १६६, १६९। **मोहि**—मुझको। उदा० मीराँ कूँ प्रभु दबरे मिलोगे, मन मोहन मोहि भावै ७८। ९२, १००, १०८, १२३।

मोह्याँ—दे० 'मोह'

म्याँ—(सं० मह्यम्+केरा) मेरा। उदा० अब तो म्याँ कैसे बणे रे, पूरब जनम की प्रीत ५६। **म्यारो**—मेरा। उदा० मण म्यारो लाग्यां गिरधारी जगरा बोल सह्याँ २९।

म्यारो—दे० 'म्याँ'

म्रिघछाला—दे० 'मृगछाला'

म्ह—(मह्यम्) **म्हने**—मुझे। उदा० म्हने भरोसो राम को रे (बाला) डूबि तर्यो हाथी १८५। **म्हाँ**[१]—(१) मैं। उदा० म्हाँ ठाढी घर आपणे, मोहन निकल्याँ आय १३। १७, १७, २२, २२, २२, २३, २३, २४, ३१, ७०, ८६, ९१, १०२, १३७। (२) मेरे, मेरी। उदा० थे छो म्हारो गुण रो सागर औगुण म्हां बिसराज्यो जी १२६। १३८। (३) मुझे। उदा० माई म्हाँ गोविंद गुण गाणा ३९। ६४। (४) मुझसे। उदा० बरजी री म्हाँ स्याम बिणा न रह्याँ २९। **म्हाँ**[२]—(सं० मध्य) में, अधिकरण कारकीय चिह्न। उदा० बूझ्या माणे मदण बावरी स्याम प्रीत म्हाँ काचाँ ३७। ५०। **म्हाँने**—(मह्यम+कर्णे) मुझे। उदा० थे तो राणाजी म्हाँने इसड़ा लागो ज्यों ब्रच्छन में कैर ३४। ६७, १११। **म्हांणे**—(मह्यम+कर्णे) मुझे। उदा० नैणा आगाँ रह्ज्यो, म्हाँणे भूल णो जाज्यो जी ५०। **म्हाँरा**—(सं० मह्यम+केर) हमारा, हमारी। उदा० णेणा म्हाँरा साँवरा राज्याँ, डरताँ पलक णा लावाँ १५। २५, ३०, ५१, ११७, ११७। **म्हाँरी**—हमारे। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, और न आवे म्हाँरी दाय ४२। ७२, १११, १८१। **म्हाँरे**—हमारे। उदा० हेरी मा नद को गुमानी, म्हाँरे मनड़े बस्यो ८। २४, २५, २५, ३०, ४०, ५०, ५१, १०९, ११२। **म्हाँरो**—हमारा। उदा० यो तो अमल म्हाँरो कबहुँ न उतरे यो तो म्हाँरो कबहुँ न उतरे, कोट करो न उपाय ४०। **म्हारो** हमारे। उदा० म्हाँरो प्रणाम बाँके बिहारी जी २। २१, २४, २५, ३०, ३५, १०६, १२२, १२२, १८१। **म्हाँसूं**—(सं० मह्यम>म्हाँ+समम्) मुझसे। उदा० राणा जी थे क्याँने राखो म्हाँसूं बैर ३४। **म्हा**—(१) मैं। उदा० म्हा मोहणरो रूप लुभाणी ११। २८, ४८, ४८, ७८, ८३, १४८। (२) मैंने। उदा० माई री म्हाँ काँ चोड्ह्यां, लियो बजता ढोल २२। (३) मेरा। उदा० म्हा गुणहीन गुणागर नागर म्हा हियड़ो रो साज ४८। १५५। ११०, १६६। (४) मुझको। उदा० काहा, करी कित जावाँ सजणी, म्हा तो स्याम डसी ८८।

१२८। म्हाणे—(सं० मह्यम्+कर्णे) मुझको। उदा० थें विण म्हाणे जग णा सुहावां, निरख्यां सब संसार ४। ६६, ७८, ९०, ९६, १०४, १३६, १५४, १६०। (२) मुझसे। उदा० आवण कह गयाँ अजाँ ण आया, कर म्हाणे कोल गयाँ ५२। (३) मैंने। उदा० सावण आवण हरि आवण री, सुण्या म्हाणे बात ६६। म्हाणो—मेरा। उदा० माई म्हाणो सुपणा माँ परण्याँ दीनानाथ २७। म्हाने—मुझे। उदा० राणा जी म्हाने या बदनामी, लगे मीठी ३३। म्हाराँ—(सं० मह्यम+कृत) हमारा। उदा० णेणाँ म्हाराँ साँवरा राज्याँ, डरताँ पलक णा लावाँ १५। १८, २९, ७०, ११०। म्हारा—मेरा। उदा० और आसिरो णा म्हारा थें विण, तीनूँ लोक मँझार ४। ४, १५, २३, ६८, ८२, १०३, ११७, ११९, १२१, १५५, १५५, २०२। म्हारी—हमारी। उदा० तनक हरि चितवाँ म्हारी ओर ५। ५, ८, २४, २८, ४५, ६१, ६६, ७५, ७७, ७७, ८३, ८७, ८७, १०६, १३७, १६३, १६९, १८१, १९७, २०१, २०१। म्हारे—हमारे, हमारा, हमारी। उदा० बस्याँ म्हारे णेणण माँ नँदलाल ३। १०, १४, १४, २३, २४, २४, २५, २४, २८, ४३, ७८, ८८, ९८, ११४, ११६, ११९, १२०, १२१, १२९, १३७, १३६, १३८, १३९, १४३, १४४, १४५, १५०, १५०, १५१, १५२, १६९। (१) मुझे, मुझको उदा० सुपणाँ माँ म्हारे परण गया पायाँ अचल सोहाग २७। २८, ९९। म्हारों—हमारे हमारी। उदा० मीराँ दासी अरज करयाँ छै, म्हारों लाल दयाल ४७। ४८, ४८, १४५। म्हारो—मेरा, मेरे। उदा० म्हारो प्रणाम बाँके बिहारी जी २। ६, ८, ९, २९, ५२, ६८, ११९, ११९, १२९, १४४, १४६। (२) हमें, हमको। उदा० खाण पाण म्हारे नेक णा म्हारो, हियड़ो घणो उचाट ९९। (३) हमारा, हमारी। उदा० स्याम प्रीत रो बाँधि घुँघर्याँ मोहण म्हारो साँच्याँरी १७। ५६, ७२, ७८, ७८, १०२, १०३, १०५, १०९, ११०, ११, ११९, १२९, १३२, १३६, १३६, १५०, १५५, १६४, १६४, १६६, १९४, १९४, १९४, १९५, १९९, २०१, २०२। म्हासुँ—(सं० मह्यम+समम) मुझसे। उदा० णा तो साँवरो री म्हासूँ, तनक न तोड्याँ जाय ७२। म्हें—मैं। उदा० जिण मारग म्हाँरा साध पधारै, उण मारग म्हें जास्याँ २५। ३५।

म्हने—दे० 'म्ह'

म्हाँ—(१) दे० 'म्ह'। (२) (सं० मध्य) में। उदा० बूझ्या माणे मदण बावरी स्याम प्रीतम्हाँ काचाँ ३७।

म्हाँने—दे० 'म्ह'

म्हाँणे—दे० 'म्ह'

म्हाँरा—दे० 'म्ह'

म्हाँरी—दे० 'म्ह'

म्हाँरे—दे० 'म्ह'

म्हाँरों—दे० 'म्ह'

म्हाँरो—दे० 'म्ह'

म्हाँसूं—दे० 'म्ह'

म्हा—दे० 'म्ह'

म्हाणे—दे० 'म्ह'

म्हाणो—दे० 'म्ह'

म्हाने—दे० 'म्ह'

म्हारां—दे० 'म्ह'
म्हारा—दे० 'म्ह'
म्हारी—दे० 'म्ह'
म्हारे—दे० 'म्ह'
म्हारों—दे० 'म्ह'
म्हारो—दे० 'म्ह'
म्हांसूं—दे० 'म्ह'
म्हें—दे० 'म्ह'
म्हे—दे० 'म्ह'
म्हेल्—(सं० मेल)। म्हेली—कर दी। उदा० मुझे दूरी क्यूं म्हेली ८०।
म्हेली—दे० 'म्हेल्'
म्हैलां—दे० 'महल'
म्रिगछाला—दे० 'मृगछाला'

य

यह -(सं० इदम्) सर्वनाम (इसका प्रयोग वक्ता अथवा श्रोता को छोड़कर निकट के सभी मनुष्यों तथा पदार्थों के लिये हो सकता है) मीरां में यह का प्रयोग सार्वनामिक विशेषण के रूप में हुआ है। उदा० राति दिवस यह आरति मेरे, कब हरि राखं पासड़ियां १०८। यहि—इस (सार्वनामिक विशेषण)। उदा० यहि विधि भक्ति कैसे होय १५८। या (१) यह (सार्वनामिक विशेषण)। उदा० राणा जी म्हाने या बदनामी लगे मीठी ३३। (२) इस (सार्वनामिक विशेषण)। उदा० या छब देख्यां मोह्यां मीरा, मोहन गिरवरधारी जी २। ३५, ५३, ५७, १३३, १३५, १७७। याही—यही। उदा० आसण माड़ अडिग होय बैठा याही भजन की रीत ५५। ये–यह। उदा० गज से उतर के खर नहीं चढ़स्यां, ये तो बात न होई २५। १७२। यो—(१) यह। उदा० ओर सिगार म्हारे दाय न आवे यो गुर ग्यान हमारो २५। ३१, ४०, ४०, १३५, १५६, १९५। (२) इस। उदा० यो देही रो गरब णा करणा, माटी माँ मिल जासी १९५। यौ—यह। उदा० यौ संसार बिकार सागर, बीच में घेरी ६३।

यहि- दे० 'यह'

या --(१) दे० 'यह'। (२) दे० 'यह'। (३) (फा० या) अथवा। उदा० दरस विणा म्हाणे कछु णा भावां जग माया या सुपणा री १२८।

याद--(फ़ा० याद) स्मरण करने की क्रिया (मीरां में इसका प्रयोग संयुक्त क्रिया के अंतर्गत हुआ है)। उदा० कोई दिन याद करो रमता राम अतीत ५५।

याही—दे० 'यह'

यूं—(सं० एवमेव) इसी प्रकार ऐसे ही। उदा० ज्यूं डूंगर का वाहला रे, यूं ओछा तणा सनेह ५६। ८४, १०७, १८५।

यों—इस प्रकार। उदा० अंग भभूत गले म्रिगछाला या तन भसम करूं

री ६४ (इस पंक्ति में 'यो तन' का अर्थ 'इस शरीर को' भी लगाया जा सकता है।

ये—दे० 'यह'

यों—(१) दे० 'यह'। (२) दे० 'यूँ'

यो—दे० 'यह'

यौ—दे० 'यह'

र

रँग—(सं० रंग)। **रँग राँच्याँ**—प्रभाव में आ गई। उदा० प्रीतम पल छब ण विसरावाँ, मीराँ रंग राच्याँ री १७। १६, २३, २५, ३०, ३७, ३७, ४०, ४०, ४०, ११३ १४८, १७०, १८१, १६६। **रँगभरी**—खुशियों से परिपूर्ण। उदा० रँगभरी राग सूँ भरी री १४८। **रंगमहल**—(रंग + अ० महल) भोग-विलास करने का स्थान। उदा० बिरहण बेठ्याँ रंगमहल माँ, णेणा लड़्या पोवाँ ८६। **रंगरूड़ो**—अच्छे रंग वाला अर्थात् सुन्दर, अद्भुत। उदा० नहि सुख भावै थाँरो देसलड़ो रँगरूड़ो ३२। **रँगसूँ**—रंग से। उदा० होली खेल्याँ स्याम संग रँग सूँ भरी, री १४८। **रंगीली**—रंगों से युक्त। उदा० रे साँवलिया म्हारे आज रँगीली गणगौर छै जी १४५।

रई-(सं० रह्) रही, रह गई (सहायक क्रिया)। उदा० रथ चढ़ाय गोपाल लैगो, हाथ मींजत रई १८२।

रख्—(सं० रक्ष्)। **रखवारे**—रखवाले, रक्षा करने वाले। उदा० माखन रोटी हाथ में लीनी, गउवन के रखवारे १६५। **रखाँ**—रखिए। उदा० मीराँ सरण गह्याँ चरणाँ री, लाज रखाँ महाराज ६२। **रखाय**—रखिए। **चरण ही कँवल रखाय**—चरण कमलों के निकट ही रखिए। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर चरण ही कँवल रखाय ७६। **रखासी**—रखेगा। उदा० राणो जी रूठ्याँ बाँरो देस रखासी ३५। **राख्याँ**—रखा, रक्षा की। उदा० बूड़ता गजराज राख्याँ कट्याँ कुंजर भीर ६१। **राखो**—रखो (आज्ञा)। उदा० करि करिपा प्रतिपाल, मो परि, राखो ण आपण देस ११७।

रखवारे—दे० 'रख्'

रखाँ—दे० 'रख्'

रखाय—दे० 'रख्'

रखासी—दे० 'रख्'

राख्याँ—दे० 'रख्'

रज—(सं० रजस्) धूलि। **संतोनी रज**—संतों के पैरों की धूलि। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, संतोनी रज म्हाँरे अंग रे ३०।

रजनी—(सं० रजनी) रात। उदा० जल

बिण कँवल चंद बिण रजनी, थे बिणा जीवण जाय १०१।

रट्—। **रटत है**—रटती है । उदा० दासि मीराँ राम रटत है, मैं सरण हूँ तेरी ६३। **रट्या**—रटती हूँ। उदा० म्हारो मण साँवरो णाम रट्या री २००। **रटाँ**--रटती हूँ। उदा० पीव पीव म्हाँ रटाँ रेण दिन लोक लाज कुल त्यागी ६१। **रटै**—रटता है। उदा० ज्यूं चातक घणकूँ रटै, मछरी ज्यूं पाणी हो ८७'

रटत—दे० 'रट्'

रट्या—दे० 'रट्'

रटाँ—दे० 'रट्'

रटै—दे० 'रट्'

रतण—(सं० रत्न) एक बहुमूल्य पत्थर जिसका प्रयोग आभूषण आदि में जड़ने के लिए होता है। उदा० रतण आभरण भूखण छाड़्याँ, खोर कियाँ सिर केस ६८। १५०, १५२, १६०। **रतणाकर**—रत्नाकर, रत्नों का खज़ाना (वह व्यक्ति जिसमें गुणों का समूह हो अर्थात् (कृष्ण) उदा० भाग हमारो जाग्याँ रे, रतणाकर म्हारी सीरयाँ री २४। २०२। **रतन**—रत्न। उदा० पीताम्बर कट काछनी काछे, रतन जटित माथे मुकट कस्यो ८।

रतणाकर—दे० 'रतण'

रतन—दे० 'रतण'

रत से—लगने से। उदा० दीन हीन हूँ छुधा रत से, राम नाम ण लेत १५८।

रती—(सं० रतिका) बहुत थोड़ा सा, आठ चावल के वजन के बराबर का एक बाट। उदा० ऐसी कहा अचारवती, रूप नहीं एक रती १८६।

रथ—(सं० रथ) एक सवारी जिसमें चार या दो पहिए लगे रहते हैं। उदा० रथ चढ़ाय गोपाल लैगो, हाथ मीजत रही १८२। १८२।

रम्—(सं० रमण)। **रम गया**—लीन हो गया। उदा० नगर आइ जोगी रम गया रे, मो मन प्रीति न पाइ ४८। **रमइया**—रम जाने वाले कृष्ण। उदा० बालपनाँ की प्रीत रमइया जी, कदे नहि आयो थारो तोल १००। **रमईया**—रम जाने वाले, कृष्ण। उदा० रमईया मेरे तोही सूँ लागी नेह ५६। **रमता**--रम जाने वाले। उदा० कोई दिन याद करोगे रमता राम अतीत ५५। **रमतो**—रमने वाला। उदा० म्हारो घर रमतो ही जोगिया तू आव ६८। **रमाय**—रमाकर। उदा० कानाँ बिच कुंडल गले बिच सेली, अंग भभूत रमाय ६८। **रमायो**—लगाया। उदा० गल बिच सेली हाथ हाजरियो अंग भभूति रमायो १८८। **रमैया**—रमजाने वाले कृष्ण। उदा० तुम दरसण की आस रमैया, कब हरि दरस दिलावैं ६७। ७३, ७८। (मीराँ ने कृष्ण के लिए रमइया, रमईया, रमैया आदि शब्दों का प्रयोग कृष्ण को राम के समकक्ष रखने के प्रयोजन से भी किया है)।

रमइया—दे० 'रम्'

रमईया—दे० 'रम्'

रमता—दे० 'रम'

रमतो—दे० 'रम्'

रमाय—दे० 'रम्'

रमायो—दे० 'रम्'

रमैया—दे० 'रम्'

रल्—(सं० ललन = केलि)। **रली**—मिलकर। उदा० आयो सहेल्या रली कराँ हे, पर घर गवण निवारि २६

रली—दे० 'रल्'

रस—(सं० रस) किसी पदार्थ का सार। उदा० अधर सुधारस मुरली राजाँ उर वैजंती माल ३। १०, १६, ४०, ५६, १७५, १८६, १९९। **रसभरी**—रस से युक्त, मीठी। उदा० नेह मेरो हर लियो रसभरी टेर सुनाय १७९। **रसिक**—रस का प्रेमी, कृष्ण। उदा० णाच णाच म्हाँ रसिक रिझावाँ प्रीत पुरातन जाँच्याँ री १७। १७०, १७५। **रसिकाँरा सिरताज**—रसिकों के सिरताज रसिक लोगों में श्रेष्ठ, कृष्ण। उदा० मोर मुकुट मकराकृत कुंडल, रसिकाराँ सिरताज १५२। **रसिया**—रस का भोग करने वाला १८१। **नित नव प्रीत रसी**—हर रोज नई प्रीत व्याप्त होती है। उदा० मीराँ रे प्रभु कबरे मिलोगे, नित नव प्रीत रसी ८८। **रसीलणी**—रस लेने वाली। उदा० ऊँच नीच जाने नहीं, रस की रसीलणी १८६। **रसीली**—रस से युक्त। उदा० मीराँ सिरि गिरधर नट नागर भगति रसीली जाँची १९।

रसभरी—दे० 'रस'

रसिक—दे० 'रस'

रसिकाँरा—दे० 'रस'

रसिया—दे० 'रस'

रसी—दे० 'रस'

रसीलणी—दे० 'रस'

रसीली—दे० 'रस'

रह—(सं० राज्)। **रहन्द**—रहते तो। उदा० सब संतों का काज सुधारा, मीराँ सूँ दूर रहंद १३९। **रहज्यो**—रहिये। उदा० पिया म्हाँरे नैणा आगाँ रहज्यो जी ५०। **रहत**—रहता है, रहती है। उदा० क्रोध कसाई रहत घट में कैसे मिले गोपाल १५८। १६७। **रहना**—क्रियार्थक संज्ञा। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, रहना है वे हजूर १९८। **रहस्यूँ**—रहूँगी। उदा० चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ नित उठ दरसण पास्यूँ १५४। **रहाँ**—रहीं। उदा० खाण पाण म्हाणे फीकाँ सो लागाँ नैण रहाँ मुरझावाँ ६६। **रहा**—रह गया। उदा० क्यासूँ मणरी बिथा बतावाँ, हिवड़ो रहा अकुलावाँ ७८। **रहाऊँ**—रहा जाए। उदा० मेणी उणकी प्रीत पुराणी, उण विनि पल न रहाऊँ २०। **रहाजो**—रहो। उदा० म्हाँरे नैणाँ आगे रहाजो जी, स्याम गोबिंद १३९। **रहिए**—आदरार्थ। उदा० मीराँ प्रभु गिरधर मिलि ऐसे ही रहिए १८४। **रही**—सहायक क्रिया (भूतकाल)। उदा० बहु दिन बीते अजहुँ न आये, लग रही ताला बेली ८०। ६४, १४५, १४७। **रहीजे**—रहता है। उदा० लगन लगी जैसे जल मछीयन से बिछड़त तनही दीजै १६१। **रहूँ**—रहूँगी। उदा० साँवरी सूरत आन मिलावो, ठाढ़ी रहूँ मैं हँसिके ७। ६४, ११७। **रहे**—(१) संभावनार्थक **कैसे रहे घर बसिके**—घर के अन्दर कैसे रहे, असमर्थता)। उदा० मीराँ तो गिरधर विन देखे, कैसे रहे घर बसिके ७। (२) रह गइ (पूर्णता द्योतक) उदा० पाँच पहर धंधे में बीते, तीन पहर रहे सोय १५९। १७९। **रहै**—रहता है, रहती है। उदा० साँची पियाजी री गूदड़ी जामे निरमल रहै सरीर २६। ५७, ७६। **रह्याँ**—रहा। **रह्याँ णा जाय**—रहा नहीं जाता। उदा० मीराँ रे प्रभ गिरधर नागर बिण पल रह्याँ

णा जाय १३ । ६४, ७१ । **स्याम बिणा न रह्यां**—स्याम के बिना नहीं रहूँगी। उदा० बरजी री म्हां स्याम बिणा न रह्यां २६ । **रह्या**—(१) रहूँगी। उदा० साधाँ संगत हरि सुख पास्यूँ जग सूँ दूर रह्याँ २६ । (२) रहा। उदा० साँवलिया म्हारो छाय रह्या परदेस ६८, ६६, १०१, १८५। (३) रहते हैं। उदा० सास लड़ै मेरी नन्द खिजावै, राणा रह्या रिसाय ४२। **रह्यो**—रहा, रही। **रह्यो न जाय**—रहा नहीं जाता। उदा० हेली म्हाँसूँ हरि बिनि रह्यो न जाय ४२। ८४। **लूम रह्यो**—छा रही है। उदा० भीजे म्हाँरो दाँवन चीर, सावलियो लूम रह्यो रे १२२। (३) रहता है। उदा० बात कहूँ तो कहत न आवै, जीव रह्यो डरराय ७६। **रह्योइ न जाइ**—रहा ही नही जाता। उदा० वा मूरति म्हारे मन बसे छिन भरि रह्यो न जाइ ११६।

रहंद—दे० 'रह्'
रहज्यो—दे० 'रह्'
रहत—दे० 'रह्'
रहना—दे० 'रह्'
रहस्यूं—दे० 'रह्'
रहाँ—दे० 'रह्'
रहा—दे० 'रह्'
रहाऊँ—दे० 'रह्'
रहाजो—दे० 'रह्'
रहिए—दे० 'रह्'
रही—दे० 'रह्'
रहीजे—दे० 'रह्'
रहूँ—दे० 'रह्'
रहे—दे० 'रह्'
रहै—दे० 'रह्'
रह्याँ—दे० 'रह्'
रह्या—दे० 'रह्'
रह्यो—दे० 'रह्'
रह्योइ—दे० 'रह्'

राँ—(सं० केरा) का (संबंधकारकीय चिह्न)। उदा० बिरछ राँ जो पात टूटया, लाया णा फिर डार १६५। १०६ (यह सर्वनाम के साथ संयुक्त रूप में भी आया है) **रा**—का, की, उदा० वार चरणामृत पी गई रे, गुण गोविंद रा गाय ४०। १७, २७, ३७, १५६, १९३, १०६। **री**—की। उदा० देख्या रूप मदन मोहन री, पियत पियूख मटके १०। १८, २६, २६, २८, ४५, ४८, ५१, ५१, ५१, ५६, ५६, ६१, ६१, ६४, ७०, ७०, ७७, ८३, ८७, १५०, १०२, ११९, १२८, १३१, १३१, १३४, १३५, १३८, १४५, १४६, १४६, १५०, १५४, १७४, १८६, १९०, २००, २०२, २०२। **रे**-के। उदा० मण थें परस हरि रे चरण १। ३०, ४५, ६६, ९१, ९३, १०७, ११६, १४३, १५४। **रो**—का, के, की। उदा० स्याम प्रीत रो बाँधि घूँघर्‍याँ मोहण म्हारो साँच्याँ री १७। १२, १८, २४, २७, ३१, ३१, ३२, ३३, ३३, ३६, ३७, ३७, ४८, ५०, ५४, ५६, ८७, ९१, १०६, १०८, १२९, १४८, १५५, १५५, १५९, १६६, १६८, १९३, १९५, १९५, २०१। **रौ**—का। उदा० पपय्या म्हारो कब रौ बैर चितार्‍याँ ८३।

राँच्—(सं० रच) **राँचा**—रम गई। उदा० साँवरियो रंग राँचा राणा, साँवरियो रंग राँचा ३७। **राँती**—अनुरक्त हो गई। उदा० मीराँ रे प्रभु गिर

धर नागर, हरि चरणाँ चित राँती १०६। राचाँ—रच गई। उदा० साँवरियो रंग राचाँ राणा, साँवरियो रंग राचाँ ३७। राची—अनुरक्त हो गई। उदा० माई साँवरे रंग राची १६। राच्याँ—अनुरक्त हो गई। उदा० लोकलाज कुलरा मरज्यादाँ जगमाँ णेक णा राच्याँ री १७। राती—अनुरक्त हो गई। उदा० थाँ झरमिट माँ मिल्यो साँवरो, देख्याँ तण मण राती २३। ६६, ११३।

राँती—दे० राँच्।

रा—दे० 'राँ'

राखड़ाँ—(सं० रक्ष्+ड़ा) चूड़ा। उदा० साजाँ सोल सिंगार, सोणारो राखड़ाँ १६३।

राख्—(सं० रक्ष्)। राखाँ—(१) रखती हूँ। उदा० राजभोग आरोग्याँ गिरधर, सणमुख राखाँ थाल ४७। (२) रखो। उदा० म्हाणे चाकर राखाँजी गिरधारी लाला चाकर राखाँ जी १५४। राखा—रखिए। उदा० मीराँ रे प्रभु और णा काई, राखा अब गी लाज ४८। राखि—संयुक्त क्रिया (मुख्य क्रिया)। उदा० मीराँ को प्रभु राखि लई है, दासी अपणी जाणी ३८। राखिल्यौ—रख लो। उदा० विरहणि पिव की बाँट जोवै, राखिल्यौ नेरी ६३। राखूँ—रखूँ। उदा० जो तुम आओ मेरी वाखरियाँ, जरि राखूँ चंदन किवाड़ियाँ १६२। राखे—रखता है। उदा० मीराँ के प्रभु सदा सहाई, राखे बिघन हटाय ४१। राखै—रखेंगे। उदा० राति दिवस यह आरति मेरे, कब हरि राखै पासड़ियाँ १०८। राखों—रखते ने उदाँ० राणा प्रीत क्याँने राँखों म्हाँसूँ बैर ३४। राखो—(१) रखो। उदा० मैं अबला बल नाहिं गोसाईं, राखो अबकै लाज १३२। (२) रखा है। उदा० रावल कुण बिलमाई राखो बिरहनि है बेहाल ११६। राख्याँ—(१) रखी। उदा० लोक लाज कुलरा मरज्यादाँ जगमाँ णेक णा राख्याँ री १७। ४८, १३४। लाँज राख्याँ—लाज की रक्षा की। उदा० द्रोपता री लाज राख्याँ थे बढायाँ चीर ६१। राख्याँ—रक्षा की। उदा० बूड़ता गजराज राख्याँ कट्याँ कुंजर भीर ६१ (२) रखो। उदा० ठाडी अरज कराँ गिरधारी, राख्याँ लाज हमारी ७७। १३४। (३) रखते हैं। उदा० चरण कँवल गिरधर सुख देस्याँ, राख्याँ नैणाँ नेरा ११०। राख्या—रखी। उदा० भरी सभा माँ द्रुपद सुताँ री राख्या लाज मुरारी १३१। राख्यूँ—रखती हूँ। उदा० नेण बिछाम्यूँ हिवड़ो डास्यूँ सर पर राख्यूँ विराज १०६। राख्यो—रखा। उदा० पहरे भी राख्यो चौकी बिठार्यो, ताला दियो जड़ाय ४२। राख्यौ—रखा। उदा० मैं भोली भोलापन कीन्हो राख्यौ नहिं बिलमाई ४४। राषो—रखो। उदा० मीराँ के प्रभु बेग मिलौ अब, राषो जी मेरो मान १२४।

राखाँ—दे० 'राख्'

राखा—दे० 'राख्'

राखि—दे० 'राख्'

राखूँ—दे० 'राख्'

राखे—दे० 'राख्'

राखै—दे० 'राख्'

राखों—दे० 'राख्'

राखो—दे० राख

राख्याँ— दे० 'थाख्'

राख्या— दे० 'राख्'

राख्यूँ— दे० 'राख्'

राख्यो— दे० 'राख्'

राख्यौ— दे० 'राख्'

राग—(सं० राग) स्वर। **रागभरी**—स्वर युक्त, गीत युक्त। उदा० रँगभरी राग भरी रागसूँ भरी री १४८। **रागसूँ**—प्रेम से। उदा० रँगभरी रागभरी रागसूँ भरी री १४८।

रागभरी— दे० 'राग'

रागसूँ— दे० 'राग'

राचाँ— दे० 'राँच्'

राची— दे० 'राँच्'

राच्याँ— दे० 'राँच्'

राज—(सं० राजन्) राजा (संबोधन) उदा० थारी छब प्यारी लागे राज, राधावर महाराज १५२। **ब्रजराज** ब्रज के राजा, कृष्ण। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, म्हारे मिल गया ब्रजराज १५२। **राजभोग**— राजा का भोजन (यहाँ अच्छे पकवानों के लिए 'राजभोग' का प्रयोग हुआ है)। उदा० राजभोग आरोग्याँ गिरधर, सणमुख राखाँ थाल ४७। **राजा**—मीराँ के देवर राणा के लिए 'राजा' का प्रयोग हुआ है। उदा० राजा रूठ्याँ नगरी त्यागाँ, हरि रूठ्याँ कहँ जाणा ३६। १८६।

राजभोग— दे० 'राज'

राज्—(सं० राज्)। **राजाँ** विद्यमान है। उदा० अधर सुधारस मुरली राजाँ उर बैजंती माल ३। १६०, २०२। **राज्याँ**—विद्यमान है। उदा० णेणा म्हाँरा सँवरा राज्याँ डरताँ पलक णा लाँ १५

राजा— दे० 'राज'

राजी—(फ़ा० राज़ीनामा) प्रसन्न। उदा० भगत देख्याँ राजी हुयाँ जगत देख्याँ रूयाँ १८।

राज्याँ— दे० 'राज्'

राणाँ—(सं० राट्) मीराँ के देवर का नाम (राणा)। उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, राणाँ भगत संघाराँ १६०। **राणा**—उदा० राणा विषरो प्याला भेज्या, पीय मगण हुयाँ १८। ३०, ३२, ३२, ३३, ३४, ३४, ३४, ३६, ३७, ३७, ३८, ४०, ४१, ४१, ४१, ४२, ५०। **राणो**— राणा। उदा० राणो जी रूठ्यो वाँरो देस त्यागाँ ३५। ४०। **राणौ**—राणा। उदा० राणौ भेज्य। बिखरो प्यालो चरणामृत पी जाणा ३८।

राणा— दे० 'राणाँ'

राणी—(सं० राज्ञी) रानी, राजा की पत्नी। उदा० पाँच पौड़ री राणी ढुणना हाड़ हिमालाँ गर्याँ १८८।

राणो— दे० 'राणाँ'

राणौ— दे० 'राणाँ'

रात— दे० 'राति'

रात— उदा० नींदड़ी आवाँ णा साराँ रात कुण बिधि होय परभात ७४। १३०।

राति—(सं० रात्रि) रात, संध्या से प्रातः काल तक का समय। उदा० राति दिवस काल नाहिं परत है, तुम मिलिया बिनि मोइ ५३। १०८, १२३। **राती** रात। उदा० वाँ झरमिट माँ सिरोंगों साँवरो, देख्याँ तण मण राती २३। १०६।

राती—(१) दे० 'राति'। (२) दे० 'राँच'। (३) लाल सी रंग की। उदा० ऊँचा चढ चढ पथ निहाराँ कलप कलप

अखियाँ राती १०६। १२३, १८५।

राधा—(सं० राधा) राधिका, कृष्ण की पत्नी। उदा० आवत देखी किसन मुरारी, छिप गई राधा प्यारी १७१। १७१, १८४। **राधावर**—राधा के पति। उदा० थारी छब प्यारी लागे राज, राधावर महाराज १५२।

राधावर—दे० 'राधा'

राम—(सं० राम) यहाँ कृष्ण के लिए ही 'राम' का प्रयोग हुआ है। उदा० मीराँ के प्रभु रामजी, बड भागण रीझै १६। ५५, ६३, ६७, ६७, ६७, ८२, ८४, ११३, ११७, १२३, १३३, १५६, १५७, १५८, १८५, १८६, १८७। **रामनाम**—राम के नाम का। उदा० रामनाम रस पीजै मनुआँ, राम नाम रस पीजै १९९। १९९। **रामनारायण**—कृष्ण। उदा० बीछिया घूँघरा रामनारायण ना अणवट अंतरजामी रे १४१। **रामाँ**—राम कृष्ण के लिए। उदा० म्हाँरे आज्यो जी रामाँ, थारे आवत आस्याँ सामाँ ११४।

रामा - कृष्ण। उदा० मैं तो तेरी सरण परी रे रामा, ज्यूँ जाणे त्यूँ तार १३३।

रामनाम—दे० 'राम'

रामनारायण—दे० राम'

रामाँ—दे० 'राम'

रामा—दे० 'राम'

राल्—(?) रालैली—डालेगी। उदा० सुणि पावेली बिरहणी रे, थारो रालैली पाँख मरोड़ ८४।

रालैली—दे० 'राल्'

रावर—दे० 'रावल'

रावल—(सं० राज+पुत्र) **रावरी**—आपरा ० तुम मेरे प्रतिपाल कहिये मैं रावरी चेरी ६३। १००, १०७, १३२। **रावल**—आपको। उदा० रावल कुण बिलमाई राखो, बिरहणि है बेहाल ११६। **रावलाँ**—आपकी। उदा० हार्‌या जीवन मरण रावलाँ, कठे जावाँ ब्रजराज ४८। **रावलियारी**—आपकी। उदा० जोगणि होइ जुग ढूंढसूँ रे, म्हारा रावलियारी साथ ११७। **रावली**—आपकी। उदा० मीराँ रे प्रभु दासी रावली, लीज्यो णेक णिहार ४। १३४, १४०। **रावलो**—आपकी। उदा० रावली बिड़द म्हाणे रूड़ो लागाँ, पीड़त म्हारो प्राण १३६।

रावलाँ—दे० 'रावल'

रावलियारी—दे० 'रावल'

रावली—दे० 'रावल'

रावलो—दे० 'रावल'

राषो—दे० 'राख्'

रिख—(सं० ऋषि) ऋषि। उदा० थे रिख पतणी तिरपा पायाँ, बिप्र सुदामाँ बिपत बिड़ारण १३७।

रिझ्—(सं० रंजन)। **रिझावाँ**—रिझाती हैं। उदा० पाँच सख्याँ मिल पीव रिझावाँ, आणँद ठामूँ ठाँम १४४। **रिझाऊँ**—रिझाती हूँ। उदा० रैण दिना वाके सँग खेलूँ, ज्यूँ त्यूँ वाहि रिझाऊँ २०। **रिझावाँ**—रिझाती हूँ। उदा० अधर मधुर धर बंशी बजावाँ, रीझ रिझावाँ, ब्रजनारी जी २। १३। **रिझै**—रीझता है। उदा० जिह जिह विधि रीझै हरी, सोई विधि कीजै, हो १६।

रिझाऊँ—दे० 'रिझ्'

रिझावाँ—दे० 'रिझ्'

रिस सं० रिष) **रिसाय** क्रुद्ध

होकर। उदा० सास लड़ै मेरी नन्द खिजावै, राणा रह्या रिसाय ४२। **रीसाणा** –नाराज़ हुए। उदा० गिरधर रीसाणा कौन गुणा ६०।

रिसाय— दे० 'रिस्'

री—(१) दे० 'रौ'। (२) (१) से। उदा० णन्द जसोदा पुत्र री प्रगट्याँ, प्रभु अविनाशी (यहाँ 'री' संबोधन का चिह्न भी माना जा सकता है) ६। **कबरी**—कबसे, कितनी देर से। उदा० कबरी ठाढ़ी म्हा मग जोवाँ निसदिन बिरह जगावाँ ७८। (३) (सं० आली) संबोधन चिह्न। उदा० पीताम्बर कट उर बैजणताँ, कर सोहाँ री बाँसी। ६ १३, १४, १५, १६, १७, १८, १६, २१, २१, २२, २२, २३, २४, २४, २४, २४, २४, २४, २४, २४, २४, २४, २४, २६, २६, २७, २७, २७, २८, २६, ३६, ३६, ३६, ३६, ४४, ४५, ५४, ६६, ६६, ६७, ७२, ७२, ७२, ७२, ७७, ७७, ७७, ७७, ८५ ८६, ८६, ६०, ६४, १०१, १०२, १०३, १०४, ११७, १२१, १२१, १२१, १२१, १२१, १२८, १२८, १४२, १४४, १४६, १४६, १४६, १४८, १४८, १४८, १४८, १५५, १६७, १६७, १७७, १७७, १७८, १८२, १८४, १६१, १६७, २००, २००, २००, २००, २०१, २०२, **रे**—संबोधन। उदा० झूठा पाट पटंबरा रे, झूठा दिखणी चीर २६।

रीझ्—(सं० रंजन)। **रीझ**— मुग्ध होने का भाव। उदा० अधर मधुर धर वंशी बजावाँ, रीझ रिझावाँ, ब्रजनारी जी २।

रीझै दे० 'रिझ'

रीसाणा—दे० 'रिस्'

रूँम—(सं० रोमन्) रोयाँ। **रूँम-रूँम**— प्रत्येक रोएँ में। उदा० रूँम-रूँम नखसिख लख्याँ, ललल ललचा अकुलाय १३। **रूम**— रोम। उदा० रूम रूम मांता भइ उर में, मिटि गई फेरा फेरी। १४। **रोम**—शरीर के रोएँ। **रोम रोम दी पीर**—पूरे शरीर की पीड़ा। उदा० बाहरि घाव कछू नहिं दीसै, रोम रोम दी पीर १६२।

रु—(?) को। उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर विखरू अम्रित कराँ १८६।

रूठ्—(सं० रुष्ठ)। **रूठ्यो**—रूठ जाएगा। उदा० सीसोद्यो रूठ्यो तो म्हाँरो काँई कर लेसी ३५। ३५। **रूठ्याँ**—रूठ जाएँगे। उदा० हरि रूठ्याँ कुम्हलास्याँ, हो माई ३५। ३६, ३६।

रूठ्यो—दे० 'रूठ्'

रूठ्याँ—दे० 'रूठ्'

रूढ़ो—(सं० रूढ़) अच्छा। उदा० रावलो बिड़द म्हाणे रूढ़ो लागाँ, पीड़त म्हारो प्राण १३६।

रूप—(सं० रूप) सूरत। उदा० थारो रूप देख्याँ अटकी ६। १०, १०, १०, ११, १२, २०, २८, २८, ६१, ६६, ७१, १०६, १४३, १७८, १८१।

रूपाँ—(सं० रूप्य) रूपा, एक प्रकार का धातु जिससे आभूषण आदि बनते हैं। उदा० सोना रूपाँ सूँ काम णा म्हारे, म्हारे हीराँ रो बौपाराँ री २४।

रूम—दे० 'रूँम'

रे—(१)दे० 'रा'। (२) (सं० रे) संबोधन। उदा० मीराँ रे प्रभु दासी रावली लीज्यो णेक णिहार ४ ५ ६ १०

१३, १५, २१, २३, २४, २४, २६, ३०, ३०, ३०, ३०, ३०, ३०, ३१, ३६, ३७, ४०, ४४, ४८, ५०, ५२, ५३, ५६, ५६, ५६, ५६, ५६, ५६, ५६, ५६, ५६, ५६, ५६, ५६, ५६, ५६, ५६, ६४, ६५, ६८, ६६, ७१, ७४, ७७, ८१, ८१, ८१, ८१, ८२, ८२, ८३, ८४, ८४, ८४, ८४, ८४, ८६, ८८, ९०, ९५, १०२, १०२, १०२, १०३, १०५, १०६, १०८, १०६, ११०, ११७, ११७, ११७, ११७, १२१, १२८, १२६, १३१, १३२, १३३, १३७, १३८, १४१, १४१, १४१, १४१, १४१, १४१, १४१, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५, १४७, १४७, १४७, १४७, १४७, १४६, १४६, १५०, १५४, १५६, १५७, १५७, १५७, १५७, १५७, १५७, १५७, १५८, १५८, १६०, १६१, १६६, १६८, १७३, १७३, १७३, १७३, १८५, १८६, १६०, १६४, १६५, १६७, २००, २०१, २०१, २०२, कभी कभी छंद की आवश्यकता के लिए रे (संबोधन) एक ही पंक्ति में संज्ञा और क्रिया दोनों के साथ आने के कारण दो बार आ गया है। उदा० मीराँ रे प्रभु कब रे मिलोगाँ, थे मिल्याँ सुख होय १०२। (३) अधिकरणकारकीय चिन्ह उदा० साँवरी सुरत मण रे वसी ८८।

रेख—(सं० रेखा) रेखा, लाइन, हथेलियों के निशान। उदा० गिणता-गिणता घिस गई रे म्हाँरा आँगलिया री रेख ११७। **रेखा**—उदा० गणताँ गणताँ घिस गयाँ रेखा आँगरियाँ री सारी ७७।

रेखा—दे० 'रेख'

रेजा—(फा० रेजा) छिद्र। उदा० रेजा रेजा भयो करेजा अंदर देखो धँसिके ७। ७।

रेण—(सं० रजनि) रात। उदा० सूनी सेजां व्याल बुझायाँ जागा रेण बितावाँ ७८। **रैण**—रात। उदा० रैण पड़े तब ही उठि जाऊँ, भोर गये उठि आऊँ २०। ४३, ६६, ७४, ८७, ६१, ६६, १०१, १०३, १०७, ११८, १२६। **रैणदिना**—रात दिन। उदा० रैण दिना वाके सँग खेलूँ ज्यूँ त्यूँ वाहि रिझाऊँ २०। **रैणाँ**—रात। उदा० घोर रैणाँ बीजु चमकाँ बार गिणताँ प्रभात ६६। **रैणा**—रात। उदा० आकुल व्याकुल रैणा बिहावा, बिरह कलेजो खाय १०१। **रैणि**—रात। उदा० फूलन सेझ सूल होइ लागी, जागत रैणि बिहावै हो ६२। **रैनाँ**—रात। उदा० हम भई गुलफाम लता, बृन्दाबन रैनाँ १८४।

रैण—दे० 'रेण'

रैणदिना—दे० 'रेण'

रैणा—दे० 'रेण'

रैणाँ—दे० 'रेण'

रैणि—दे० 'रेण'

रैनाँ—दे० 'रेण'

रो¹—दे० 'रा'

रो²—(सं० रोदन)। **रोइ**—रोकर। उदा० काँइ करूँ कित जाऊँरी सजनी नैण गुमायो रोइ ४४। **रोऊँ**—रोती हूँ। उदा० रोऊँ नित टेरी टेरी ६४। **रोय**—रोकर। उदा० प्राण गमायाँ झूरताँ रे, नैण गुमायाँ रोय १०२। **रोवत रोवत**—रोते-रोते। उदा० रोवत-रोवत डोलताँ सब रैण बिहावाँ जी ६६।

रोइ—दे० 'रो'

रोऊँ—दे० 'रो'

रोगी—(सं० रोगी) रोग से पीड़ित। उदा० रोगी अंतर बैद बसत है, बैद ही ओखद जाँणी हो ७३।

रोटी—(?) आटे से बनी हुई रोटी। उदा० माखन रोटी हाथ में लीनी, गउ-वन के रखवारे १६५।

रोप्—(सं० रोपण)। **रोपिया**—बोया। उदा० एकै थाणे रोपिया रे इक आंबो इक बूंल ५९।

रोपिया—दे० 'रोप्'

रोम—दे० 'रूँम'

रोय—दे० 'रो'

रोवत—दे० 'रो'

रोस—(सं० रोश) क्रोध। उदा० बिन देख्याँ कल न पड़ाँ मन रोस णा ठानी हो ८७।

रौ—दे० 'रा'

ल

ल—(सं० लहन)। **लई**—संयुक्त काल (सहायक क्रिया) लिया। उदा० मीराँ को प्रभु राखि लई है, दासी अपणी जाणी ३८। **लह्याँ**—प्राप्त की। उदा० भो-सागर मझधाराँ बूंड्याँ, थारी सरण लह्याँ १३८। १४८, १६४। **लाये**—लाए। उदा० मतवारो बादर आये रे हरि को सनेसो कबहुँ न। **लावाँ**—लाए। उदा० दीखा णाँ कोई परम सनेही, म्हारे सँदेसा लावाँ ७८। **लियाँ**—(१) ले लिया। उदा० थे कह्याँ छाणे म्हाँ काँ चोड्डे, लियाँ बजंता ढोल २२। २०, २२, १६१। (२) लेने से। उदा० तीरथ बरताँ ग्याँण कथंता, कहा लियाँ करवत कासी १६५। **लियो**—लिया (भूत-काल)। उदा० नेह लगाय मेरो हर लीयो रस भरी टेर सुनाय १७९। **लियो**—लिया। उदा० कबहूँ न दान लियो मनमोहन, सदा गोकुल आत जात १७६। **लीजै**—लीजिए। उदा० सजन सुध ज्यूँ जाणे त्यूँ लीजै हो १०७। १६, १२०, १६१, १६६। **लीजो**—लीजिए। उदा० म्हाँरी सुध ज्यूँ जानो ज्यूँ लीजो जी १११। **लीज्यो**—(१) लीजिए। उदा० मीराँ रे प्रभु दासी रावली, लीज्यो णेक णिहार ४। ५०। (२) ली। उदा० मेरो नाम बूझि तुम लीज्यो, मैं हूँ विरह दिवानी १३०। **लीज्यौ**—मीराँ के प्रभु दरसण दीज्यौ, मेरी अरज कान सुँण लीज्यौ १२६। **लीणो**—ले लिया। उदा० कबहूँ न दान लियो मनमोहन, सदा गोकुल आत जात १७६। १७६। **लीण्या**—लिया। उदा० म्हारो मण हर लीण्या रणछोड़ २०७ **लीनो** लिया

उदा० माखन रोटी हाथ मे लीनी, गउ-वन के रखवारे १६५। लीने—लिया। उदा० मीराँ के प्रभु बस कर लीने, सप्त ताननि की फाँसु, री १६७। लीन्हें—लिया। उदा० जूठे फल लीन्हें राम, प्रेम की प्रतीत जाण १८६। लीन्हो—लिया। उदा० मुरली म्हारो मण हर लीन्हो, चित्र धराँ णा धीर १६६। लूँगी—ले लूँगी (भविष्यत्)। उदा० तेरे खातिर जोगण हूँगी, करवत लूँगी कासी ४६। ११७। लेंगो—लूँगा। उदा० केसरी चीर दरयाई को लेंगो, ऊपर अँगिया भारी १७१। ले—(१) लेकर उदा० मीराँ कूँ हरिजन मिल्या रे, ले गया पवन झकोर ५६। ८४, ८६, १५०, १७७, १८५, १८५। (२) लेगा। उदा० थे विण म्हारे कोण खबर ले, गोबरधन गिरधारी १३१। लेऊँ—लेती हूँ। उदा० मुरली कर लकुट लेऊँ पीत वसन धारूँ १८४। लेगयो—ले गया। उदा० आज अनारी ले गयो सारी, बैठी कदम की डारी, हे माय १६६। १६६। लेण—लेने के लिए। उदा० जाग कियाँ बलि लेण इन्द्रासण, जाँयाँ पाताल पराँ १८६। लेत—लेते। उदा० दीन हीन ह्वे छुधा रत से, राम नाम न लेत १५८। लेताँ—लेले। उदा० नाम लेताँ तिरताँ सुण्याँ, जग पाहण पाणी जी १४०। लेलेहु—लेलो। उदा० दधि को नाम बिसरि गयो प्यारी, लेलहु री कोइ स्याम सलोना १७७। लैगो—ले गए। उदा० रथ चढ़ाय गोपाल लैगो, हाथ मींजत रही १८२। ल्यूँ—लूँ। उदा० बिरह की मारी मैं बन डोलूँ प्रान तजूँ करवत ल्यूँ कासी ६५ ल्यो ने लो उदा० कोई स्याम मनोहर ल्यो री, सिर धरैं मटकिया डोलैं १७८।

लई—दे० 'ल'

लकरी—(?) लकड़ी। उदा० काठ लकरी बन परी, काठ घुन खाई ८६।

लकुट—(सं० लकुट्) लाठी। उदा० मुरली कर लकुट लेऊँ, पीत बसन धारूँ १८४।

लख्—(सं० लक्ष्य)। लख—देखकर। उदा० ब्रजलीला लख जण सुख पावाँ, ब्रजबणताँ सुखरासी ६। १७५। लखावाँ—देखती हूँ। उदा० घरि णा आवाँ गेउ लखावाँ, बाण पड़्या लल-चावाँ री १२१। लखि है—देखता है। उदा० जा घट बिरहा सोई लखि है, कै कोइ हरिजन मानै हो ७३। लख्याँ—देखा। उदा० रूँम रूँम नखसिख लख्या ललक ललक अकुलाय १३।

लखावाँ—दे० 'लख्'

लखि—दे० 'लख्'

लख्याँ—दे० 'लख्'

लग्—(सं० लग्न)। लग—लगा। उदा० बहु दिन बीते अजहुँ न आये, लग रही ताला बेली ८०। लगण—प्रेम, स्नेह। उदा० बिसर्याँ णा लगण लगाँ मोर मुगट नटकी ९। १८, १२८, १६१, १६१, १६१, १६१, १६१, १६१, १६१, १६२, २०२। लगत—लगता। उदा० लगन—धुन, प्रेम। उदा० ऐसी लगन लगाइ कहाँ तू जासी ४६। १७४। लगनि—लगन। उदा० चरण कँवल की लगनि लगी नित, बिन दरसण दुख पावै ६७। १०८। लगाँ—(१) लगा, लगी। उदा० बिसरयाँ णा लगण लगाँ मोर मुगट नटकी ६ ९६

संयुक्त क्रिया। उदा० जल बल भई भस्म की ढेरी, अपणे अंग लगाजा ४६। **लगाइ**—लगाकर। उदा० ऐसी लगन लगाइ कहाँ तू जासी ४६। १७७। **लगाई**—लगाकर। उदा० जै तूं लगन लगाई चावै, तौ सीस की आसन कीजै १९१। १९१। **लगाज्यो**—लगा जाओ। उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर बेड़ा पार लगाज्यो जी १२६। १३५। **लगाय**—(१) लगाकर। उदा० प्रभु जी थे कहाँ गया नेहड़ा लगाय ६४। १७६, १७६, (२) लगाए हैं। उदा० मीराँ दासी जनम जनम री थारो नेह लगाय १०१। **लगायाँ**—लगाया। उदा० दाध्या ऊपर लूण लगायाँ, हिवड़ो करवत सारयाँ ८३। **लगायो**—लगाया। उदा० हँस हँस मीराँ कंठ लगायो यो तो म्हाँरे नौसर हार ४०। १८८। **लगावाँ**—लगाऊँगी। उदा० वा बिरियाँ कब होसी म्हारो हँस पिय कंठ लगावाँ ७८। **लगास्यूँ**—लगाऊँगी। उदा० चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ नित उठ दरसण पास्यूँ १५४। १५४ **लगी**—(१) लगी है। उदा० बिरह बुझावण अंतरि आवो, तपन लगी तन माहिं ४४। ६७, १२७, १६७, (२) लगने पर। उदा० लगन लगी की पैंडो ही न्यारो, पाँव धरत तन छीजै १९१। १९१, १९१, **लगी है**—(संयुक्त काल) लगी हुई है। उदा० अष्ट करम की तलब लगी है, दूर करो दुख भार १३५। **लगूँ**—लगती हूँ। उदा० साजनियाँ दुसमण होय बैठ्या सबने लगूँ कड़ी ११८। **लगे**—लगती है। उदा० राणा जी म्हाने या बदनामी लगे मीठी ३३ **लग** लगता है उदा० **वाको** रस नीको लगै रे, वाकी लागै सूल ५६। ५६। **लग्याँ**—लगी। उदा० मीराँ री लगण लग्याँ होणा हो जो हूयाँ १८। **लग्या**—लग गया। उदा० बाण बिरह का लग्या हिये में, भूलूँ न एक घड़ी ११८। **लग्यो**—लगी। उदा० तरकस तीर लग्यो मेरे हियरे, गरक गयो सनकाणी २८। (२) लगी है। उदा० यो तो रंग धत्ताँ लग्यो ए माय ४०। **लागाँ**—लगता है, लगती है। उदा० स्याम बिणा जग खाराँ लागाँ, जगरी बाताँ काँची १९। ६६, ७७। (२) लग गई। उदा० म्हाँ लागाँ लगण सिरि चरण री १२८। **लागा**—लगा (भूतकाल) **बोलण लागा**—बोलने लगा। उदा० आयो साँवण भादवा रे, बोलण लागा मोर ५९। **लागियाँ**—लगी है। उदा० सावण में झड़ लागियाँ, सखि तीजाँ खेलै, हो ११५। **लागी**—लगी। उदा० न्हाय धोय जब पीवण लागी, हो अमर अँचाय ४१, ४१, ४१, ५६, ५६, ७७, ६१, ६१, ६१, ६२, १०८, १८३, १२७, १७३, १९१, १९२, २०१। **लागूँ**—पड़ती हूँ। उदा० घर आवो स्याम मेरे, मैं तो लागूँ पाँय तेरे १०२। **लागे**—लगती। उदा० तेरे कारण सब हम त्यागे, पान पान पै मन नहीं लागे १२६। १५२। **लागै**—लगता। उदा० भोजन भवन भलो नहिं लागै, पिया कारण भई गेली ८०। **लागो**—लगते हो। उदा० थे तो राणा जी म्हाँने इसड़ा लागो ज्यों ब्रच्छन में कैर ३४। (२) लगा। **बोलण लागो**—बोलने लगा। उदा० अबोलणाँ जग बोलण लागो बायाँ री कुसलात ६६ **लाग्याँ** १ लगा

उदा० मण म्हारो लाग्याँ गिरधारी जगरा बील सह्याँ २६। (२) लगता। उदा० मूल ओखद णा लाग्याँ, म्हाणे प्रेम पीड़ा खाय ६०। **लाग्यो है**—लगा है। उदा० कहा करूँ कित जाऊँ मोरी सजनी, लाग्यो है विरह सतावना ८५। **लाय**—लगा-कर। उदा० कलम धरत मेरो कर कंपत है नैन रहे झड़ लाय ७६। **लायाँ**—लगाया। उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, चरण कँवल चित लायाँ १४२। **लाया**—लगा। उदा० विरछराँ जो पात टूट्या, लाया णा फिर डार १६६। **लाये**—लगाए। उदा० (इक) गाजै बाजै पवन मधुरिया, मेहा अति झड़ लाये रे ८१। **लावणा**—लगाना है। उदा० मीराँ दासी दरसण प्यासी, हरि चरणाँ चित लावणा ८५। **लावाँ**—(१) लगाऊँ। उदा० मीराँ रे प्रभु आसा थारी दासी कंठ लावाँ ७१। (१) झपकती हूँ। उदा० णेणाँ म्हाँरा साँवरा राज्याँ, डरताँ पलक णा लावाँ १५। **लावै**—लगाती है। उदा० जड़ी घस लावै ७४। ७४। **ल्याया**—लगाया। उदा० बिरह बिथा ल्याया उर अंतर, थे आस्याँ णा बुझावाँ १०४। **ल्यावाँ**—लगालो। उदा० मीराँ व्याकुल विरहिणी, अपनी कर ल्यावाँ २८। **ल्यो**—लो। उदा० दधि को नाँव बिसर गई ग्वालन 'हरि ल्यो हरिल्यो' बोलै १७८।

लग—दे० 'लग्'

लगण—दे० 'लग्'

लगत—दे० 'लग्'

लगन—दे० 'लग्'

लगनि—दे० 'लग्'

लगाँ—दे० लग

लगा—दे० 'लग्'

लगाइ—दे० 'लग्'

लगाई—दे० 'लग्'

लगाज्यो—दे० 'लग्'

लगाय—दे० 'लग्'

लगायाँ—दे० 'लग्'

लगायो—दे० 'लग्'

लगावाँ—दे० 'लग्'

लगास्यूँ—दे० 'लग्'

लगी—दे० 'लग्'

लगूँ—दे० 'लग्'

लगे—दे० 'लग्'

लगै—दे० 'लग'

लग्याँ—दे० 'लग्'

लग्या—दे० 'लग्'

लग्यो—दे० 'लग्'

लटक्—(सं० लडन) ऊँचे स्थान से लग कर नीचे की ओर लटकने की क्रिया। **लटके**—भूतकाल। उदा० टेढ्याँ कर टेढ़े करि मुरली टेढ्याँ पाग लर लटके १०।

लटके—दे० 'लटक्'

लड़्या—दे० 'लर'

लड़्—(सं० रण्)। **लड़ै**—लड़ती है। उदा० सास लड़ै मेरी नन्द खिजावै, राणा रह्या रिसाय ४२।

लड़ै—दे० 'लड़्'

लता—(सं० लता) वेल। उदा० हम भई गुलफाम लता, वृन्दावन रैनाँ १८४।

लपट्—(हिं० लौ+पट)। **लपट**—लपटकर। उदा० लपट झपट मोरी गागर पटकी, साँवरे सलोने लोने गात १७६। **लपटाणी**—लिपट गई। उदा० सब संतन पर तन मन वारों, चरण कँवल लपटाणी ३८ **लपटास्याँ**

लपटाऊँगी । उदा० चरण कँवल, लपटास्याँ, हो माई ३५ ।

लपट—दे० 'लपट्'

लपटाणी—दे० 'लटट्'

लपटास्याँ—दे० 'लपट्'

लयाँ—दे० 'ल्'

लया—दे० 'ल्'

लर—(दे० 'लड़्') लड़ी । लड़्या—लड़ियाँ । **णेण लड़्या पोवाँ**—नेत्रों से आँसुओं की माला पिरोती हूँ । उदा० विरहण बैठ्याँ रंगमहल माँ, णेण लड़्या पोवाँ ८६ । लर— लड़ी । उदा० टेढ्याँ कर टेढ़े करि मुरली, टेढ्या पाग लर लटके १० ।

लरज्—(फा० लरजा=कंप) । लरजाँ—इत घण गरजाँ उत घण लरजाँ चमकाँ बिज्जु डरायाँ १४२ ।

लरजाँ—दे० 'लरज्'

ललक—(सं० ललन) । ललक ललक—ललच ललच कर, ललचाई नज़रों से । उदा० रूँम-रूँम नखसिख लख्याँ, ललक-ललक अकुलाय १३ । **ललचावाँ**—ललचाती हूँ । उदा० घरि णा आवाँ गेड लखावाँ, नाथ पड़्या ललचावाँ री १२१ ।

ललचावाँ—दे० 'ललक'

ललना—(सं० ललना) प्रिय । उदा० जागो बंसीबारे ललना, जागो मोरे प्यारे १६५ ।

लहर—(सं० लहरी) तरंग । लहर-लहर—धीरे-धीरे । उदा० विरह नागण मोरी काया डसी है, लहर-लहर जिव जावै ७४ । **लहराई**—लहर की तरह तरगित हुई । उदा० कुंडल झलकाँ कपोल अलकाँ लहराइ १२ **लहरि** लहरि—धीरे-धीरे । डस्यो कर मेरो, लहरि हो ६२ ।

लहराई—दे० 'लहर'

लहरि—दे० 'लहर'

लह्याँ—दे० 'ल्'

लाई—दे० 'ल्'

लाऊँ—दे० 'ल्'

लाख—(सं० लक्ष) मी मीराँ में इसका प्रयोग लिए हुआ है । उदा० को है, अपणे काज **लाख**—कई । उदा० बधाया आस्याँ म्हारो

लागाँ—दे० 'लग्'

लागा—दे० 'लग्'

लागियो—दे० 'लग्'

लागी—दे० 'लग्'

लागूं—दे० 'लग्'

लागे—दे० 'लग्'

लागै—दे० 'लग्'

लागो—दे० 'लग्'

लाग्याँ—दे० 'लग'

लाग्यो—दे० 'लग'

लाज—(सं० लज्जा) हार्‌याँ सब लोक लाज १२ । १७, १८, ३५, ६२, ७७, ९१, ९३, १३२, १३८, १४३, १८२ । **लाजाँ**—शर्म लेताँ राम-नाम रे, लोग मरे छै १५७ ।

लाजाँ—दे० 'लाज'

लाय—दे० 'लग'

लाया—दे० लग

लायाँ—दे० 'लग्'
लाया—दे० 'लग्'
लाये—(१) दे० 'ल्' । (२) दे० 'लग्'
लार—(सं० लाला) संबंध । उदा० साधो संगत हरि गुण गास्याँ, और णा म्हारी लार १६७ ।
लाल—(सं० लालक) (१) एक अमूल्य पत्थर जो आभूषण आदि में लगाया जाता है । मीराँ में कृष्ण को अमूल्य बताने के लिए उन्हें रत्न की उपाधि दी गई है । उदा० दासि मीराँ लाल गिरधर, अगम तारण-तरण १ । १५८, १८७ । (२) कृष्ण । उदा० मीराँ दासी अरज कर्याँ छै, म्हारो लाल दयाल ४७ । ६१, ८६, ९० । (३) रंग का नाम । उदा० उड़त गुलाल लाल बादला रो रंग लाल, पिचकाँ उड़ावाँ १४८ । १४८, १७५ । **लालगिरधर**—कृष्ण । उदा० दासी मीराँ लाल गिरधर मिल णा बिछड़्या कोय ४३ । १७३, १८३, १८५, १९६ । **लालजी**—संबोधन । उदा० उठो लालजी भोर भयो है, घर-घर खुले किवारे १६५ । **लालबिहारी**—कृष्ण । उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर मोहन लाल विहारी १७५ । **गिरधारीलाला**—कृष्ण । उदा० म्हाणे चाकर राखाँ जी गिरधारी लाला चाकर राखाँ जी १५४ ।
लालगिरधर—दे० 'लाल'
लालजी—दे० 'लाल'
लालबिहारी—दे० 'लाल'
लावण—दे० 'लग्'
लावाँ—(१) दे० 'ल्' । (२) दे० 'लग्'
लावे—दे० लग
लिख्—सं० लिख — **लिख लिख**—लिख-लिखकर । उदा० जिणरो पियाँ परदेस बस्याँ री लिख-लिख भेज्याँ पाती २३ । १२२, १२२, १२३ **लिखी**—लिखकर । उदा० जतन करो जंतर लिखी बाँधो, ओखद लाऊँ घँसिके ७ । **लिखूँ**—लिखती हूँ । उदा० पतियाँ मैं कैसे लिखूँ, लिख्योरी न जाय ७६ । ८४ । **लिख्यो**—(१) लिखा है । उदा० मैं जाण्यूँ हरि नाहिं नाहिं तजेंगे, करम लिख्यो भलि पोच १८३ । १८८ । (२) **लिख्यो री न जाय**—ए सखी लिखा नहीं जाता ।
लिख—दे० 'लिख्'
लिखी—दे० 'लिख्'
लिखूँ—दे० 'लिख्'
लिख्यो—दे० 'लिख्'
लियाँ—दे० 'ल्'
लिया—दे० 'ल्'
लियो—दे० 'ल्'
लीजे—दे० 'ल्'
लीजो—दे० 'ल्'
लीज्यो—दे० 'ल्'
लीज्यौ—दे० 'ल्'
लीणो—दे० 'ल्'
लीण्या—दे० 'ल्'
लीनी—दे० 'ल्'
लीने—दे० 'ल्'
लीन्हें—दे० 'ल्'
लीन्हो—दे० 'ल'
लीला—(सं० लीला) (१) यशगान । उदा० बिन्द्रावन री कुंज गलिन माँ गोविन्द लीला गास्यूँ १५४ । (२) क्रीड़ा । **गोपीलीला करण**—गोपियों के साथ रास रचाने वाले उदा० हण चरण गोबरधन धार्याँ गरब माघवा

हरण १।

लुभ्—(सं० लुब्ध)। **लुभाऊँ**—लुब्ध होती हूँ। उदा० गिरधर म्हाँरो साँचो प्रीतम देखत रूप लुभाऊँ २०। **लुभाणी**—आकर्षित हुई। उदा० मीराँ प्रभु रे रूप लुभाणी, गिरधर नागर नटके १०। ११, १३०, १४०। **लुभावाँ**—लुभाती हूँ, आकर्षित करती हूँ। उदा० निस दिन जोवाँ बाट छव रूप लुभावाँ ७१। (२) लुब्ध हुई। उदा० तण मण जीवण प्रीतम वार्‌या, थारे रूप लुभावाँ ६६। **लोभाई**—लुब्ध हुई। उदा० नटवर प्रभु भेष धर्‌याँ रूप जग लोभाई, १२।

लुभाऊँ—दे० 'लुभ्'

लुभाणी—दे० 'लुभ्'

लुभावाँ—दे० 'लुभ्'

लूँगी—दे० 'ल्'

लूण—(सं० लवण) नमक। उदा० दाध्या ऊपर लूण लगायाँ, हिवड़ो करवत सार्‌याँ ८३। ८४। **लूण अलूणो**—नमक युक्त अथवा नमक रहित। उदा० लूण अलूणो ही भलो है अपने पियाजी को साग ३६।

लूम—(सं० लूम) **लूम रह्या**—घूम रहा। उदा० भीजे म्हाँरो दाँवन चीर, सावलियो, लूम रह्‌यो रे १२२।

लेगो—दे० 'ल्'

ले—दे० 'ल्'

लेऊँ—दे० 'ल्'

लेगयो—दे० 'ल्'

लेण—दे० 'ल्'

लेत—दे० 'ल्'

लेताँ—दे० 'ल्'

लेलेहू—दे० 'ल्'

लैगो—दे० ल

लोइ ससार के लाग उदा० जाके सम सिधारता है, भला कहै सब लोइ २६।

लोक—(सं० लोकम्) संसार। **तीनू लोक**—तीनों लोक (आकाश, पाताल, पृथ्वी)। उदा० और आसिरो णा म्हारा थे विण तीनूँ लोक मंझार ४। ६, १२, १७, १८, १८, ३५, ३८, ४५, ६१, ९२, १७२। **लोकड़ियाँ**—संसार के लोग। उदा० लेताँ लेताँ राम नाम रे, लोकड़ियाँ तो लाजाँ मरे छै १५७। **लोकण**—लोगों का। उदा० लोकणा सीझ्याँ मन न पतीज्याँ मुखड़ा सबद सुणाज्यो जी १२६। **लोकलाज**—संसार की लाज। उदा० साज सिंगार बाँध पग घुँघर, लोकलाज तज नाची १६। **लोग**—सब व्यक्ति। उदा० मीराँ गिरधर हाथ बिकाणी, लोग कह्‌याँ बिगड़ी १४। ३२, ३६, ७२। **लोगाँ**—लोगों का। उदा० सत संगति मा ग्यान सुणैछी, दुरजन लोगाँ ने दीठी ३३।

लोकड़ियाँ—दे० 'लोक'

लोकणा—दे० 'लोक'

लोकलाज—दे० 'लोक'

लोग—दे० 'लोक'

लोगाँ—दे० 'लोक'

लोचण—(सं० लोचन)। उदा० सुन्दर बदन कमल दल लोचण, बाँका चितवण णेणाँ समाणी ११। **लोचणाँ**—आँखें। उदा० कमल दल लोचणाँ थें नाथ्याँ काल भुजंग १६८। **लोचन**—आँखें। उदा० भौंह कमान बान बाँके लोचन, मारत हियरे कसिके ७।

लोचणाँ—दे० 'लोचण'

लोचन—दे० 'लोचण'

लोना (हि० लोन) लवण युक्त (अधिक सुन्दर मीठ स मन की तृप्ति जल्दी हो

जाती है यही कारण है कि किसी ऐसे व्यक्ति के सौन्दर्य को 'लोना' कहा जाता है जिसको बार बार देखते रहने का ही मन करे, अर्थात् जिसमें जल्दी मन न भरे। **सलोना**—सुंदर। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, सुन्दर सुघर सलोना ११७। १७६ **लोने**—लावण्य युक्त। उदा० लपट झपट मोरी गागर पटकी, साँवरे सलोने लोने गात १७६।

लोने—दे० 'लोना'

लोभ—(सं० लोभ) लालच। उदा० काम कूकर लोभ डोरी, बाँधि मोहिं चण्डाल १५८। १९८। **लोभाँ**—लोभ में। उदा० णेणाँ लोभाँ अटकाँ शक्याँ णा फिर आय १३।

लोभाँ—दे० 'लोभ'

लोभाई—दे० 'लुभ्'

ल्याया—दे० 'लग्'

ल्यावाँ—दे० 'लग्'

ल्यूँ—दे० 'ल्'

ल्यो—दे० 'ल्'

व

वंशी—(सं० वंशी) मुंह से बजायाँ जाने वाला एक प्रकार का बाजा, बाँसुरी, मुरली। उदा० अधर मधुर धर वंशी बजावाँ, रीझ रिझावाँ, ब्रजनारी जी २। ११।

वण—(सं० वन) जंगल। **वन वन**—हर स्थान पर। उदा० दीरघ नेण मिरघ कूं देखाँ, वण वण फिरताँ माराँ १९०। **वणराइ**—पेड़ों का समूह। उदा० वैसाख वणराइ फूलवै, कोइल कुरलीजै हो ११५।

वणराइ—दे० 'वण'

वपु—(सं० वपुस) शरीर। उदा० हय को वपु धरि दैत सधार्‍यो सार्‍यो देवन को काज १३२।

वर—(सं० वर) (१) वह व्यक्ति जो श्रेष्ठ हो, पति। उदा० वर हीणो अपणों भलो है, कोढ़ी कुष्टी कोइ २६। ३६। (२) वरदान। उदा० राणा भेज्या बिखरो प्यालो, थे इमरत वर दीज्यो जी ५०। १४०।

वरण—(सं० वर्ण)। **वरणाँ**—रंग। उदा० उजलो वरण बागलाँ पावाँ, कोमल वरणाँ काराँ १९०।

वर्—(सं० वरण) **वर्‍याँ**—वैरी हो गया। उदा० सगाँ सनेहाँ म्हारे णाँ क्याँई वर्‍याँ सकल जहाण १३६।

वर्‍याँ—दे० 'वर्'

वह्—(सं० वह)। **वह**—बहता है। उदा० बहता वहैजी उतावला रे, वे तो झटक बतावे छेह ५९।

वहै—दे० 'वह्'

वाँ—(सं० कल्पित रूप अव) उस (सार्वनामिक विशेषण)। उदा० वाँ झरमिट माँ मिल्यो साँवरो, देख्याँ तण मण राती २३। **वाँकी**—उसकी। उदा० म्हाँरी अंगुली ना छुवे, वाँकी बहियाँ मोरे, हो १८१। **वाँको**—उसका। उदा० म्हाँरो अचरा ना छुवे वाँको घूँघट खोले, हो १८१। **वा**—वह (सार्वनामिक विशेषण)। उदा० वा बिरिया कब होसी म्हारो हँस पिय कंठ लगाँवाँ ७८। ११६, १६१, १६३। **वाकी**—उसकी। उदा० वाकौ रस नीकौ लगै रे, वाकी लागै मूल ५६। **वाकूँ**—उससे। उदा० जाय वाकूँ ऐसे कहियो मीराँ तो तिहारी हैं १७४। **वाके**—उसके। उदा० रैण दिना वाके सँग खेलूँ ज्यूँ त्यूँ वाहि रिझाऊँ २०। **वाको**—उसको। उदा० हौं तो वाको नीको जाणो, कुंज को बिहारी हैं १७४। **वाकौ**—उसका। उदा० वाकौ रस नीको लगै रे, वाकी लागै मूल ५६। **वाहि**—उसे ही, उसको ही (बलात्मक)। उदा० रैणदिना वाके सँग खेलूँ, ज्यूँ त्यूँ वाहि रिझाऊँ २०। **वाही**—उसीको (बलात्मक)। उदा० चालाँ वाही देस प्रीतम, पावाँ चालाँ वाही देस १९३।

वाँकी—दे० 'वाँ'

वाँके—दे० 'वाँ'

वाँको—दे० 'वाँ'

वा—दे० 'वाँ'

वाकी—दे० 'वाँ'

वाकूँ—दे० 'वाँ'

वाके—दे० 'वाँ'

वाको—दे० 'वाँ'

वाकौ—दे० वाँ

वाज्यो—दे० 'बज्'

वाण—(सं० बाण) तीर। उदा० वाण विरह का लाग्या हिये में, भूलूँ न एक घड़ी ११८।

वाणि—दे० 'वाणी'

वाणी—(सं० वाणी) मुँह से निकले हुए वचन अथवा बोल। **वाणि**—वाणी। उदा० पपइया रे पिव की वाणि न बोल ८४। **वाणी**—उदा० जमणा किणारे कान्हा धेनु चराताँ, बंशी बजाताँ मीठा वाणी ११। ८७।

वार—(सं० द्वार) दरवाजा। उदा० वार निहारूँ पंथ बाहूरूँ, ज्यूँ गुण पावैं चित १२५।

वार्—(सं० वार्) **वारणैं**—न्यौछावर। उदा० तन मन धन करि वारणैं, हिरदे धरि लीजै, हो। १६। **वाराँ**—न्यौछावर करती हूँ। उदा० तन मन धन गिरधर पर वाराँ, चरण कँवल मीराँ विलमाणी ११। (२) न्यौछावर किया। उदा० तण वाराँ म्हाँ जोवण वाराँ, वाराँ अमोलक मोल २२। ९३। **वारियाँ**—न्यौछावर किया। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, इन जुलफन पर वारियाँ १६२। **वारी**—(१) न्यौछावर। **तण मण डाराँ वारी**—तन मन न्यौछावर कर दिया। उदा० मोती चौक पुरावाँ णेणाँ, तण मण डाराँ वारी ५१। (२) न्यौछावर हुई। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल पर वारी १३१। **वारूँ**—न्यौछावर करूँ। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, ज्यों वारूँ सोही थोरा, रे १४७। **वारों**—न्यौछावर किया। उदा० सब संतन पर तन मन वारों चरण कँवल लपटाणी ३८

वार्‍यां - न्यौछावर किया। उदा० तण मण वार्‍यां हरि चरण माँ दरसण अमरित प्यास्यां री ३६ । ७१। **वार्‍या**—न्यौछावर किया। उदा० तण मण जीवण प्रीतम वार्‍या, थारे रूप लुभावाँ ६६।

वारणै—दे० 'वार्'

वाराँ—दे० 'वार्'

वारि—(सं० वारी) चारो ओर। लगन लगीं जैसे पतंग दीप से, वारि फेर तन दीजै १६१।

वारियाँ—दे० 'वार्'

वारूँ—दे० 'वार्'

वारो—दे० 'वार'

वारो—दे० 'वार्'

वारो—(?) वाला। **बड़ी बड़ी अँखियन वारो**—बड़ी-बड़ी आँखों वाला। उदा० हे मा बड़ी-बड़ी अँखियन वारो, साँवरो मो तन हेरत हँसिके ७।

वार्‍याँ—दे० 'वार्'

वासो—(सं० वास) वास स्थान, रहने की जगह। उदा० सासर वासो सजीने बैठी, हवे नथी कँई काँचूँ रे १४१।

वाहला—(सं० वहन)। उदा० ज्यूँ डूगर का वाहला रे, यूँ ओछा तणा सनेह ५६।

वाहि—दे० 'वाँ'

वाही—दे० 'वाँ'

विणि—दे० 'विण'

विरह—(सं० विरह) किसी से अलगाव होने का भाव, किसी के अलगाव को अनुभव करने का भाव। उदा० पलक पलक मोहि जुग से बीतै, छिनि-छिनि विरह जरावै हो ९२। १०१, १०२, १०४, १०८, १५५। **विरहण**—विरहिणी उदा० विरहण बैठ्याँ रग महल माँ, णेणा लड़्या पोवाँ ८६। ११९। **विरहणि**—विरहिणी। उदा० रावल कुण विलमाइ राखो, विरहणि है बेहाल ११६। १५०। **विरहानल**—विरह की अग्नि। उदा० तलफ-तलफ कल णा पड़ाँ विरहानल लागी ९१। **विरहिणी**—वियोगिनी। उदा० मीराँ व्याकुल विरहिणी अपनी कर ल्यावाँ २८। १५०

विरहण—दे० 'विरह'

विरहणि—दे० 'विरह'

विरहानल—दे० 'वरह'

विरहिणी—दे० 'विरह'

विराज्—(सं० विराज्)। **विराज**—विराजमान। **राख्यूं विराज**—विराजमान रखूं। उदा० नेण बिछास्यूँ हिवड़ो डास्यूँ सर पर राख्यूँ विराज १०९।

विराज—दे० 'विराज्'

विराणै—(फ़ा० विरान) बिराने, दूसरे अनजाने। उदा० देखि विराणी निवाँण कूँ है, क्यूँ उपजावै खीज २६। **विराणो**—दूसरे का। उदा० छैल विराणो लाख को है, अपणे काज न होइ २६।

विराणो—दे० 'विराणै'

विरुद—(सं० विरुद्ध) विरुद्ध। उदा० थारो कोल विरुद जग थारो, थे काँइ बिसर गयाँ ५२।

विलमा—(सं० विलंब)। **विलमाणी**—प्रेम के कारण रुकी। उदा० तन मन धन गिरधर पर वाराँ, चरण कँवल मीराँ विलमाणी ११।

विशाल—(सं० विशाल) बड़ी। उदा० मोहण मूरत साँवराँ सूरत णेणा बण्या विशाल ३।

विष (सं० विष) जहर उदा० राणा

विषरो प्याला भेज्याँ, पीय मगण हूयाँ १८। **विषाँ**—ज़हर। उदा० इमरत पाइ विषाँ क्यूँ दीज्याँ, कूँण गाँव री रीत ५६।

विषया—(सं० विषय) विषयों का भोग करने वाली इन्द्रियाँ। उदा० बिलार विषया लालची रे, ताहि भोजन देत १५८।

विषाँ—दे० 'विष'

विस्वास—(सं० विश्वास)। **विस्वास सँगाती**—ऐसा साथी जिस पर विश्वास किया जा सके। उदा० छोड्या म्हाँ विस्वास सँगाती, प्रेम री बाती जलाय ६४।

विहा—(सं० विहान)। **विहाणी**—बीत गई। उदा० पिय री पंथ निहारत सब रैण विहाणी हो ८७।

विहारी—(सं० विहार) बिहार करने वाले। उदा० हौं तो बाको नीको जाणो, कुँज को बिहारी हैं १७४।

वृन्दाबन—(सं० वृन्दावन) मथुरा जिले में स्थित एक प्राचीन तीर्थ। उदा० वृन्दावन की कुंज गलिन में, आँख लगाइ गयो मनमोहना १७७।

वे—(सं० कल्पित रूप अद) सर्वनाम अन्य पुरुष, बहु वचन। उदा० बहता बहैजो उतावला रे, वे तो भटक बताये छेह ५९। **वो**—वह। उदा० अपणे करम को वो छै दोस, काकूँ दीजै रे १८३।

वेग—(सं० वेग) शीघ्र। उदा० भौ सागर म्हाँ बूड्या चाहाँ स्याम वेग सुध लीज्यो जी ५०। **वेगि**—शीघ्र। उदा० मगसर ठंड बहोंती पड़ै, मोहि वेगि सम्हालो, हो ११५।

वेगि—दे० 'वेग'

वेद—(सं० वेद) भारतीय आर्यों के प्राचीनतम धार्मिक तथा आध्यात्मिक ग्रंथ जिनकी संख्या चार है। उदा० बिरद बखाणाँ गणताँ णा जाणा, थाकाँ वेद पुराण १३४। १८६।

वेदन—(सं० वेदना) वेदना, पीड़ा। उदा० अंतर वेदन बिरह री म्हारी पीड़ णा जाणी हो ८७।

वैदा—(सं० वैद्य) वैद्य। उदा० वैदा मरण ण जाणाँ री म्हारो हिवड़ो करकाँ जाय ७२।

वैर—(सं० वैर) दुश्मनी। उदा० पपइया म्हारो कब रो वैर चितार्‌याँ ८३। **वैरण**—शत्रु। उदा० सखाँरी लाज वैरण भई १८२।

वैरण—दे० 'वैर'

वैराग—(सं० वैराग्य) विरक्ति। उदा० दास मीराँ लाल गिरधर सहज कर वैराग १५८।

वो—दे० 'वौ'

वौहो—(सं० बहु) बहुत। उदा० बरस्या वौहो दिन भया वल बरस्याँ पलक न जाइ ११६।

व्याकुल—दे० 'अकुल'

व्याकुली—दे० 'अकुल'

व्याप्—(सं० व्याप्त)। **व्यापी**—फैल गई। उदा० तनह में व्यापी पीर, मन मतवारी हैं १७४।

व्याल—(सं० व्याल) सर्प, साँप। उदा० गायाँ गायाँ हरि गुण निसदिन, काल व्याल री बाँची १९। ७८, १९४।

श

शक्—(सं० शक्) । **शक्यां**—सका । उदा० णैणां लोभां अटक्यां शक्यां णा फिर आय १३ ।

शक्यां—दे० 'शक्'

शरण—(सं० शरण) आसरे । **शरणां**—शरण में । उदा० गिरधारी शरणां थारी आयां, राख्यां किर्पानिधान १३४ । **सरण**—शरण । उदा० मैं तो तेरी सरण परी रे रामा, ज्यूं जाणो त्यूं तार १३३ । १, १, ६, २६, ३५, ४८, ५१, ६२, ६२, ६३, ७७, १०४, १३३, १३८, १६५, १६४ । **सरणां**—शरण में । उदा० मीरां रे प्रभु गिरधर नागर, थारी सरणां आस्यां री ३६ । ४७, १५६ । **सरणा**—शरण में । उदा० मीरां रे प्रभु गिरधर नागर, आस गह्यां थे सरणा री १२८ । **सरणागत**—शरण में आए हुए । उदा० तुम सरणागत परमदयाला, भवजल तार मुरारी ११३ । १४२ । **सरणि**—शरण में । उदा० मीरां कूं सरणि लीजै बलि बलिहारियै १२० । **सरणे**—शरण में । उदा० मीरां तो सतगुर जी सरणे, हरि चरणां चित दीजो जी १११ । १८७ ।

शामल—(सं० श्याम) **शामलो**—सांवले रंग की । उदा० मीरां के प्रभु गिरधर नागर शामलो सुन्त शुभ एमनी रे १७३ । **श्याम**—कृष्ण । उदा० श्याम बिणा जग खारां लागां, जगरी बातां कांची १६ । **सांवरां**—सांवरे रंग की । उदा० मोहण मूरत सांवरां सूरत णेणा बण्या विशाल ३ । ५१ । **सांवरा**—(१) सांवला वर्ण । उदा० थांणे कांई कांई बोल सुणावा म्हारां सांवरां गिरधारी ५१ । १५० । (२) कृष्ण । उदा० णेणा वणज बसावां री, म्हारा सांवरा आवां १५ । १५, १६० । **सांवरिया**—कृष्ण । उदा० सांवरिया रो दरसण पास्यूं पहण कुसुम्बी सारी १५४ । **सांवरियो**—प्रियतम, कृष्ण । उदा० सांवरियो रंग राचां गणा, सांवरियो रंग राचां ३७ । ३७ । **सांवरो**—सांवली । उदा० सांवरी सूरत आन मिलावो, ठाढ़ी रहूँ मैं हँसिके ७ । ८८, १७२ । **सांवरे**—(१) सांवले रंग के । उदा० मीरां रे प्रभु सांवरे रे, थे बिण देह अदेह १०५ । १७६ । (२) कृष्ण । उदा० माई सांवरे रंग राची १६ । **सांवरो**—(१) कृष्ण । उदा० सांवरो उमरण सांवरो सुमरण, सांवरो रूप धरां री २१ । ७, १४, २१, २१, २३, २८, २८, ७०, ७२, १२६, १७४, १७५, १६३, १६४, २००, २००, २०१ । (२) सांवला रंग । उदा० सांवरो नंदनंदन दीठ पड्यां माई १२ । १८१ ।

साँवलिया—साँवरिया। उदा० मीराँ तो अब प्रेम दीवाँणी, साँवलिया बर पाणा ३६। **स्याम**—श्याम (कृष्ण) उदा० म्हारो मण मगण स्याम लोक कह्यौं भटकी ६। १५, १६, १७, १६, २८, २८, २६, ३१, ३५, ३७, ५०, ५१, ६६, ६८, ६६, ७७, ८०, ८२, ८८, ६०, ६०, ६१, ६१, ६३, ६३, ६४, १०८, १२०, १२०, १२३, १२४, १२६, १३८, १३६, १३६, १४४, १४४, १४७, १४८, १५६, १६६, १६६, १७७, १७७, १७७, १८१, १८१, १६५, २००, २०१। **स्याम मनोहर**—कृष्ण। उदा० मीराँ के प्रभु स्याम मनोहर प्रेम पियारा मीत ५७। **स्यामाँ**—श्याम को। उदा० मीराँ के मन अवर न माने चाहे सुंदर स्यामाँ ११४। **स्यामा**—राधिका। उदा० छैल छबीले नवल कान्ह सँग स्यामा प्राण पियारी।

शामली—दे० 'शामल'

शिद—(?) क्यों। उदा० चित्त माला चतुरभुज चुड़लो, शिद सोनी घरे जईये रे १८१।

शुण्—(सं० श्रवण)। **शुण्या**—सुना है। उदा० आजु शुण्या हरि आवाँ री मण भावाँ री १२१।

शुण्या—दे० 'शुण्'

शुभ—(सं० शुभ) मंगल, अच्छा। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, शामली सुरत शुभ एमनी, रे १७३।

शोभा—(सं० शोभा) छवि, सुन्दरता। उदा० मोर मुगट पीतांबर शोभा, कुंडल री छब न्यारी १३१।

श्याम—दे० 'शामल'

श्रवण—(सं० श्रवण) कान से। उदा० या जग में कोई नहिं अपणा, सुणियो श्रवण मुरार १३३। १६७, १८४।

श्रीलाल—(सं० श्री + लाल) प्यार और आदर से युक्त संबोधन। उदा० श्रीलाल गोपाल के सँग, काहे नाही गई १८२।

ष

षंभण—(?) आधार। उदा० प्रीत निभावण दल के षंभण, ते कोई बिरला सूर ५६।

षाजे—दे० 'खा'

षाण—दे० 'खा'

षिण सं० क्षण क्षण में उदा० षिण ताता षिण सीतला रे, षिण वैरी षिण मित ५६।

षीर—(सं० क्षीर) खीर, दूध में पकाया हुआ चावल। उदा० षीर न षाजे आरो रे मूरख जीजे मित ५६।

स

सँग—(सं० संग) साथ। उदा० रैणदिना वाके सँग खेलूँ, ज्यूँ त्यूँ वाहि रिझाऊँ २०। २६, २६, ३०, ३०, ५५, ८०, १४८, १६१, १६१, १७५, १७५, १८२, १८४। **संगत**—साथ। उदा० गयाँ कुमत लयाँ संगत, स्याम प्रीत जग माँची १६। २६, ३०, १५६, १५६, १६७। **संगति**—साथ। उदा० सत संगति मा ग्यान सुणैछी, दुरजन लोगाँ ने दीठी।

सँदेसाँ—(सं० संदेश) संदेश। उदा० दीखा णाँ कोई परम सनेही, म्हारे सँदेसाँ लावाँ ८८। **सनेसड़ा**—संदेश। उदा० प्रीतम दिया सनेसड़ा, म्हारो घणो णेवाजाँ, हो १५०। **सनेसो**—संदेश। उदा० मतवारो बादर आए रे हरि को सनेसो कबहुँ न लाये रे ८१। **सन्नेस**—संदेश। उदा० म्हारा बिछड़्या फेर न मिल्या भेज्या णा एक सन्नेस ६८।

सँवार—(सं० सँवार) **सँवारण**—सँवारने वाला। उदा० पाँवड़ाँ म्हारो भाग सँवारण, जगत उधारण काज १०९। **सवाँर्‌या**—लगाया। उदा० सेज सवाँर्‌या पिय घर आस्याँ सख्याँ मंगल गास्यो १४९। **सवारियाँ**—सजाई। उदा० सुघर कान प्रवीण हाथन सूँ, जसुमति जू णे सवारियाँ १९२। **साँवरया** बनाया। उदा० भगत जणारो काज साँवरया, म्हारा प्रभु रणछोर २०२।

साँवारण—दे० 'सँवार'।

संकट—(सं० संकट) मुसीबत का समय। उदा० संकट मेट्या भगत जणाराँ, थाप्या पुन्न रा पाज १०९।

संकर—(सं० शंकर) मंगल करने वाला, शिव जी। उदा० जोगियो चतुर सुजाण सजणी, ध्यावै संकर सेस ११७।

संगत—दे० 'संग'

संगति—दे० 'संग'

संघार्—(सं० संहार)। **संघारा**—कष्ट दिया करते हैं। उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, राणाँ भगत संघाराँ १६०। **संघार्‌यो**—नाश किया। उदा० हयको वपु धरि दैत संघार्‌यो सार्‌यो देवन को काज १३२।

संघारा—दे० 'संघार्'

संघार्‌यो—दे० 'संघार्'

संजो—(सं० सज्जा)। **सँजोय**—संजोती है। उदा० घायल री गति घायल जाण्याँ, हिवड़ो अगण सँजोय ७०।

संत—(सं० संत) सज्जन। उदा० साधा संत रो संग, ग्याण जुगताँ कराँ ११३। **संतन**—संत का बहु वचन। उदा० सब संतन पर तन मन वाराँ, चरण कँवल लपटाणी ३८। ८५ **सं**[illegible] [illegible]।

उदा० मीराँ प्रभु सताँ सुखदायाँ, भक्त वछल गोपाल ३ । संतों—साधुओं । उदा० अडसठ तीरथ संतों ने चरणों, कोटि कासी ने कोटि गंग रे ३० । १३६ । संतोनी—संतों की । उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, संतोनी रज म्हाँरे अग रे ३० । सणत—संत । उदा० अवर अधम बहुता थें तारयाँ, भाख्या सणत सुजाण १३४ ।

संतन—दे० 'संत'

संताँ—दे० 'संत'

संतो—दे० 'संत'

संतोनी—दे० 'संत'

संदेस—(सं० संदेश) संदेश । उदा० लिख लिख पतियाँ संदेसा भेजूं कब घर आवै म्हाँरो पीव १२२ ।

सनेह—(सं० स्नेह) प्यार, प्रेमानुभूति । उदा० ज्यूँ डूगर का बाहला रे, यूँ ओछा तण संनेह ५६ । सनेह—स्नेह । उदा० प्रीतम दिया सनेसड़ा म्हारो घणो णेवाजाँ, हो १५० । सनेहाँ—स्नेह । सगाँ सनेहाँ म्हारे णाँ क्याँई बस्या सकल जहान १३६ । सनेही—स्नेही । उदा० परम सनेही राम की नीति ओलूँरी आवै ६७ ।

ससा—(सं० संशय) भ्रम, आशंका । उदा० या भव में मैं बहु दुख पायो, ससा भोग निवार १३५ ।

संसार—(सं० ससार) सृष्टि, जगत । उदा० थें विण म्हाणे जग णा सुहावाँ, निरख्याँ सब संसार ४ । ३१, ६३, १२७, १३५, १५६, १५८, १६५ ।

सइयाँ—(सं० स्वामी) प्रियतम । उदा० सइयाँ, तुम विणि नींद न आवै हो ६२ ।

सकल—(सं० सकल) सब । उदा० कुल कुटम्ब सजण सकल वार बार हटकी ९ १३, १८, १३४, १३६ ।

सकारे—(सं० सकाल) प्रातः । उदा० चरणाम्रित गो नेम सकारे, नित उठ दरसण जास्याँ ३१ ।

सखयाँ—दे० 'सखि'

सखि—(सं० सखी) सहेली । सखयाँ—सखियाँ । उदा० सेज सवाँर्‌या पिय घर आस्याँ सखयाँ मंगल गास्यो १४९ । सखि—उदा० सखि म्हाँरो सामरियाँ णे, देखवाँ कराँ री २१ । ६६, ११५ । सखियन—सखियाँ । उदा० सखियन सब मिल सीख दयाँ मण एक न मानी हो ८७ । सखियाँ—सखियाँ (बहु वचन) उदा० सखिया मिलि दोय च्यारी, बावरी भई हैं सारी १७४ । सखी—सहेली । उदा० आव सखी मुख देखिये, नैणाँ रस पीजै, हो १६ । २३, ७४, ८५, ८७, ९१, ११२, १६४, १६६, १८२ ।

सगाँ—(सं० स्वक) अपना, सगा । उदा० भागा छाँड्‌याँ, बन्धा छाँड्‌याँ, छाँड्‌याँ सगाँ सूयाँ १८ । १३६ ।

सजण—(सं० स्वजन) अपने लोग, मीराँ में कृष्ण के लिए प्रियतम के अर्थ में आया है । उदा० कुल कुटम्ब सजण सकल बार बार हटकी ९ । १०७ । सजणी—सखी । उदा० थाग जोवाँ दिण बीताँ सजणी, णैण पड्‌या दुखरासी ४५ । ३५, ८५, ८८, ९२, ११०, ११६, १४३, १५५, १५६, १७२, १९४, २०१ । सजनियाँ—प्रियतम । उदा० आव सजनियाँ बाट में जोऊँ, तेरे कारण रैण न सोऊँ १२६ । सजनी—सखी । उदा० काँई करूँ कित जाऊँ री सजनी नैण गुमायो रोइ ४४ ५३ ५४ ५७ ७४

७४, ११७, १७२। **साजण**—स्वजन, अपने लोग। उदा० सुन्दर बदन जोवताँ साजण, थारी छबि बलिहारी ५१, १५०, २०१। **साजन**—सज्जन। उदा० तुम बिण साजन कोइ नहीं है, डिगी नाव समँद अड़ी ११८। **साजनियाँ**—अपने लोग। उदा० साजनियाँ दुसमण होय बैठ्या सबने लगूँ कड़ी ११८।

सजणी—दे० 'सजण'

सजनी—दे० 'सजण'

सजा—(फ़ा० सज़ा)। (१) **सजावाँ**—सजाती हूँ। उदा० स्याम मिलण सिंगार सजावाँ सुखरी सेज बिछावाँ १५। (२) सुशोभित होंगे। उदा० दीपाँ चोक पुरावाँ हेली पिया परदेस सजावाँ ७८। **सजीने**—सज धज कर। उदा० सासर वासो सजीने बैठी, हवे नथी कइ काँचू **साजाँ**—(१) सुसज्जित है। उदा० रतण कराँ नेवछावराँ, ले आरत साजाँ, हो १५०। (२) सजाती हूँ। उदा० रतण कराँ नेवछावराँ, ले आरत साजाँ, हो १५०। (३) सजते हैं। उदा० साजाँ सोल सिंगार, सोणारो राखडाँ १९३। (४) सजाया था। उदा० साजाँ सिंगार सुहाणा सजणी, प्रीतम मिल्याँ धाय २०१। **साजि** सजाकर। उदा० कठिन क्रूर अक्रूर आयो, साजि रथ कहँ नई १८२।

सजीने—दे० 'सजा'

सणत—दे० 'संत'

सणमुख—(सं० सम्मुख) सामने। उदा० राजभोग आरोग्याँ गिरधर, सणमुख राखाँ थाल ४७। **सनमुख**—सम्मुख, सामने। उदा० लगण लगाई जैसे मिरघे नाद से सनमुख होय सिर दीजै १९१

सत—(सं० सत्) अच्छी। उदा० सत संगति मा ग्यान सुणैछी, दुरजन लोगाँ ने दीठी ३३। **सतगुर**—सच्चे गुरु, कृष्ण। उदा० मीराँ तो सतगुरु जी सरणे, हरि चरणाँ चित दीजो १११। **सतबादी**—सत्यवादी, सच बोलने वाला। उदा० सतबादी हरिचंदा राजा, डोर घर णीराँ भराँ १८९। **सतसंग**—अच्छी संगत। उदा० तज कुसंग सतसंग बैठ नित, हरि चरचा सुण लीजै १९९।

सतगुर—दे० 'सत'

सतबादी—दे० 'सत'

सतसंग—दे० 'सत'

सता—(सं० संताप)। **सतावना**—सताने। उदा० कहा करूँ कित जाऊँ मोरी सजनी लाग्यो है बिरह सतावना ८५। **सतावाँ**—सताती है। उदा० धाम ण भावाँ नींद ण आवाँ, बिरह सतावाँ मोय १०२। **सतावे**—सताती है। उदा० नींद न आवे बिरह सतावे, प्रेम की आँच ढुलावै ७४। **सतास्याँ**—सताऊँगी। उदा० चोरी न करस्याँ जिव न सतास्याँ, काँई करसी म्हाँरो कोई २५।

सतावना—दे० 'सता'

सतावाँ—दे० 'सता'

सतावे—दे० 'सता'

सतास्याँ—दे० 'सता'

सदकै—(अ० सद्क़:) न्यौछावर। उदा० जन मीराँ गिरधर के ऊपर, सदकै करूँ सरीर १९२।

सदन—(सं० सदन) घर में। उदा० सदन सरोज बदन की सोभा, ऊभी जोऊँ कपोल ५८।

सदा—(सं० सर्वदा) हमेशा। उदा० मीराँ के प्रभु सदा सहाई राखे बिघन

हटाय ४१ ।

सनकाणी—(सं० शंक > सनक + आणी) पागलपन । उदा० तरकस तीर लग्यो मेरे हियरे, गरक गयो सनकाणी ३८ ।

सनमुख—दे० 'सणमुख'

सनेसड़ा—दे० 'संदेसाँ'

सनेसो—दे० 'संदेसाँ'

सन्नेस—दे० 'सँदेसाँ'

सप्त—(सं० सप्त) सात । उदा० मीराँ के प्रभु बस कर लीने, सप्त तालनि की फाँसुरी १६७ ।

सब - (सं० सर्व) समस्त, सारा । उदा० थें विण म्हाणे जग णा सुहावाँ, निरख्याँ सब ससार ४ । १२, १३, २६, २६, २८, ३२, ३२, ३२, ३४, ३४, ३८, ५२, ७३, ७३, ७७, ८०, ८६, ८७, ८७, ८९, ९४, ९६, १०३, ११२, ११२, ११३, ११५, ११९, १२६, १३२, १३५, १५२, १६५ । **सबको**— सब लोगों का । उदा० विपत पड्याँ कोइ निकटि ण आवै सुख में सबको सीर १९२ । **सबन पँ**—सब पर । उदा० भरि भरि मुठि गुलाल लाल चहूँ, देत सबन पें डारी १७५ । **सबने**—सबको । उदा० साजनियाँ दुसमण होय बैठ्या सबने लगूँ कड़ी ११८ । **सबही**— सभी, सारे । उदा० दरद दिवाणी भई बावरी, डोली सब ही देस ९७ ।

सबको— दे० 'सब'

सबद—(सं० शब्द) मीठे शब्द, मीठे वचन । उदा० दादुर मोर पपीहा बोलै, कोयल सबद सुणावै ७४ । ८१, ८४, ९२, १२०, १२९, १४२, १४९, १६० ।

सबदा-- शब्द । उदा० सबदाँ सुणताँ मेरी छतियाँ काँपाँ मीठो थारो बैण १०३ ।

सबदाँ - दे० 'सबद'

सबन पँ—दे० 'सब'

सबने—दे० 'सब'

सबही—दे० 'सब'

समँद—(सं० समुद्र) समुद्र । उदा० बिरह समँद में छोड़ गया छो, नेह री नाव चलाय ६४ । ११८ । **समुंद**— समुद्र । उदा० नद्याँ नद्याँ निरमल धाराँ, समुंद कर्‌याँ जल खार्‌याँ जल खाराँ १९० । १९६ ।

सभाँ—(सं० सभा) सभा, समारोह । उदा० भरी सभाँ मा द्रुपद सुताँ री राख्या लाज मुरारी १३१ ।

समा—(सं० समय) । **समाणी**—समा गई, रम गई । उदा० सुन्दर बदन कमल दल लोचन, बाँको चितवन णेणा समाणी ११ । **समात** - समाता । उदा० आपहि आप पुजाय के रे, फूले अंग न समात १५८ ।

समाणी—दे० 'समा'

समात—दे० 'समा'

समुंद—दे० 'समँद'

सम्हाल्—(सं० संभार) । **सम्हालो**— रक्षा करो । उदा० मगसर ठंड बहोती पड़ै, मोहि बेगि सम्हालो, हो ११५ ।

सम्हालो—दे० 'सम्हाल्'

सर—(सं० शरस) सिर, शीश । उदा० नेण बिछास्यूँ हिवड़ो डास्यूँ, सर पर राख्यूँ बिराज १०१ । **सरताज**— मालिक । उदा० म्हा अबला बल म्हारो गिरधर, थें म्हारो सरताज ४८ । **सिर**— मुँह का वह ऊपरी भाग जहाँ बाल उगते हैं । उदा० रतण आभरण भूखण छाड्‌याँ, खोर कियाँ सिर केस ६८ । १५८, १७७, १७८, १९१, २०२ । **सिरताज**—

(सिर पर पहनने का ताज) मीराँ में कृष्ण के लिए आदरार्थ प्रयोग हुआ है। उदा० चांच मढ़ाऊँ थारी सोवनी रे, तू मेरे सिरताज ८४। १२२, १५१, १५२। सिरते—सिर से। उदा० गागर रँग सिरते झटकी, बेसर मुर गई साँरी १७०। सिरधारी—सिर पर धारण करने वाले। उदा० मीराँ के प्रभु गिरिधर नागर, चरण कमल सिरधारी १७०। सिरपेंच—मोर के पंख का बना हुआ मुकुट। उदा० रतन जटित सिर पेंच कलंगी, केसरिया सब साज १५२। सीस – सिर, शीश। उदा० भलो कह्याँ कांइ कह्याँ बुरो री सब लया सीस चढ़ाय १३। २६, १५०, १६१।

सरण—दे० 'शरण'

सरणाँ—दे० 'शरण'

सरणा—दे० 'शरण'

सरणागत—दे० 'शरण'

सरणि—दे० 'शरण'

सरणे—दे० 'शरण'

सरणो—दे० 'शरण'

सरताज—दे० 'सर'

सरदार—(फ़ा० सरदार) श्रेष्ठ व्यक्ति। सरदाराँ—श्रेष्ठ व्यक्तियों, साधुओं। उदा० हेल्या मेल्या कामणा म्हारे, पेठ्या मिल सरदाराँ री २४।

सरवर—(सं० सरोवर) सरोवर। उदा० मीणा तज सरवर ज्यों मकर मिलन धाई १२।

सरीर—(सं० शरीर) शरीर। उदा० साँची पियाजी री गूदड़ी, जामें निरमल रहै सरीर २६।५१, १५५, १६१, १६६, १९२।

सर—(सं० सरस)। सरें—सरते हैं सिद्ध होते हैं। उदा० तुम मिलियाँ में बोहो सुख पाऊँ, सरैं मनोरथ कामा ११४। सरै—सिद्ध होता है। उदा० मेरा प्राण निकस्या जात, हरी बिना ना सरै माई ८९। ८९। सर्‌यो—पूरा हुआ। उदा० लोक लाज बिसारि डारी, तबहीं काज सर्‌यो १७२।

सरैं—दे० 'सर्'

सरै—दे० 'सर्'

सर्‌यो—दे० 'सर्'

सलोना—दे० 'लोना'

सलोने—दे० 'लोना'

सबल—दे० 'बल'

सवाँर्‌याँ—दे० 'सँवार्'

सवारियाँ—दे० 'सँवर्'

सस्तो—(?) सस्ता, कम कीमत का। उदा० थे कह्याँ छाणे म्हाँ काँ चोड्डे लियाँ बजंता ढोल २२।

सहज—(सं० सहज) स्वाभाविक। उदा० दास मीराँ लाल गिरधर सहज कर वैराग्य १५८।

सहर—(सं० शहर) शहर। उदा० महल अटारी हम सब त्याग्या भगवीं चादर पहर ३४।

सहस—(सं० सहस्र) सहस्र, दस सौ (यहाँ 'बहुत से' के अर्थ मे प्रयुक्त हुआ है। उदा० सहस गोप बिच स्याम बिराजे, ज्यों तारा बिच चंद १३९।

सहाई—(स० सहाय) सहायता करनेवाले। उदा० मीराँ के प्रभु सदा सहाई राखे बिघन हटाय ४१। सहारो—सहायक। उदा० मीराँ दासी अरजाँ करता म्हारो सहारो णा आण १३६।

सहारो—दे० 'सहाई'

सहेली—(सं० सह + हि० एली) सखी,

सगिनी। उदा० को है सखी सहेली सजनी, पिया कूँ आन मिलावै ७४। **सहेल्या**—सखी। उदा० माणिक सहेल्या रली कराँ हे, पर घर गवण निवारि २६।

सह—(सं० सह्)। **सह्याँ**—सहता है, बरदाश्त करता है। उदा० मण म्हारो लाग्याँ गिरधारी जगरा बोल सह्याँ २६।१३८।

साँकड़—(सं० शृंखल) सँकरी पतली। **साँकड़ली**—(साँकड़+ली) पतला रास्ता। उदा० साँकड़ली सेर्‌याँ जन मिलिया क्यूँ कर फिरूँ अपूठी ३३। **साँकड़ारो**—दास मीराँ लाल गिरधर, साँकड़ारो साथी १८५।

साँकड़ारो—दे० 'साँकड़'

साँच—(सं० सत्य) सच्ची। **साँचाँ**-सच्ची। उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, जनम जनम रो साँचाँ ३७। **साँची**—सच्ची। उदा० गयाँ कुमत लयाँ साधाँ सगत, श्याम प्रीत जग साँची १९। २६, २६, २६। **साँचों**—सच्ची है। उदा० गिरधर म्हाँरो साँचों प्रीतम, देखत रूप लुभाऊँ २०। **साँच्याँ**—सच्ची है। उदा० स्याम प्रीत रो बाँधि घुँघर्‌याँ मोहण म्हारो साँच्याँ री १७। **साचुं**—सचमुच। उदा० छामलो घरेणु मारे साचुँ रे १४१।

साँचाँ—दे० 'साँच'

साँची—दे० 'साँच'

साँचों—दे 'साँच'

साँच्याँ—दे० 'साँच'

साँझ—(सं० संध्या) शाम। उदा० साँझ भई मीराँ सोवण लागी, मानो फूल बिछाय ४१, ६६, १९५।

साँप—(सं० सर्प) सर्प, साँप। उदा० साँप पिटारा राणा भेज्यों मीराँ हाथ दियो जाय ४१।४०

साँवण—(सं० श्रावण) सावन का महीना (यह महीना आषाढ़ के बाद और भादो के पहले आता है) उदा० आयो साँवण भादवा रे, बोलन लगा मोर ५९।

साँवराँ—दे० 'श्याम'

साँवरा—दे० 'श्याम'

साँवरिया—दे० 'श्याम'

साँवरियो—दे० 'श्याम'

साँवरी—दे० 'श्याम'

साँवरे—दे 'श्याम'

साँवरों—दे० 'श्याम'

साँवरो—दे० 'श्याम'

साँवर्‌यो—दे० 'संवार्'

साँवलिया—दे० 'श्याम'

साँसड़िया—(सं० श्वास+ड़ियाँ) साँस। उदा० नैण दुखी दरसण कूँ तरसै, नाभिन बैठे साँसड़ियाँ १०८।

साइनि—(सं० सारी) सारी, (विशेषण)। उदा० सखी साइनि मोरी हँसत हैं, हँसि हँसि दे मोहि तारी, हे माय १६९।

साकट—(सं० शाक्त) राजस्थान में एक विशेष मत को माननेवाले शाक्त लोग। उदा० साकट जननों संग न करिये, पड़े भजन में भंग रे ३०।

साग—(सं० शाक) सब्जी। उदा; लूण अलूणो ही भलो है, अपणे पियाजी को साग २६।

सागर—(सं० सागर) समुद्र। उदा० भव सागर तर जास्याँ, हो माई ३५।५०, ६३, १०६, १२८, १२९, १५०। **सागराँ**—समुद्र। **सुख सागराँ**—सुख का भंडार। उदा० मीराँ रे सुख सागराँ म्हारे सीस बिराजाँ हो १५०।

सागराँ—दे० 'सागर'

साचुं—दे० 'साँच'

साज—(सं० सज्जा) (१) सज्जा, सजावट। उदा० साज सिंगार बाँध पग घुंघर, लोक लाज तज नाची १६।४८, १३२। (२) बाजे, वाद्य। उदा० दादुर मोर पपीहा बोल्याँ, कोइल मधुराँ साज १४३। (३) आभूषण। उदा० चुणि चुणि कलियाँ सेज बिछायो, नखसिख पहर्‌यो साज १५१। १५२।

साजण—दे० 'सजण'

साजन—दे० 'सजण'

साजनियाँ—दे० 'साजण'

साजाँ—दे० 'सजा'

साजि—दे० 'सजा'

साड़ी—(सं० शाटिका) स्त्रियों के पहनने का कपड़ा जिसको धोती भी कहते हैं। उदा० कहो कसूमल साड़ी रँगावाँ, कहो तो भगवी भेस १५३। **सारी**—साड़ी। उदा० साँवरिया री दरसण पास्यूँ, पहण कुसुम्बी सारी १५४।

साता—(सं० शांत) शांत, खामोश। उदा० रूम-रूम साता भइ उर में, मिटि गई फेरा फेरी ९४।

साथ—(सं० सहित) (१) साथ। उदा० जोगणि होइ जुग ढूंढसूं रे, म्हारा रावलियारी साथ ११७।१७९। **लीणों भुज भर साथ**—भुजाओं में भर लिया। उदा० दध मेरो खायो, मटकिया फोरी, लीणो भुज भर साथ १७६। **साथी**- मित्र। उदा० म्हाँरो जणम रो साथी थाँने णा बिसर्‌याँ दिन राती १०६।१२२, १८५, १८५।

साथो—दे० 'साथ'

साध—(सं० साधु) साधु (यहाँ कृष्ण के लिए साध प्रयुक्त हुआ है)। उदा० जिण मारग म्हाँरा साध पधारे, उण मारग म्हे जास्याँ २५।३२, १५६, १५६। **साधाँ**—साधु लोग (बहु वचन)। उदा० दूसराँ णाँ कूयाँ साधाँ सकल लोक जूयाँ १८। १९, २८, २६, ३७, १५६। **साधा**—साधु लोग। उदा० साधा संत रो संग, ग्याण जुगताँ कराँ १६३। **साधु**—सज्जन उदा० आज म्हाँरो साधु जननो संगरे, राणा म्हाँरा भाग भल्याँ ३०।३०। **साधो**—सज्जन। उदा० साधो संगत हरिगुण गास्याँ, और णा म्हारी लार १६७।

साधाँ—दे० 'साध'

साधा—दे० 'साध'

साधु—दे० 'साध'

साधो—दे० 'साध'

सामरिया—(सं० श्यामल) साँवरिया। उदा० सखि म्हाँरो सामरिया णे देखवाँ कराँ री २१।

सामाँ—(सं० शांति) शांति। उदा० म्हारे आज्यो जी रामाँ, थारे आवत आस्याँ सामाँ ११४।

सारङ्ग—(सं० सारंग) पपीहा। सारंग सबद सुनि बिरहनी पुकार्‌यै १२०।

साराँ–(सं० सारा) सब। **साराँ रात**–पूरी रात, रात भर। उदा० नीदड़ी आवाँ णा साराँ रात, कुण बिधि होय परभात। ७५ **सारा**—सब। उदा० पुतनाम जस गाइयाँ, गज सारा जाणी जी १४०। **सारी**—सब। उदा० गणताँ गणताँ घिस गयाँ रेखाँ, आँगरियाँ री सारी ७७। **सारो**—सारा। उदा० हरि मंदिर जाँता पाँवलिया रे दूखे, फिर आवे सारो गाम रे १७५।

सारा—दे० 'सारा'

सारी—(१) दे० 'साड़ी'
(२) दे० 'साराँ'

सारो—दे० 'साराँ'

सार्—(सं० सार्) **सार्याँ**—(संज्ञा) लोहे पर। उदा० काथ कथीर सूं काम णा म्हारे, चढ़स्याँ घणरी सार्याँ री २४। (२) चलाया। उदा० दाध्या ऊपर लूण लगायाँ, हिवड़ो करवत सार्याँ ८३। (३) चिल्लाया। उदा० ऊभा बैठ्याँ बिरछरी डाली, बोला कंठ णा सार्याँ ८३। **सार्यौ**—पूरा किया। उदा० हय को वपु धरि दैत संघार्यो सार्यौ देवन को काज १३२।

सार्याँ—दे० 'सार्'

सार्यौ—दे० 'सार्'

साल—(सं० शल्य) कष्ट। उदा० है कोइ जग मैं राम सनेही, ऐ उरि साल मिटावै हो ९२।

सालगराम—(सं० शालग्राम) एक विशेष आकार का काला पत्थर जिसे लोग विष्णु की मूर्ति मानते हैं। उदा० काला नाग पिटार्याँ भेज्या, सालगराम पिछाणा ३६। **सालिगराम**—शालिग्राम। उदा० न्हाय धोय जब देखण लागी, सालिगराम गई पाय ४१।

सावण—(सं० श्रावण) सावन का महीना। उदा० सावण आवण हरि आवण री, सुण्या म्हाणे बात ६६।११५, ११६, ११७, १४६, १४७। **सावणियों**—सावन का मेघ,। उदा० भीजे म्हाँरो दाँवन चीर, सावणियाँ लूम रह्यो रे १२२। **सावन**—उदा० बरसाँ री बदरिया सावन री, मन भावण री १४६।

सावणियो—दे० 'सावण'

सावन—दे० 'सावण'

सास—(सं० श्वश्रु) पति की माँ। उदा० सास लड़ै मेरी नन्द खिजावै, राणा रह्या रिसाय ४२। **सासर**—ससुराल। उदा० सासर वासो मज्जी ने बैठी, हवे नथी कइ काँचू रे १४१। **सासु**—सास। उदा० लोग कह्याँ मीराँ बावरी, सासु कह्या कुलनासी री २६।

साहब (अ० साहिब) मालिक, स्वामी। उदा० मैं तो दासी थाराँ जनम जनम की, थें साहब सुगणा ६०। **साहिब**—स्वामी। उदा० अब तो बेगि दया करि साहिब, मैं तो तुम्हारी दासँदियाँ १०८।

साहिब—दे० 'साहब'

सिंगार—(सं० शृंगार) शृंगार। उदा० स्याम मिलण सिंगार सजावाँ सुखरी सेज बिछावाँ १५।१६, २५, १६३, २०७। **सिणगारो**—शृंगार। उदा० चूड़ो म्हाँरे तिलक अरु माला, सील बरत सिण गारो २५।

सिर—दे० 'सर'

सिरताज—दे० 'शीश'

सिरते—दे० 'शीश'

सिरधारी—दे० 'शीश'

सिरपेच—दे० 'शीश'

सिरि—(सं० श्री) श्री (आदरसूचक)। उदा० मीराँ सिरि गिरधर नट नागर, भगति रसीली जाँची १९।१२८। **सिरी**—सुंदरता। उदा० इण चरण कालियाँ नाथ्याँ, गोपीलीला करण १।२७।

सिरी—दे० 'सिरि'

सींच—पानी डाल डालकर। उदा० असवाँ जल सींच सींच प्रेम बेल बूयाँ १८।

सी—(सं० सम) जैसी। उदा० गिरधर से सुनवल ठाकुर, मीराँ सी दासी १६३।

सीख—(सं० शिक्षा) शिक्षा। उदा सखि

यन सब मिल सीख दयां मन एक न मानी हो ८७ ।

सीझ—(सं० सिद्धि) । **सीझ्यां**—समझाया । उदा० लोकणा सीझ्यां मन न पतीज्यां मुखड़ा सबद सुणाज्यो जी १२६ ।

सीतल—(सं० शीतल) ठंडा, शीतल । उदा० सुभग शीतल कंवल कोमल, जगत ज्वाला हरण १।११६, १४६, १६१ । **सीतला**—ठंडा । उदा० पिण ताता पिण सीतला रे, मूरखन कीजै मित ५६ ।

सीतला—दे० 'शीतल'

सीधार—(?) । **सीधारतां**—जाने पर । उदा० ताके संग सीधारतां हे, भला न कहसी कोइ २६ ।

सीधारतां—दे० 'सीधार्'

सीप—(सं० शुक्ति) समुद्री जल जंतु का सफेद, कड़ा और चमकीला आवरण जो बटन आदि बनाने के काम आता है। उदा० सीप स्वाति ही झेलती, ओसाजां सोई, हो ११५ ।

सीर—(सं० सीर) साझेदार । उदा० बिपत्ति पड़्यां कोइ निकटि न आवै, सुख मे, सबको सीर १९२ ।

सीर्‌यां—(?) निकट । उदा० भाग हमारो जाग्यां रे, रतणाकर म्हारी सीर्‌यां री २४ ।

सील—(सं० शील) शील, शालीनता । उदा० चूड़ो म्हारे तिलक अरु माला, सील बरत सिणगारो २५ ।

सीस—दे० 'सर'

सीसोद्यो—(सिसोद स्थान) सिसोदिया वंश (मीराँ के ससुराल का वंश) । उदा० सीसोद्यो रूठ्यो तो म्हांरो कांई कर लेसी ३५ ।

सुंदर—(सं० सुंदर) अच्छा, खूबसूरत । उदा० सुंदर बदन कमल दल लोचण, बांका चितवण णेणां समाणी ११।५१, १३, ११४, १२४, १२६, १७७ ।

सुख—(सं० सुख) आराम । उदा० ब्रजलीला लख जण सुख पावां, ब्रजबणतां सुखरासी ६।२८, २९, ३१, ३२, ५३, ७३, ८६, ९४, ९४, ९७, ९९, १०२, १०३, ११०, ११४, १५०, १९२, २०१ । **सुखदाई**—सुख देनेवाली । उदा० केसर रो तिलक भाल, लोचन सुखदाई १२ । **सुखदाणी**—सुखदानी सुखदेने वाले । उदा० मीरां तो चरणन की चेरी, सुण लीजे सुखदाणी १३० । **सुखदायां**—सुख देने वाला । उदा० मीरां प्रभु संतां सुख दायां, भक्त बछल गोपाल ३ । **सुखधाम**—सुख का धाम, सुख का भंडार । उदा० म्हारे आणद उमग भर्‌या री जीव लह्यां सुखधाम १४४ । **सुखरासी**—सुखराशी सुखमय । उदा० ब्रजलीला लख जण सुख पावां, ब्रजबणतां सुखरासी ६। १६३ । **सुखरी**—सुखकी । उदा० स्याम मिलण सिंगार सजावां सुखरी सेज बिछावां १५ । **सुखसागर**—सुख का सागर, सुख का भंडार । उदा० मीरां रे सुखसागर स्वामी, भवण पधार्‌या स्याम १४४ । **सुष**—सुख । उदा० तुम आयो बिन सुष नही मेरे, पीरी परी जैसे पान १२४ ।

सुखदाई—दे० 'सुख'

सुखदाणी—दे० 'सुख'

सुखदायां—दे० 'सुख'

सुखधाम—दे० 'सुख,

सुखरासी—दे० 'सुख'

सुखिया—दे० 'सुख'

सुगणा—(स+सं० गुण) गुणों से युक्त

सुणज्यो—दे० 'सुण्'
सुणज्यौ—दे० 'सुण्'
सुणत—दे० 'सुण्'
सुणताँ—दे० 'सुण्'
सुणाँ—दे० 'सुण्'
सुणायाँ—दे० 'सुण्'
सुणाये—दे० 'सुण्'
सुणायो—दे० 'सुण्'
सुणावा—दे० 'सुण्'
सुणावै—दे० 'सुण्'
सुणि—दे० 'सुण्'
सुणियो—दे० 'सुण्'
सुणियौ—दे० 'सुण्'
सुणे—दे० 'सुण्'
सुणैछो—दे० 'सुण्'
सुण्याँ—दे० 'सुण्'
सुण्या—दे० 'सुण्'
सुत—(सं० सुत) बछड़ा। उदा० दुगधा आरण फिरे दुखारी, सुरत, वसी सुत मानैं हो ७३। सुताँ—पुत्री। उदा० भरी सभाँ मा द्रुपद सुताँ री, राख्या लाज मुरारी १३१।१२७।
सुताँ—दे० 'सुत'
सुदाण—(?) माँस का विक्रेता। उदा० अजामील अपराधी तार्‌याँ तार्‌याँ नीच सुदाण १३४।
सुदामाँ—(सं० सुदामन्) कृष्ण के मित्र। उदा० थें रिख पतणी किरपा पायाँ, विप्र सुदामो विपत बिडारण १३७।१८७। सुदामा—कृष्ण के मित्र। उदा० भीलणी का बेर सुदामा का तन्दुल, भर मुट्ठी बुकंद १३३।१८७।
सुदामा—दे० 'सुदामाँ'
सुध—(सं० सुधि) स्मृति। उदा० डार्‌याँ सब लोकलाज सुध बुध बिसराई १२। ५०, ५२, ५३, ७५, ८७, १०७, १११, १२७, १६६, १६७। सुधि—होश। उदा० बन बन ढूंढत मैं फिरी, आली सुधि नहीं पाई। ८६।१७४।
सुधरस—(सं० सुधा+रस) अमृत। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, सुंदर, स्याम सुधरस लोना १७७। सुधा—अमृत। सुधा रस—अमृत। उदा० अधर सुधा रस मुरली राजाँ उर बैजंती माल ३।
सुधा—दे० 'सुधा'
सुधार्—(सं० सुधार्)। सुधारा—सुधार दिया। उदा० सब संतों का काज सुधारा, मीराँ सूं दूर रहंद १३६।
सुधारा—दे० 'सुधार्'
सुधि—दे० 'सुध'
सुनके—दे० 'सुण्'
सुनन्द—दे० 'सुण्'
सुनत—दे० 'सुण्'
सुन लीजे—दे० 'सुण्'
सुनवल—(सं० सुंदर) सुंदर। उदा० गिरधर से सुनवल ठाकुर, मीराँ सी दासी १६३।
सुनाज्यो—दे० 'सुण्'
सुनाय—दे० 'सुण्'
सुनि—दे० 'सुण'
सुनियत—दे० 'सुण्'
सुपणाँ—(सं० स्वप्न) सपना, वह दृश्य जो निद्रावस्था में दिखाई पड़े। उदा० सुपणाँ माँ म्हारे परण गया पायाँ अचल सोहाग २७। सुपणा—सपना। उदा० माई म्हाणो सुपणा माँ परण्याँ दीनानाथ २७। २७, ६७, १२८। सुपनाँ—सपना। उदा० चमक उठाँ सुपनाँ लख सजणी, सुध णा भूल्याँ जात ७५।
सुपणा—दे० 'सुपणाँ'

सुपना—दे० 'सुपणाँ'

सुफल—(सं० सु+फल) अच्छा परिणाम, सफल। उदा० बिसरि जावाँ दुख निरखाँ पियारी सुफल मनोरथ काम १४४।

सुबासी—(सं० सु+वास) सुगंधित, अच्छी महक देनेवाला। उदा० पीताम्बर फेंटा बाँधे, अरगजा सुबासी १६३।

सुभग—(सं० सुभग) सुँदर। उदा० सुभग सीतल कँवल कोमल, जगत ज्वाला हरण १।

सुमरण—(सं० स्मरण) याद। उदा० साँवरों उमरण साँवरो सुमरण, साँवरो ध्याण धराँ री २१। **सुमिरण**—भगवान के नाम का स्मरण। उदा० चाकरी में दरसण पास्यूँ, सुमिरण पास्यूँ खरची १५४। **सुरत**—स्मरण। उदा० दुगधा आरण फिरै दुखारी, सुरत बसी सुत मानै हो ७२।

सुरगा—(सं० सु+रंग) सुँदर, अच्छे वर्ण वाला। उदा० रूप सुरंगा साँवरो मुख निरखण जावाँ २८।

सुर—(सं० सुर) देवता। उदा० उठो लाल जी भोर भयो है सुर नर ठाढ़े द्वारे १६५।

सुरत—(१) दे० 'सुमरण' (२) (फ़ा० सूरत) शक्ल। उदा० साँवरी सुरत मण रे बसी ८८।

सुला—(सं० शयन)। **सुलाय**—सुलाकर। उदा० सूल सेज राणा ने भेजी, दीज्यो मीराँ सुलाय ४१।

सुष—दे० 'सुख'

सुहाग—(सं० सौभाग्य) अच्छा भाग्य। उदा० जग सुहाग मिथ्यारी सजणी, होवाँ हो मट ज्यासी १९४।

सुहा—(सं० शोभन्)। **सुहाणाँ**—सुहावने अच्छा लगनेवाला। उदा० साजाँ सिगार सुहाणाँ सजनी, प्रीतम मिल्याँ धाय २०१। **सुहाय**—अच्छा लगता है। उदा० तुम देख्याँ बिन कल न पड़त है, ग्रिह अँगणो न सुहाय ९८। **सुहावे**—अच्छा लगता है। उदा० भई हों बावरी सुन के बाँसुरी हरि बिनु कछु न सुहावे १६७। **सुहावण**—अच्छा लगनेवाला। उदा० थारा सबद सुहावण रे, जो पिव मेला आज ८७। १४६। **सुहावणा** शोभा देनेवाला। उदा० सुंदर स्याम सुहावणा, मुख देख्याँ जीजै, हो १६। **सुहावाँ**—अच्छा लगता है। उदा० थे विण म्हाणे जग णा सुहावाँ, निरख्याँ सब संसार ४। ७८। **सुहावे**—अच्छा लगता है। उदा० दरस बिना मोहि कछु न सुहावे, तलफ तलफ मर जासी १३०। **सुहावै**—सुहाता है। उदा० राम हमारे हम हैं राम के, हरि दरस दिखावै ६७। १०८। **सोहाँ**—(१) सुशोभित होना। उदा० मोर मुगट मकराकृत कुंडल अरुण तिलक सोहाँ भाल ३। ६। (२) सुशोभित होता है। उदा० मोर मुकुट पीताम्बर सोहाँ, गल बैजन्ती माला १५८। १६१। **सोहाई**—सुशोभित होती है। उदा० मोर चन्द्रका किरीट मुगट छब सोहाई १२। **सोहाय**—अच्छा लगता है। उदा० पिया पियाला नाम का रे, और न रंग सोहाय ४०। **सोहै**—सुशोभित होता है। उदा० मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, कुंडल की झकझोर १६४। १७१।

सुहाणाँ—दे० 'सुहा'

सुहाय—दे० 'सुहा'

सुहावे—दे० 'सुहा'

सुहावण—दे० 'सुहा'

सुहावाँ—दे० 'सुहा'
सुहावे—दे० 'सुहा'
सुहावैं—दे० 'सुहा'
सूं—(१) (सं० समम्) से करण कारकीय चिह्न। उदा० कामदारो सूं काम गा म्हारे, जावा म्हा दरबारो री २४। २१, २४, २४, ५६, ७६, ८०, ८८, ६५, १०१, ११२, ११२, १३६, १५०, १६२, १७२, १८०, १८६, १६३, १६३, २०१। (२) (सं० सम) जैसे। उदा० अविनासी सूं बालवाँ है, जिनसूं साँची प्रीत २६। सें—साथ। उदा० लगण लगी जैसे पतंग दीप से वारि फेर तन दीजे १६१। १६१। से (१) से (करण कारक)। उदा० जोगिया से प्रीत कियाँ दुख होइ ५३। ८६, १६८। (२) से (अपादान कारक)। उदा० गज से उतर के खर नहिं चढ़स्याँ, ये तो बात न होई २५। ८६, १६१, १६१, १६१, १६६। (३) से (From)। उदा० उमड़ घुमड़ चहुँदिस से आया, गरजत है घन घोरा, रे १४७। (४) (सं० सम्) जैसे, के समान। उदा० बोलत बचन मधुर से मानूँ, जोरत नाहीं प्रीत ५७। १६३। (५) बहु वचन का चिन्ह। उदा० पलक पलक मोहि जुगसे बीते, छिनि छिनि बिरह जरावै हो ६२। सों—से। उदा० प्रभु सो मिलन कैसे होय १५८।
सो—जैसा (सं० सम्)। उदा० प्राण पाण म्हाणे फीकाँ सों लागाँ नैणा रहाँ मुरझावाँ ६६।
सूंण—दे० 'सुण'
सू—(सं० सः) वह (सार्वनामिक विशेषण) उदा० पिव मेरा मैं पीव की रे, सू पिव कहै सू कूण ८४।
सूख—(सं० शुष्क)। सूखूं—सूखती हूँ। उदा० दिन नहिं चैन रैण नहिं निदरा, सूखूं खड़ी खड़ी ११८।
सूनी—(सं० शून्य) उदास। उदा० सूनी बिरहन पिव बिन डोलैं, तज गया पीव पियारी ७७। ७७। ७८। सूनो—सूना, जहाँ कोई न हो। उदा० सूनो गाँव देस सब सूनो, सूनी सेज अटारी ७७।
सूनो—दे० 'सूनी'
सूयाँ—(?) संबंधी। उदा० भाया छाड्याँ बंधा छाड्याँ, छाड्याँ सगाँ सूयाँ १८।
सूर—(सं० शूर) शूर वीर। उदा० प्रीत निभावण दल के थंभण, ते कोई बिरला सूर ५६।
सूरज—(सं० सूर्य) सूर्य। उदा० तुम बिच हम बिच अंतर नाहीं, जैसे सूरज घामा ११४।
सूरत—(फ़ा० सूरत) आकृति। उदा० मोहण साँवराँ सूरत णेणा बण्या विशाल ३। ७, ५३, १३०, १७३।
सूल—(सं० शूल) काँटा। उदा० सूल सेज राणा ने भेजी, दीज्यो मीराँ सुलाय ४१। ५४, ५६, ६२।
सें—दे० 'सूं'
से—दे० 'सूं'
सेज—(सं० शय्या) शय्या, पलंग। उदा० स्याम मिलण सिंगार सजावाँ सुखरी सेज बिछावाँ १५। ४१, ७४, ७७ ६२, १४६, १५१। सेजाँ—बिस्तर। उदा० सूनी सेजाँ व्याल बुझायाँ जागा रैण अकुलावाँ ७८।
सेजाँ—दे० 'सेज'
सेर्‌याँ—गली। उदा० साँकड़ली सेर्‌याँ जन मिलिया क्यूँ कर फिरूँ अपूठी ३३।

सेली—(सं० शल > सल + एली) योगियों की माला। उदा० सेली नाद बभूत न बटवो, अजूँ मुनी मुख खोल ५८। ८०, ६८, १८८।

सेस—(सं० शेष) शेषनाग। उदा० जोगियो चतुर सुजाण सजनी, ध्यावै स कर सेस ११७।

सैयाँ—प्रियतम। उदा० म्हाँ गिरधर रँग राती, सैयाँ म्हाँ २३।

सों—दे० 'सूँ'

सो[1]—(१) दे० 'सूँ'। (२) (सं० सः) वह। उदा० पूर्व जनम की प्रीत पुराणी, सो क्यूँ छोड़ी जाय ४२। **सोइ**—वही (बलात्मक) उदा० ऐसी सूरत या जग माँहीं फेरि न देखी सोइ ५३।७३, ७५, ८६, ११५। **सोई**—वही (बलात्मक)। उदा० जिह जिह विधि रीझै हरी, सोई विधि कीजै, हो १६।२०, २०, ११५।

सो[2]—(सं० सुप्त) **सोऊँ**—सोती हूँ। उदा० आव सजनियाँ बाट मैं जोऊँ, तेरे कारण रेण न सोऊँ १२६। **सोय**—सो रही थी। उदा० हरि पधाराँ आगणाँ गया मैं अभागण सोय ४३। **सोवण**—सोने। उदा० साँझ भई मीराँ सोवण लागी, मानो फूल बिछाय ४१। **सोवाँ**—सोते हैं। उदा० सब सोवाँ सुख नींदड़ी म्हारे रैंण जगावाँ २८। ८६। **सोवूँ छी**—सो रही थी। उदा० म्हा सोवूँ छी अपणे भवण माँ पियु पियु करताँ पुकार्‌याँ ८३। **सोही**—वही। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, ज्यों वारूँ सोही थोरा, रे १४७। १८८, १६२। **सोतें**—सोकर। उदा० माणष जणम अमोलक पायो, सोतें डार्‌यो खोय १५६।

सोइ—दे० 'सो'[1]

सोई—दे० 'सो'[1]

सोग—(सं० शोक) शोक। उदा० या भव में मैं बहु दुख पायो, संसा सोग निवार १३५।

सोच—(सं० शोचन्) सोचकर। उदा० मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, परो निवारोनी सोच १८३।

सोणा—(सं० स्वर्ण) सोना, एक धातु जिससे आभूषण आदि बनते हैं। **सोणारो**—सोने का। उदा० साजाँ सोल सिंगार, सोणारो राखड़ो १६३। **सोना**—उदा० सोना रूपा सूँ काम णा म्हारे, म्हारे हीराँ रो बौपाराँ री २४। **सोनी**—सुनार। उदा० चित्त माला चतुरभुज चुड़लो, शिद सोनी घरे जइये रे १४१। **सोवनी**—सोने से। उदा० चाँच मढाऊँ थारी सोवनी रे, तू मेरे सिरताज ८४।

सोतें—दे० 'सो'[2]

सोभा—(सं० शोभा) शोभा, सुंदरता। उदा० सदन सरोज वदन की सोभा, ऊभी जोऊँ कपाल ५८।

सोय—दे० 'सो'[2]

सोर—(फ़ा० शोर) कोलाहल। उदा० दादुर मोर पपीहा बोलै, कोयल कर रह्या सोर, छै ज्यो १४५। **सोरा**—शोर। उदा० दादुर मोर पपीहा बोलै, कोयल कर रह्ी सोरा, रे १४७।

सोरा—दे० 'सोर'

सोल—(सं० षोडश) सोलह। उदा० साजाँ सोल सिंगार, सोणारो राखड़ो १६३।

सोवण—दे० 'सो'[2]

सोवनी—दे० 'सोणा'

सोवाँ—दे० 'सो'[2]

सोवूँ—दे० 'सो'[2]

सोहाँ—दे० 'सुहा'
सोहाई—दे० 'सुहा'
सोहाग—(सं० सौभाग्य) अच्छा भाग्य। उदा० सुपणाँ माँ म्हारे परण गया पाया अचल सोहाग ८७।
सोहाय—दे० 'सुहा'
सोही—दे० 'सो[२]
सोहे—दे० 'सुहा'
सौ—(सं० शत) सौ, सैकड़ा। उदा० कहा बोझ मीराँ में कहिये सौ पर एक घड़ी ११८।
स्याम—दे० 'शामल'
स्याम मनोहर—दे० 'शामल'
स्यामाँ—दे० 'शामल'
स्यामा—दे० 'शामल'
स्वाति—(सं० स्वाति) स्वाति एक नक्षत्र, जो फलित ज्योतिष में शुभ माना गया है। उदा० चात्रग स्वाति बूँद मन माँही, पीव पीव उकलाँणी हो ७३।

ह

हँस—(सं० हस्)। **हँस-हँस**—हँस-हँसकर। उदा० हँस हँस मीराँ कंठ लगायो, यां तो म्हाँरे नौसर हार ४०। ४०,७८। **हँसकर**—हँसकर पूर्वकालिक कृदंत। उदा० कबै हँसकर बतलावै ७४। **हँसत है**—हँसती है। उदा० सखी साइनि मोरी हँसत है, हँसि हँसि दे मोहि तारी है माय १६६। **हँसि**—हँसकर। उदा० धूतारा जोगी एकरसूँ हँसि बोल ५८। **हँसि-हँसि**—हँस-हँसकर। उदा० सखी साइनि मोरी हँसत है, हँसि-हँसि दे मोहि तारी, हे माय १६६। **हँसिके**—(१) हँसती हुई। उदा० साँवरी सूरत आन मिलावो, ठाढ़ी रहूँ मैं हँसिके ७। (२) हँसकर उदा० हे मा बड़ी बड़ी अँखियन वारो, साँवरो मो तन हेरत हँसिके ७। **हँसे**—हँसे भूतकाल एक वचन आदरार्थ) उदा० देखत राम हँसे सुदामाँ कूँ, देखत राम हँसे १८७। **हँस्यो**—हँसा (भूतकाल, एक वचन)। उदा० गहे द्रुम डार कदम को ठाड़ो, मृदु मुसकाय म्हारी ओर हँस्यो ८। **हाँसाँ**—हँसी (भूतकाल, स्त्रीलिंग)। उदा० विष रो प्यालो राणा भेज्याँ, पीवाँ मीराँ हाँसाँ री ३६। **हाँसी**—हँसी। उदा० णाच्याँ गावाँ ताल बजावाँ, पावाँ आणद हाँसी ६।४५,६५, १६३।
हँस—दे० 'हँस्'
हँसकर—दे० 'हँस्'
हँसत—दे० 'हँस्'
हँसती—(सं० हस्तिन्) हाथी। उदा० कित गई मोरी गजबन्त की बछिया, द्वारा बिच हँसती फसे १८७। **हाथी**—उदा० म्हने भरोसो राम को रे (बाला) डूबि

तर्‌यो हाथी १८५ ।
हँसि—दे० 'हँस'
हँसिके—दे० 'हँस्'
हँसे—दे० हँस्'
हँस्यो—दे० 'हँस्'
हँस—(सं० हंस) एक प्रकार का पक्षी। उदा० भराँ प्रेम रा होज हंस केल्याँ कराँ १९३ ।
हजारी—(फा० हजार) सहस्र दलों वाला, हजारों पंखुड़ियों वाला फूल। उदा० कुसुमल पाग केसरिया जामा, ऊपर फूल हजारी १७१ ।
हजूर—(अ० हुजूर) । बेहजूर—स्वामी (कृष्ण) के सामने। उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, रहना है वे हजूर १९८ ।
हट—(सं० हठ) जिद, आग्रह। हटकी—जिद की। उदा० कुल कुटम्ब सजण सकल बार बार हटकी ९ ।
हट्—(सं० घट्टन्)। हटाय—हटाते हैं, दूर करते हैं। उदा० मीराँ के प्रभु सदा सहाई, राखे विघन हटाय ४१ ।
हती—(सं० अस्ति) थी (भूतकाल की अस्तित्व वाचक सहायक क्रिया)। उदा० जल जमुना माँ भरवा गयाँतीं हती गागर माथे हेमनी रे १७३ ।
हम—(सं० अहम्) सर्वनाम, उत्तम पुरुष एक वचन। उदा० हम चितवाँ थे चितवो णा हरि, हिवड़ो बड़ो कठोर ५ । ३२, ३२, ३४, ३४, ५९, ६०, ६७, ८०, ८६, १२६, १८४ । हमको—हमें (कर्म कारक)। उदा० प्रेम भगति को पैंड़ो ही न्यारो हमको गैल बताजा ४६ । हम पर—हमारे ऊपर। उदा० मधुबन जाइ भये, मधुबनिया, हम पर डारो प्रेम को फंदा १८० हमपै हममें। उदा० कछुक औगुण हमपै काढ़ो, मैं भी कान सुणाँ ६० । हमबिच—हममें। उदा० तुम बिच हम बिच अंतर नाहीं, जैसे सूरज घामा ११४ । हमसे—हममे। उदा० कूण सखी मूं तुम रँग राते हमसूं अधिक पियारी १०३ । हमसे—हमारे साथ। उदा० अब तुम प्रीत औरसूं जोड़ी, हमसे करी क्यूं पहेली ८० । हमारी—हम का संबंध कारकीय रूप। उदा० विपत हमारी देख तुम चाले, कहिया हरिजी सूं जाय ३६ । ७७, ११३ । हमारे—हम का संबंध कारकीय रूप। उदा० राम हमारे हम है राम के, हरि बिन कछू न सुहावै ६७ । ११६ । हमारो—हम का संबंध कारकीय रूप। उदा० साग हमारो जाय्याँ रे, रतणाकर म्हारी सीरयाँ री २४ ।
हमको—दे० 'हम'
हमपर—दे० 'हम'
हमपै—दे० 'हम'
हमबिच—दे० 'हम'
हमसूं—दे० 'हम'
हमसे—दे० 'हम'
हमारी—दे० 'हम'
हमारे—दे० 'हम'
हमारो—दे० 'हम'
हय—(सं० हय) घोड़ा। हय को—घोड़े का। उदा० हयको वपु धरि दैत सघाऱ्यो देवन को काज १३२ ।
हर्—(सं० हृ)। हर—चुरा। उदा० मुरली म्हारो मण हर लीन्हों, चित्त धराँ णा धीर १६६ । १७९, २०२ । हरण—हरनेवाला। उदा० सुभग सीतल कँवल कोमल, जगत ज्वाला हरण १ । १ । हराँ—(१) हरण किया। उदा० जुग-जुग भीर हराँ भगता री दीस्याँ मोच्छ

नेवाज ६२ । (२) दूर किया दासि मीराँ लाल गिरधर, हराँ म्हारी भीर ६१ । ६१ । हर्याँ—दूर कीजिए । उदा० व्याकुल प्राण धर्याँ णा धीर ण वेग हर्याँ म्हा पीराँ ११० । १६६ । हर्या—दूर किया । उदा० हरि थें हर्या जण री भीर ६१ । हर्यो—हर लिया । उदा० माई मेरो मोहने मण हर्यो १७२ ।

हर—दे० 'हर्'

हरख—(सं० हर्ष) प्रसन्न । उदा० चंदा देख कमोदण फूलाँ, हरख भयाँ म्हारे छाज्यो जी ११९ ।

हरण—दे० 'हर्'

हरणाकुस—(सं० हिरण्यकशिपु) विष्णु विरोधी एक राजा, जो प्रह्लाद के पिता थे । उदा० प्रहलाद परतग्या राख्याँ, हरणाकुस णो उद्र विदारण १३७ ।

हर—दे० 'हर्'

हराँ—दे० 'हर्'

हरि—(सं० हरि) कृष्ण । उदा० मण थे परस हरि रे चरण १ । ४, ५, ५, ५, १७, १६, २८, २६, २६, ३१, ३५, ३६, ३६, ४१, ४२, ४३ ४५, ५२, ५६, ५८, ६१, ६३, ६५, ६६, ६७, ६७, ६६, ७३, ७६, ८१, ८२, ८३, ८५, ६०, ६२, ६८, १०३, १०६, १०८, १११, १२१, १२५, १२८, १३२, १३२, १३७, १३८, १४१, १४३, १४६, १४६, १५०, १५१, १५७, १५८, १५८, १६७, १७८, १७६, १८३, १८३, १८५, १८६, १८७, १८८, १६६, २००, २०१ । **हरिगुण**—हरि कृष्ण का यश । उदा० साधो संगत हरिगुण गास्याँ, और णा म्हारी लार १६७ । **हरिजन**—(१) हरि के जन के भक्त उदा घा घट बिरहा सोई लखि है, कै कोइ हरिजन मानै हो ७३ । (२) नीच जाति के लोगों के शुभचिंतक, कृष्ण । उदा० मीराँ कूँ हरिजन मिल्या रे, ले गया पवन झकोर ५६ । **हरिहूँ**—कृष्ण भी । उदा० माई म्हारी हरिहूँ न बूझ्याँ बात ६६ । **हरिजीए**—हरि जी को, कृष्ण को । उदा० काचे ते तातणे हरिजीए बाँधी, जेम खेंचे तेम तेमनी रे १७३ । **हरी**—कृष्ण । उदा० जिह जिह विधि रीझै हरी, सोई विधि कीजै, हो १६ । २५, ८२, ८६, १४१, १८८ ।

हरे—(सं० हरित) हरा रंग । **हरे-हरे**—उदा० हरे-हरे णवाँ कुंज लगास्यूँ, बीचा बीचा बारी १५४ ।

हर्याँ—दे० हर्'

हर्या—दे० 'हर्'

हर्यो—दे० 'हर्'

हलाहल—(सं० हलाहल) खलबली । उदा० बिरह भवंगम डस्याँ कलेजा माँ लहर हलाहल जागी ६१ ।

हवे—(?) अब । उदा० सासर वासो सजी ने बैठी, हवे नथी कइ काँचूँ रे १४१ ।

हाँसा—दे० 'हँस्'

हाँसी दे० 'हँस्'

हाजरियो—(फा० हजारी) रूमाल । उदा० गल बिच सेली हाथ हाजरियो, अंग भभूत रमायो १८८ ।

हाजिर—(अ० हाजिर) उपस्थित । उदा० मैं हाजिर नाजिर कब की खड़ी ११८ ।

हाथ—(सं० हस्त) हाथ । उदा० मीराँ गिरधर हाथ बिकाणी, लोग कह्याँ बिगड़ी १४ । २७, ४५, ४६ ७५, ११७, १६५, १७५ १७६ १८२ १८८ **हाथन**

हाथों (बहु वचन)। उदा० सुघर कल प्रवीण हाथन सूँ, जसुमति जू णे सवारियाँ १६२।

हाथो—दे० 'हँसती'

हाम—(?) आश्रय। उदा० मीरां ना प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल चित हाम, रे १५७।

हार—(सं० हार) माला। उदा० हँस-हँस मीराँ कंठ लगायो, यो तो म्हाँरे नौसर हार ४०। १४१

हार्—(सं० हार्) हार्—पराजय। उदा० अड़सठ तीरथ भ्रमि भ्रमि आयो, मण नाहीं हार १३३। हार्या—हारकर। उदा० हार्या जीवन सरण रावलाँ कठे जावाँ व्रजराज ४८।

हार—दे० 'हार्'

हार्या—दे० 'हार्'

हितु—(सं० हित) हितैषी। उदा० हरि हितु से हेत कर, संसार आसा त्याग १५८।

हिमाला—(सं० हिमालय) हिमालय पर्वत। उदा० पाँच पाँडु री राणी द्रुपता, हाड़ हिमालाँ गराँ १८९।

हिय—(सं० हृदय)। हृदय उदा० जो तेरे हिय अंतर की जाणै, तासों कपट ण बणे १५८। हियड़ो—हृदय में। उदा० थें आयाँ विण सुख णा म्हारो हियड़ो घणो उचाट ९९। हियतें—हृदय से। उदा० मण की मैल हियतें न छूटी, दियो तिलक सिर धोय १५८। हियरे—हृदय में। उदा० भौंह कमान बान बाँके लोचन, मारत हियरे कसिके ७। ३८। हियाँ—हृदय। उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, थ विण फटा हियाँ ५२। हिये में—हृदय में उदा० वाण बिरह का लाग्या हिये में, भूलूँ ण एक घड़ी ११८। हिरदाँ—हृदय में। उदा० म्हाराँ हिरदाँ बस्याँ मुरारी, पल-पल दरसण पावाँ १५। हिरदे—मन में उदा० तन मन धन करि वारणैं, हिरदे धरि लीजैं हो १६। १५८। हिवड़ा—हृदय। उदा० चित्त चढ़ी म्हारे माधुरी मूरत हिवड़ा अणी गड़ी १४। ५४। हिवड़ा रो—हृदय के। उदा० रावरी होइ कणीरें जाऊँ, है हरि हिवडारो गाज १३२। हिवड़ों—हृदय। उदा० म्हा गुणहीन गुणागर नागर, म्हा हिवड़ो रो साज ४८। हिवड़ो—हृदय। उदा० हम चितवाँ थे चितवो णा हरि, हिवड़ो बड़ो कठोर ५। ३०, ७२, ७८, ८३, १०९, १५४। हीयड़े—हृदय में। उदा० म्हारा पियाँ म्हारे हीयड़े बसताँ णा आवाँ णा जाती २३। हीया—हृदय। उदा० आदि अंत निज नाँव तेरो, हीया मे फेरी ९३। हीये—हृदय। उदा० बिन देख्याँ कैसे जीवें कल न पड़त हीये १७४। हीयो—हृदय। उदा० राति दिवस मोहि कल न पड़त है, हीयो फटत मेरी छाती १२३।

हियड़ो—दे० 'हिय'

हियतें—दे० 'हिय'

हियरे—दे० 'हिय'

हियाँ—दे० 'हिय'

हिये—दे० 'हिय'

हिरदाँ—दे० 'हिय'

हिरदे—दे० 'हिय'

हिल—(सं० हुल्लन)। हिलमिल—हिल मिलकार, घनिष्ट संबंध बनाकर। उदा० तणरी ताप मिट्याँ सुख पास्याँ, हिलमिल मंगल गाज्यो जी ११९। ५४। हिल्या मिल्या हेल मेल मिलना-जुलना उदा०

हेल्या मेल्या कामणा म्हारे, जावा म्हा दरबाराँ री २४ ।
हिलमिल—दे० 'हिल'
हिवड़ा—दे० 'हिय'
हिवड़ारो—दे० 'हिय'
हिवड़ों—दे० 'हिय'
ही—(सं० हि) एक बलात्मक अव्यय जिसका प्रयोग किसी निश्चयार्थ भाव के लिए हो । उदा० कालर अपणो ही भलो है, कोढ़ी कुष्टी कोइ २६ । २६, ४६, ७३, ७९, ८४, ९८, ११५, ११५, १२५, १२५, १६३, १८४, १९१ ।
हीण—(सं० हीन) । **हीणों**—तुच्छ । उदा० वर हीणों अपणों भलो है, कोढ़ी कुष्टी कोइ २६ । **हीन**—उदा० दीन हीन ह्वै छुधा रत से, राम नाम न लेत १५८ ।
हीयड़े—दे० 'हिय'
हीया—दे० 'हिय'
हीये—दे० 'हिय'
हीयो—दे० 'हिय'
हीर—(सं० हीरक) हीरा, एक अमूल्य रत्न । उदा० मोर मुगट पीतांबर सोहाँ, कुंडल झलकणा हीर १६१ । **हीराँ**—हीरा एक कीमती पत्थर । उदा० सोना रूपा सूँ काम णा म्हारे, म्हाँरे हीराँ रो बौपाराँ री २४ । **हीरा**—उदा० कित गई प्रभु मोरी गउवन बछिया, द्वारा बिच हँसती फसे १८७ ।
हीराँ—दे० 'हीर'
हीरा—दे० 'हीर'
हुँ—(?) भी संयोगात्मक अव्यय । उदा० बहु दिन बीत अजहुँ न आये, लग रही ताला बेली ८० ।
हूँ[1]—(सं० अहम्) मैं । उदा० जो हूँ ऐसी जानती रे बाला प्रीत कीयाँ दुष होय ५९ । ९५, १७२ । **हौं**—मैं । उदा० हौं तो वाको नीको जाणो, कुंज को विहारी हैं १७४ । **हूमा**—मुझे । उदा० कुण हूमा धीर बँधवाँ १५६ ।
हूँ[2]—अस्तित्व वाचक सहायक क्रिया । उदा० दासि मीराँ नाम रटत है, मै सरण हूँ तेरी ६३ । १११, ११२, ११३, १२०, १३० । **हूँगी**—बनूँगी । उदा० तेरे खातिर जोगण हूँगी, करवत लूँगी कासी ४९ । ९४ । **हूयाँ**—हुई । उदा० राणा विषरो प्याला भेज्याँ, पीय मगण हूयाँ १८ । **हैं**—है (इसको संबोधन का चिह्न भी माना जा सकता है) । उदा० सखियाँ मिलि दोय च्यारी, बावरी भई हैं सारी १७४ । १७४, १७४, १७४, १७४ । **है**—है । उदा० देखि विराणै निवाँण कुं है, जामें निपजै चीज २६ । **हैं**—हैं (आप हैं, हम है) । उदा० हौं तो बाको नीको जाणो, कुंज को विहारी हैं १७४ । ६७, ९७, १६९, १७५ । **है**—है (अस्तित्ववाचक सहायक क्रिया) । उदा० मीराँ को प्रभु राखि लई है, दासी अपणी जाणी ३८ । ४९, ५३, ५४, ६३, ६३, ६३, ७३, ७४, ७४, ७६, ८५, ९२, ९८, १००, १०८, ११३, ११६, ११८, १२३, १३०, १३२, १४७, १६५, १७१, १९८ । **हैये**—है ही । उदा० बाली घड़ावुँ बिट्ठल बर केरी, हार हरी नो हैये रे १४१ । १६५ । **हों**—हूँ । उदा० भई हों बावरी सुन के बाँसुरी, हरि बिनु कछु न सुहाये माई १६७ । **हो**—(१) हो (संभावनार्थक) उदा० ज्यों तोकों कछु और बिथा हो, नाहिन मेरो बसिके ७ । ८९, १७० । (२) **होणा हो जो हूयाँ**—जो होना होगा वह होगा । उदा० मीराँ री

लग लग्याँ होणा हो जो हूयाँ १८ । होइ—होगा, होगी । उदा० छैल बिराणो लाख को हे, अपणे काज न होइ २६ । ५३, ५३, १३२ । (२) हुआ, हुई उदा० करमाबाई को खीच आरोग्यो, होइ परसण पावंद १३६ । ६२, ६४, ६७ । (३) होकर । उदा० घुमँट घटा ऊलर होइ आई, दामिन दमक डरावै ७४ । ११७ । होइ—(१) हुई, हो गए । उदा० गज से उतर के खर नहिं चढ़स्याँ, ये तो बात न होई २५ । ११५ । (२) होते हैं । उदा० बेर-बेर मैं टेरहूँ, अहे क्रिपा कीजै, हो ११५ । हो गए—बन गए । उदा० हो गए श्याम दूइज के चंदा १८० । हो जाए—हो जाए (इच्छार्थक) । उदा० बर्‌याँ साजण साँवरो री, म्हारो चुड़लो अमर हो जाय २०१ । होणा—होना । उदा० मीराँ री लगण लग्याँ होणा हो जो हूयाँ १८ । होता—होते हुए । उदा० म्हाँरे घर होता आज्यो महाराज १०६ । होनी—होनेवाला । उदा० मीराँ के प्रभु गिरधर भजीये होनी होय सो होय १५६ होय—(१) होता है, होती है । उदा० जाण्याँ णा प्रभु मिलण बिध क्याँ होय ४३ । ५६, १०२ । (२) होगा, होगी, होगे । उदा० प्रभु सँ मिलन कैसे होय १५६ । १५६, १५६, ७५, १५८, ७० । (३) होकर । उदा० आसण माड़ अडिग होय बैठा, याही भजन की रीत ५५ । ११८, १६१ । होयाँ—हुआ हुए । उदा० वा जमणा का निरमल पाणी, सीतल होयाँ सरीर १६१ । १६५ । होवाँ—हो (इच्छार्थक) । उदा० मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर मिल बिछड़्‌या णा होवाँ ८६ । (२) होता है । उदा० जग सुहाग मिथ्यारी सजणी, होवाँ हो मट जासी १६४ । होसी—होगा । उदा० या विरियाँ कब होसी म्हारो हँस पिय कंठ लगावाँ ७८ । ११५ । हौं—हूँ (मैं हूँ) । उदा० जोगी मत जा मत जा मत जा, पाँइ परूँ मैं तेरी चेरी हौं ८६ । ह्‌याँ—हुई । उदा० भगत देख्याँ राजी हुयया, जगत देख्याँ रूयाँ १८ । ह्वै—हो गए । उदा० दीन हीन ह्वै छुधा रत से, राम नाम न लेत १५८ ।

हूँगी—दे० 'हूँ[१]'

हूयाँ—दे० 'हूँ[२]'

हे—दे० 'हूँ[२]'

हे—(१) दे० हूँ[२] । (२) संबोधन का चिह्न । उदा० हे मा बड़ी-बड़ी अँखियन वारो साँवरो मो तन हेरत हँसिके ७ । हेरी—एरी (संबोधन) । उदा० हेरी मा नंद को गुमानी म्हाँरे मनड़े बस्यो ८ । ७०, ६४ । हेली—हे सखी । उदा० हेली म्हाँसूँ हरि बिनि रह्‌यो न जाय ४२ ।

हेत—(सं० हित) प्रेम । उदा० हरि हितु से हेत कर, संसार आसा त्याग १५८ ।

हेतु—(सं० हेतु) लिए, अभाव में । उदा० हरि जी सूँ बाँध्यो हेतु बैकुंठ में झूलणी १८६ ।

हेम—(सं० हेमन्) स्वर्ण, सोना । हेमनी—सोने की । उदा० जल जमुना माँ भरवा गयाँताँ हती, नागर माथे हेमनी रे १७३ ।

हेर—(सं० आखेट) खोजना । हेरत—खोजता है । उदा० हे मा बड़ी बड़ी अँखियन वारो, साँवरो मो तन हेरत हँसिके ७ । हेरी—खोजी । उदा० कुंज सब हेरी-हेरी ६५ ।

हेरत—दे० 'हेर'

हेरी—(१) दे० 'हे (२)'। (२) दे० 'हेर्'
हेली—दे० 'हे (२)'
हेल्या मेल्या—दे० 'हिल्'
हैं—दे० 'हूँ२'
है—दे० 'हूँ२'
हैये—दे० 'हूँ२'
हों—दे० 'हूँ२'
हो—(१) दे० 'हूँ२'। (२) संबोधन। उदा० मीराँ के प्रभु रामजी, बड़ भागण रीझै, हो १६। १६, १६, १६, १६, ३५, ३५, ३५, ३५, ३५, ४१, ७३, ७३, ७३, ७३, ७३, ८७ ८७, ८७, ८७, ८७, ८७, ८७, ८७, ९२, ९२, ९२, ९२, ९२, ९२, ९२, ९२, ९२, ९२, ९२, १०७, १०७, १०७, ११२, ११३, ११५, ११५, ११५, ११५, ११५, ११५, ११५, ११५, ११५, ११५, ११५, ११५, ११५, ११५, ११५, १३०, १५०, १५०, १५०, १५०, १५०, १५०, १५०, १६२, १७९, १८०, १८१, १८१, १८१, १८१, १८१, १९४, होजी—संबोधन (आदरार्थ) उदा० होजी हरि कित गये नेह लगाय १७९।
होइ—दे० 'हूँ२'
होई—दे० 'हूँ२'
हो गए—दे० 'हूँ२'
होज—(अ० हौज़) हौज़, कुंड। उदा० भराँ प्रेम रा होज, हंस केल्याँ कराँ १९३।
हो जाए—दे० 'हूँ२'
होजी—दे० 'हो(२)'
होणा—दे० 'हूँ२'
होता—दे० 'हूँ२'
होनी—दे० 'हूँ२'
होय—दे० 'हूँ२'
होयाँ—दे० 'हूँ२'
होली—(सं० होलिका) होली (एक त्यौहार)। उदा० होली पिया बिन लागाँ री खारी ७७। ७८, ७८, ८०, १४८।
होवाँ—दे० 'हूँ२'
होसी—दे० 'हूँ१'
हौं—दे० 'हूँ१'। दे० 'हूँ२'
ह्‌मा—दे० 'हूँ१'
ह्‌यया—दे० 'हूँ२'
ह्‌वे—दे० 'हूँ२'

—:०:—